

सभा-समिति

● कलकत्ता, १८-४-८२। पूर्व बोध-णाक अनुसार मैथिली मुक्ति मोर्चाक विसार स्थानीय उषानगर विद्यालय मे मेल। मोर्चाक संयोजक श्री रामलोचन ठाकुरक पूजनीया माताक देहावसान २-४-८२ के भ जेबाक कारणे ओ अनुपस्थित छलाह। उपस्थित सदस्यगण एहि आकस्मिक एवं असामयिक निधन पर एक शोक प्रस्ताव पारित कएलनि तथा दिवंगत आत्माक चिर शान्तिक हेतु ओ शोक संतप्त परिवार के शाहस आ धैर्य प्रदान करबाक हेतु मां मैथिली सं दू मिनट मौन प्रार्थना कएल गेल।

सभाक अग्रिम कार्यवाही - स्थगित राखल गेल।

(द्वारा—जनार्दन झा, सह-संयोजक)

● धनश्यामपुर (दड़िभंगा), ११-३-८२। दड़िभंगा स्थित साहित्यिक संस्था कौशिकीक तत्वावधान मे पहिल खेप एहि अंचल मे कवि सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सोझास सम्पन्न भेल। कार्यक्रमक शुभारंभ श्री उदयकान्त मिश्र एवं तुलसी चन्द झा द्वारा श्री वेद्यनाथ विमल रचित भगवती वन्दना 'पूजा कोना करी हे भवानी' सं मेल जाइ मे तबला वादन क रहल छलाह श्री कृष्ण मोहन झा।

उद्घाटनकर्त्ता प्रसिद्ध लेखक प्रो० डा० नित्यानन्द झा अपन उद्घाटन भाषण मे ग्रामीण जनता सं अपन भाषाओ साहित्यक प्रति सतत जागरूक रहि मैथिलीक उत्थान लेल अभियानक आह्वान केलथिन प्रो० डा० वयानन्द झाक अध्यक्षता मे एगो भव्य कवि सम्मेलन मेल जाइ मे सर्वश्री कृष्ण मोहन झा, जय प्रकाश चौधरी जतक, प्रो० देवकान्त मिश्र, प्रो० विमल नारायण ठाकुर, वेद्यनाथ विमल आदि भाग लेलनि। कार्यक्रम अर्धरात्रि धरि चलैत रहल। सांस्कृतिक कार्यक्रमक मुख्य आकर्षण छलाह किशोर गायक श्री अरविन्द कुमार झा केदार चन्द्र मिश्र कुमार कान्त ठाकुर ओ अरुण कुमार भक्त गीत सेहो मनोरम छल। संचालनक रहल छलाह कौशिकीक संयोजक श्री वेद्यनाथ विमल।

कौशिकीक अध्यक्ष श्री रमानन्द रेणु अपन सन्देश मे कहलनि जे जाधुरि गामक माटि नहि जागत-ताधरि कोनो क्रान्ति नहि भ सकत। एहि लेल ग्रामीण लोक-जीवन सं सन्नद्ध भू क भाषा ओ साहित्यक उत्थान लेल अभियान करी। ग्रामीण-जनता दिस सं सर्व श्री केदार नाथ मिश्र, देवेन्द्र नाथ झा, देवकान्त झा अपन-अपन उद्गार व्यक्त केलनि। 'अन्त मे स्वागत समिति दिस सं श्री शिवकुमार मिश्र धन्यवाद शपन केलनि।

(द्वारा—वेद्यनाथ विमल)

● कलकत्ता-१४-८२। मिथिला सांस्कृतिक परिषदक द्वारा कवीश्वर चन्दा झा (कवीश्वर जोड़ि देनाइ हम आवश्यक बुझे छी ले०) जयन्ती स्थानीय श्री सनातन धर्म विद्यालय मे मनाओल गेल जकर अध्यक्षता केलनि परिषदक आयोजन हेतु नियुक्त स्थायी अध्यक्ष डा० श्री मुनीश्वर झा।

प्रधान वक्ता छलाह डा० अशर्फी झा प्रधान अतिथिक रूप मे मंचपर ल गेल गेलाह श्री मिथिलेन्दु जी।

कार्यक्रमक आरंभ मिथिलाक जातीय गीत 'जय-जय भैरवि' सं मेल जकर गायिका छलीह कुमारी हेमा। हेमा अपन गायन क्षमता सं कनेकालक लेल लोक के अपन गामधर ल जेबा मे सफल रहल। ओ आरो कएकटा गीत गओलक। ओकरा मे पूर्ण प्रतिभा छैक आ जे अभ्यास करय त नीक गायिका बनि सकैछ।

कार्यक्रम पूर्ण अव्यवस्थि छल एकटा गीत आ एकटा भाषण आ बीच मे अध्यक्षीय अनुशासन। सभसं अघलाह बात त ई भेल जे कवीश्वरक छवि उपलब्ध होइतहु मंचपर नहि छल आयोजक लोकनि भरिसक एकर खगता नहि बुझलनि सभ सं महत्वपूर्ण भाषण छल प्रधान वक्ता साहेबक। ओ कवीश्वरक खूब प्रशंसा केलनि कारण से केनाह आवश्यक छलनि—भनहि हुनक रचना पढ़ल नहि छलनि, जे अपनहि गजलाह परउच मैथिलीक आधुनिक कविता जे विश्वक कुनू भाषाक कविता सं पाछू नहि अछि—तकर धोर निन्दा केलनि। ओ प्र० वक्ता छलाह त हुनक पौत्रा के ई अधिकार अवस्ते छलनि जे छड़पि के मंचपर चढ़ि जाथि आ अओ बूढ़। हाथ उठाउ। फटाक—पढ़ि लेथि—

दस बर्ष धरि डा० लोढाक ओइ ठाम हाट-बजार केलाक पश्चात् पी एच० डी० क उपाधि पञ्जोनिहार डा० अशर्फी झा अपन पौत्रक पढ़ाओल पांती के दोहरवैत आहुक कविताक निरर्थकताक बात कहलनि। डा० झा के बुझक चाहियनि जे हाट-बाजार सं भाड़ाभरि तरकारी कोनो गुस्साइन ला पहुँचओने पी एच० डी० अवस्ते भेटि गेलनि परउच कविता बुझबाक बोध एना नहि भेटैत छैक। तहिना जे प्रधान वक्ताक एहि आरोप सं अध्यक्ष महोदय अपन सह-मति प्रकट केलनि त अचरजे की? हुनको हेतु डिगरीक अर्थ चाकरीएटा छनि जकर आ आधुनिक साहित्यक संदर्भ हुनक ज्ञानक परिचय की इएह सहमति प्रमाणित नहि करैछ?

एहि अवसर पर श्री बाबू साहेब चौधरी अवस्ते कवीश्वरक प्रति असली श्रद्धाञ्जलि मैथिलीक रक्षा, विकासक बात कहलनि जे आयोजनक उपलब्धि मानल जा सकैछ।

खेदक संग लिखए पड़ि रहल-ए जे ई आयोजनी संस्था सभ आह्वारि आयोजनक महत्ता नहि बुझि सकल-ए। कुनू विभूतिक जयन्ती वा स्मृति दिवस मना के हमरा लोकनि हुनक नहि अपितु अपन, अपन देस समाजक उपकार करै छी। विभूतिक स्मृति दिवस एही लेल आवश्यक जे हुनक व्यक्तित्व-कृतित्व सं शिक्षा लय हमरा लोकनि अपन देश-भाषा-संस्कृतिक विकास लेल शपथ ली आ काज करी। तें आवश्यक छैक जे मात्र विद्यापति आ कवीश्वर चन्दा झा के स्मृतियेता नहि—ग्रीयर्सन महोदयक स्मृति पर्व, ज्योतिरीश्वर स्मृति पर्व, महा-कवि डाक आ लाल दास स्मृति पर्व मनाओल जाय। आवश्यक छैक महावली लोरिक, सलेहस दीनामद्री आ रायरण

पालक स्मृति दिवस मनाओल जाय। मिथिलाक एकांगी इतिहासक पुनरावृत्ति आत्मघाती प्रयास थिक—एहि सं निवृत्ति भेनहि मिथिलाक कल्याण छैक।

मात्र अखवार मे नाम छपेबा लेल आ अनहा मे कनहा राजा वनबाक लोभे एहि तरहे कुनू विभूतिक नाम पर मजाक उड़ोनाइ सरिपहु निन्दनीय ओ लज्जास्पद थिक। (द्वारा—अमरदूत)

चिट्ठी-पुरजी

'देसिल वयना' क प्रति भेटल। जे 'देसिल वयना' सब जन मिट्टा' कहल गेल छै तें हमरो मीठ लगल, कही, त पुनरु-क्तिमे हयत। ओना, ई कहल जाय कि पत्रिका बड़ जोरगर आ तेवर-वला अछि, त कोनो अतिशयोक्ति नहि। 'लोचन कविराय' केर कमाल त देखबे जोग अछि।

—आरसी प्रसाद सिंह, पटना

पत्र दीर्घायु हो, एकर भव्य प्रचार प्रसार हो। मैथिली पत्र पत्रिका मे एखन देसिल वयना जे मात्र जन्मे ग्रहण केलक अछि, तखन एहि मे रोचकता, कौतुहलता और विशिष्टताक स्पष्ट छाप अछि। प्रयासक हेतु साधुवाद।

—श्री देव झा, हिन्द-मोटर

सम्पादकी 'भील नहि अधिकार चाही' देखि मन गद-गद भए गेल। हमरा लोकनि

कलकत्ता, १८ अप्रील १९८२। स्था-नीय मिथिला जन कल्याण सं कीर्तन मंडली द्वारा मुल्लाहाटी (लेक गाईन्स) मे आयोजन चौधौस घण्टा व्यापी अखंड अष्टयाम कीर्तन समारोह बेस धूम-धामक संग सम्पन्न भेल। आयोजनक शेष मे स्थानीय कलाकार लोकनि द्वारा विवाह कीर्तन सेहो बेज जमल आ उपस्थित समुदायक मनोरंजन करवा मे पूर्ण सफल भेल।

के अधिकार दिआवए मे अपनेक ई पत्र सदस्यन पथ प्रदर्शक काजेता नहि करत बल्कि मिथिला मैथिलीक अभ्युत्थान लेल प्रबल समलक संग डेग सं डेग मिलाकए जन जागरण आ चेतना प्रदान करत से आशा अछि। आजुक मिथिलाक अनेकानेक सपूत कुम्भकर्णी निद्रा सं प्रसित भए अपना के पंगु बनएने जा रहल छथि। आवश्यकता छल अपने एहन विगुल फुर्कनिहारक से आवि गेल छी प्रवासी भए देसिल वयना लएक एहि वयना के स्वीकार कए हम अपना के कृत्य-कृत्य आ धन्य बुझि रहल छी।

एना पत्रिकाक आन वस्तु सेहो कम दिव्यगर नहि अछि, आ समाजक लेल अपनेक एक-एक आखर राम बाण जकां काज करत से विश्वास अछि।

—अशोक कुमार झा, दड़िभंगा

बालगीत

मामा, आव बुझैछी!

मामा, अहांछी फोकटिया से आव बुझैछी।

अहां कतेक सहज-छी से भाष बुझैछी॥

मामा आव बुझैछी।

इसकूल मे माट खैब, बेर बेर कहै छथि।

अहांकेर चमकव, सुरज के मानै छथि॥

सुरज भेने तिपत्ता, अहां माम बुझै छी।

मामा आव बुझैछी॥

जं अपनेला लल मामा, हमरा को देव यो।

कोना चानीक कटोरीसे, दूधभात छेब यो॥

पतेक ताम माम देखि, हमझीह कुचै छी।

मामा, आव बुझैछी॥

मुदा दादीके मुश्किल छै, बातके बुझायब।

अहां बिना नै हेतै जद-जटीन गायब॥

अहां अनकेला कज्जोक बोझा छै छी।

मामा आव बुझैछी॥

मामा अहांछी फोकटिया से आव बुझैछी।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

कह लोचन कविराय

दूरक ढोल सोहावन कहबी छैक पुरान किन्तु मात्र कहबीए नहि सुनियो रहलहु कान सुनियो रहलहु कान आसि सं देखि रहल छी मैथिलीक दुर्दशा हाल मिथिलाक कहब को कह लोचन कविराय विवेक एहन नवतूरक निश्चित पतनक मूल प्रगति बात त दूरक

समिति सखना

वर्ष-२ अङ्क-६

जून, १९८२

मूल्य-पचास पाइ

सम्पादकीय

सरकारी पुरस्कार आ मैथिलीक साहित्यकार

कुनू छोट सँ छोट आ पैघ सँ पैघ आन्दोलन मे साहित्यकारक भूमिका प्रधान रहल-ए। साहित्यकार कान्ति द्रष्टा होइत छथि। ई पुरान परती-परांत के तोड़ि आन्दोलनक नव माटि तैयार करैत छथि आ पुनः आन्दोलनक बीजारोपण करैत छथि। परञ्च एहीठाम दिनक काज शेष नहि होइत। ई अपन रोपल आन्दोलनक बीज के माटि सँ बहार भय विशाल वृक्षक रूप लेबाक, ओकरा फुलेबा-फड़बाक समुचित परिवेशक खिन्जन करैत छथि, आततायीक हाथ सँ ओकर रक्षा लेल स्वयं त सतत सजग रहित छथि, समाजक लोक केँ सेहो ओकर उपयोगिताक मान करा ओकर रक्षाक लेल सचेतन बनैत छथि। शेष मे जखन कि ओ गाछ फल देत छैक त ई स्वयं छटि चाहैत छथि। तँ साहित्यकारक ई गरिमा अइ। ई प्रातः स्मरणीय होइत छथि, अनुकूलनीय होइत आ अमरता केँ प्राप्त करैत छथि।

कहल जाइत छैक जे काज तलवारि सँ संभव नहि होइत छैक से साहित्यकार अपन कलम सँ सहजहि क खेत छथि। तँ एक दिस जँ विशाल मानवताक दृष्टि दिनका कलम दिस-दिशा निर्देशक लेल लागल रहैछ त-दोसर दिस मानवताक शत्रु शोषक-श्रासकक सेहो। पहिल वर्गक हृदय मे जतय आदरक भावना रहैत छैक त दोसर वर्गक हृदय मे आतंकक। तँ पहिल वर्ग-जतय दिनक सहायक होइत रहल-ए त दोसर विरोधी। परञ्च साहित्यकार जनबलक सहयोगे समस्त विरोध केँ भूख ठित करैत अपन लक्ष्य पथ पर अवि-राम चलैत रहैत छथि।

एहि दृष्टि जँ आबुक मैथिली साहित्यकार दिस तकैत छी घृणा सँ मन भिनकि जाइत, छाँजे माथा नत भ जाइत। किछु अपवाद केँ छोड़ि प्रायः सभ केँ सभ अपन असली चरित्र छोड़ि स्वान प्रवृत्तिक परिचय द रहल छथि। इएह कारण अइ जे एतो-दिनक पश्चातो मिथिला-मैथिल-मैथिली अपन न्यायोचित अधिकार सँ वंचित रहल-ए। मैथिली आन्दोलन जातीय आन्दोलनक रूप मे नहि रूपायित भ सकल-ए।

मानव जीवन मे भाषाक की महत्व छैक से आब लिखबाक खगता नहि। वर्तमान मे कर्नाटक प्रदेश मे चलि रहल आन्दोलन जकर मुख्य माड छैक 'कलङ्क' के त्रिभाषा फर्मुलान्तर्गत प्रथम आवश्यक भाषा बनेबाक—टटका उदाहरण थिक जे केना पघ सँ पैघ 'शानपीठ' पुरस्कार विजेता साहित्यकार एकर नेतृत्व क रहल छथि। ओतबे नहि समस्त बुद्धिजीवी कलाकार लोकनि एहि मे पूर्ण सक्रिय छथि। परञ्च मैथिली आन्दोलन मे साहित्यकारक सहयोगिताक गण्य त फराक जाओ—विरोधे भेटैत रहल-ए। कुनू-कुनू नवसिखुआ अति प्रगतिशील गीतकार त भूखक प्रधानता देखेबा लेल भाषा आन्दोलन केँ घृणित राजनीतिक संग जोड़बो सँ वाज नहि आयल। पता ने हुनका जखन भूख लागैत छनि खेनाइ भाषा मे मंगैत छथि अथवा पेट बेङ्गवय लागैत छथि। ओना सत्य ई अइ जे इहो गण्य प्रकाश करै लेल गीतकार महोदय केँ भाषाक सहारा लेमय पड़ैतनिहै। सँ एक शब्द मे कही त मैथिली आन्दोलन मे सभ सँ बलक ई साहित्यकार नामक कतुर रहल-ए।

इतना होइतहुँ जे हेतु किछु साहित्यकार सचेतन रहबहार आ तँ हुनका नय अइ करबा लेल मैथिली विरोधी विहार सरकारक नेता कालाथ मिश्र नामा तलक बढबन रचैत रहलाहए। एही षडयंत्रक फलस्वरूप किछु साहित्यकार केँ पुरस्कार देबाक योजना बनलए। समाचार-सूत्रक अनुसार श्री नागार्जुन (यानी नहि), आरसी प्रसाद सिंह श्रीकन्त ठाकुर विद्यालंकार जयनाथ मिश्र आदिक नाम एहि योजनान्तर्गत अइ। जहाँधरि विद्यालंकार आ जयनाथ मिश्रक बात अइ—इहो लोकनि जे साहित्यकार छथि से एही समाचार सँ शात भेल। ओना ई लोक अवस्ते जनेए जे जयनाथ मिश्र डा० जगन्नाथ मिश्रक समुद्र छथिन आ विद्यालंकार सदा सँ मैथिली विरोधी आ हिन्दीक प्रबल पक्षधर रहलाहए। सम्बन्ध मे पैघ आ मैथिली विरोधी मे पैघ हेबाक कारणे ई लोकनि अवस्ते सरकारी पुर-ष्कारक योग्यता रखैत छथि।

जहाँधरि महाकवि नागार्जुनक प्रश्न अइ 'इमरजेंसीक' समय मे ओ 'सरकारी चारा' गर्वक संग अस्वीकार केने छथि आ तँ जे एहि खेर स्वीकार कलाह ताइ मे पूर्ण संदेह। 'कविवर आरसी प्रसाद सिंह केँ हिन्दी साहित्यकारक रूप मे पांच सेक मासिक वृत्ति कहांदिन भेटिए रहल छनि। परञ्च एहि बेर एकठहुरी दस हजारक 'तोर' ओ स्वीकारैत छथि

संविधान विनु मैथिलीक ओ
मानचित्र विनु मिथिला धान
छाहि जारि सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

* मैथिली *

मैथिली—माने मैथिली भाषा हिमा-ल्य स गंगा तक आ बंगाल स गंडक तक पसरल विशाल सुजला-सुफला शल्प श्यामला मिथिला देशक भाषा, तीन कोटि मैथिलक मातृभाषा।

ओना ई सर्वमान्य अइ जे भाषा कुनू खास व्यक्ति वा वर्णक नहि होइ छइ, परंच मिथिला मे एहन आमक प्रचार कइल गेलख आ एखनो कइल जा रहलए जे मैथिली कुनू विशेष वर्णक भाषा थिक, आ थोड़-बहुत अवोध लोक एहि प्रचारक शिकार भेलख। तँ एहि भ्रम केँ दूर करैक खगता छैक, हमरा जनतबे।

भाषा पर गण्य करैकाल सर्वप्रथम भाषा थिक की ताइपर विचार क लेब आवश्यक। भाषा के विचारक बानन कहल गेलख। मनुक्ख सामाजिक प्राणी थिक। ओ मात्र समाज मे रहिते नहि अइ बरन समाजक अन्यान्य सदस्यक संग अपन विचारक आदान-प्रदान करैए, एक दोसराक सुख-दुखक खोज खबरि रखैए, ओकर सहभागी होइए आ ई सभ होइ छइ भाषाक माध्यमे। सुख-दुखक अनुभव पशुओं के होइ छइ परंच भाषाक अभाव मे ओ प्रकट नजिक सकैए जे मनुक्ख बड़ सरजता सकलए। किन्तु भाषा मात्र एतबे नहि; अलख मे विचारक वास्तव रूप थिक। मार्क्स भाषा के immediate reality of thought कहलनिहै। भाषाक बिना विचारक अस्तित्वे ने रहैए। एहि स इहो पता चलैए जे मनुक्खक सामाजिक आ विवेकशील प्राणी हेब भाषाक जन्मक कारण भेल। मनुक्ख के अपन मनक बात दोसर के कहबाक तथा दोसराक बात जनबाक आन्तरिक इच्छाए कहिओ भागा के जन्म देलकै हैत। दोसर जे भाषा एहि रूपे जन्म लेलक हैत वा जाइ भाषा के जन्म देल गेल हैत से निश्चित रूपे समाजक सभ सदस्यक लेख एकैठा छल हैत, अन्यथा उद्येशक पूर्ति संभव नहि छल। तेसर, भाषा मनुक्खक लेख बनाओल गेल वा एना कहो जे भाषाक

आविर्भाव साधक रूप मे भेल—साध्य छल मनुक्ख, मनुक्खक कल्याण, एहि संबंध मे स्तालिन कहै छथि—भाषा समाजक लेख बनाओल गेलख, एकर निर्माण लोकक बीच विचारक आदान प्रदानक माध्यमक रूप मे जे समाजक सभ सदस्यक लेख एकैठा होइए आ सभ सदस्यक एके रंग सेवा करैए।

मनुक्ख विकाशशील प्राणी थिक, ओ मात्र अपन विचार दोसर के बना क वा दोसरक विचार जानि क चुप भ बेसि नहि सकैए। ओ प्रत्येक समस्याक समाधान चाहैए प्रत्येक अनजानख वस्तु के ज्ञान चाहैत नव नव वस्तुक खोज कर चाहैत कुनू वस्तु के जनबाक विज्ञाता जे कि विचारक दौख थिक तथा ताइ लेख उचित प्रयासक निमित्त प्रयोजन होइ छइ शिक्षाक, आ शिक्षा बिना भाषाक भ नहि सकैए। तहिना कुनू विका-शक काल कुनू एक व्यक्ति स संभव नहि, ताइ लेख चाही सामूहिक प्रयास आ तँ सामूहिक शिक्षाक प्रयोजन आ सभक लेख सहज-सरल शिक्षा मातृभाषाक बिना असंभव। आइ विश्वक प्रायः समस्त विद्वान एहि मत सँ सहमत छथि आ मातृ भाषाक महत्ता के स्वीकार करै छथि।

विकाशक मूल थिक संघर्ष। मानव सभ्यताक आदिकाल स आइ तक डेरा-डेरा पर मनुक्ख के संघर्ष कर पड़लैए आ पड़ि रहल छैक ई संघर्ष जिनगीक विभिन्न क्षेत्र मे। विभिन्न रूप मे होइत रहलैए आ भाषा एहि मे सहायक सिद्ध भेलैए। पहिने कहि आयल छी जे कुनू विकास एकक प्रयासे संभव नहि। स्वभावतः संघर्ष सेह सामूहिक रूप मे भेलैए। स्तालिनक अनुसार 'भाषा जत्ते वैचारिक आदान-प्रदानक माध्यम थिक, तत्ते संघर्षक आ सामाजिक विकाशक साधन सेहो।'

आब ज विचार करी जे भाषा संघर्षक आ विकाशक साधन केना थिक त फेर शिक्षाक चर्च करब आवश्यक। शिक्षा भेल (शेषांश पृष्ठ ७ पर)

वा नहि से त भविष्ये बइत। ओना सरकारी हउि मुकम्मलतक एक साहित्यकार अस्वीकार कर एतौ अमर्त्य उदाहरण प्रस्तुत केने छथि आ ओतौ बड़ तलक जयदेवप्रसाद सेह केने छथि। पांच सेक मासिक हउि हिन्दी साहित्यकार (!) कविपद्वन की सेह केने क संग उदाह छथि। हुनका मे अपन हउि पचास लाखक एतौ बड़ तलक आ रहल-ए जकर सदि सँ साहित्यकार लोकनि केँ पाछल जाएत।

जहाँधरि विहार सरकारक प्रश्न छैक ओ अपन सदस्यो कलक केँ भंगबा लेल हजारो षडयंत्र करबे करत, मैथिली आन्दोलन के अवफल कइ मैथिलीक विनाशक हेतु साहित्यकार केँ कीनबाक प्रयास करबे करत परञ्च कि साहित्यकार सभ एते नीचे, एहन दयाक पात्र बनबा लेल तैयार अइ ? कि विवेकक लेसमात्रो ओकरा लोकनि मे शेष नहि छैक ?

जँ सरकार टुकड़ी फेकेए त निश्चित ओकर विशेष उद्देश-छैक, ओ प्रतिदान चाहैए आ ई प्रतिदान एक मैथिलीक साहित्यकार सँ मिथिला-मैथिली विरोधी सरकार की चाहैए से ककरो सँ चुकाएल नहि। इतिहास साक्षी अइ जे माँ-बाप भनहि अपन नेना केँ बेचि लेने हो—कुनू बेठा अपन माँ के हाट नहि चढ़ओलक-ए। देखाचाही मैथिलीक साहित्य-कार लोकनि की करत छथि पञ्च जनता केँ, साधारण मिथिलावासी केँ सचेत रहनाइ परमावश्यक। जगन्नाथक दृष्टि शानिक दृष्टि थिक आ से मिथिला-मैथिली पर लागि चुकलए—से हमरा लोकनि केँ नहि बिउबाक चाही।

महाकवि गोविन्द दास

लीला सुरुब कि मोदक बरि करैत
 कहैत छथि सेहो के कि बैसाब छोड़ि दोल
 तें लिलव अर्पयव । वे सुकुमार बाबू
 कयन कय त कि विधायित होइव बे महा-
 कवि बैसाब छवह—आ तें ओ मैथिल
 नहि छवह ? सेही के अला कहव गेह-ए
 के विधायित के राधा-कृष्ण लीला गीत
 रचवनि से मिथिलावासी स्वीकार नहि
 कय चाहैत छथि । त कि एकर माने मेव
 जे विधायित सेहो मैथिल नहि छवह ?
 परजव इधक विषय जे सुकुमार बाबू तें
 बहुत प्ये विद्वान सूनीति बाबू सेहो विद्या-
 (रोषावा पृष्ठ पांच पर)

कविता

भाषात्मक एकता सं सम्बद्ध

तीनटा मुक्तक

(१)

नहि हो केओ मुस्लिम, हिन्दू
नहि हिन्दू हो मुसलमान
"हाशमी" ई अनिवार्य आइ अछि
हो हुनू पहिने इनसान

(२)

सब सं "आदम" केर ओलाद
अथवा "मनु" केर अछि सन्तान
भाय-भाय मे केहन भगड़ा
केहन ई घटिया ईमान

(३)

सब मानस ई मही के माता
"आदम" केर अछि जन्म-स्थान
पस "शीश" केर अछि मजार आ
रक्षा - सखिल गङ्गा सुदान

—फजलुर रहमान हाशमी

'ले मशाल सभ कलुष जरा दे'

जाग - जाग मैथिल संथाडी, भोजपुर संतान
सभ मूल छै छटि रहल छौ, घरक साज-समान ।

सभक माय डुक-डुक तकै छौ, अबला बनि छौ ठाढ़ि
निलज बनि सभ जीवि रहल छै, फुसिये करै अराढ़ि
आबो नहि चेतवै तऽ जेतौ रहल सइल सम्मान ॥

कनहा-कुबड़ा बहिरा-बोका, मिलि के तोड़ो माल
तोहर दुलरुआ भूखले सूतौ, तोहर हाल बेहाल
अपन घर मे तोहरे भाषाकेर भेलौ अपमान ॥

तोहर आखि छौ जाली मढ़ल, देखै नहि निज भेष,
तोहरे घर सं तोहरे सम्पत्ति पठवौ देश-विदेश
दिन पर दिन कंगाल बने छै, ककरो नहि छौ मान ॥

माइ-माइ मे लड़ा-भिड़ाकऽ हथिओने छौ कुरसी,
तौ प्रमादवश फूटि रहल छै, रहि-रहि दै छौ घुड़की
एक्कर ओक्कर पीठ ठोकै छौ, मूरख नै छौ ज्ञान ॥

ठोहि पारिकऽ माय कनै छौ, तैयो नहि छौ लाज
जे सभ वनटा सिखा रहल छौ, तकरे करै छै काज
अपन पर कुरहरी सं काटै, बनल छै नादान ॥

पूरुब मे बिगुल बजै छौ, दही नगाड़ा चोट
ताल ठोकि मैदान ठाढ़ हो, छोड़ नोट आ भोट
बठै बठै, आबो तऽ चेतै, कर मे धरै कमान ॥

अपना हक ले सभ लड़ैप, पखनो धरि छै चुप,
मुँह फुलैने सभ बैसल छै, देख अन्हरिया घुप
ले मशाल सब कलुष जरा दे, तखने हेतौ बिहान ॥

—अर्जुनलाल करण

दू गोठ लघु कथा

गिरगिट

बैशाखक ठहाठही दुपहरिया मे अपन
आ अपन गर्भवती स्त्रीक आहारक जोगार
कए जखन भीमान गिरगिट अपन डेरा
घुरलाह त देखैत छथि जे पत्नी घोघना
लटकओने बैसल छथिन । बेर-बेर एकर
कारण पुछल उत्तर पत्नीक मओन भंग नहि
मेलनि त ओ खिसिया केँ बजलाह—एहिना
घोघना फुलओने रहब त लोक कि अगर-
जानी जनै जे अहाँक मनक बात बूझि
लेत ।

पत्नी ओहिना विधुआएल मनमनेलीह—
लोक बुझिअ क की करत ? जं सरिपहुं
लोक केँ हमर कचोटक चिन्ता छइ त सत्त
करओ ।

—एक सत्त, दोसर सत्त, तेसर सत्त,
अहाँक कहल जे नहि करब से असी कुँइ
नर्क मे पहुँच । आबो त बाजब ? गिरगिट
आत्म समर्पण क देलनि ।

पत्नी खवास करैत बजलथिन—चल
हमरा लोकनि अइखन एइ देश सं चलि
चली ।

गिरगिट छान्ता मे पड़ि गेलाह ।
'आखिर कून एहन बात भेलैक जे हमरा
लोकनि के अपन जन्मभूमि छोड़ि चलि
जेबाक चाही ?'

पत्नीक पाड़ा राम भ गेलनि । 'कनियो
जं धानक छूति रहैत त ई पूछय नहि पड़ैत ।
आखिर कुनू जाति जन्तुक अपन परिचय
रहैत छैक, विशेषता रहैत छैक । जं सहे
नै बंचैत त लोक केँ लाजे मरि नहि जा
हैतैक ?'

—अहाँक कहवाक अर्थ हमरा नहि
बुझै मे आयल ! हमरा लोकनि अपन रंग
बदलाक लेल विख्यात छी । परिवेशक

अनुसार रंग बदलवाक पटुता हमरा लोकनि
मे जन्मजात होइए—

—मुदा ताहू मे हम सब पाछू पड़ि
गेलहुं—पत्नी बीच सं लोक लेलथिन ।

—अहाँ कि नेता लोकनिक बात क
रहल छी ? गिरगिटक प्रश्न भेल ।

—त आर ककर ? आइ—कलिक
नेता लोकनिक वरावरी करवाक दक्षता कि
हमरा लोकनि मे रहि गेलए ?

गिरगिट के बड़ जोर सं हंसी लागि
गेलनि । ओ ठहाका दैत बजलाह—तै ने
कहैत छैक स्त्रीगणक बुद्धि । हमरा लोकनि
केँ त एहि मे प्रसन्नता हेवाक चाही ।
कहबीयो छैक जे दस टके नहि नितराइ,
दस समाडे नितराइ ।

भारत रत्न

शरसव्या पर पड़ल-पड़ल भीष्म पिता-
मह सोचि रहल छलाह जे अन्यायी कौरवक
संग दय ओ नीक नहि केलनि । आगामी
इतिहास हुनका कहियो क्षमा नहि करत ।
अन्त मे ओ फेर हथियार उठेवाक आ
पाण्डव दिस सं लड़वाक घोषणा केलनि ।
ई गप्प जखन हुयोधनक कान तक गेल त
पहिने त ओ घबड़ाएल किन्तु पश्चात्
शकुनीक संग परामर्श कए दोसर दिन हस्ति-
नापुर मे विराट सभाक आयोजन केलक ।
एहि सभा मे ओ भीष्म पितामह केँ एगो
पैष प्रशस्ति पत्रक संग 'भारत रत्न'क उपाधि
सं अलंकृत केलक । कहल जाइछ जे तकर
वाद जे भीष्म पितामह मओन त धारण
केलनि से जा जीलाह मुँह नहि खोललनि ।
● अप्रदूत

डा० जगन्नाथ मिश्र उर्फ

थैलीनाथ मिश्र प्रकरण

बिहार भारतक सभ सं धनी प्रदेश
थिक जाइताम भारतक उपलब्ध 'कच्चा
मालक' वालि स प्रतिशत पाओल जाइत
छैक । परञ्च एते होइतहु एहि ठामक
जनता सभ सं गरीब आ अशिक्षित अइ,
केन्द्र द्वारा अवेहलित अइ । एकर एक
मात्र कारण छैक जे एहि ठामक नेता बड़-
मान होइत आयल-ए जे केन्द्रक चमचा-
गिरी कए अपन सिंहासन केँ सुरक्षित रख-
नाइ आ तकरा बले अपन स्वजन पोषण
केनाइ टा केँ अपन धर्म बना लेत अइ ।
एहि तरहक नेता मे शीर्षस्थ छनि बिहारक
वर्तमान मुख्यमंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र—
जे थैलीनाथ मिश्रक नामे ख्याति प्राप्त क
रहल छथि । डा० मिश्र मे बड़-बड़ गुण
अइ—कोबड़ छोट कहत अपराध । एक
दिस जं ई मिथिला मैथिली विरोधीक रूप
मे ख्यात छथि त दोसर दिस वर्णवादी,
सम्प्रदायवादी राजनीति करवाक लेल ।
परञ्च हिनक चर्चक सभ सं प्रधान कारण
रहल-ए हिनक स्वजन पोषण नीति आ

थैली (सलामी) लेनाक बात । अंग्रेजीक
बहुमंचलित पत्र 'ऑरगेनाइजर' जे कि
दिल्ली सं प्रकाशित होइए, तकर २-८ मह
१९८२ क अंक मे मुख पृष्ठ पर 'द काइ-
मस ऑफ मिश्र' शीर्षक सं हिनक विभिन्न
घोटालाक मंडाओर कइल गेलए जकर
संक्षिप्त सार निचा देल जा रहल-ए ।

१) बिहारक स्विटी व्यवसायी ५ पाइ प्रति
लिटर दाम बढ़ेवाक मांड बहुतो दिन सं
करैत आवि रहल छल जकरा गफूर मंत्री-
मंडल आ जनता सरकार सोभे अस्वीकार
क देने रहैक । परञ्च डा० मिश्र एकरा
एक रुपया पांच पाइ प्रति लिटर यानी कि
७५ पाइ प्रति लिटर सं १८०० प्रति दाम
करवा देलथिन । मात्र एकटा व्यवसायी
के ६० लाखक ल्याक छलैक जे एहि बढ़ो-
त्तरी सं एक कोटि नफा कमाएल । एहि
पुनीत काजक लेल कहांदर मिश्रा साहेब केँ
एक कोटिक थैली प्राप्त भेलनि ।

२) साल बीज—१९८० मे बिहार
राज्य फॉरेस्ट डेभलपमेन्ट कॉर्पोरेशन मात्र

५०% (४०,००० मेट्रिक टन्स) साल बीज ३ बिहारीक हाथें आ बाँकी ३% कमी-शन द बिहारीक हाथें बेचबाक निर्णय लेने छल परञ्च डा० मिश्रक प्रभावें एकेटा व्यवसायीक हाथें ११७५) प्रति टन भाव सँ बेचि देल गेल जखन कि मध्यप्रदेश मे एकर भाव २१८५) छलैक। एहिठाम स्मरण रखबाक थिक जे बिहारक साल बीज सर्वोत्तम होइत अइ। सरकार केँ एहि सँ ७३२ कोटिक घाटा भेलैक जखन कि मिश्रा साहेब केँ कष्टक कोटिक आमद।

३) कोइला—कोइला मात्र लाइसेंस बला व्यवसायीक हाथें बेचल जाइत छल परञ्च मिश्रा साहेब नियम परिवर्तन कए किछु ठीकदारक हाथें बेचबा देलथिन—जकरा सँ व्यवसायी कीनत आ तकरा बाद उपभोक्ता भरि जायत। एहि तरहें बीचक लोकक उपस्थिति सँ कोइलाक दाम प्रति मीटल २५ टाका बढ़ि गेलैक। किछु 'कालाबाजारी' जखन एफ० आइ० आर० मे फंसल आ मिश्रा साहेब ओकरा मौखिक आदेश सँ छोड़ैवा मे असफल रहलाह त लिखित आदेश धरि द देलथिन। बनारसक एगो नामी बंदामास पकड़ल गेल छल त हिनक पैरबी सँ ओ सिलीगोरी अस्पताल मे भरती कराओल गेल, फेर बनारस आ ओइ ठाम सँ ओ फिरोज भ गेल। ओकरा संग सँ बहुतरास कागज पत्र भेटल छलैक। कहाँन ओ एखनो दिल्ली-पटना सीनातानि केँ घूमि रहल-ए आ पकड़निहार एस० पी० (सी० आइ० डी०) क बदली भ गेलैक।

४) शराब—जनता अमल मे नशाबन्दी लागू भेल छलैक। मिश्रा सरकार एकरा तोड़ि एकाइज विभागक नियम के उलंघन करैत 'लीडर शीप ऑक्शन' बन्द कए पुरने ठीकदार केँ ठीका देलकें कहाँन दुटा मद्य व्यवसाय त खुलेआम बजैए जे मिश्रा केँ मुख्यमंत्री बनेबा लेल ओ दुनू मिलि एक कोटि टाका खर्च केने अइ।

५) कुसियार—१९८० मे मिश्रा साहेब घोषणा केलनि जे कुसियार उपजौनिहार केँ २२) प्रति क्विंटल दाम देल जेतैक। १३ फरवरी १९८१ केँ एकरा ६ मास लेल भ्रमिगत क देल गेलैक। एहिठाम मन रखबाक थिक जे ६ मास कुसियारक पूरा 'सीजन' भ जाइछ। कहल जाइछ जे चिनी मिलक मालिक सभ दिल्लीक किसान सम्मेलन लेल ५० लाख मिश्रा साहेब केँ थेली भेंट केने रहनि—जकरा लोकनिक सलाह पर उपरोक्त स्थगन आदेश बहार भेल छल।

६) बाढ़ि नियंत्रण—१९८१-८२ मे बाढ़ि नियंत्रण नाम पर ८० कोटि खर्च भेलैक जकर अधिकांश नकली बील पर भुगतान कएल गेल। १९७३ मे जखन मिश्रा साहेब सिंचाइ मंत्री छलाह तखन एके काज दु गोटा ठीकदार के देल गेल रहैक Estimate committee of Bihar क अनुसार Associated Engineering corporation जे कि मिश्रा साहेबक भाइ कमल नारायण मिश्रक छियनि तकरा 'सिविल वर्क' लेल (१,५७,५०० स्क्वायर फीट) ६१,८३८) देल गेलैक जखन कि दु गो आन ठीकदार केँ २,१४,५०० स्क्वायर फीटक लेल मात्र १३,३६८) देल गेलैक।

अजगुत-अनटोटल

* घोडाला शिरोमणि, बिहारक मुख्य मंत्री डा० जगन्नाथ (थेलीनाथ) मिश्र केँ पश्चिम बंगालक चुनाव अभियान मे देखि लोक केँ छगुन्ता लागव स्वाभाविक के। स्वाभाविक एहि दुआरे जे जगन्नाथ बाबू पर दर्जनो घोडालाक आरोप छनि, सुप्रीम कोर्ट धरि केस हुनका पर पहुँचि गेल अइ आ एहि तरहक बदनाम घन्य व्यक्ति उपस्थिति अथवा भाषण सँ लोक मे कांग्रेस प्रति आकर्षण बढ़ैतैक त एहि सँ पैघ अजगुत आर की भ सकैछ। परञ्च लोक—साधारण लोक सोभमतिता होइए, ओ कुनू विषयक तइ तक नहि जाइए नहि जाय चाहैए। परञ्च जे दु-चारि प्रतिघात लोक सभ विषय के खोजिवा छोड़ाक देलैक अम्याली अइ—से एकरो तहिना देखलक आ तँ ओकरा सँ भितरिया बात नुकाएल रहबे केना करैतैक? हँ, ओकरा लोकनि केँ अनटोटल अवस्ते लगलैक।

समितिक अनुसार सँ सँ बेसी irregularities मिश्रा विभाग मे भेलनि।

७) व्यवस्था—१५,०००) तनखा करवा क लेल मिश्रा साहेब प्रति इ'जिनियर १००) टाका मङ्गेन छलथिन। प्रत्येक बदली पर कराके सलामी छलैक। स्वयं Engineers Association से हो एहि तथ्य केँ स्वीकार केलकए।

८) कर्पूरी ठाकुरक मुख्य मंत्रीत्वकाल मे ६००० Asstt. Engineer केँ पद पर इ'जिनियर बहाल कएल गेल छल, १९७८ क बेकार इ'जिनियरक आन्दोलनक फलस्वरूप। दू वर्ष बाद मिश्रा साहेब लोक सेवा आयोग द्वारा विज्ञप्ति देलथिन जे उपरोक्त सभ अभियंता केँ फेर सँ आवेदन करय पड़ैतनि। शुरू भेल फेर आन्दोलन। आन्दोलनकारी अभियंता लोकनि जखन मुख्यमंत्री सँ भेंट करै चाहलनि त मिश्रा साहेब अपन Personal Asstt. केँ पठा देलथिन जे अभियंता लोकनि केँ २५ लाखक थेली मुख्य मंत्री केँ भेंट करै लेल कहलथिन। थेली मिश्रा साहेब केँ भेंट गेलनि आ लोक सेवा आयोगक विज्ञप्ति खटाइ मे पड़ि गेल।

९) मिश्रा साहेब केँ बड़ सेहना छलनि जे हुनक बेटी केँ बी० ए० (Eco. Hons) मे फल्ट क्लास फल्ट भेटनि। एहि लेल ओ पटना वि० विद्यालय मे मॉडरेटरस बहाली करबओलनि। परञ्च कुमार संग नहि देलकनि। मॉडरेटरिंग बोर्डक अध्यक्ष डा० केदारनाथ प्रसाद प्रतिवाद स्वरूप इस्तीफा दय देलथिन आ छात्र आन्दोलन भइकल। बहुतो छात्र हाजति मे पढ़ल आ अन्ततः हुनका बेटी केँ दोसर स्थान प्राप्त भेलनि। ओना शिक्षक लोकनिक अनुसार हुनक बेटी दोसरो अग्रेगी पेबाक योग्यता नहि रखैछ।

१०) आ सब सँ प्रबल अइ पटना अखन को-ऑपरेटिव बैंकक घोडाला जाइ मे ३५ लाख गवन करबाक आरोप मिश्रा साहेब पर छनि। एकर मामिला सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचि गेल अइ—देखा चाही की होइए।

साम्प्रदायिक राजनीति करवा मे जगन्नाथ बाबू शीर्षस्थ छथि। गत १२ मई केँ रांचीक रोमन कैथलिक चर्च पहुँचि विशपक समक्ष ठेहुनिया देवाक घटना टटके उदाहरण अइ। परञ्च हुनक कलकत्ता आगमन निश्चिते रोमन कैथलिक सम्प्रदाय केँ प्रभावित करबाक उद्येश सँ नहि भेल छल। ओना साम्प्रदायिक तद्भावनाक जेहन सुजर आ सुदृढ़ प्ररम्परा बंगालक रहलैए—तेहन भरिसेक आनठाम हेतैक। ई निर्विवाद जे एहि सद्भावना के नष्ट करवा मे राजनैतिक दलक भूमिका प्रबल रहलैक-ए आ ताहु मे अगिल्ल रहल-ए कांग्रेस। परञ्च एहिठाम ओकर गोटी आइधरि उकाटि रहलैक। सेजे होउक, मुदा चकचाळि रचनाहर सब किछक हारि मानि लेत ?

केन्द्रीय उर्जा मंत्री श्रीमान् ए० बी० ए० गनी खान चौधरी महाशय एहने लोक मे सँ छथि, स्वभावतः हुनका जगन्नाथ बाबू सन कुख्यात लोकक प्रयोजन पड़लनि। एहि दुआरे जे कलकत्ता मे बिहारी आ उत्तर प्रदेशक बहुत रास मुसलमान अइ। भाषा केँ धर्म-सम्प्रदायक संग जोड़ि 'दस प्रतिशत मुसलमान क भाषा उर्दू' केँ बिहारक दोसर राजभाषा बना अधिष्ठित-अव्यवस्थित धर्मांध लोकक बीच सस्त जनप्रियता जगन्नाथ बाबू अवस्ते हासिल केने छथि आ तकरे काज मे लगावय चाहलनि चौधरी मोशाय। स्वभावतः जगन्नाथ बाबू केँ बीछि-बीछि केँ ओही अंचल मे ल जाइल गेल जाइ ठाम तथा कथित उर्दूभाषीक संख्या बेसी छैक। जगन्नाथ बाबू सेहो उर्दू मे (1) भाषण केलनि। किन्तु चौधरी मोशायक कपाड़े जड़ल छथि—तेयो चारु नाल चित्त।

कलकत्ताक मैथिलीभाषीक लेल अजगुत क एहु सँ पैघ कारण भेलैक दोसरे। मैथिली आन्दोलनक 'स्वनामधन्य बयोवृद्ध सेनानी' श्री बाबू साहेब चौधरी केँ हरलनि मे पुरलनि दु गोटा चाटैई एकाउन्टेन्ट, लक्ष्मण भा सागर आ आओर चारि गोटा युवक केँ ल क दोड़लह दमदम हवाई अड्डा पर माला पहिरा एलाह जगन्नाथ बाबू केँ पता ने ओ केना विवरि गोलाह जे ई उर्दूह व्यक्ति छथि जे मैथिलीक विनाश लेल उर्दू केँ दोसर राजभाषा बनओलनि आ भाई-भाई मे भगड़ा बभओलनि। ई उर्दूह व्यक्ति छथि जनिक लठैत ६ दिसम्बर १९८० केँ पटनाक राजपथ पर मैथिली सेनानी केँ कान-कपार भाड़ि देलक जाइ मे श्री चौधरी सेहो रहथि भनहि चोट नहि लागल होनि ओतवे नहि जगन्नाथ बाबू आन्दोलनकारी मिथिला सभूत लोकनि केँ आर० एस० एस० कहि बदनाम करै सँ सेहो बाब नहि एलाह। श्री बाबू साहेब चौधरी स्वयं आइधरि जगन्नाथ बाबू केँ मिथिला-मैथिली बिरोधी कहि भस्मना-आलोचना करैत आवि रहल छलाह जे बात ओ रातापती केना विवरि गोलाह ?

ओना लोक जतय-ततय बजैत सुनल जाइछ जे चौधरी बी बूढ़ भेने दूरि गेलाह,

भसिया जाइत छथि। किन्तु लोकक कहय छैक जे सुन्दरपुर वाली पं० देवतारायण भा। चौधरी बी सँ मैथिली आन्दोलन मे पाछू रहितौ अपना गाम मे मुख्यमंत्रीक चुनावोन करवा हिनक प्रियपात्र बनि गेल—छथि आ निकट भविष्य मे विधान-परिषदक सदस्यता लाभ करै बला छथि। तँ चौधरी जी हुनका 'भौवर टेक' करवा लेल ई चालि चलाइ-ए। ई त भविष्ये कहत जे गोटी प हिनै किनकर लाल होइत छथि परञ्च मैथिली केँ दाव पर चढ़ाओनाइ लोक केँ अतर्पितात अवस्ते लगैत छइ। बयोवृद्ध जानि भनहि बेसी किछु लोक नहि बाजओ-दुर छीया नहि करत परञ्च एतेवरि त कहिते छथि ई नहि उचित बिचार।

* कुनू समालोचक गणतंत्र केँ मुर्ख द्वारा, मुर्खक लेल मुर्खक सरकार कहने छथि। हमरा विश्वास अइ जे जँ ओ आइ बीवैत रहितथि आ भारतीय गणतंत्रक चेहरा देखितथि त निश्चित अपन धियोरी मे एमेन्ड मेन्ट क ओकरा एना कहितथि मुर्खक सरकार मुर्ख द्वारा ४२०क लेल। विश्वक महान गणतंत्र भारतक विभिन्न प्रदेश मे पश्चिम बंगाल सभ तरहेँ आंगू मानल जाइए। एहीठामक केनिंग अंचलक एगो मतदात्री गत १६ मई केँ प्रजाइडिंग अपसर ला जा केँ पुछैत छथिन—साइकिल कोथाइ बाबू ? आश्चर्य त होइत अपसर प्रति प्रश्न केलथिन—साइकिल ! साइकिल की हवे ? महिला—केन आमार छेले जे बोललो साइकिल छाप दिते ?

एही केन्द्र पर एगो दोसर बृद्धा मोहर आ मतपत्र ल क जखन सपटा सँ घेरल घर मे पहुँचलैह त ओ विवरि गोलीह जे छाप कुनू चेन्ह पर लोवाक छथि। अपन बेटा केँ शोर पारलनि शंकर। ओ शंकर !! अधिकारी बीच मे दलल देलथिन—काके डाकछेन ? महिला—केनो ? आमार छेले शंकर केँ कोथाय जे छाप दिते बल्लो मुइछा गेलाम.....

ई त मात्र नमूना थिक। पता ने एहन कतेको मतदाता एहि देश मे छथि बनिना लोकनिक मत पर चीति जनप्रतिनिधि शासन करैत छथि।

*** पश्चिमी देशक कतेको पत्रिका मे भारिपेजक विशासन छलए—इशुक अवतार भ गेल। हुनक नव नाम छनि—मैत्तय स्वामी। एहि मे आगा कहल गेलए जे ओ एखन गुप्त छथि आ मात्र हुनक किछु शिष्य ई बात जनेए। परञ्च दू मासक भीतरे ओ अपन परिचय प्रकाशित करताह आ टेलीविजन सँ विश्वक समस्त लोकक संग-सकर जे भाषा छैक ताही भाषा मे गप-शप करताह।

एहि सम्बन्ध मे विशेष जानकारीक लेल कतेको पता देल गेलए बाइपर सम्पर्क स्थापित करै लेल कहल गेलैए। एहि मे सँ एक अइ दीतारा मेस, ५६, डार्टमाउथ पार्क रोड, लन्दन।

कहबी कुनू बेबाय छैक जे बीव त की ने देखब।

—उचित वक्ता

महाकवि गोविन्द दास

पति के मैथिल मानि चुकल छथि आ आव. त भरिसक कुनू बंगाली विद्वान के मोह नहि रहि गेल छनि। सुकुमार बाबूक दोसर तर्क छनि जे १६५४-५७ मे नकल कएल सजनीकान्त दासक एगो पोथी मे बहुतो पद मेटलैक जाइ मे त पांच टा पद कतौ मुद्रित नहि छैक। गोविन्द दास जे १७म शताब्दी मे मिथिला मे बैसि के कविता रचलनि त एहि पोथी मे हुनक पद रहनाइ असंभव। हुनक इहो तर्क निराधार छनि कारण पहिने त सजनीकान्त दासक नकलक वर्ष संदिग्ध छैक आ दोसर गोविन्द दास जे १६५० धरि विख्यात कवि नहि भ गेल छलाह तकरे कि प्रमाण? सतरहम शताब्दीक अर्थ १६६६ किन्हु ने भ सकैछ, विद्यापतिक पद बंगाल मे तते प्रचलित आ प्रिय छलैक जे मैथिलीक नव सं नव कविक गीत जे पदावली-परम्पराक छल—तकरा बंगाल धरि पहुँचवा मे कनियो समय नहि लगैत छलैक—एहि मे अचरज की?

दोसर तर्क देल गेल अइ जे गोविन्द दास श्री वसन्त नामक कुनू बंगाली कविक चर्च अपन कविता मे बेने छथि, तहिना केने छथि श्री वल्लभ कविकचर्च। श्री वसन्तक नामे ५१ टा पद पदकव्यतय मे पाओल पाओल जाइछ तथा श्री वल्लभक नामे २५ टा पद। जे हेतु गोविन्द दास एहि दुनू बंगाली कविक उल्लेख अपन गीत मे केलनि ते ओ बंगाली छलाह। जे नामोल्लेख मात्रो सं केओ कुनू जातिक हो, तेयो गोविन्द दास बंगाली नहि भ. क मैथिलीक भ सकैत छथि कारण ओ पूर्ण निष्ठा आ सम्मानक संग विद्यापतिक स्मरण केने छथि।

एवम् प्रकारे अनेको तर्क उपस्थित कएल गेल-ए। हुनका कुनू बंगालक राज-दरवार सं जोड़ल गेल परञ्च हमरा लोकनि जनैत छी जे मिथिलाक विद्वान समस्त 'भारत' मे पसरल रहलाहए आ विभिन्न राजबाड़ा-मे सम्मानित पद पर आसीन होइत आबि रहलाह-ए। एगो तर्क इहो देल गेल-ए जे जे ओ मिथिलाक रहितथि त कि हुनक एको गो पोथी मिथिला मे सुरक्षित नहि रहैत? मिथिला मे जे हुनक पोथी सुरक्षित नहि अइ से विनु पूर्ण खोजक कइले केना जा सकैछ? दोसर विद्यापतियोक नीक सं नीक पोथी त मिथिला सं बाहरे पाओल गेल-ए। ब्यालि भक्ति तरंगिनी बंगलादेश मे प्राप्त भेलैक। त कि विद्यापति मैथिल नहि छलाह?

हिनका लोकनिक अन्तिम तर्क छनि किछु शब्द के ल जे वर्तमान मिथिला मे प्रचलित नहि अइ। जे एकरे आधार मानि लेल जाइ त फेर विद्यापतिक चर्च करय पड़त। 'लखय' शब्द तथा 'पारय' प्रचलित नहि छैक त कि विद्यापति के सेहो मैथिल नहि मानल जायत? जे शब्द के आधार मानल जाय त निश्चिते तकर प्रतिशत बहार केल जेबाक चाही आ एहि तरहेँ मैथिली वा बंगला भाषा जकर वेशी प्रतिशत शब्द गोविन्द दासक पद मे हो तकरे महाकवि पर अधिकार द देल जाइक त निश्चिते हमरा लोकनि के आपत्ति नहि

हैत। ओना एहिठाम ई कहब आवश्यक जे पोथी बंगाली विद्वान द्वारा प्रकाशित हेबाक कारणे ओकर शब्द मे पूर्ण परिवर्तन क देल गेल छैक, तथापि वर्तमानोक्त जे रूप छैक से किन्हु बंगला नहि मैथिलीक बेसी लगै छैक। प्रस्तुत अइ उदाहरण स्वरूप एगो पद :—

रति रस-अवश अलस अति पूर्णित
शूलति निभृत-निकुञ्ज।
मधु-लोभे भ्रमर भ्रमरिण भँकर त
विकशित फल-फूल पुञ्ज।
विनोदिनी माधव-कोर।
तमाले वेदल जनु कनक छताविल
दुहु रूप अति उजोर।
भुजे-भुजे छन्द बन्द करि सुन्दरि
श्यामर कोक गुमाय॥
रति-रसे अलसि दुहु तनु दर-दर
प्रिय सखि चामर डोछाय॥
सुवासित वारि झारि भरि राखल
मन्दिर दुहु जन पास
मन्दिर निकट पद-तले शूलति
अनुचरि गोविन्द दास॥

एहि गीत मे 'गुमाय' एगो शब्द अइ जे वर्तमान मैथिली मे प्रचलित नहि। जे मात्र एकरा आधार पर एहि गीत के बंगला मानल जाय त 'कोर' शब्द बंगला मे नहि छैक (कोल छैक) 'भरि'क बदला 'भर्ती' करे राखा होइ छैक, दर-दर नहि छैक, दुहु नहि छैक, उजोर नहि छैक (आलो होइ छैक) करिक बदला 'करे' होइ छैक एवम् प्रकारे जे सभ तरहेँ मानियो लेल जाय जे महाकवि गोविन्द दासक जन्म बंगाल मे भेल छलनि, भरि जीवन बंगाले मे रहलाह एक शब्द मे जे ओ बंगाली छलाह तेयो इ त किन्हु प्रमाणित नहि भ सकैछ जे बंगलाक कवि छलाह। गोविन्द दास जे कवि छलाह त निर्विवाद ओ मैथिलीक कवि छलाह, विद्यापतिक उत्तरीधिकारी छलाह। ओना स्वयं मजुमदार महोदय सेहो मैथिल गोविन्द दासक अस्तित्व के स्वीकारिते छथि तथा हुनक नामे निछाउरबत दू गोट पद शेष मे प्रकाशित कएनहि छथि।

महाकवि गोविन्द दास मैथिलीक कवि छलाह तकर प्रबल आधार इहो अइ जे मात्र मैथिलीए साहित्यक तेहन विशिष्ट परम्परा छलैक, मैथिलीए साहित्य ओतेक विकशित छल जाइ मे पाद लोकनि सं ल क कवि शोखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर महाकवि डाक, कविपति विद्यापति सन युगपुरुष भ गेल छलाह। बंगाल साहित्यक एहन कुनू परम्परा नहि छलैक आ तें इठात् पहिले-पहिल एहन महाकविक प्रादुर्भाव असंभव बुझना जाइछ।

निष्कर्षतः महाकवि गोविन्द दास जे मैथिलीक कवि छलाह ताह मे सन्देह नहि तथापि बंगाली विद्वान लोकनि पूर्वाग्रह मुक्त भ जे हिनकर सम्बन्ध शोध-खोज करितथि त प्रशंसनीय होइत ने कि निराधार 'अपन' कहि प्रचारित क देनाइ। ओनहुना साहित्यक रसिकक लेल सम्पूर्ण विश्वक साहित्य अपने होइत छैक त विश्वक समस्त साहित्यकार के अपन बुझनाइ उदात्त भावनाक परिचायक थिक मुदा पूर्वाग्रह मे परि मात्र अपनहि टा बुझनाइ संकीर्णताक परिचायक।

—मुजतबा अली

लाल बुभुकरक चिट्ठी

श्रीमान सम्पादक जी।

जय मैथिली।

आगा हाल सुरुति ई जे देसकोस मे बलाक अभाव त बुभु के अकालेक स्थिति छैक। सभ ठाम लोक त्राहि-त्राहि क रहल-ए। परञ्च जेना कि कहवी छैक ने जे प्रेत चाइय अशौच, से कहै छी तहिना 'काला-बाजारी' सभ दिन-दुन्ना राति-चोगुला चीज-वस्तुक दाम बढ़ा मालोमाल भेल जा रहल-ए। जेना सभ चीज मे आगि लागल होइक।

सम्पादक जी अहां त जनिते छी जे लाल बुभुकर के अपना सं बेसी अनके चिन्ता रहैत छनि। माथ दुखाइ छइ ककरो आ बेचन रहै छथि लाल बुभुकर। ओना हमरा बुझाहए जे अपनो लाल बुभुकरक एहि पुराना रोगक शिकार भेल छी। ने त हम पुछै छी जे जे विधान सभाध्यक्ष महामहोपाध्याय पंडित प्रवर श्री राधानन्दन भा. ई बाजिह देलथिन जे 'बज्रिका' अढ़ाई हजार वर्लक पुरान भाषा थिक त एहि मे महाभारत केना अशुद्ध भ गेलैक? जे राधाबाबू हमरा सं पहिने सम्पर्क केने रहितथि त हम आर विरलिया के बुझा दितथिन जे 'मैथिली बोली' एकरा सं प्रभावित नहि भेल अइ—असल मे एही सं बहार भेल अइ। श्रीमान अपना ओइ ठाम त बड़ प्रचलित कहवी छैक जे 'बाप रहै पेट में आ पुत गेल गया'।

इ त कहैत जे छली, रामजीक प्रताप सं आ गुरुगंगाक आशीर्वाद सं, ओ मंच रहैक बज्रिकाक जाइपर हिनका बजाओल गेल रहनि, तखन अपने इ आशाए केना कएल जे ओ बज्रिका छोड़ि आन भाषाक स्तवन पाठ करताह? कहवीयो छैक जे जे दिए पाकल आम सह ने होथि ईल भा। मिथिला मे पूर्वापर सं भांड लोकनि होइत आएल छथि, जे भरि सूप के कहै, भरि चंगोड़ी घान देखिते जजमानक सातो पीढीक गुणगान नाभिकुण्ड सं जोर लगा के करैत छथि। तें जे राधाबाबू ओहि परम्परा के उजागर केलनि त वेजाहए की? कम स कम राधाबाबू ओहि श्रेणीक नहि छथि जे खेताह कतौ आ पढ़ा करैत ककरो दुआरिक। ओना अपनेक एहि कथन सं हम भरि छितनी सहमत छी जे राधाबाबू मैथिल छथि, मिथिलांचलक प्रतिनिधि छथि। परञ्च तहिना इहो सत्य थिक जे ओ मैथिल जनताक बल पर नहि 'नोट अथवा सोंट'क बल पर विजयी होइत आयल छथि। दोसर इहो गौवशाही परम्परा त मिथिलांचल के प्रतिनिधिक छनि जे दिल्ली पटना जाइते मिथिला-मैथिलीक विनाशक षडयंत्र रचे लगैत छथि। डा० जगन्नाथ मिश्र त एकर जीविते प्रमाण छथि। तें ज राधाबाबू एहि परम्पराक निर्वाह केलनि त अनुचिते की? हम त ओहि दिनक प्रतीक्षा बड़ व्यग्रताक संग क रहल छी जे राधाबाबूक परम भक्त 'मैथिलीक बयोवृद्ध सेनानी श्रीमान बाबूसाहेब चौधरी' जेना दमदम हवाइ अड़डा पर जा जगन्नाथ बाबू के माला पहिरा एलथिन तहिना हिनको पहिरा अओथिन। पताने मैथिलीक कान्ति दूत सुन्दरपुर वाली पंडित श्री देवनारायण

भा एखन धरि किष्क चुप छथि? उदू के बिहारक दोसर राजभाषाक घोषणा होइते ओ अपन दुआरि पर जगन्नाथ बाबूक चुमा-ओन दहीक मटकुरी ल के केने छलाह से राधाबाबू बेर मे पता ने किष्क पतनुकान नेने छथि?

दोसर बात ई जे राजनीति मे एखन फूटि बजबाक प्रतियोगिता लागल छैक। अपने के त बुभुले हैत जे विश्व विख्यात फुसियाह हेबाक कारणे जगन्नाथ बाबू इन्दिराजीक प्रिय पात्र बनल छथि आ तें मुख्यमंत्रीक सिंहासनावढ़ छथि। राधाबाबू सेहो राजनीति करैत छथि आ तें नहि दिल्ली त पटना के प्रधान सिंहासन पेबाक लिखत त हेवे करतनि। तें जे ओ एहि प्रतियोगिता मे फनलाह-ए त वेजाय की? हमरा लोकनि के त 'तहेदिल' सं आशीर्वाद करक चाही जे यथाशिव राधाबाबूक लिखत पूर होइन आ इहो 'बज्रिका' के बिहारक तेसर राजभाषा घोषित करथि।

हं, आर एगो बात। अपनेक पत्रिका मे प्रकाशित अपन प्रिय वन्धु विश्व वंचकक पत्र अपना नामे देखल। छगुन्ता लागल जे विश्ववंचक जी सन पाकल व्यक्ति एते जल्दी केना 'वंचित' भय गेलाह आ दौआ फेरय पर तुल गेलाह। हमर एगो चटिया लिखने छथि—हजारो साल तक नरगिस अपनी बेतुरी पे रोती है। बड़ी मुश्किल से होता है, चमन मे दीदावर पैदा ॥ से कहबाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे विश्ववंचक जी के एते जल्दी नहि घबरेबाक चाहियनि। जे ओ हमर सलाह मानथि त किछु दिनक हेतु लाल बुभुकरक आखाड़ा पर नंडौटा बान्हि उतरथु आ घेरपनाक अभ्यास करथु। प्रमाण पत्र मेटलाक बाद किछु दिनक हेतु वंचक कुल भूषण डा० जगन्नाथ मिश्रक पाठशाला मे शिक्षा लेथु आ तखन व्यावहारिक क्षेत्र मे उतरथु। अन्यथा खाली विश्ववंचक नाम राखि लेने काज चलनिहार नहि, एहिना सभठाम ठकाइत रहताह। हुनका त भरिसक इहो पता नहि हैतनि-जे मिथिलांचलक गली गली मे जगन्नाथ मिश्रक पडु शिष्य सभ धरि रहल-ए आ अवसर पविते केहनो दिग्गज के चारु नाल चित्त क सकैए। जहां धरि ओ हमरा सलाह देलनिहें, से हुनका बुभुकर चाहियनि जे जे जगन्नाथ मिश्र कुनू अखाड़ाक खलीफा छथि त लालबुभुकर सेहो कुनू अखाड़ाक। एतवे किष्क, घेरपनाक अभ्यास ओहो हमरे मरवादा पर केने छथि आ एहि तरहेँ हमर पटिया भेलह। तें गुप्त कतौ चटिया सं डेराय? दोसर बात, डर त जगन्नाथ बाबू के हेबाक चाहियनि जे कहीं कुली ने छिना जाइन आ ओ त्रिशंकु बका वीचे मे लटकल रहथि। लाल बुभुकर के कथीक डर? ने भारतक नक्शा पर मिथिला छनि आ ने संविधान मे मैथिली—जे छीनेतनि। कहनाक माने मतलब ई जे जखन घरायीयो लोक हथि-आइए नेने छनि त प्रो. कि चोरक डर भगवो तुकओरलोधी रहै? से सम्राटकुजी अपने कने शानभाक जोग दक हमर प्रिय वन्धु के बुझा दियनि से आग्रह।

पत्रोत्तर नहि पेबाक प्रबल आकांक्षी श्रीमान लाल बुभुकर बुभुकर ग्रामवासी

सभा-समिति

कटिहार, २२-२३ मई, १९८२। स्थानीय रामाराम विद्यालयक सभागार मे विद्यापति-स्मृति पर्व समारोह मनाओल गेल। पहिल दिन भाषण, कवि सम्मेलनक आयोजन भेल आ दोसर दिन गीत-नाटक।

एहि आयोजन मे सर्वप्रथम दृष्टि के आकर्षित करैत छल कविपति विद्यापतिक मध्य चित्र जे कलाकार श्री प्रणव कर्मकारक सफल चित्रकारीक परिचयक छल।

दोसर दिन सांस्कृतिक ७-३० सं कार्यक्रम आरंभ भेल स्थानीय कलाकार द्वारा मिथिलाक सांस्कृतिक गीत 'बन-बन मेरे' सं लयबद्ध शैलीकान्त सुधाकान्त, (रहिनमा) श्री उमाकान्त मिश्र (कनकचौर) क अतिरिक्त कविपति स्थानीय कलाकार अपन गत गीत द्वारा लोकक मनोरंजन करैत छल। स्थानीय कलाकार श्री यमुना प्रसाद मंडल, तबला श्री लक्ष्मण भा 'सागर' (कलकत्ता) सेहो एगो गीत गायल।

एहि अवसर पर मैथिली मुक्ति मोर्चा कलकत्ताक संयोजक श्री रामलोचन ठाकुर कविपति के अपन श्रद्धांजलि देत उपस्थित जनसमुदाय सं मोर्चाभाषा मैथिली विकासक लेल सभा होएबाक आग्रह करैत तथा मैथिली के व्यवहारिक रूप देबाक अनुरोध करैत।

मंचक संवादन करैत रहल छल पुनः साहित्यकार श्री जयंत चौधरी। कार्यक्रम सांस्कृतिक १०-३० पर चलेत रहल कारण एकरे कारणेन के विचारक संग देसक छल।

कटिहार सीमावर्ती क्षेत्र होएबाक कारणेन एहि ठामक प्रत्येक छोट-पेठ के बाबू विशेष महत्व लेबैत अछि आ ताई मे कविपतिक स्मृति पर्वक उल्लास भेल हो। परम्व जेना कि देसक लेल अनेकानेक संस्थाक कला एह ठाम प्रत्येक कला अंगुर पर गनल छथि ओ देसक अनेकानेक मे एहि तरहक आयोजन सज्जतापूर्ण क भेनाइ करिबहु प्रशंसीय अछि। हुनक संगे किछ पढ़ि रहल अछि से 'बन-बन मेरे' कलाकार द्वारा लोकनि के विचारक सांस्कृतिक मनाई देने छी ओ आइ-कलिक हुनक लोकनि नहि कमेत छथि। पच्ची देखि गीत-गायन स्वभावतः ककरो अनवोहात लगतक तथा बहरिया के निश्चित छुगुन्ता लगतक। ओना हम आशा करब जे गायक बन्धुक भविष्य मे अपन एहि खावि के दूर करताइ आ एहि संदर्भ मे सजग कार्यकर्ता लोकनि अंगुणताइ। कटिहार क्षेत्र मे मैथिलीक हेतु बहुत कार्य केनाइ छेक-परन्तु सभ सं पैघ काज छेक जे बाट-घाट सं निरपेक्ष भेल मैथिलीक पुनः स्थापना केनाइ। विस्तार अछि जे मैथिली सेनाजी लोकनि स्मृति पर्व पर निमित्त नहि रहि मैथिली के अपन जीवनक समस्त क्षेत्र आ विशेष के बाट-घाट, कोट-कवहरी मे स्थापित करबाक हेतु केले त त सकारात्मक आदेशक अपनाने छथि। प्रयोग छेक—मात्र चेतना आ अर्थ-विश्वासक लगाता छेक आ मैथिलीक विकासक लक्ष्य-संज्ञक बराबर निर्विवाद इष्ट प्रमाणित होएत।

मैथिली

साहित्यिक-सांस्कृतिक विकासक आधार आ से भाषाक बिना संभव नहि। साहित्यक बिना चेतनाक विकास असंभव आ अचेतन लोक सं कुनू संघर्ष वा आन्दोलन सफल नहि भ सकैछ। एहि सम्बन्ध मे माओ त्से तुंग कहै छथि—जनता के बिना जग ओने आन्दोलन केनाइ एबमैचर छोड़ि आर किछु नहि थिक—आ जनता के जगेबा लेल ओकरा अपन संग अनबाक लेल ओकरे भाषा मे सम्बोधन करब अनिवार्य। सांस्कृतिक चर्च करैत ओ आन ठाम कहै छथि 'अलखुत सेनादल बोगस सेना दल थिक आ बोगस सेनादल कहियो युद्ध के पराजित नहि क लैकै'।

शिक्षा आर विकास नहि बीकिको-पार्थक्य होइ सेहो आवश्यक अछि आ ते आवश्यक अछि भाषा। भाषा मनुष्यक प्रत्येक क्रियाक संग जुड़ल अछि। अस्तित्व रक्षार्थ आवश्यक अछि संगहि सर्वांगीण विकासक आधार अछि। एकर व्याख्या करैत स्तालिन कहै छथि—भाषा मनुष्यक उत्पादनक क्रिया सं प्रत्यक्ष रूप जुड़ल अछि। आ मात्र मनुष्यक उत्पादनक क्रिया सं नहि ओकर जिनगीक सभ क्षेत्रक समस्त क्रिया, उत्पादन सं ल क निर्माणक चरम पर्यंत तक। इष्ट कारण थिक जे समाजवादी देश सभ मे भाषा के अधिकार देल गेल्ल तथा ओकर विकासक निमित्त सभ संभव प्रयास केल गेल्ल। रूस मे आन्दोलनक बाद गोरबाजीसे भाषा के, कला मे त अपन लिपि छेक आ ते लिखित साहित्य, लिपि बनवा देल गेल्ल, व्याकरण आ शब्दकोश बना देल गेल्ल आ एहि मे कतेक एहनो भाषा छल जकर ब्यवहारक संख्या हजार मे सीमित छल।

माओ जखन बेर-बेर लेखक लोकनि के जनता आ जेबाक आ ओकरा सं सिल-बाक आग्रह करै छथि त हुनक प्रधान इंगित भाषा दिश रहै। रूसक लेखक 'पब्लिक कोरिन्' सुखा सांस्कृतिक लेखक (National artist) के परिभाषित करैत कहै छथि—सुखा सांस्कृतिक लेखक ओ थिक जे अनिवार्य रूपे अपन लोक संग जुड़ल अछि, ओकर ऐतिहासिक रूप आ पथ सं परिचित अछि समर्पित अछि अपन देशक स्वार्थहित आ अपन अनुभव एवं विचार के अपन मातृभाषा मे व्यक्त करै।

जनभाषा के दबेबाक प्रयास मात्र साम्राज्यवादी धनात्मिक देश मे होइए कारण शोषक-शासक नहि चाहैए जे जनता जागओ। जनता के जगने ओकर आशान सुरक्षित नहि रहि सके छ। शोषणक पहिया गाम भ-वा सके छ। तें दक्षिण अफ्रीका हो वा भारत वा पाकिस्तान—एक दिश सरकार द्वारा जनभाषाक कठोरक प्रयास त दोसर दिश जनता द्वारा अपन भाषाक रक्षार्थ संघर्षक प्रयास रूप देखल जा सकैछ। एहि स्थिति स्वतन्त्रताक नाम पर १५ अगस्त १९४७ क जे एहि भारत मे हिन्दी साम्राज्यवादक स्थापना भेल से ठीक रूसक विपरीत विभिन्न जनभाषा सभ के उदरस्थ कर' लागल। एहि भू-भोड़ भाषाक विकासक नाम पर कोटि-कोटि टाका पाइन जकां बह्य लागल आ

जनताक खून पसेनाक बमबाइ ओकरे कंठ मोकवा लेल खर्च होइत रहल। मैथिलीक संगहि नेपाली राजस्थानी कोंकणी, डोगरी, संथाली आदि कतेको भाषा एहि साम्राज्यवादक प्रत्यक्ष शिकार भेल आ एहि सं मुक्ति लेल, अपन अस्तित्व रक्षार्थ संघर्षरत अछि। तें आइ प्रत्येक चेतन वर्गक आ विशेषक साहित्यकार वर्गक ई प्रधान कर्तव्य भ जाइ छ जे ओ प्रत्यक्षतः हिन्दी साम्राज्यवादक विरोध करय आ एहि समस्त भाषाक-मुक्ति संघर्ष के तबल सफल बनेबाक सभ संभव प्रयास करय—सभ भाषाक प्रतिनिधि ल क संयुक्त-मोर्चाक निर्माण करय अन्यथा मुनि-बीक सुखा जकां साम्यवाद-समाजवादक ट ट काबिरे रहत, कार्यत किछु मेनिहिर नहि।

—रामलोचन ठाकुर

(अप्रैल-१२ सं सभार)

विम. १९८२

बाल गीत

चेत कबड्डी

चेत कबड्डी रमना
सबहक पक्षि अरुना
सभ अपने केओ नहि अरुना
मायक सन्तति छोट-पेठ के
के अछोप के बभना।
छोट-पेठ कहि मागद लगावे
थिक ओ सत्यानाशी
कान ने कखनो दीहें तों सभ,
सुन बेचन, सुन काशी
कुटने घर गमारो लुटै
रखिहें मन, मन रखना॥

एह माय के कष्टा सन्तति
केओ गोरे केओ कारी
केओ पढ़ा मे महाबन्धगर
केओ सुसकौलक टारी
माइक सिनेह समाने सभ ल प
आर समाने बेदना॥
—राम लोचन ठाकुर

मैथिली पोथी/पत्र कीनू आ पदू
नेपाल सं प्रकाशित मैथिली द्वा मासिक
अर्चना
संपादक :—राम भरोस कापड़ि भ्रमर
सरस्वती सदन, जनकपुरधाम मैथिलि + हिन्दी मासिक
मिथिला दीप
सम्पादक : बच्चन बिहारो
१४६, ललितपुर कोठोनी ग्वालियर-४७४००६

देसिल बयना चन्दाक दर :-

१ प्रति ५०) पइसा
१ बर्षक ५) टाका
५ बर्षक २०) टाका

पाइ पठेबाक पता :-

श्री जनार्दन झा,
१७६/६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

अवगोदय प्रकाशन, ३३/४, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेख श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पारितोष अर्पित प्रिन्टिब ३२ वी वृन्दावन वैशाख-२०३० कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक—श्री जनार्दन झा

समिति रचना

वर्ष—२ अंक—१०-११

जुलाई अगस्त, १९८२

मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

वाजव धिक अपराध

३१ जुलाई १९८२ स्वातंत्र्योत्तर बिहारक इतिहास मे एगो अविस्मरणीय तिथिक रूप मे अंकित होएत। करहवी छेक जे कुकुचिये नाम कि सुकुचिये नाम। से बिहारक वर्तमान सरकार, जकर नेता मातृभूत-भ्रातृभूत डा० जगन्नाथ मिश्र छथि, भनहि कुकुचि सुकुचि नहि क सकल हो; परञ्च एकर कुकुचिक से सूची बनाओल बाबू त निश्चित भारतीय संविधान सँ मोट पोषा तैयार भ सकैछ। एहि मे कून पैघ आ कून छोट लेहो निर्णय केनाइ सहज तकिन्हू नहि होएत। धर्म-सम्प्रदायक संग भाषा के जोड़ि मुलमानक भाषा उर्दू कहि तकरा बिहारक दोसर राजभाषा बनओनाइ एहने एक कुकुचि छल वा कही घृणित अपराध छल, जकरा एखनो कम सं कम मिथिलाक जनमानस बिसरि नहि सकलए। एमहर ३१ जुलाई के एगो प्रदर्शन मेले विधान सभा मे मात्र ५ मिनटक आ नव विधेयक पास भेल सरकारक आलोचना केनाइ देखनीय अपराध। माने प्रेसक स्वाधीनता के गद्गदिन दबा देल गेल। ओ प्रेस जकरा गणतंत्रक प्रहरी कहल जाइछ। आ जखन प्रहरीए नहि रहत तखन गणतंत्रक स्थितिक अनुमान सहजहि कएल जा सकैछ।

ओना त भारतीय प्रेसक चरित्र आ विशेष के स्वाधीनताक पदचात, बड़ उज्ज्वल नहि रहलकए। ई उएह प्रेस थिक जे राजकुमारक लरघीक रंगक वर्णन करैत नहि अबाइत रहलए आ महारानी साहिबाक नुआक रंग-पाड़िक वर्णन मे पेजक-पेज रंगि दैत रहलए-परञ्च एकर विपरीत, भनहि तकर संख्या नगण्य किएक ने होइक, किछु प्रेस अवस्ते अइ जे राष्ट्र आ लोककेँ सर्वोपरि मानैत रहलए आ जखन कखनो ओकरा पर प्रहार भेलक, ओकर विरुद्ध काज भेलकए त ओ सजग प्रहरीक रूप मे 'जगले रहब' टाहि दैत रहलए। आ निर्विवाद एहने प्रेसक मुहपर ताबा लगेबाक प्रयास थिक बिहार सरकार प्रेसविधेयक—जे 'काला कानून' क रूप मे चर्चत भ रहलए।

करहवी छेक जे कनाइ केँ कनहा कहने ओकरा लगेत छेक। परञ्च ई मात्र करहवी नहि कइत सत्य अइ। तें जे जगन्नाथ मिश्र भगवती पर १०८ छांगर केँ चूड़ा आ ओकर रक्त मे स्नान केलनि—कुनू तांत्रिकक सुझाव पर आ से प्रेतबला छापि देलकें त हुनका लगनाइ स्वाभाविके। स्वाभाविक छेक जे हुनक सुपुत्री केँ फल्ट कलास फल्ट मेटवो ने केलनि आ त ई लेल ओ जते चक्रचालि चललनि सभ प्रेसबला प्रकाशित क जन-जन तक पहुँचा देलकें—तें प्रेस पर खिसिनाइ। ई उएह प्रेसबलका काज थिक जे हुनक छोट सं छोट किरदानी केँ देखार क देख। (विशेष विवरणक लेल देखू—देसिल वयना—जून, १९८२—डा० जगन्नाथ मिश्र उर्फ थैलीनाथ मिश्र प्रकरण) तें भरिसकें जगन्नाथ बाबू सोचने होथि महाराष्ट्रक भूतपूर्व मुख्य मंत्री अंतुलेक स्थिति सँ उबरबाक हेतु प्रेसक मुँह बन्न केनाइ छोड़ि दोसर उपाय नहि।

ओना बिहारक ई कटना नव नहि कइत जा सकैछ। एहि सँ पहिने तमिलनाडक सरकार एवं उड़ीसा सरकार एहि तरहक आइन बना चुकल। उड़ीसा मे त एक पत्रकारक स्त्रीक संग जाइ बर्बरताक संग बलात्कार कइल-गेल ओ ओकर हत्या कइल गेल। तकर चर्चे की? परञ्च जगन्नाथ बाबू एमहर किछु दि. सं प्रेस पर बड़ बेसी खिसिआइल छलाह। गत वर्ष त ओ कम सं कम एक दिनक लेल आर्यावर्त इण्डियन नेशन केँ दखल कइए लेने रहथि। परञ्च जखन एहि सभ उपाय सँ ओ हारि गेलाह त गत मार्च मे तीनटा अपसर केँ तमिलनाड पठओलनि—ओइठाम प्रेसक मुँह केना बन्न भेलक से उपाय जनबाक लेल आ जुलाईक शेष दिन ओकरा कार्यरूप मे अनलनि।

आनठामक अपेक्षा बिहार सरकारक एहि चालिक विरोध बड़ तीव्र भेलकए आ भ रहलकए। १ अगस्त के बिहारक पत्रकार लोकनि जगन्नाथ मिश्रक बहिष्कार क निर्णय लेलनि। २ अगस्त के लगभग १०० पत्रकार केँ पत्रकार गैलीक पास रहितों संसद मे नहि प्रवेश करय देल गेलनि आ लठिआओल गेलनि। ६ दिसम्बर १९८० केँ मैथिली सेनानी लोकनि अपन वाकस्वाधीनताक दावी मे प्रदर्शन केने रहथि त एहिना लठिओल गेल छलाह। २ अगस्त केँ एहि स्वाधीनताक दावीदार प्रेसकमी लोकनि अन्यायी जगन्नाथी लठैत द्वारा लठिआओल गेलाह। ३ अगस्त केँ एहि करिया विधेयक विरुद्ध मे लोक सभा सँ समस्त विरोधी नेता बाहर भ गेलाह। विदार विधान सभा आ विधान परिषद मे तुमुल नाद चलैत रहल। ५ अगस्त के बिहारक पत्रकार, छात्र-युवा वर्ग, राजनैतिक दलक नेता-कमी (विरोधी), शिक्षक, अमिक संगठन सभ के सभ बाट पर पहरा एहि 'काला

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
छाहि-जारि सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

लोक कथा

एकटा रहथि राजा

एकटा रहथि राजा। ओ जेहने परा-कमी रहथि, तेहने प्रजा वसल। राजाक नाम-यश अपन राज सँ बाहरो पसरल छल। परञ्च सभ रहितहुँ राजाकेँ मानसिक शान्ति नहि छलनि। कारण तेसरपन बीति रहल छलनि मुदा कुनू सखा-सन्तान नहि भेलनि। एकरे चिन्ता मे राजा-रानी दुनू बेकती सतत खिन्न रहैत रहथि।

एहिना एक दिन दुनू गोटे उदास देखल रहथि ता एगो बाबाजी जुमलाह। राजा खबरि पबितहि बाहर जा बाबाजीक नीक वक्तो स्वागत कइलनि आ इच्छित दान देबाक बोधवा केनि। बाबाजी एनीक हाथे एक मुट्ठी अरबा चाउर-टा लेवक इच्छा प्रकट केलनि।

जखन रानी सप सँ एक मुट्ठी चाउर बाबाजीक भोड़ी मेँ दैत छलथिन त बाबाजीक नजरि रानीक उपर एकटक लागल रहल-परञ्च राजा-रानी धार्मिक प्रवृत्तिक हेतु कारणे एकरा अन्यथा लेवे किएक करितथि। बाबाजी चाउर केँ अपन भोड़ी मे रखैत राजा सँ बजलाह—हे राजा! हम अहाँ लोकनिक मनक व्यथा बुझैत छी। तें हम जेना कहैत छी तेना करू। आहाँ लोकनि केँ निश्चित सन्तान लाभ होएत। परञ्च स्मरण राखू जे इ बात तीनू आदमी छोड़ि चारिम नहि जानि सकय। अगिला मंगल दिन बेखन अहाँ अपन गाछी जाएब आ सिनुरिया गाछ सँ एगो आम तोड़ि लायब। मन रहय जे आम माटि पर नहि खसय। दहिना हाथे भट्टहा फेकर आ बाँम हाथे आम लोकन आ ओहिना नेने आइन चलि आयब। बाट मे कतबो केबो टोकय त बाजी नहि। रानी मा ओ आम अपन खोंछ मे ल ओ फेर सिलौट-लोढ़ा सँ ओकरा कुच्चा बना खा लेती। आर एगो बात—पूर समय भेनहि जे प्रसव करतीह ताह मे प्रथम त बालक जन्म लेत, किन्तु दोसर एगो शंख होएत। ओइ शंख केँ अहाँ घो-पोछि पवित्र कइल पर राखि देवेक आ रोच संस्कारन ओकरा घुन-दीर देवा देब करिऐक। अपन बाबाक शेष मे हम जखन धुरव त ओ हमरा द दी। हमर कहल मे मिसियो भरि अन्यथा नहि हो—ने त भयंकर अतिष्टक संभावना।' एतबा कहि बाबाजी विदा भ गेलाह।

कानून' क विरुद्ध अन आवाज बुलन्द केलनि आ ११ अगस्त 'काला-दिवस' क रूप मे पालन करबाक निर्णय लेलनि।

आन्दोलनक चिनगारी नीक जकाँ सुनगि रहलए। आन्दोलन कर्ता लोकनि अपना केँ जेजाय सं जेजाय स्थितिमे लेइत रहवाक लड़ाइ केँ विजयतोरण धरि ल जेबाक लेल प्रस्तुत क रहलाहए। ओमहर लाठी-गोलीक बल पर चलेबला सरकार सेहो अपन लाठी मे तेल लगा रहलए वन्दुक मे गोली भरि रहलए। बेसी त भविष्य कहत—परञ्च ई धरि सत्य जे जनान्दोलनक समक्ष केहनो अन्यायी सरकार केँ झुक' पड़लए त जगन्नाथ मिश्र कुन खेतक मुरे छथि। 'जय प्रकाश-आन्दोलन' केँ एखनो लोक बिसरि नहि सकलए। तखन बिहार के पथ प्रदर्शक कहल गेल छलक। कि बिहार अगन एहि खयाति केँ पुनः पाबि सकत ?

सन्तान सुखक कल्पना मात्रे सँ राजा-रानीक आनन्दक सीमा नहि रहल। अगिला मंगल केँ जेना-जेना बाबाजी कहने रहथिन राजा केलनि आ रानी गर्भवती भेलथिन जे थोड़े दिनक बाद स्पष्ट परिलक्षित भेल। समय पुरला पर रानीक गर्भ सँ एगो दिव्य राजकुमार आ दोसर शंख जन्म लेलक। नगर उत्सव सँ दलमलित भ उठल। फेर नेना दिनानुदिन पैघ होइत गेल। एहि तरहें दिन जेना बीतैत गेल से हुनका लोकनि के ख्यालो ने रहनि।

किछु दिनक बाद कवन नेना छेदगर भेलक आ अल साइर लगेलेक त एगो अजगुत भेल। राजा-रानीक संचार लागि सभ दिन हुनक सूतबाक घर मे राखल रहनि। एक दिन जखन कने विलम्ब सँ ओ लोकनि धुरथि त देखै छथि जे रानीक थाड़ीक भात छिटल रहनि—जेना कुनू नेना छिटि-छाटि क खेने हो। दुनू गोटे छगुन्ता मे रहथि परञ्च निस्तुकी हेवे ने करनि। एकर बाद सँ ई कम प्रायः चलैत रहल। अचरजक बात ई जे दिन पर दिन भात बेसी खलिआय लगलक। परञ्च ई बात ओ लोकनि बजवो ने करथि।

किछु दिनक बाद राजा कतौ बाहर गेल छलाह। एक राति रानी पलंग पर पड़ल रहथि आ खवासनी संचार लगा गेलनि। हुनकर आँखि कने लागि सन गेल छलनि ता देखलनि जे एगो नेना पीढ़ी पर बेसि क खा रहल अइ खेलाक बाद गिलास सँ कने पानि पीवि आ हाथ धो ओ शंख मे घुसिया गेल। रानी केँ भेलनि जे ओ भरिसक सपना देखलनिहुँ मुदा उठला पर संचार देखि सपनाक वास्तविकता पता चललनि—परञ्च फेर ओ चुपे रहलीह। आनदिन त दुनू बेकती एके थारी मे खा छैत छलीह—से आइ एके थारी हेबाक कारणे हुनका मुखले रह्य पड़लनि।

दोसर दिन कवन राजा जुलहाह त रानी सभ इतना कइलनि। दुनू बेकती मौलि बोवना कओरनि आ ओइ राति बरे मे मुकाएल रहल। फेर कवन खवासिन संचार लगाक केबाइ बन्न क चल गेल त थोड़ेक कालक बाद देखै छथि जे ओही शंख सँ एक दिव्य नेना बहार भेल आ आसन पर बेसि भोजन क रहल ए। जखन

● जय मैथिली

ओकरा थोड़ेक खायल भ गेले त राजा दोग स बहरा लपकि के नैना के पकड़लिन। ओ अकचकासन गेल। राजाक संगदि रानी सेहो जुमि गेलीह। राजा मुखलिन—अहाँ के छी बाउ ? एना चोरा के रोज किएक संचार अइटा देत छी ?

नैना बाजल—हम आन केओ नहि—अहीं लोकनिक छोट संताप थिकी—जे शंखक रूप में जन्मल रही। रहल बात संचार अइठेबाक—से संतानक अइठ माँ के त नहि लगवाक चाही। तै हम समदिन माइएक धाडी मे लाइत छी। आ चोरा क त हमरा लाइए पड़त—शंखक लेट कतौ संचार लगलै ? माइक दूबो त हम राति मे चोराइए क पीवैत रहलहुँ आ माँ ओकरा सपना बुनैत रहलीह।

—किन्तु आव त हम अहाँ के शंख मे नहि बाय देव। रानी बजलीह।

—से तइखन हैत जे शंख के तुका क कुनू पेटी-बाकस मे बज क दियौक। ओना महात्माजी त तयो बुझिए जेताह—तखन ?

‘तकर भार हमरा पर अइ’—राजा बजलाह।

ओइ दिन सं बाउक बाहरे रहय लागल परउच बात फेलि नहि जाय तें राजा दुनू बाउक के महलक भीतरे खेल-धूप, पढ़-लिख के व्यवस्था केलनि। जे जे दिन बीतेक एक दिन सं राजा-रानी के बड़का सं छोटका नैनाक संस्कार आ तेजस्विता पर प्रसन्नता होनि तहिना महात्माजीक आगमन सं सम्भावित अनिष्टक बात सोचि चिन्ता सेहो। आखिर एक दिन महात्माजी आविए गेलथिन आ अपन धरोहरक याचना केलथिन। राजा-रानी दुनू बेकती हुनका पूर्ण अद्राक संग प्रणाम केलनि आ शंख आनि हाथ मे देलथिन। महात्माजी शंख हाथ मे लिहलि बुझि गेलाह आ आखि छाल करैत बजलाह—राजा ! बात त एहन नहि छल। शंख खाली अइ’ तें एहि संज सं जे बड़ा एलहो—तकरा शिब हमरा सोभा उपस्थित करू ने त हम शाप देव।

बेचारे राजा के त काटू त शोणित नहि भट द दुनू नैना के उपस्थित करैत बजलाह—हे महात्मा, इएह दुनू संतान थिक—अपनेके जे इच्छा हो चुनि लिअ।

महात्मा छोटकाक हाथ पकड़लिन आ उठि विदा भेलाह। राजा-रानी उदास मने घर जा पड़ि रहलिन।

ओमहर महात्मा जी ओइ बालकक संग गाम-घर सं बहराइत एगो छोट सन पांतर मे पहुँचलाह, जाइठाम सं बाउ दू दिस जाइत रहैक। महात्माजी बालक के पुछलथिन—बाउ, एहिठाम सं ई दुनू बाउ हमर कुटी बरि जाइए। एगो ६ मासक आ दोसर बरल दिनक बाउ छैक। छ मासक बाउ मे पर्वत-पहाड़, नदी-नाला त छैके संगहि बाघ-सांपक से हो भय छइ, जखन कि बरल दिनक बाउ निष्कण्टक छैक। आव अहीं कहू जे कून बाटे जाइ ?

महात्मा जी छए मासक बाउ चलू ने। बाघो-सांप देखबाक अवसर भेटत आ जल्दी पहुँचियो जयब। बालक बाजल।

महात्माजी आश्चर्यित होइत बालक दिस देखलनि आ बजलाह—चलू, हमरा लोकनि आपस चली। बालक चतुर छल आ

ओकर दाब लहि गेलैक। महात्माजी ओकरा संग फेर राजाक ओइठाम पहुँचलाह आ छोट नैना के राखि जेठ जनक माळ केलथिन। शापक डरे भीतु राजा जिना कुनू आनाकानी केनहि महात्मा जीक प्रस्ताव स्वीकार कए जेठजन के संग क देखलथिन। महात्मा जी ओकरा ल विदा भ गेलाह।

फेर जखन ओइ पांतर मे पहुँचलाह त महात्माजी ओकरो सं उएह पत्र केलथिन। जेठका राजकुमार कने ठगोके स्वभावक छल ते बरल दिनक बाउ जेवाक स्वीकारलक। महात्माजी प्रसन्न भ विदा भेलाह।

महात्मा जीक आश्रम एगो बनचोर जंगलक बीच विशाल महल छल। एगो सुन्दर कमरा मे राजकुमार के ओ राखि देखलथिन आ आदेश देलथिन जे ओ अवसर महलक बाहर नहि जाए। जे जेवो कार्य त सभ दिस जाए मुरा दक्षिण दिस नहि जाए।

महात्माजी सभ दिन प्रातःकाल स्नान पूजा क क बहरा जाथि आ फेर दोसर-तेसर सोभक आपस आवथि। एहि बीच राजकुमार सभ दिस धूमय परउच आदेशानुसार दक्षिण दिस नहि जाय। एक दिन ओकरा हठात कि कुल्हेक की ने, ओ दक्षिण दिस चल गेल। दक्षिण दिस एगो विराट बड़क गाछ रहैक आ ताइठाम एगो पेघ इनार। इनार मे हुकरी देते ओकर अचरबक ठेकान नहि रहलैक। इनार मे पानि नहि रहैक—खाली लोकक माय भरल रहैक। राजकुमार के देखिते मुँड सभ ठहाका मारि हंसय लागल।

हंसबाक कारण जिहासा केला पर मुँड सभ कहलैक—बाउ, दू दिनक बाद तोरो इएह गति हेतह—तें हमरा लोकनि के हंसी लागि गेल ए। जे महात्मा तोरा अनलकहे, से असल मे कसाइ थिक। ओ एहिना गाम घर सं लोक के बन्ना क अनेछ आ महाकाळीक समस बलिदान करैछ। मुँड के एहि इनार मे च देछ आ देह के माउस राखि देवी के भोग लगवैछ आ अपनो लाइछ।

—मुदा एहि सं बचबाक उपाय ? राजकुमार आकुलताक संग पुछलैक।

मुँड सभ बाजल—बचबाक उपाय छैक अवस्से, जे तोरा सं पार लाग ओ तखन। परस शनि छैक आ महात्मा भरि दिन त्रत राखत आ पूजा-पाठ करत। सांभखन ओ तोरा बजओतह—स्नानादि करा नव वस्त्र पहिरा के। पूजा जखन भ जेत त देवी प्रतिमाक दहिनाकात बड़का कराह मे तेल टहकैत रहतैक। ओ तोरा देखे लेल कहत जे बाउ देखहक त तेल गर्म भेल वा नहि। तौ जखन मुँही सुका कराह मे देखवह तखन देवीक पयर लग मे तकरारि राखल छैक ताइ सं तोहर माथ छोपि लेतह। तें तोरा जखन ओ तेल देखय लेल कहत त तौ कहियहक जे केना देखल जाय से कने दुभा देखुन। ओ तोरा देखवैक लेल अपन पूरा गरदिन सुका क कराह मे ताकत आ तो कुर्ती सं तकरारि ल क ओकर गरदिन पर प्रहार करिह मन राखी जे एके छओ मे ओकर माथ देह सं कात भ जाइ आ माथ के बाम हाथे लोकि लिह आ काळीक पयर पर राखि दियहुन। फेर ओकर शरीर के कराह मे द टुकड़ी-टुकड़ी काटि खूब नीक

जकां भुजि देवी के बड़का थाड़ी मे भोग लगा दियहुन। सभ काज विधिवत भेने देवी प्रसन्न भ वरदान माँह लेल जे कहथुन त पहिल वरदान हमरा लोकनिके जीवित करबाक मछिइ, दोसर देवी के एहि अभि-शत जगह छोड़ि आनठाम चलि जाइक, आ तेसर अपन जे मन होअ। तीन स बेसी नहि देवाक चाही।—संगहि मन राखी जे महात्मा बड़ पहुँचल छथि—तोहर माव-मंगिमा सं ओ कुनि ने बायुन। आव तो बाह। हमरा लोकनिक दुनूकामना तोरा संग अइ—नीके ना रहने फाव राति मे भेट होइत।

राजकुमार अपन कमरा मे घुरि आयल। ओइ राति ओकरा नीक नहि भेलैक। ओ बड़ व्यग्रता सं शनि दिनक बाउ जोहय लागल। परउच ओ तते सतर्क छल जे महात्माजी के एहि सभक भनको नहि लगलनि।

अन्ततः शनि दिन एले। महात्माजी भरि दिन पूजा पर बैसल रहलाह। राजकुमार के सेहो उपास कराओल गेलैक। आ ठीक जखन सोनं पड़लैक—महात्माजी स्नान कए गेवआ वस्त्र धारण केलनि आ राजकुमार के सेहो स्नान कराव नव वस्त्र पहिरवा देखलथिन। ओ कर पूजा पर बैसलाह त राजकुमार के सेहो अपना दगल मे बैठा केलनि। लगभग पहर भरि पश्चात महात्मा जी ध्यान तोड़लनि आ राजकुमार दिस देखैत बजलाह—बाउ देखियौक त जे कराहक तेल गर्म भेल वा नहि। राजकुमार के त जेना वाण मारि देखलैक। किन्तु ओ अपना के एहि स्थिति सं मुकाबला करैक हेतु तैयार केनहि छल। भट द बाजल—त, भ गेलैक। महात्मा जी ओहिना शान्त भावें कहलथिन—कने उठि के देखियौक ने।

राजकुमार उठि के दूरहि सं देखि बाजल—लौलैत छैक।

‘एहिना लोक देखैत छैक ?’—महात्माजीक शिकायत भेलनि।

राजकुमार केश गम्भीरताक संग बाजल—समा करव, हमरा नहि बुझल अइ। एक खेप जे अपने देखा दी त फेर भूल नहि होइत।

महात्माजी तरुआरि सं आँखि हटा राजकुमार के देखैत आस्ते सं उठलाह आ कराहक लग जा पूरा गरदिन नमरा कराह मे तकैत बजलाह—हे एना.....

एहि बीच राजकुमार तरुआरि ल हुनक माथ देह सं फराक क देखल। ओ अपन बात पुराओ ने क सकलाह। आ जेना मुँड सभ कहने छलैक बाम हाथे माथ छोड़ि देवीक पयर पर राखि देखलैक। भरि दिन छहल रहलक बादे जानि ने कथय सं ओकरा ओतेक कुर्ती आ जोर आवि गेलैक। ओ महात्माजीक छपट करैत देखलै उठा कराह मे च देखल आ ओही मे तकरारि सं छोट-छोट टुकड़ी काटि नीक जकां भुजि थाड़ी मे ल भगवतीक सामने वरसि देखल आ कलजोड़ि बाजल—मां भगवती जे कुनू गलती भेल हो त नैना जानि क्षमा करव अहाँ के प्रसाद परसल अइ—भोग लगाउ।

एतवा कहिते एक अद्भुत शब्द सं मंदिर गनगना गेलैक आ सभ दीप मिभ गेलैक। राजकुमार डरे संवस्त—जाइठाम

छल ताहीठाम कल जोड़ने ठाढ़ भेल रहल। कनेके कालक बाद जेना भगवतीक शब्द ओकरा सुनाइ पड़लैक—आइ सरिपहुँ तौ स्वादीष्ट मांस भोग लगओलै। बहुत दिनक पश्चात् आइ मन तुत भेल। आइ तोरा जे वरदान लेवाक छौक माछि ले।

राजकुमार बाजल—मां ! जे सरिपहुँ एहि अंगोच पर प्रसन्न छी त हमरा तीन गोट वरदान दिअ। पहिल त ई जे महात्मा जी द्वारा बलेक लोक के काटि अहाँक भोग लगओल गेल-ए आ ककरा लोकनिक मुँड दक्षिणवर्षा इनार मे पड़ल छैक ओकरा सभ के बीया दियौक। दोसर—अहाँ एहि अभिषिक्त मंदिर के छोड़ि आन ठाम चल बाउ आ तेसर जे जखन हमरा कुनू गाढ़-विपत्ति पड़य आ अहाँ के स्मरण करी त अहाँ उपस्थित होइ।

भगवती कहलथिन—तहिना हैत। आ फेर एकटा विचित्र सन शब्द भेलैक—दीप सभ अपनहि जरि गेलैक आ चारुभर ततेक इजोतसन भ गेलैक जेना दिन होइक। राजकुमार ओहिना मंदिर सं बहरा इनार लग गेल त सभ ओकर स्वागत केलक आ बहार कनेके लेल दौरीक व्यवस्था करावक आग्रह केलक। राजकुमार के मंदिर मे गेल आ कनेके तकलक बाद एगो मोटार रस्ती भेटलैक—बाइ लक सभ के ऊपर केलक। सभ ओकरा घेरि लेलक आ जेना एगो अभिनव उत्सवक रूप ल लेलक। देखैत-देखैत राति बीति गेलैक आ पूवकात मे सुबज भगवान उगि एलथिन। तखन राजकुमार के भूखक अनुभव भेलैक। सभ केओ नीलि मंदिर मे आयल—भोजन बना बनभोज केलक। सभक संग परिचय-पात भेलैक—तखन राजकुमार जनलक जे ओ सभ कुनू ने कुनू देशक राजकुमार छलैक। सभ बाइकाल बकरा अपना ओइठाम जेवाक नोट देखलैक। छगे ने घोइयाला छलैक बाइ मे महात्माजी विभिन्न देश सं नीक बोझा संगर केने छलह। सर्व प्रथम राजकुमार के मनोदुःख बोझा चुने लेल कहल गेल आ फेर सभ के सभ एक-एक टा बोझा पर चढ़ि अपन-अपन देश विदा भेल। राजकुमार सभ के विदा क सोचलक—घर त जेवे करव, किएक ने आर कने दिन-दुनियां देखल जाय। ई सोचि ओ बोझा पर चढ़ि विदा भेल—जेम्हरे घोड़ा ल जाय। ओइ अभिशप्त जगह पर एक मात्र घोड़ा—जे ककरो कान मे नहि लगलैक—घात चढ़ए लागल.....

बाइत-बाइत जखन ओ कनेके दूर गेल त बाउ मे दू गो बाघक बन्ना खेलाइत भेटलैक। जेठका राजकुमार सं कहलैक—हे राजकुमार, हमरो अपना संग नेने ने चर।

राजकुमार बाजल—तौ छै त बाघ, के जानप कहीं हमरे पर ने चोट करे।

बाघ कहलैक—हे राजकुमार, हम बाघ क बन्ना अवस्ते छी—मुदा विश्वासपात नहि करव। बेर विपत्ति मे मदतिए करव।

राजकुमार के मन मानि गेलैक। ओकरा घोड़ा पर बैसा छलक आ विदा भेल। छोटका बाघ उदास भेल देखैत रहल।

ओ सभ आर जखन किछु दूर गेल त एगो गाछक डारि पर दू गो बाघक बन्ना

खेलाइत छल। फेर जेठका बाजल—हे राज-कुमार हमरो अपना संग नेने चलने। छी त हम बाभ विदे, मुदा तयो कहियो काज मे लागि सकै छी।

राजकुमार ओकरा दिव देखलनि आ कहलथिन—चल आ बेस एही घोड़ा पर आ ओकरो बैसा लेलनि। छोटका फेर खिन्न मने हिनका लोकनिक बाट दिस तकैत रहल।

जाइत-जाइत जखन सोभ पड़ि गेलैक त राति-बीच विश्राम करै लेल राजकुमार एगो गाम मे पहुँचल। गामक कात मे एगो धोबीक घर रहैक। धुइछुइछा एगो बुढ़िया के ठाढ़ देखि ओ कहलथिन—गे मौसी, राति बीच हमरा रह्य देवे। भोरे फेर त चलै जायव।

बुढ़िया बाजल—रह्य किएक ने देव। अहाँ कि हमर घर उठा कल बाएव। बड़ भाग सं ककरो ओइठाम केओ अन्धगाम अवे छइ। रहू ने।

बुढ़िया एगो पटिया आनि आबन मे ओछा देलकनि आ एक छोटा पानि आनि देलकनि। राजकुमार गोठला घरक ओसारा मे घोड़ा के बाँधि हाथ-पहर पो पटिया पर बैसि गेलाह। कात मे बाघक आ बाभक बच्चा पड़ि रहलनि। बुढ़िया भानव-भात मे लागि गेल। मुदा ओ जते बेर घर जाय त कानय लागय आ आबन आवय त हंसय लागय। राजकुमार के ई देखि बड़ छगुन्ता लगलनि। अन्ततः ओ पुछि देलथिन—मौसी एगो बात-पुछियौक ?

—किएक ने पुछव ? बुढ़िया बाजल।

राजकुमार पुछलथिन—तौ जते बेर घर जाइ छै त कानय लगै छै आ आबन एने हंसय लगै छै—एकर की कारण ?

बुढ़िया बाजल—बाउ, अहाँ एक दिनक पाहुन छी, ई सभ बुझि क की करयैक।

राजकुमार के बड़ हठ केला पर बुढ़िया कहलनि—बाउ, हमरा एके गो बेटा अइ, जेकर काहि गौना छइ—आइ बरियाती गेलै। त ओही खुशी मे हम जखन आबन अवे छी त हंसै छी। मुदा परस हमर बेटा देख पेट मे चलि जाइत सेह सोचि क कनेत छी—जखन घर जाइ छी।

राजकुमार आश्चर्य प्रकट करैत पुछलथिन—देख पेट मे ? ई देख की मेलेक ?

बुढ़िया बाजल—से अहाँ केना बुझवे। बुझैत छैक एहि नगरक लोक, जकर सँ बेटा ओकर पेट मे पड़ि चुकल छैक। राजा क कानूत छैक—बेरी-बेरी सभक घर सं एक गोटे क सभ दिन देख्य पेट मे जेतैक। से नहि भेने त देतबा एके दिन मे कतेको के खा जाइ छै।

राजकुमार कहलक—ठीक छै—परस तोरा बेटाक बदला मे हम जाएव, मुदा ई बात तौ कतौ बाजै नहि, आ ने एखन सं कनवे कर।

बुढ़िया कनेत बाजल—से कोना हैत बेटा—अहूँ त ककरो बेटे हैवे ने। हम अपन बेटा खातिर अहाँ के कोना मरवा देव ?

—आइ सँ हमरा तौ अपने बेटा बुझै। हम तोरा मा कहबौक। मुदा ई गप्प दोसर केओ नहि बुझै।

बुढ़िया मानि त गेल मुदा ओकरा मन मे कचोट रहवे करैक। ओमहर राजकुमार

एक बेर फेर वध्रताक संग परसूक बाट जोइय लगल। बुढ़िया जखन चैन सं घर मे भानस करय लागल त राजकुमार बाघ सं पुछलनि—बाउ, आब कहै—देख सं केना सामना करबिही ?

बाघ बाजल—हम लपकि क ओकर बाइ घ लेवे आ टस त मस नहि होमय देवे।

बिनु पुछने बाभ कहलकनि—हम त फट द हुनू आखि ए फोड़ि देवैक।

राजकुमार बाजल—तखन हमरे तब-आरि सं ओकर घंट कटैत कते देरी लागत। मुदा सभ केओ सावधान भ जाइ जो।

राति मे भोजन भात क सभ सूतल आ भोर मे राजकुमार घूमि-फिरि नगर दर्शन केलक आ फेर राति मे बुढ़ियाक आबन जा विश्राम। भिनसरे डिगडिगिया पड़लैक जे आइ जकरा पारी छैक से पुवरिया सोल-रिक भीड़ पर देखराह लग ठीक समय पर चल जाय ने त राजा ओकरा बाँडे-बच्चे भाकरी भोका देथिन।

राजकुमार तैयार भेल। घोड़ा पर बाघ आ बाभ पहिने सवार भेल आ ओ बुढ़िया सं आशीर्वाद लेलनि। बुढ़िया कनेत बाजल—बेटा हमरो अइदा ल क तौ जीवै-मुदा मन कहैत छलै जे ओ सुरत नहि। राजकुमार विदा भेल—पुवरिया पोखरि दिस।

राजकुमार जखने पोखरिक समीप पहुँचल त ओकरा भयंकर गर्जन सुनाइ पड़लैक जकरा ओ देख्य गर्जन मानि आर सतर्क भ गेल। जखने भीड़ पर पहुँचल त ओ विशालकाय विकराल देख्य मुँह बाचि छुटलैक। बघवा लपकल। उड़ल बाभ। आ चमकि उठलैक राजकुमारक तबआरि। दक्षिण में दिवरा भीड़ सन देख्य लहास छै भ गेलैक आ शोणितक बोमकार छूटय लगलैक। राजकुमार अपन संगीक संग दोसर दिस विदा भ गेल।

राजकुमार फिरलो ने छल मुदा नगर मे देख्य मरवाक खबर पसाही जकाँ पसरि गेलैक आ कतेको लोक देख्य केँ मारनिहारक रूप मे अपना केँ प्रचारित करैत राजदरबार मे हाजिर भेल। एकर कारण ई छल जे राजा देख्य के मारनिहार के आधा राजक संग अपन बेटी बियाहि देबाक प्रतिज्ञा केने छल। मुदा दावीदारक संख्या बेसी देखि हुनका सदेह भेलनि आ तँ आइ ककर पर छेकै तकर पता लगवैत धोबिनियाँ ओहिठाम सिपाही पठाओल गेल। सिपाही धोबिनियाँ केँ पकड़ि दरबार मे उपस्थित केलक। राजा पुछलथिन—आइ तोहर बेटाक पार छलीक, ओ गेल छलीक कि नहि ?

धोबिनियाँ बाजल—महाराज, हमर बेटा काहि गौना कराक आयल-ए तँ हमर बहिनपुत ओकरा नहि जाय देखैक आ ओकरा बदला मे अपने चल गेल।

राजा पुछलथिन—ओ छोक कहाँ। देखबाक पेट मे हैत, आर कतय। एतबा कहि ओ हवोटकार भ कानय लागल।

राजा ओकरा खानना देत कहलथिन—आइ देख्य मारल गेल-ए मुदा के मारलक तकर निस्तुकी नहि भ पवेछ। तँ तोहर बहिनपुतक जरुरति। तौ जो, मुदा जाधरि ओ नहि अवेछ तोरा घर पर सिपाहीक पहरा रहतौक आ ओकरा अचिते एतय पठा दही।

धोबिनियाँ के नेने एमहर सिपाही सभ ओकरा घर पहुँचल त ओमहर सँ राजकुमार सेहो जुमि गेल। ओ अचिते हंसैत बाजल—मौसी मझुर खुआ। आइ तोहर देतबा के यमपुर पठा देलैक। आइ सँ ककरो सँ-बेटा ओकरा पेट में नहि जेतैक।

सिपाही सभ आश्चर्य सं ओइ विचित्र राजकुमार के देखलक जकरा घोड़ा पर बाघ आ बाभ शोभायमान रहैक तथा तबआरि एखनो शोणित मे रंगल रहैक। धोबिनियाँ खुशी सं राजकुमार के पजिया ओकरा चुम्मा लैत राजाक आदेश सुना देखैक। राजकुमार सिपाही सभक संग राजदरबार विदा भेल।

राजकुमार केँ दरबार पहुँचिबे छुट्टा दावीदार सभ सहटि गेल। राजकुमार सँ गप्प केलाक बाद राजा विश्रवस्त भ गेलाह जे देख्य मानहार ई युवक धोबिनियाँक बहिनपुत हो वा नहि कुनू देशक राजकुमार थिक। ओ अपन बचनक अनुसार राजकुमार क संग अपन बेटी के बियाहि आबा राब दय देलथिन आ मुझा दावीदार सभ केँ पकड़ि फाँसी देबाक आदेश सुना देलथिन। राजकुमार स्त्री आ राज पावि चैन सं रह्य लगल।

एहिना मास ६ मास बीति गेल। आब राजकुमार जेना घर-आबनक वातावरण सं उचि गेलाह। एक दिन ओ राजाक समक्ष शिकार खेलय जेबाक प्रस्ताव रखलनि। राजा एहि प्रस्ताव केँ स्वीकार करैत सुभाव देलथिन ओ सभ दिव शिकार खेलथि, मुदा दक्षिण दिस मुलियो केँ ने जायि। राज कुमार सुभावक पालन करैक बात राखि तैयारी मे लागि गेलाह। राजा हुनका संग आर किछु चतुर शिकारी केँ तैयार कए विदा केलक। संग मे राजा बाजा से हो रहैक।

राजकुमार भरिदिन घोड़ा दौड़वैत रहलाह परञ्च एकोटा शिकार हाथ नहि लगलनि अवसरक बात त ई जे जते जे शिकार उठैक से दक्षिण जंगल दिस पड़ा जाइ—आ ई अपन सन मुँह लेने छुरि आवथि। दिन लगचिआयल जाइत छलै। अन्ततः ई निर्णय लेलनि जे आव जे कुनू शिकार भेटतनि—से जतय किएक ने जाओ ई पछोर करतह आ श्ति मारने नहि फिर-तह। संयोग सं एगो हरिण हिनका देखे छनि आ ओ पाछा केरनि। हरिण सोने दक्षिण दिस पड़ाएल आ इहो पछोर केने गेलाह। आन सभ शिकारी कतय छुटि गेल से पतो ने लगलनि। ओमहर सँ छत्रशुभ करैत रहै आ तखन हरिण हिनक आखि सं अढ़ भ गेलनि। एमहर पियासे कंठ सुखा रहल छनि। किछु दूर पर एगो पोखरि सन बुझना गेलनि आ ई ओमहरे घोड़ा दौड़लनि। ठीके एगो विशाल पोखरि रहैक मुदा चारु कात सं घेरल—मात्र एक टा घाट—जल-तक जेबाक सिद्धी। राज कुमार घोड़ा सं फनलाह आ खट-खट सिद्धी उतरि जइखन आँजुर मे जल लेवय लगलाह तखन दोसरकात बैसल एक रूपती कुमारी कन्या पर नजरि पड़लनि जे हिनका हाथक इशारा सं जल नहि पीबाक लेल कहि रहल छलनि। राजकुमार कातर दृष्टि ओकरा दिस तकैत अनुनय केलथिन—हे देवी। पियासे हमर कंठ सुखा रहल-ए आ मन व्याकुल भेल अइ। जं शिघ्रे जल नहि पीवि

सकलौं त प्राणे छुटि जायत। एहना अवस्था मे अहाँक निषेध कि उचित भेल ?

युवती बाजल—हे आगन्तुक, हम आहाँक स्थिति बुझि रहल छी, परञ्च हमरा संग वाध्यता अइ।

—जं कुनू असुविधा नहि हो त कि हम ओहि वाध्यताक सम्मग्य जानि सकैत छी ? राजकुमार पुछलथिन।

युवती बाजल—जं अहाँ जानए चाहैत छी त सुनू। अहाँ देखि रहल छी जे हम कुमारी छी आ हमर एकमात्र सम्बल ई पोखरि थिक। हम प्रण केने छी जे एहि पोखरिक उपयोग उएइ व्यक्ति करताह जे हमरा संग विवाह करवाक लेल राजी होथि। आ हमर विवाह हुनके संग होएत जे हमरा पाशा खेलाय मे हरा देथि। कि अपने एहि लेल तैयार छी ?

राजकुमार प्यासे व्याकुल छलाह। ओ पाशा खेले लेल तैयार भ गेलाह। युवती कहलकनि—आ जं अपने शरि बाइ तखन ?

तखन की ? हुनक प्रश्न भेलनि।

तखन हम अहाँ के, अहाँक घोड़ा, बाघ आ बाभक संग पाथर बना एहि भीड़ पर स्थापित क देव। बाजू तैयार छी ?—युवतीक प्रश्न छलैक।

राजकुमार स्वीकृति दय पाशा खेलाय लेल बैसि गेलाह। पाशा तीन बेर चलल परञ्च तीनू खेप राजकुमार हारि गेलाह। युवती हुनका सभ केँ पाथर बना देलकनि।

ओमहर जं जं राति बीतै राजा-रानीक संगहि राजकुमारक पत्नी चिन्ता सं व्याकुल रहथि। महल मे कला-रोहटि आरम्भ भ गेल आ भोर होइत-होइत सगरो हल्ला भ गेलैक जे राजाक जमाय जे काहि-शिकार खेलाय गेलथिन से नहि फिरलथिन। भरि-सक दक्षिण भर चल गेलथिन आ तँ फिर-बाक आशाओ नहि।

ओमहर जे मुँह सभ नवजीवन प्राप्त क केँ अपन-अपन देश फिरल छल अपन-अपन जीवाक खिस्ता लोक के कहैक। ई बात पसरैत-पसरैत राजकुमारक माय-बापक कान तक गेलैक। ओकर छोटका भाइ के जखन ई रहस्यमय घटनाक पता चललैक त ओ माय-बाबू सं प्रस्ताव केलक—भाइ केँ खोज मे जेबाक। पहिने त राजा-रानी आनाकानी केलथिन परञ्च शेष मे अनुमति देलथिन। छोट राजकुमार घोड़ा कलक आ विदा भेल। एहि लेन ओ कल दिनक बाद बेलक कारण ओकरा मन छलैक जे उ मात क बाट जेबाक गप्प कहलक बाद महलना जी ओकरा आपस द बदला मे जेठ भाइ केँ ल गेलथिन। आ जेठ भाइ निश्चिते बर्ल दिनक बाद जायव स्वीकारने होएतक तँ ल गेलथिन। परञ्च बर्ल दिन बाद ओकर सरसा घोड़ा मात्र एक मास मे चलि गेलैक। मंदिर धरि जेबा मे असुविधा नहि भेलैक कारण ओ रास्ता मंदिर तक जाइत रहैक। मुदा मंदिर ओकरा एकदम सुन्न-मशान बुझेलैक जेना कतेको बर्ल सं एहिठाम लोक नहि आयल हो। आ चारुकात घूरि-फिरि देखि लेलक आ जाइ वाटे आयल छल से बात छोड़ि जे एकटा दोसर बात रहैक ताइ वाटे घोड़ा हँकलक। जाइत-जाइत जं किछु दूर गेल त जंगल सं एगो बाघक गर्जन सुनेलै। ओ सावधान भ तबआरि धेलक ता बाघ बहुत लग आवि गेल रहैक। बाघ

सम अपन-अपन बोड़ा कछ्ठनि—दुनू
दियादिनी एक बोड़ा पर बैसि बिदा भेठी।
धमहर नगर में घोर। म गेछेक जे राजाक
बेटी-बमाइ राति बिपचा म गेछेक। परज
हिनका लोकनि के पहुँचिबे आ अपन बेटीक
मुँहें सब बात सुनिबे राजा उत्सवक तैयारी
में लागि गेछह। राजकुमार गामवर पठा-
ओछ गेछेक। ओहो राजा बरियाती सज्जि
एछह आ दुनू बेटी-पुतोह दू ब आनन्द
मगन भए अपन राज फिरछा है।

पुस्तक समीक्षा ?

विदेशी कविता क 'प्रतिध्वनि'

श्री रामलोचन ठाकुर मैथिली के तेजस्वी रचनाकार छथि। अग्रदूत, कुमारेश काश्यप आदि विभिन्न नाम सं विभिन्न विधा में लिखि ओ मैथिली साहित्य क श्रीवृद्धि कऽ रहल छथि। हुनक कविता संग्रह 'इतिहासहंता' एवं हास्य व्यंग्य क 'संकलन बेताल कथा' हुनक रचनाधर्मिताक नीक जकां परिचय देछ। 'प्रतिध्वनि' में ओ १५ टा विदेशी वामपंथी कवि क छोट-छोट कविता क मैथिली काव्यानुवाद प्रस्तुत केने छथि।

उपासना क क्षेत्र में सिद्धक लेल विहित दूटा मार्ग में सं दक्षिण मार्ग दीर्घकालिक साधना ओ सात्त्विक मन क धिक संयमक अंग्रेज करेछ मुदा वामपंथी अत्यंत-लक्ष्य लक्ष्यता सं कर्म सिद्धि करैत छैक। कम मार्ग तामसिक इच्छा शेषक 'सर्वस्व बारा' होइछ—कने को संतुलन बिगड़ैत। पर या तं जीवन सं हाथ धोमय पड़ैत छैक किंवा विवशित अथवा छागर बनि के जीवन बितवऽ पड़ैत छैक। राजनीतिक वाममार्ग में साहित्यकार के छागर बनि के रहऽ पड़ैत छनि। साम्यवादी देश क आधुनिक साहित्य क इतिहास के यदि तटस्थ भऽ के पढ़ल जाय तं ई तथ्य स्पष्ट भऽ जाइछ जे वामपंथी व्यवस्था में साहित्यकार मात्र प्रचार-यंत्र होइछ। ओकरा अपन मान्यता, अपन दृष्टि कोण आ दर्शन स्थिर करवा क कोनो अधिकार नहि छैक। सदखन ओकरा राजनैता के मुँह ताकऽ पड़ैत छैक। स्वतंत्र चेतनाक अभाव में वामपंथी रचनाकार अपना भीतर ओ काव्य-गुण विकसित नहि कऽ पवैछ, जाहि सं रचना सार्वदेशिक आ सार्वकालिक बनेछ।

'प्रतिध्वनि' क कविता एकटा एहन निष्ठावान कार्यकर्ताक दृष्टिकोण सं संकलित कैल गेल अछि, जेकरा प्रत्येक कम्युनिस्ट रचनाकार क रचणोदक तीर्थजले जकां पवित्र बुझाईत छैक। कविताक अनुवाद एक सीसीक गंगाजल दोसर सीसी में टारब जकां कठिन होइछ। यदि अनुवादक कविताक भाषा सं सुपरिचित नहि होइछ, तखन तं ई काम एतेक कठिन भऽ जाइछ जे अनुवाद केर श्रमान्तरित संदिग्ध भऽ जाइछ। 'प्रतिध्वनि' क कविता सम अनुवाद क अनुवाद थीक तं मूल कविता सं बहुत दूर चलि गेल अछि। प्लेटो क शब्द में ई 'नकल क नकल' रहलाक कारण आंशिक सत्य के सुरक्षित राखि सकल अछि। एहि तरहक काव्यानुवाद में मूल कविताक पचीसो प्रतिशत अंश नहि रहि जाइछ तं मैथिली काव्यानुवाद प्रति के पाठक के मूल कविता क गुणवत्ताक कतेक परिचय भेटतनि, से कहब कठिन अछि। निस्संदेह श्रीठाकुर अपना दिस सं परिश्रम में कोनो कोताही नहि केने छथि, मुदा अनुवाद क जे अमिश्रण छै, ताहि सं ओ विमुक्त कोना भ सकताह।

पुस्तक क भूमिका एकटा एहन अपद व्यक्ति द्वारा लिखल गेल अछि, जेकरा ने तं अपना देश क इतिहास सं परिचय छै आ ने साहित्य सं। आदिकवि वाल्मीकि

सन यथार्थवादी रचनाकार विश्वभरि में केओ नहि भेल अछि। तिनका प्रति भूमिका-लेखक क ई उक्ति जे 'ओहो अलौकिक सत्ता, फुसियाही मर्यादा क पाछा भासि गेहाछ' ई पदशित करैत अछि जे भूमिका लेखक 'वाल्मीकि रामायण' के देखनहुँ नहि छथि। भूमिका लेखक क इहो कथन एकटा अर्धविक्षित क अनर्गल प्रलापे बुझाईछ जे 'कविता राजदरबार में नचैत देवदासी क संग सुर-ताल मिलवैत छल।' राजदरबार में रहिके कवि सर्वसाधारण लेल नहि लिखि सकैत अछि, एहि भ्रम के काटऽ लेल अन्तरे विद्यमान क नाम प्रतीति अछि। हिन्दी साहित्य में छल कविता क वे किस किस-किसी स्तरपर ने छै, से कवियों क ने छै, से कवियों क ने छै, से कवियों क ने छै। हिन्दी क एक-एक दोहा कोनो प्रगतिशील कविक सम्पूर्ण रचनाक तुलना में अधिक मूल्यवान आ जनप्रिय अछि। राज्यदरबार क प्रति ई जुगुप्सा कम्युनिस्ट रचनाकार लोकनिक लेल कोनो अर्थ नहि राखैत अछि, कारण कम्युनिस्ट देश में रचनाकार के या तं राष्ट्राधीन भऽ के अज्ञाताक निर्देशानुसार रचना करऽ पड़ैत छै आ लेनिन क आदेश पर गोर्की सन प्रतिनिधि साहित्यकार के अपना कथा संग्रह सं 'स्काइ ब्लू' आ 'अनरिकोवापेटेड ब्लू' सन् कथा के बुझाईछ। लेखन मानि के निकाहि देमऽ पड़ैत छैक, अथवा कम्युनिस्ट यंत्रणा-शिविर क यथार्थ चित्रण कयला पर सोल्जेनिसिन सन चेतनाशील आ निर्भीक रचनाकार के देश त्याग करऽ पड़ैत छैक। तं राजदरबार क कवि क आलोचना करवा क मुँह कोनो कम्युनिस्ट लेखक के नहि छै।

रहल मंदिर में उपजल कविताक गप। ताहि संदर्भ में एतवे निवेदन जे विद्यापति, सुर, तुलसी, कबीर, मीरा आदि क कविता विश्वक श्रेष्ठतम साहित्य में गनल जाइछ। विद्यापति, सुर आ तुलसी क कविताक समादर तथाकथित पूँजीवादी आ तथाकथित साम्यवादी दूर देश में भऽ रहल छै। रामलोचन जी के यदि अपन अग्रजदेव बरार प्रगतिशीलता बुझि पड़ैत छनि, तं कस्तुर ओ प्रगतिशील लेखक छथि। हुनक ई कहब जे 'अनुक कवि रामायित बा देवाभित नहि, अपन बुद्धि पर आभित अह' मात्र एकटा अनटोल गप अछि। आफिस अदालत आ खान फारखाना में काज करऽ बला व्यक्ति कोना 'स्वाभित' अछि से हुनके बुझल छनि। वर्तमान व्यवस्था में यदि सरकार शोषक अछि तं आफिस अदालत ओकर शोषणक माध्यम। तखन आफिस में काज केनिहार कोना अपना के 'धवल चरित्र' कहि सकैछ, से स्पष्ट करवाक चाही छल।

भूमिका क तेसर पैराग्राफ कम्युनिस्ट चिन्तन क बमन मात्र थिक। ओहि में कोनो एहन बात नहि अछि जे वामपंथी चिन्तनके कोनो नव अर्थ देक। कविता ने तं वारा-गना होइछ, आने जीवन संगिनी—ओ मात्र आत्म क अभिव्यक्त रूप थिक—ई बुझवा क लेल रामलोचन जी के गाल बजा-यब छोड़ि अध्ययन करऽ पड़ैतनि तखने हुनका इहो स्पष्ट हेतनि जे हिन्दी भाषा

मैथिली क लेल सुरता नहि थीकी भाषा बागदेवताक भिन्न-भिन्न रूप-रंग कला थीक। तं कोनो भाषाक प्रति वेमनस्य नहि होयवाक चाही। हमरा संघर्ष मात्र ओही प्रवृत्ति क विरुद्ध अछि जे दादी-नानी के बेटी कहि के अपन आधिपत्य स्थापित करऽ चाहैत अछि। मैथिली हिन्दी क लेल दादिये-नानिये जकां अछि। तेकरा हिन्दी क बेटी (बोली) कहब दुष्टता क सिवाय आर किछु नहि। हमारा लोकनि ओहि समुदायक विरोध करैत छी जे मैथिली के हिन्दी क अंग कहिके मैथिली क हित के दंशित करवाक कुचेष्टा करैत अछि। हिन्दी भाषा सं हमरा लोकनि के कोनो वेमनस्य नहि अछि, बल्कि राष्ट्रभाषा तथा तृतीय विश्व भाषाक रूप में ओकरा प्रति हमरा लोकनिक हृदय में गहुरि आर्य अछि।

कविता क कथ्य प्रथम आ अंतिम पंक्ति सं जुता जाइछ :

लाल फजोज निर्भीक दीर्घपथ
यात्रा बहु बाधाक।
कय गेल पार लाल सेना
विजयक आनंद फराकी

एहि संग्रहक सम सं बढ़का दोष ई अछि जे सर्वसाधारण क दुःख के बुझवाक दावा केनिहार रूपान्तरकार मैथिली क सामान्य पाठक क कण्ठ के नहि बुझि सकलाह। नहि तं कविगण क संक्षिप्त परिचय आ 'छन शुन' 'सिजर' 'उल्लास' 'कांगो' 'सुआन-युवान' 'नानकिट' आदि सन संदर्भपेक्षी शब्द क परिचय अवश्य दितथि। अनुवाद क अप्रामाणिकताक कारण कविता क शिल्प कथ्य आ गुणवत्ता पर विचार करब अन्याय होयत। तथापि एतवा तं कहल जा सकैछ जे 'प्रतिध्वनि' में संकलित कविता सम कोनो तेहन नहि अछि जेकरा विश्वस्तर पर छोटि के मैथिली पाठक क समझ राखल जाय। अधिकांश कविता क स्तर अपना देश में सुहृदक स्तरपर चर्चित कविक रचनाक समतुल्य अछि। संक्षेप में, एहि प्रकारक संकलन सं अंतरराष्ट्रीय वामपंथी लेखन क छवि दृष्टि होइछ।

—बुद्धिनाथ मिश्र

□ ई लेखक पुस्तक लिखि कि

का व्यक्ति आलोचना अथवा अने किछु तकर विचार पाठके लोकनि आ विरोध के जिनका लोकनि के चर्चित पोथी पढ़ल छनि, करथि सहेह नीक। परन्तु एतेधरि सत्य जे एहि में कागज टा जियान भेल अछि। तथापि एकरा छपवाक कारण पहिल त लेखक क पुरजी जे 'समीक्षा' क संग संलग्न छल (पाठक लोकनिक जानकारीक हेतु निचा छापल जाइछ) आ दोसर मैथिली में एहनो साहित्यकार समालोचक होइते छथि जिनका कविता बुझवाक बात किहय श्रुद्ध भ के एक पोती लिखवाक अवगति नहि छनि—से त पाठक लोकनि जनताह। तं 'समीक्षा' अक्षरशः छापल गेलह।

—सम्पादक ॥

□ बंधुवर जनार्दन जी,

आइ एक मास पर 'प्रतिध्वनि' क समीक्षा पूरा कऽ के पठा रहल छी। हम

जनैत छी जे ई अत्यधिक कठु भऽ गेल अछि, लेकिन इहो मानत छी जे हम बेह लिखलहुँ अछि जे लिखवाक हार्दिक इच्छा भेल। तं निवेदन जे या तं एकरा अक्षरशः छापल जा, यथावत् लौटा देल जाय। हमरा कोनो कष्ट नहि होयत कारण अपन आलोचना सुनवाक धैर्य सम में नहि होयत छैक।

अर्हीक
—बुद्धिनाथ

अजगुत अनटोटल

सोन चिड़िया नामे विख्यात ई महान भारत, छुटेरा तेसर लंग सं ल क महानायक सिकन्दर शाह धरिक आक्रमण के देखि-मोहि बुझत अह। परन्तु एतवे ने दोह होइछ जे सत्य आ लोकनिक सत्य के लिखा जा सकैत अछि। हुनक कविता के लिखा जा सकैत अछि।

कविता दलक भी माइ महानायक अनुवाद १९३० में अंग्रेज शासक द्वारा बनाओल गेल मैनुअल पंजाब प्रदेश में एखनो लागू होइछ आ तकरा अनुसार 'गांधीटोपी' पर रोक लागल छैक। गांधीटोपी—जे कि स्वयं त गांधी जी कहियो ने पहिरलनि परन्तु नेता जी ने मात्र अपने पहिरलनि अपितु ओकर नाम गांधीटोपी राखि ओकरा तते सम्मान देखओलनि आ लोक प्रिय बनओलनि जे ओ पराधीन भारत में स्वाधीनता संग्रामीक चेन्हे बनि गेल आ कांग्रेसदल में त भरिस्के केओ छल होइत जे बिनु 'टोपी' क हो। नेता जीक मुँह सं बहराएल 'जय हिन्द' आ गांधीजी के 'बापू' क सम्बोधन जकां इहो 'टोपी' लोक प्रिय भेल आ स्वभावतः अंग्रेजक लेल आखिक कांट आ तं एहिपर आइन बना रोक लगाओल गेल। टोपी पहिरनाइर 'देश द्रोही' मानल जाय शासकक नजरि में आ अचरज कि जे अंग्रेजक उत्तराधिकारी वर्तमान शासक जे अपन पूर्वजक पदचिन्हक अनुसरण क रहल हो। आजुक शासक भनहि गांधीक नाछ कपओ परन्तु सत्य इहो छैक जे देश-द्रोहकारी होइत किहू अथवा उत्तराधिकारी किहू नहि आ अखिर सत्य छै, किहू छै आ 'कलह' में नैत होइत।

अनो जदकल मुँह मानक प्रसन्न करैत सभाक उपाध्यक्ष श्री स्वामिनारायण जवाब में कहलथिन जे गांधी टोपीक संदर्भ जे नियम मैनुअल में छैक से लागू नहि कएल जाइत छैक। जं से सत्य त कि आई ३५ बर्ष में सरकार के एते पलखति नहि मेलैक वा एहन उहि नहि मेलैक जे एहि धृणित 'नियम' के काटि सकैत आ स्वतंत्र भारतक अपन जेल मैनुअल बना सकैत ? जेना कि उपाध्यक्ष बजलाहए—स्पष्ट अह जे गांधी टोपीक संदर्भ जे नियम अह सेटालागू नहि कएल जाइछ बाकी सम पूर्ववत् लागू होइछ। अर्थात् अंग्रेज शासक नजरि में जे 'देशद्रोही' छल आ जे कृपा-कलाप देश द्रोहिताक अन्तर्गत अवैत छल वर्तमान स्वाधीनो भारतक शासक नजरि में से पूर्ववत् अह। 'सत्ते सेल्युकश ! कि विचित्र ई देश !'

सभा-समिति

विद्यापति कला परिषद, किरिबुर, मेधाहातुबु क तत्वावधान में अप्रिल "८२" क अंतिम सप्ताह में विद्यापति स्मृति पर्व धूम-धाम से मनाओल गेल। कार्यक्रमक आरंभ कुमारी सुनी, कुमारी रीता, कुमारी, मधु, कुमारी माला तथा कुमारी बेबी क "जय-जय भैरवि मंगलाचरण स" मेल। मंगलाचरणक प्रस्तुतीकरण श्रीमती इन्दु प्रसाद द्वारा मेल।

निम्नलिखित व्यक्ति विद्यापतिक चित्र पर श्रद्धापूर्वक मास्त्यार्पण कयलनि।

(१) सर्व श्री जी. डी. सिंह (महा-प्रबन्धक किरिबुर)

(२) एस. के. दास (चीप सुप्रीन्टेन्डेन्ट, गुआ माइन्स)

(३) एस. सी. चौधरी (कार्यकारी महाप्रबन्धक मेधाहातुबु)

(४) जे. एल. भसीन (उपाध्यक्ष स्पोर्ट्स एण्ड रिक्रिएशन काउन्सिल मेधाहातुबु)

(५) यू. के. प्रसाद (अध्यक्ष विद्यापति कला परिषद)

एहि अवसर पर स्वागताध्यक्ष श्री सी. एल. सिंह उपमुख्य कार्यात्मक प्रबन्धक उपस्थित जन समुदायक स्वागत करैत बजलाह जे कवि कोमिल एक महान विभूति छलाह। विद्यापतिक अनुसरण हुनक काव्य प्रतिभाक कारणे सम्पूर्ण देश मे मेल। बंगाल, आसाम आ उडिसा तं प्रत्यक्ष रूपे प्रभावित अछि। बंगाल तं ऐतेक प्रभावित अछि जे हाल धरि लोक विद्यापति के बंगाली बुझैत रहल। तकर कारण ई छल जे विद्यापतिक गीत के प्रचारित करबा मे महाप्रभु चेतन्य सन व्यक्ति योगदान छल।

ओ इहो बजलाह जे जवन हम विद्यापतिक श्रृंगारिक गीतक छलना जयदेवक गीत सँ करैत छी तऽ विद्यापतिक गीत बेसी सुस्त आ सम्य बुझाईत अछि।

सभाक अध्यक्षता करैत श्री जी. डी. सिंह (महाप्रबन्धक किरिबुर) बजलाह जे विद्यापति एक महान आत्मा छलाह आ हुनक व्यक्तित्व जाति आ सम्प्रदाय विहीन छल। विद्यापति अपन रचनात्मक प्रवृत्तिक कारणे कोनो खास क्षेत्रक नहि छलाह। विद्यापति पर सम्पूर्ण देशवासी के समान रूप सँ गर्व छनि। प्रसन्नताक बात जे विद्यापति कलापरिषद द्वारा आयोजित ई पर्व जाति आ सम्प्रदाय विहीन अछि।

आगत अतिथि के धन्यवाद देत संस्थाक अध्यक्ष श्री यू. के. प्रसाद (संयुक्त सलाहकार किरिबुर) अपन उद्गार व्यक्त कयलनि जे स्मृति पर्वक आयोजन मे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपे जे व्यक्ति वा जे संस्था सहयोग देलनि, तिनका सभ के ई संस्था धन्यवाद देत अछि। एहि अवसर पर ओ आग्रह करैत बजलाह जे एहिना सहयोग बनल रहय।

एहि अवसर पर स्पोर्ट्स एण्ड रिक्रिएशन काउन्सिल मेधाहातुबु के विशेष सहयोगक हेतु विशेष रूपे धन्यवाद देल गेल। संस्थाक दिस सँ श्री. जी. आर. सिल, श्री. बी. आर. शाहा श्री ए. एम. भट्टाचार्या,

श्री एस. के. तरफदार, श्री जी. के. लाहिड़ी तथा श्रीमती डी. अप्पाराब के सहायोग सहयोगक हेतु धन्यवाद देल गेल।

अंत मे सहयोगी कर्मठ व्यक्ति जनिक परिश्रमे ई आयोजन सफल मेल चर्चा नहि करब कुतन्ता होयत।

संस्थाक महा सचिव श्री एस. आर. पी. सिंह, महबूब आलम (उपाध्यक्ष जे. पी. दास (सदस्य) बी. सी. मंडल, सदस्य डा. सी. डी. मिश्र, सत्येन्द्र भा. सी. डेटे, अनिरुद्ध भा. उमेश भा. सहदेव सिंह, उममोहन भा. आर. पाठक, दिगम्बर ठाकुर विन्देश्वर भा. सहदेव भा. गंगाधर भा. के. बी. तिरिया, टी. चाकी आर. सी. दास, बबा सिंह, अशोक कुमार भा. एस. के. भा. बी. के. सिंह, यू. एन. भा. एच. के. चौधरी आदिक सहयोग आ परिश्रम के नकारल नहि जा सकैत अछि।

—सवेन्द्र मोदी

बाबू भोला लाल दास स्मृति समारोह

विगत १ जून के साहित्य-संस्कृति कला मंच कौशिकीक तत्वावधान मे एम. एल. इकेडमी ल्हेरिया सरायक परिसर मे मैथिली दधीचि बाबू भोला लाल दास जीक पुण्य स्मृति मे एक भव्य समारोहक आयोजन मेल। समारोहक प्रारम्भ भगवती वन्दना, गतिकार नवल द्वारा मिथिला-वर्णन आ श्री रमानन्द रेणुक स्वागत भाषण सँ मेल। डा. ब्रजकिशोर वर्मा मणिपदम क सभापतित्व मे सम्पन्न श्रद्धांजलि कार्यक्रमक उद्घाटन करैत श्री बाबू साहेब चौधरी मैथिलीक विकास मे बाबू भोला लाल दास जीक योगदानक चर्चा करैत मैथिलीक वर्तमान दृष्टिकोण दिस उपस्थित ओताक ध्यान आकर्षित करौलनि। मुख्य वक्ता डा. शम्भू नाथ चौधरी मिथिलाक सर्वांगीण विकासक लेल सम्पूर्ण मिथिलावासीक एकजुटता के बाबू भोला लाल दास जीक प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि बतौलनि, मुख्य अतिथि दरभंगा जिला उद्योग केन्द्रक महाप्रबन्धक श्री रामेश्वर पाठक मिथिलाक प्रति अपन अपार प्रेमक प्रदर्शन करैत मिथिलाक सांस्कृतिक महत्ताक गुणगान केलनि। बाबू भोला लाल दासजीक सुपुत्र श्री जगदीश प्रसाद कर्ण द्वारा श्रद्धांजलि अर्पणक उपरान्त अपना अध्यक्षीय भाषण मे श्री मणिपदम दासजीक व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर विस्तार सँ चर्चा करैत सम्पूर्ण मिथिलाक जागरणक आह्वान केलनि।

श्रद्धांजलि कार्यक्रमक उपरान्त श्री मणिपदमक अध्यक्षता मे सम्मेलन कवि सम्मेलन मे भाग लेनिहार प्रमुख कवि छला सर्व श्री प्रदीप मैथिली पुत्र, मिहिर शिवाकान्त पाठक गीतकार नवल, चन्द्रमणि, जीतेन्द्र सिंह, कामेश दीपक। एहि अवसर पर एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन सेहो छल। समारोहक समापन श्री सुरेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा धन्यवाद शपन सँ मेल।

—सम्पादक रेणु

बाया-बवि

जेना कि शात मेल अइ मिथिला फिल्मस, दरभंगा एवं बम्बईक बैनर मे 'भीमल आंचर' नामे मैथिली सिनेमा बनि रहल अइ जे अक्टूबर ८२ धरि तैयार भ जायत। एकर निर्माता छथि श्री पुष्पोत्तम बोहरा। स्व. शरचन्द्रक कथा पर बनि रहल एहि फिल्मक सम्बाद एवं गीत रचना केलनिहो प्रो. श्री सोमदेव। संगीत श्री गौरांग व्यास एवं श्री एस.एन. त्रिपाठीक छनि आ निर्देशन श्री नेहुल कुमार क। कलाकार लोकनि मे अरुणा इरानी, किरण कुमार, एस. एम. दूबे, कल्पना दिवान, देवयानी ठाकुर मास्टर विट्ठू आदि छथि। गायक-गायिका छथि—महेन्द्र कपूर, अलका याशी ओ चन्द्राणी मुखर्जी। फिल्म सम्पूर्ण रंगीन ३५ एम.एम मे बनि रहल अइ।

मैथिली मे कतेको फिल्म बनबाक चर्चा यदा-कदा हमरा लोकनि सुनेत आयल छी, किछु त आधा-छिदा आ किछु सम्पूर्ण बनि के तैयारो मेल परञ्च दुर्भाग्यक बात जे दर्शक धरि आइबसि नहि पहुँचि सकल। 'कन्यादान' मैथिलीक नाम पर भनहि जते पाइ किहक ने पीटने हो, परञ्च ओ जे मैथिली फिल्म नहि छल से मानवा ने किनको दुविधा नहि होइतनि। 'ममता गायक गीत' क रिलीज हेबाक सोरहा सभ

ठाम-अवस्ते मेल परञ्च रिलीज नहि भ सकल—पता ने कि कारण छैक। एहिना 'छलका पाग' क चर्चा छल—परञ्च ओकरो कोनो निस्तुकी नहि शात होइत अइ। एहिना स्थिति मे जे 'भीमल आंचर'क सम्बाद पर लोक विश्वास करत तकरे कून ठीक। परञ्च हमरा लोकनि के जाइ सूत्र सँ सम्बाद प्राप्त भेल अइ, भरोस अवस्ते अइ जे ई दर्शक धरि पहुँचि सकत आ अवि-श्वातक स्थिति पर यवनिक पति करत।

मैथिली सिनेमाक लेल बड़ नीक 'स्कोप' छैक परञ्च बाबुरि एक गोट रिलीज नहि होइत ताधरि निर्माता लोकनि के विश्वासे केना हेतनि। तेँ ज ओ लोकनि एहि क्षेत्र मे पदार्पण करबा सँ भलाइत छथि त अनुचित नहि, परञ्च ई धरि निर्विवाद जे एक गोट फिल्मक पश्चाते निर्माता लोक-निक 'छाइन' लागि जायत।

आजुक युग मे फिल्मक की महत्व छैक से कहबाक प्रयोजन नहि। आशा करैत छी जे 'भीमल आंचर' मैथिली फिल्म मे गति-रोधक स्थिति के तोड़त आ मिथिलावलक हेरायल-सुतिआयल प्रतिभा के आलोक मे अइबाक अवसर भेटतैक।

—जयदेव लाभ

चिट्ठी-पुरजी

'देसिल बयना' खूब नीक बहार भऽ रहल अछि। खूब स्वस्थ। मिथिला-विभूति परिचयमाला बड़ आवश्यक छल छापब। कम बन्द नहि करू। कनेक चेन छैत छी तखन अपन रचना पठावब। —सोमदेव

जून अंकक सम्पादकीय बड़ विचारो-त्तेजक—मुदा मैथिलीक साहित्यकार लोक-निक लेल नहि। 'गाम सँ दूर मिथिलाक मजदूर' ओ 'मिथिला-विभूति' स्तम्भ के अखन पाठक लोकनि जे महत्व देथि, मुदा एकर सही मूल्यांकन होइत भविष्य मे। ओना ई बात जे सत्य पूछी तऽ एहि पत्रि-केक सम्बन्ध मे कहल जा सकैत अछि। 'बालगीत' आइबसि जे प्रकाशित भेल अछि तकर बते प्रशंसा करी थोड़ होइत। की एहिना 'नालकथा' सेहो नहि देल जा सकैत

अछि? चर्चित अंक मे 'लोचन कविराय'क अभाव बड़ खटकल। 'गिरगिट' आ 'छाछ बुझकरक चिट्ठी' पढ़ि छागल जेना राधा बाबू हुनू ठाम विराजमान होथि। ओना हम मानैत छी जे 'गिरगिट' कयाक आयाम निश्चिते पेश छैक। 'भारत रत्न' इमरजेन्सी के मोन पाइ देलक। बेसी नहि छिलि एतबे कही जे एकर सभ रचना महत्वपूर्ण अछि आ सभ रचनाकार प्रशंसीय छथि। मुदा 'धेनीनाथ मिश्र प्रकरण' नहि रुचत—एकर कोनो उपयोगिता नहि। मैथिली मे एकटा कहावत छैक—जकरा लेल चोरी करी सेह कहय चोर—से तकरे परि अपनो लोकनिक होयत।

—विष्णुदेव भा

कह लोचन कविराय

लाठी जकर सहिस तकरे छड़ के नहि जानय
भनहि नाम गणतंत्रक ल बलगेंगे ठानय
ल बलगेंगे ठानय सरिपहुँ आन ने नेता
लाठीक बलपर जोत कहाबय वोट विजेता
कह लोचन कविराय सत्य-शिव-सुन्दर लाठी
गण-भक्षक तंत्रक रक्षक गणतंत्रक लाठी

आकाश

अङ्क-१-२

जनवरी फरवरी ८४

मूल्य-पचास पाइ

देसकोस सँ देसकोसधरि

देसकोस—ई इहए नाम थिक एक पत्रिकाक जरूर सम्पादकीय लिखवाक छैक हम बेसब छी। एहिना एक दिन आर बेसब रही, आई सँ लगभग अढ़ाई वर्ष पहिने। ओही पत्रिकाक नाम छल देसकोस। मई, १९८१ मे प्रकाशित भेल छल। स्वभावतः ओह दिनक बात मन पड़ि रहलए। परञ्च से बात लिखवा सँ पहिने हम कहि देब उचित बुझैत छी जे सम्पादक ने त हम ओह देसकोसक रही आने अह देसकोसक छी ओहू दिन हम नेपथ्य मे रही आ आइयो नेपथ्य मे छी। किन्तु, सम्पादनक भार तहियो हमरहि छल (जे तीन अंकधरि रहल) आ आइयो हमरहि अछि।

मई, १९८१ मे जे देसकोस प्रकाशित भेल छल तकर सम्पादकीय मे पत्रिकाक प्रयोजनक सन्दर्भ मे हम लिखने रही।

“...ई प्रायः सभ मानैत कहैत छथि जे मैथिली मे पत्र-पत्रिकाक प्रयोजन छैक। निश्चित हमरो लोकनि मानैत छी जे मैथिली मे एक नहि अनेको नीक पत्र-पत्रिकाक प्रयोजन छैक—जे अवहेलित मिथिलाक विभिन्न समस्या पर प्रकाश द सकै, तकर समाधानक सूत्र द सकै, जे जातीय चेतना आ एकताक खंख फूटि सकै, आ दबचेतनाक आलोक पसारि सकै, जे मैथिली भाषा के अपन गौरवशाही अतीतक स्मरण करा सकै आ अतीतक प्रियुवन विख्यात मिथिला के भविष्य मे विश्व विख्यात बनेबाक करुणाक वन्दन द सकै, जे पुनर्जागरणक संवाहक बने आ मैथिली भाषा के नव मिथिला निर्माणक प्रेरणा शक्ति प्रदान क सकै, आ ते देसकोसक प्रयोजन छैक।”

ई बात अहू पत्रिकाक सम्पादक हम कहि सकैत छी। अथवा एना कही जे एहि सभ विषय के धार मे राखि एह हमरा लोकनि देसकोस प्रकाशित करवा छैक माध्यम छी। पत्रिकाक दीर्घजीवन बहुत किछु पाठक पर निर्भर करैत। अहि सन्दर्भ मे हम लिखने रही—“बर्षाधरि पाठकक प्रश्न अछि जे मैथिली (मैथिली-भुज सं छपल-छल) पत्र पत्रिका कीनेत छथि आ पढ़ैत छथि। हुनका जे देश-विदेशक विभिन्न समाचार जे हिन्दी-अंग्रेजी पत्रिका मे भेटैत छैक, अपने भाषाक पत्रिका मे भेटि जाइत त निश्चिते हृषिक कितना आ पढ़ता। देसकोस एहि विश्वासक आधार पर बहार भ रहल अछि तमा पाठक लोकनि के विश्वास दियबैत अछि जे अन्यान्य भाषाक नीक सँ नीक पत्रिकाओ सँ नीक पत्रकारिता मैथिली मे देवाक प्रयास करत।” नीक वा बेबायक

निर्णय त पाठकक काब थिक परञ्च प्रयास हमरा लोकनि अवसरे बेने रही। इहए कारण छल जे प्रवेशांक मे सम्पादकीयक अतिरिक्त-परिवर्तनक पञ्चप चीन, बोधना बेबाय नहि, मैथिली आन्दोलन के कथय, आरक्षण, देसकोस विशेष मे गोदावरी देरीक संग साक्षात्कार, वियापुता स्तम्भ छल भुक्तक चिट्ठीक अतिरिक्त पोथी परिचय, अभिनन्दन सभ हमरा अपनहि लिखय पड़ल छल। इहए कारण छल जे छेलकक नाम-कथा / कविता छोटि—नहि देल गेल छल। जे हो, एहि देसकोसक सन्दर्भ मे से आश्वासन हमरा लोकनि नहि द सकै छी, कारण देश-विदेशक विभिन्न समाचारक निमित्त पत्रिकाक जे कलेवर देवाक चाही आ ताहि छैक जे अर्थक प्रयोजन छैक से हमरा लोकनिक पास नहि अछि। ओनहुना हमर पर्याप्त अर्थ पब्लिके देसकोस मे व्यय भ चुकल अछि। तथापि आइ प्रयोजन के व्याप्त मे राखि ई पत्रिका बहार भ रहलए, तकर पूर्तिक प्रयास अवसरे करत। सोभ शब्द मे कही त जेना ‘देसिकवयना’ अवतार १९८१ सँ अवतार १९८२ धरि बहराएब—ओही रूप-गुणक संग ई बहार होएत। असल मे देसिकवयना क नव नाम थिक ‘देसकोस’ जे पंजीकरणक कारणे परिवर्तित भ गेलए।

आब जखन देसिकवयनाक चर्च भइए गेल त भरिबक इहो कहिये देब उचित जे साहित्य विशेषांक (अवतार १९८२) क बाद ओ किछक वन्दन भ गेल। एकर प्रघान कारण मेळ रचनाक अभाव, छेलक लोकनिक असहयोग। स्वभावतः अ स ज धरि अपनहि लिखय पड़ैत छल। कहियो-काह एक आघटा बाहर सँ भेटि गेल त भेटि गेल। ओना भाइ बनचक, उपेन्द्र दोषी आ जीवकान्तक सहयोग के विसरक नहि आ सकैत। ओना जखन फेर बहार करय जा रहल छी त ई आशा निश्चिते अछि जे छेलक लोकनि सहयोग करत। पाठक लोकनि आ विशेष के देसिक वयना क प्राइक। पाठक लोकनिक सहयोग-सदभाव पहिनेह जकाँ प्राप्त होएत से विश्वास अछि आ सएह विश्वास हमरा लोकनिक प्राथम्य थिक।

जय मैथिली
—रामलोचन ठाकुर

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

देश

शिक्षाक माध्यम आ मैथिली

अपन मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक अधिकार भारतीय संविधानक अनुसार प्राथमिक नागरिकक मौलिक अधिकार छैक। ओतवे नहि संविधान मे आर स्वष्ट रूपे कहल गेल छैक जे सरकार एहन कोनो आइन नहि बना सकैत जाहि सँ एहि अधिकार पर आघात पहुँचै। एहि लेल संविधानक सातम संशोधन द्वारा राष्ट्रपति के विशेषाधिकार देल गेल छैक जे सं सरकार एहि तरहक कोनो प्रयास करय त ओ ताइपर रोक लगावै। परञ्च एतना होइतहुँ तत्कालीन स्वतन्त्रताक अंगभंग सँतीस बर्षक बादो जे मिथिलांचल मे नेना सुटका के अपन मातृभाषाक माध्यम शिक्षा नहि देल जाइत छैक आ बलबोझी कोठाक भाषाक काढ़ा पिआओल जाइत छैक त तकरा की कहल जाय। असल मे संविधान थिक सरकारक खलबकला ओ जखन जेना चाइए उपयोग क सकै, ग्राह्यता क सकै। परञ्च सभ दोष सरकारक नहि छैक। हमरा लोकनि सभ सँ बेसी बिस्मयकार छी अपन भाषा-संस्कृतिक अयोग्यताक लेल। शोषक-शासक सदा सँ जनताक भाषा संस्कृतिक विरोधी रहलए। ओ जनताक बौद्धिक रीढ़ तोड़ि अपन पछ-पछुआ बनेबाक प्रयास करबै करत आ ते ओकर एगो फराक भाषा होइत छैक। ई भाषा कहियो संस्कृत छल, कहियो उर्दू-फारसी छल। कहियो अंग्रेजी छल, आ आइ कोठाक भाषा हिन्दी अछि। सरकारी भाषा हिन्दीक साम्राज्यवादो आकांक्षा के देखिय-परखि के भारतक अन्यान्य भाषा सभ चेतल आ तकरे परिणाम मेळ १९५६क राज्यक पुनर्गठन - भाषाभार प्रान्तक निर्माण। हम मैथिली भाषा एहिठाम चुकि गेलहुँ जे महान ऐतिहासिक भूख छल आ तकरे फल भोगि रहल छी।

परञ्च भूल कि हमरा लोकनि एकलेर बेने छी। एखनो जखन-तखन माऊ कएब जाइए जे मिथिलांचल मे शिक्षाक माध्यम मैथिली हो अथवा मैथिली भाषा नेना के मैथिलीक माध्यमे शिक्षा देल जाय। ई माऊ केहन अव्यवहारिक थिक से विचारवाक पब्लिक माऊ केनिहार लोकनिके भरिबक नहि छनि अथवा प्रतिक्रियाशील तत्व जे ऊपर-ऊपर त मैथिली भक्त स्वांग रचै परञ्च वस्तुतः ओ मैथिलीक विनास चाहैये तकरे ई माऊ छैक। कहवाक प्रयोजन नहि जे वर्तमान मे ई तत्व बेसी सक्रिय अछि।

आब कने एहि माऊक व्यवहारिकता पर विचार करू। मानि लेल जे सरकार एहि माऊ के मानि लेल। एहना अवस्था मे एके वर्गक छात्र जे मैथिली माध्यम सँ पढ़त तकरा लेल अलग शिक्षा चाही, हिन्दी उर्दू, बंगला आदि भाषाक माध्यमे पढ़-निहारक लेल अलग-अलग शिक्षा चाही। एहिठाम ई कहय नहि पड़त जे सरकारी

स्कूलक अनुसार मिथिलांचल मे ई सभ भाषाक बर्णनहार रहैए।

दोसर समस्या थिक पोथीक। बिहार मे स्कूली पोथी बिहार टेष्ट बूक कांवेरेणन उपर जे सरकारी संस्था थिक आ ते हिन्दीक पक्षधर या मैथिलीक विरोधी थिक। स्वाभावतः जे हिन्दी पोथी सत्रक प्रारम्भ मे बाजार मे आवि जाइत छैक जेना एहू खेप आवि गेल होइत, त मैथिली पोथी तकर ६-७ मास बाद मे पठाओल जाइत छैक। विचारणीय थिक जे जखन बर्षदिन मे आइकाकि कोर्त समाप्त नहि भ पवैत छैक तखन ५६ मास मे केना होइतक आ एते दिन छात्र केना प्रतीक्षा करत? एहि सन्दर्भ किछु संस्था सभ अवभावक आ शिक्षक लोकनि सँ अपील करैत छथि जे बच्चा लोकनिके मैथिलीक माध्यमे शिक्षा दियावय। देखि—सेहो कि बच्चाव नहि थिक? जे अभिभावक एखनो स्कूल बिदा भेल छात्र के पहिने इरादक पनपिआइ द बच्चाक वा महिस के नहा अनवा लेल कहैत तकरा सँ कतेक आशा कएल जा सकैत? दोसर एतेदिक विभातीय भाषा संस्कृतिक प्रभाव मे जे अपन भाषा चेतना मरि सेरायक छैक सेहो कि ककरो सँ तुकाएल अछि। बर्षाधरि शिक्षकक बात अछि—दोसर विषय हुनको संग जानू होइत अछि। दोसर बात जे मिथिलांचल मे शिक्षावृत्ति ओहने व्यक्ति चयन करैत छथि जिनका आन चाकरी नहि भेटैत छनि अथवा खेतोवारी आ अन्यान्य पारिवारिक भरोसा बेसी रहैत छनि आ एहि चाकरी मे गामक जगपास रहिओ अनायासे सभ काब सम्भारि लेत छथि। कोहुआ बढद संग एहि शिक्षक समुदायके हिन्दी छिल पर बुझैत सबब बुझि पड़ैत छनि आ मैथिलीक नव लिखक कष्टकर। ते अवरजक बात नहि जे मैथिलीक चर्च सुनिबे अकिआध शिक्षक लोकनि अपन नाक मुनि छैत छथि—संकीर्णताक गन्ध मे जागि जाइत। मिथिलाक शिक्षक बंगालक शिक्षक नहि थिक जे भाषा लेल इदताक करत खुल्ल बाहर करत आ अनशन करत। ई बात हमरा लोकनि के मन राखि चाहि।

तेसर बात थिक पोथीक दाम। एके विषयक हिन्दी पोथिक दाम जे एकटका रहैत छैक त मैथिलीक चारि टाका। इहो चाकि मैथिली विरोधी सरकारी संस्थाक थिक। मिथिलाक लोक जरूर बौद्धिक नहि अर्थिको रीढ़ टूटि चुकल छैक से रिजहु तीन टका बेसी दक अपन भाषा प्रेम नहि देलाओत। एहिठाम ईहो बात लिखब भरिबक आवश्यक जे जाइताम पोथी विक्रेता के हिन्दी, उर्दू पोथिक निमित्त मात्रा एक सए टाका जमा देब पड़ैत छनि ताहीठाम मैथिली पोथीक निर्मिच पाँच सए टाका।

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

याज्ञवल्क्य

प्राचीन ग्रन्थों में बाह्य मुनिक चर्च सर्वाधिक अहं से आन के ओ नहि मिथिलाक सन्तान योगीश्वर याज्ञवल्क्य छथि। अवधी भाषाक महाकवि गोश्वामी तुलसीदास अपन रामचरित मानस में सेहो हिनक चर्च कएने छथि—याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी, भारद्वाज रहहु पदटेकी।

ई जे केहन पेश ब्रह्मज्ञानी छलाह ताहि सम्बन्ध में बृहदारण्य कोपनिषद् में कहल गेल छै कि खेर वेदेन जनक अश्वमेध यज्ञ कएलनि बाह्य में विभिन्न देशक ब्राह्मण सब इकट्ठा भेटाइ। हिनका लोकनि में विशिष्ट ब्रह्मज्ञानी के छथि से जनबाक निर्मित ओ एक हजार गाय वनः वा देवभिन आ घोषणा करवा देवभिन जे जे विशिष्ट ब्रह्मज्ञानी होथि से सभ गाय बः जाय। परदेसी कोनो पंडित के बखन साइस नहि भेटनि तखन याज्ञवल्क्य अपन शिष्य रामश्रवा के गाय सभ हाकि जेबाक आज्ञा देवभिन। गाय सभ हकिते परदेसी विद्वान लोकनि तमसा गेलाह आ झुंझ भेल छल। विषयी भेटाइ इहए मिथिलाक सन्तान योगीश्वर याज्ञवल्क्य आ पराजित प्रदेशी पंडित अपना सन पुई छ आपस भेटाइ। ताहि दिन सँ ओह राजवंशक ई कुल भेल। कहवाक प्रयोग नहि जे ओह वंशक राजा लोकनि जे ओहन ब्रह्मज्ञानी होइत गेलाह से हिनकहि प्रसादे।

याज्ञवल्क्य देवरातक पुत्र छलाह। हिनक समयक सम्बन्ध में एखनहुँ विद्वान लोकनि में मतान्तर अछि तथापि अधिकशः विद्वानक मत ई ३०० ई० पूर्वहि भेल छलाह।

हिनका सम्बन्ध में जे बात सभसँ बेसी फरिछाएल अहं से ई जे ई मिथिलाक छलाह—मैथिल छलाह। एहिठाम ई बिलख भरिसक अनंगक नहि होइत जे मैथिल जातीय उदासीनताक कारणे अनेको विभूति एखनहुँ हेरायक छथि या आन देशक लोक हुनका आपनेबाक निर्मित प्राणपण चेष्टा करइल। कविपति विद्यापति पर हेमनिधरि बंगाली लोकनि दावी करैत छलाह आ गोवीन्द दास के त अखनहुँ अपनओनहि छथि। काबिदास के उजैनक कहल जाइत छल। उदयनाचार्य के बंगाली कहल जाइत छल। विष्णु दिन पहिने एगो निबन्ध पढ़ैत रही जाह में कुमारिक भइ के तमिल लिखल गेल। परब याज्ञवल्क्य संग एहि तरहक विवाद नहि भेल तकर प्रबान कारण जे संहिता में हरष्ट लिखल अहं—‘मिथिलाभ्याः स योगीन्द्रः’। मिथिला तत्त्व विमर्शक अनुसार अधुना नेपाल में अनुषाङ्ग कुसुमा राम में याज्ञवल्क्य मुनिक आश्रम अहं।

कहल जाइत छै जे याज्ञवल्क्य वैशम्पायन मुनिक शिष्य छलाह परब गुरु सँ खटपट भ जेबाक कारणे हुनका सँ पढ़ल समस्त विद्या के ओ त्यागि देल। एही सँ प्रमाणित होइत छै मिथिलाक सन्तान केहन आत्मा-भिमानो होइत छलाह। तकर बाद ओ सर्वक उपासना कए शुक्लयजुर्वेद प्राप्त कएलनि आ पश्चात याज्ञवल्क्यस्मृति, योगी

याज्ञवल्क्य, योगशास्त्र आदि विभिन्न ग्रन्थक रचना कएलन्हि।

भारतक प्राचीनतम स्मृतिकार में हिनक नाम आदरक संग लेल जाइत छल। मनुक अतिरिक्त एहन सामाजिक दार्शनिक दोसर नहि भ सकलाह। इहए कारण ‘शिक सर्वाधिक टीका’ हिनकहि ग्रन्थर लेखक गेब जाह में मिताक्षरा बालक्रीडा आ दीप-काविका विशेष प्रसिद्ध अहं। एहिठाम इहो उल्लेख केनाई भरिसक आवश्यक जे मनुक अपेक्षा याज्ञवल्क्य देशी प्रगतिशील आ श्रव-हारिक आ बरष्ट छथि। परवर्तीकाल में शंकराचार्य बाह्य अद्वैतवादक प्रचार कएलथि यद्यपि तकर आधार वादरायण व्यास कृत वेदान्त दर्शन के कहल जाइत छल, किन्तु वस्तुतः तकर प्रवर्तक याज्ञवल्क्य छथि।

याज्ञवल्क्य स्मृति जे हेतु सामाजिक दर्शन थिक आ ताह सामाजिक आचार थिक मनुष्य तें एहि में मनुष्यक जन्म (गर्भाधान) सँ मृत्यु पर्यन्तक काल कडा पके निरूपित कएल गेल। ओतवे नहि, मुश्किल वादो तकरा निमित्त कएल जाइत अहं—एकोदिष्ट पार्वनादि विषयपर सेहो विस्तार पूर्वक विचार कएल गेल अहं पश्चिमदेश कएल गेल। आश्विनो मिथिला देश में प्रचलित आचार व्यवहारक आधार वस्तुतः हिनकहि ग्रन्थ थिक।

एहि ग्रन्थ में आचार व्यवहार प्रायश्चित्त तीनू विषयपर फराक फराक विस्तार पूर्वक स्पष्ट विचार राखल गेल। सामाजिक विभिन्न वर्णक लोकक हेतु उचित अनुचित काल पर प्रकाश देल गेल जे एहि सँ पहिने वा पश्चातो भरिसके कोनो विद्वान क सकल छथि। पुरुष स्त्रीक वैवाहिक योग्यता, एक दोसरक प्रति कर्तव्य, पिता पुत्रक सम्बन्ध तथा एक दोसरक प्रति कर्तव्य, राजा प्रजाक सम्बन्ध ओ कर्तव्य आदि सभ विषय विवेचन भेल। राजा स्वराज्यारी नहि होथि तें तकरा लेल उचित योग्यता तथा राजधर्म निरूपित भेल। मनुस्मृतिक अनुसार बाह्य ब्रह्मण के सर्वोपरि मानि अपराध कएलहुँ सन्ता दण्डक भागी नहि कएल गेल छल तथा शुद्धक सन्दर्भ में कठोर दंडक विधान अहं—याज्ञवल्क्यस्मृति ठीक तकर विपरीत विचार रखैत छल। एकरा अनुसार आहिनक नजर में सामाजिक सभ अंश समान अहं केओ पेश वा छोट नहि आने केओ एकरा परीष सँ बाहरे छथि। तें वर्णक आधार पर केस के प्राथमिकता देनाह तथा दंड में पार्थक्यक ई खण्डन करैत छथि। कोनो अपराधक लेल दंडादेश वा फेसला सुनेवा सँ पहिने अपराधक विवरण अभियुक्तक वयान अभियोगक प्रमाण आदि के आवश्यक शर्तक रूप में निरूपित कएल गेल। आहिनक समस्त अवहेलित महिका वर्ग के पुरुषक समान दर्जा सर्वप्रथम याज्ञवल्क्य स्मृति द्वारा देल गेल।

जेना कि पहिने कहि आयल छी, याज्ञवल्क्य स्मृतिक टीका सभ में सर्वाधिक चर्चित अहं एगारहम शताब्दीक मिताक्षरा हिन्दू आहिन (Hindu Law) क रूप में सभसँ प्रामाणिक इहए ग्रन्थ थिक जकर

लेखा-जोखा (१)

इज्जत माय-बाप !

जे कहव सत्त-सत्त कहव, सत्त छोड़ि किछु नहि कहव। कलमक सपत्त खा क कहि छी। ओना ई बात दिगर मेर जे इमर सत्त माय इमरेटा हो आ अहाँ के ओह स कोनोटा सरोकार नहि हो। असल में सत्त छई की तकरो त आहपरि निरुद्धी नहि जे भ सकल-इ। जे आँखि सँ देखे छी जे सत्त थिक आकि जे कान सँ सुने छी जे सत्त थिक ? जे अनुभव करे छी से सत्त थिक आकि दिमाग जकरा उचित बुझैत से ? तें इज्जत, सत्त की छई से इमहुँ नहि बने छी। एतवेटा बने छी जे जे आँखि सँ देखल, कान सँ सुनल आ हृदय सँ अनुभव कएल—सहइ कहव। रहल गण्य दिमागक त से इज्जत, फँट नामक वस्तुक एहि खोपड़ी में नितान्त अभाव छई। तें एहि अभाव के अनठवैत बंदाक गबती के अपन कंठ सँ उतारि छी वा माथक उपर सँ सहरि बाएँ दिऐक—बंदा सदा अहाँक आभारी रहत।

पाठकक इच्छास में कोनो लेखकक हाथि मेनाइ तरुआरिक चारपर चढव सन छई, छीताक अग्नि परीक्षा सन आ विशेष क ओकरा लेल जे कविता लिखैत हो। आर अपने त धनिते छी जे कवि सँ वेकार एहि देश में गदहो के ने चुम्कल जाइ छई। इज्जत, गदहो तैयो काजक होइत जे घर सँ बाट आ बाट सँ घर वरि बोवीक कपड़ा जोइत, किन्तु ओह कवि केँ की कहल जाइ जे ने त घरक अहं ने बाटक। ओना एह देश में किछु लोक अवसे छथि जे यदा-कदा कहियो केँ दू आहुट पाव ओगारि देत छथि। परब एहन लोक आ एहन कवि छथि केँ केँ ?

किछु कवि केँ हास्य ग्रन्थ अथवा सस्वर पाठ करैक बंदोखत कहियोकाळ दू-चारि केँच्चा भेटि जाइत छनि, अथवा भइ होइक फिलिमवाला सभकेँ जे कोनो कविक तुकबन्दीपर वाह वाह क दैत छई किन्तु ताहुँठाम कविक कपारे कान करैछ वा गोटी सुतारिबला बात कहि सके छी। ने त

मान्यता बंगाल आ आसाम छोड़ि समस्त भारतीय ज्वायालय में छैक। बंगाल आ असम में बीमूतवाहनक ‘दयाभाग’ स्वीकृत अहं। एही आहिनक अनुसार सर्वप्रथम पत्रिक संपत्ति में विधवा स्त्रीक हिस्सा स्वीकृत भेल। ओतवे नहि एहि आहिनक अनुसार मुश्निहारक कोनो बेटी कुमारी होइक तकर विवाहादिक खर्च लेल संपत्ति फराक क देवाक सेहो विधान छैक आ बंचक संपत्तिक विभाजन वेटा लोकनिक बीच होइत।

दान विषयक चर्चाक क्रम में याज्ञवल्क्य स्मृति सभसँ पेश दानक रूप में ज्ञान-दान केँ निरूपित कएने अहं।

विद्वान लोकनिक मते याज्ञवल्क्यस्मृति महत्ता केँ देखैत गुप्तकाल में—जकरा कि साहित्य-कला विकासक स्वर्णयुग कहल जाइत छल—राजकीय मान्यता प्राप्त छलक आ एही ग्रन्थक आधारपर समस्त राजकाज चलेत छल जेना कि मौर्यकालीन शासनक आधार कौटिल्यक अर्थशास्त्र छल।

—सुजलबा अली

आँखि सँ देखे में त निराशा, मुक्तिबोध आ कतेक ने नामी-गिरामी कवि या त बताइ भ गेलाह या बिनु औषध-बारीक चर्चि देखनि। ई बात फराक थिक जे मुश्किल वाद हुनको लोकनिक लेल एकाधटा थोक सभा भ जाइत।

इज्जत, इम हुनके लोकनिक खानदानक एगो कवि छी। कतौ गोटी नहि सुतरक आ ने कपारेक जोरगर छी—तें केओ घावो नहि ओगारक। पहिने एहि बातक कचोटो हुमल जे केओ कवि ने पुछैत ? परंच जेना जेना समय बितैत गेल, बुझि ठेकान बगैत गेल। माने इज्जत इमरा त कोनो ठर ठेकान नहि भेटल मुदा बुझिबेरि ठेकान लागि गेल। भेले एना कि शुरू-शुरू में बखन कि इम नवे एहि शहर में आइल रही, इमरा मन में कविताक समुद्र उमड़ि पड़ल छल आ इम ओह में हुस्वी-मारि मोटी बहार क क लोक केँ देखल-तिऐक आ बढला में वाह-वाहीक इनाम पवितहुँ। ओना इम वाह-वाही चारैत नहि रहि। चारैत रही जे जाइ समाजक हेतु इम कविता लिखै छी, इमर संगी सभ सेहो ओह में भाग लिअए। परंच मेर कि इज्जत, बोझे दिन में इमरा सभक नेताक पता लागि गेल। ओकरा सभकेँ कविता स कम अपना नाम सँ बेसी सिनेर छलेक। ओ सभ कोनो मूखपर अपन नाम छामोनाइ आ प्रचारित केनाइ में अभिरुचि रखैत छल। एक दिन त ओ सभ लोकक दुल दर्द क संघर्षक बात करै छल त दोसर दिन ओकरा लोकनिक सभ समय सुबिधा बढोरवा में बीति जाइत छल।

इज्जत, इम बेसी पढ़ल-लिखल नहि छी। किन्तु नेना में इम बते पेश लोक केँ पढ़ने छी ताह सँ एते अवसे चुम्कलहुँ जे बिनु निष्ठाक जिनगी में किछु पओनाइ असंभव। परंच जेना-जेना नमहर होइत गेलहुँ—देखलहुँ कि जे केओ किछु हासिक देखनिहैं ताह में हुनका लोकनिक तोड़-फोड़, गोटी सुतारनाइ बेसी छलनि।

इज्जत, इम मानै छी जे आजुग युग आदर्शक युग नहि थिक। इम इहो मानै छी जे सत्त, ईमानदारी आ मानवीय मूल्य भगवानेसन अगोचर छल। आजुग युगक संग ओकर कोनोटा सम्बन्ध सरोकार नहि। इमरा इहो चुम्कल अहं जे लोक उगैत सूर्य के नमस्कार करैत। जे चिन्हार भ जाइत। जकरा कुहीं भेटि जाइ छल, जकरा कोनो प्रमाण-पत्र वा पुरस्कार भेटि जाइ छल—तेकरे समठाम मान्यता भेटैत छल। किन्तु इहो कि एहिठाम सभ संयोग प्रबान छल इज्जत, चान्सक बात छल सभ।

अहाँ सोचैत होयब इज्जत जे कि इमरा कतहु चान्स नहि भेटल—तें इम एना कहि रहल छी। इ इज्जत, एकदम सत्त छल जे इमरा कतहु कोनो चान्स नहि भेटल आ भरिसक भेटवो नहि करत। किन्तु इज्जत, एक बात पुछूँ—अपने जनाव देव ? की पही लेल इम अपन बाट छोड़ि दी जे सभ भोतिया गेल अहं ?

२०

लाल बुभुकरक चिट्ठी

जीमान् संपादक जी महोदय !

नमस्कार सह जय मैथिली !

आगा हाक सुरति की बिछू ? विरहिन बन के सदा वसन्त—तकरे परि छनि छाक बुभुकर के । असल मे जे पुछी त छाक बुभुकर विदेह भूमिक सुन्ना सन्तान छथि ने, ते तरबा सं टिकासनपरि विदेह छथि । केओ गारि पदुन वा आशीर्वाद देउन, वा दू चाट जगाइ देउन—हुनका केले जन सन ।

हं, अहाँ बिछे छी जे 'देसिक वयना' क डिप्लोमेशन नहि मेडि 'देसकोष'क भेटक, ते ओही नाम सं पत्रिका बहार करय पड़त । एहि मे चिन्ताक कोनो कारण त हमरा नहि बुझि पड़ेह । देसिक वयना हो वा देसकोष—बात एके मेक । बखने देसकोष अह त देसिक वयना रहबैत करत—से एक जगजाय मिश्र के कहइ हमारो जगजाय मिश्र ओकरा नहि मेडा सकैत छथि । अहाँ कने शानभाक भाग द क विचार आ अपन नाक दावि हमरण करू जे आइ सं छ सय बखे पहिनिह बाबा विद्यापति की कहि गेल छथि—बाकचन्द्र विजयवाह भाषा

डुडु नहि जगाइ दुखन हावा

ओ परमेसर हर खिर सोइह

ई बिचइ नाजर मन मोइह

से हुनन सभ जते किछक ने नाछि पट-पटाओ—बाकचन्द्रमा सन हमर ई भाषा चारिओटि मैथिली भाषीक हृदय रूपी निर्मल आकाशपर आर दिगुन तेज सं समवसाहत रहत—बाहरि ई पिरथी रहैत । ते अहाँ चिन्ताकमुक्त भ क कान मे गणेश छाप खाटी सरिखोके लेख द स्ति सकैत छी ।

आब अगिला विषय—राष्ट्रपर संकटक सम्बन्ध मे । संपादक जी, श्रीमती गांधी बखन किछु बजत छथि त तकर ओ अर्थ नहि होइत छेक जे हम—अहाँ बुझैत छी । ते ओ बखन कहैत छथि जे राष्ट्रपर बहिरिया आक्रमणक संभावना छेक आ तकर समर्थन करैत महान मार्क्सवादी श्रीमान नरसूदरी-वाद कहैत छथि जे मुसयिरी जग युद्धक नज्वा नाबि रहइ-ए त तकर अर्थ ई कय-मपि नहि जे हम सभ गोटे छाठो भाभा क शत्रुक सामना करै छेक बाटपर बहरा जाइ । एकर सोझ अर्थ होइ छह जे अहाँक आंखन मे जे-पथार पसरइ अह वा अलक डेरी जागल अह, कोटी-बखारी ने जे किछु अह, पौती-पेटारी ने जे गहना-गुदिया अह—से सभ सङ्घ प्रभानमंत्रीक सुखा कोश मे दान द दिएक । जं ताह मे कष्ट हो त सोके घर मे जा कान मे गुस्तेक द चहरि सं मुंह भांपि स्ति रहू—बाकी काब देशक स्वयं-सेवक ओकनि अपनहि क लेत । संपादक जी जेना कहवी छेक ने जे डुडु भ नेबा आ नाक जगले छनि से तकरे परि अहाँ के अह । हेओ श्रीमान्, शब्द भनहि वडा होइत होइक परंच ई के कहइक जे ओकर अर्थ सेहो ब्रह्म होइत छैक ? अर्थ त देश-काब मानक अनुसार वदेलेत रहैत छेक । जं सत्त पुछी त-इह सभ सोचि क हम राजनैतिक शब्दकोश तैयार करवाक काब हाथ मे लेइह आ योड़-वहुत काबो भेबइ । असल मे प्रायः बखे दिन सं हम श्रीमती गांधीक समस्त भाषणक प्रत्यक्ष

ओता छी । अहाँ कहू ने जे ई दुटपुनिया विरोधी दलक नेता सभक पाछा घुमनाह सं श्रीमतीक पाछा घुमनाह नीक की नहि ? कहियो छेइ जे सय चोट सोनार के आ एक चोट जोहार के । विरोधीदल सभ कतबो एकठा भक चिकरयु—बार जगतनि ओते फुसिह बाबज जते श्रीमतीजी अवसर एके मंत्र सं बाबि लैत छथि । संपादक जी-हमरा त पुरे पसेरीभरि विश्वास अह जे फुसि बस-बाक हेतु जं कोनो नोबेक पुरस्कार रहलैक त सर्वप्रथम ओ श्रीमती गांधी के मेडिटनि आ जेना कि कहवी छेक जे सुकिरिह नाम कि कुकिरिह नाम—से राष्ट्रक त नाम होइतक ।

हमर श्रीमती जी राष्ट्रक अखंडताक रक्षा छेक सेहो बेसी चिन्तित बुभुका जाइत छथि आ ते ओ प्रायः लोक के बिचित्रता-वादी तत्व सं सावधान रहवाक चेतीनी देत छथिन । एहि तत्व मे ओ जम्मू-कश्मीरक क्षमताशील दल, नेशनल कांफरेन्स, आसामक आन्दोलनकारी तथा पंचायिक अकाबी दल के मानैत छथि । परञ्च जं अहाँक हमरण शक्ति बिभाजक नहि होत मने इशत जे इह कनकरेन्स श्रीमतीजीक मंचार छल—विगत चुनावक पूर्व आ जे हेतु विगत चुनाव मे मंचारी दृष्टि गेबनि । आ कनक-रेन्स अपन खेती सगहार लेबक आ ई दुसि गेबती त ओ बिचित्रतावादी आ साक्षरवादीक भ गेब । तहिना जनता सरकारक अलमदारी मे भइक अलम आन्दोलन के दिनकेदल ने वसात केने छेक परञ्च जे हेतु ओ दिनका घुडी सं बाहर भ गेब ते राष्ट्रविरोधी थिक । तहिना पंचायिक आगि कि दिनके पंचायक नहि थिकनि ? एखनो प्रायः कोनो दिन वाम नहि जाइह जहिया एकाधटा निरपराध हिन्दूक हत्या नहि कइह जाइत होइक—परञ्च, सरकार केले जन सन । त्रिपुराक उपजाति संगठन जे कतेको खून-खरापीक बिस्मोदर अछि जे श्रीमती जीक भंजारे छनि ।

असल मे श्रीमती जी तेहन माहिर लेखारी छथि जे पाव कतो आ प कतो करैत छथि । किछु दिन पहिने बिहार भ्रमणक दौरान ओ बबलीइह जे ककरोपर 'हिन्दी' माने कोठाक भाषा जादल नहि जा रहल छैक । अहाँ के छगुन्ता जागि सकैह जे जं श्रीमती जीक कथन ठीक छनि त बिहारक भाषा हिन्दी भवे केना केले ? तथाकथित आबादी सं पहिने जाइ मैथिली-भाषीक संस्था डेढ़ कोटि छेक से आबादीक बाद पचपन हजार केना भ गेले ? प्रश्न आर छैक जे बखन सभ भारतीय समान अह त देसक भाषा संविधान मे छैक आ समस्त सरकारी सुख-सुविधा पवैह तखन हमरा ओकनिक भाषा मैथिली किछक चारक अह ? एहि सभ प्रश्नक जवाब लेब कने आर पाछू जाइ पड़त । किछु दिन पहिने ओ बाबल छबीह जे भाषा-धर्म-क्षेत्र आदि नगण्य विषय के विचरि ओक राष्ट्रीय अखण्डताक लेब केन्द्र के शक्तिशाली बनावइ । एहिठाम हमरण रखवाक थिक जे ई बात ओही लोक सं कहइ गेलेह जे दोसर स्तरक नागरिक अह—जकर भाषा-भूमिक चर्च भारतीय संविधान मे नहि छैक,

कविता

देस मगर महान छइ

अपाठक के देश हिन्दुस्तान छइ
आर जे किछु हो मगर महान छइ

बारवधु अइ एतय पटरानी बनल
कुलवधु कलपत छइ बनबास मे
आइ भरबा पर एतय अभिमान छइ

जतय कर्जे पर चले सरकार छइ
शक्तिशाली हाथ सभ बेकार छइ
देश बढ़िते जा रहल आगू मगर
बंचल हड़तीक ने साबुत राष्ट्र के
की हेतै, साबुत बंचल त शान छइ

गोध-गोदर मनावैए महोत्सव
देश के सेवक बनल जलजाइ छइ
नाक जुनि सिकुड़ी सडांच एतय कहां
बीस सूत्री इन के पैगाम छइ
ठीक सं देखू शमशान न ई थिके
अरे एकर नाम हिन्दुस्तान छइ

की कहल ? कुहर जेना भूकैत छइ
अरे ई त छैक भाषा राष्ट्र के
आर ई सभ श्रवान नहि छथि राष्ट्र कवि
राष्ट्र नायक के गभै छथि आरती
बात भनहि विचित्र छइ खासियत
तखन ने ई देश हिन्दुस्तान छइ

—रामलोचन ठाकुर

कारण ओकरा अविचार मेडि गेब छैक से त छोड़ि नहि सकैह । भाषा बिसरवाक सोझ अर्थ मेक पशु बनि गेनाह आ सुविवाक छेक पशुओ मे गदहा सभ सं उपयुक्त होइह । धर्म बिसरि जाउ—माने माकि—मतलब सरकार अपन हज्जानुसार कखनो अहाँपर कपडाक मोटा जादि सकैह, कखनो ऊस जादि सकैह आ कखनो अपने चदि सकैह—अहाँ कान जुनि पटपटावी । भूमि बिसरि जाउ—माने अहाँ के पोखरि वा हाट-बजार वा पहाड़ पर छ गेब जा सकैह—घास चरवाक पकलतियो मेडि सकैह ।

अहाँ के हमर ग्याख्या सुनि-पढ़ि अवबज जागि सकैह । अहाँ कहि सकै छी जे कोनो देशक प्रभान मंत्री एहन बात केना बाबि सकैह ? परञ्च सत्त पुछी त अग्रन देशक बात त हम नहि कहि सकैत छी परञ्च भारत सन विश्वक बृहत्तम गणतान्त्रिक देश मे एहन बात प्रभान मंत्रीदटा क सकैह । जं दोसर केओ लोक के गदहा बने छेक कहै त ओकरा मारि रोड़ा सं कपार फोड़ि देख जेतैक, कुकुर हुकका देख जेतैक आ हड्डी मे जं नहियो ठोकर जाइ त काँके अवबसे पठा देख जेतै । ओना ई बात सत्य होइतहुँ कोनो महत्व नहि रखैय जे श्रीमती जीक अपन कहिके भूमि-भाषा धर्म-संस्कृत किछुओटा नहि छनि । महत्वपूर्ण त ई छैक जे माटि सं अश्वपुत्र रहितहुँ ओ समस्त भारतीय भाषा-संस्कृतिक विद्याक कुलवारी पर अमरजती जकाँ पसरल छैय ।

हं त जेना कहैत छहुँ ज ई समस्त लोक जकरा जज पर श्रीमती जी केँ राबसिहासन प्राप्त छनि गदहा बनि जाइत त राष्ट्रक अखंडता सदा सदा लेब बरकार रहत । जेना कि देश विभाजित भइयो केँ अखंड अह, किछु भाग पकिस्तान चकिया छेक आ किछु चीन दवा छेक, किछु लंका केँ दान द देल गेल आ किछु बंगला देश केँ दान केँ अगो मे देइयो केँ राष्ट्र अखंडित अह—

तहिना हमार दुकड़ी होइतहुँ ई अखंडित रहत । जं आर सोझ शब्द मे कहै त राष्ट्रक अखण्डताक अर्थ भेक नेहू परिवारक शासन परम्परा केँ अखण्डित रखनाह ।

बारह जनवरी के अपन दिवसीक भाषण मे अशोक आ अकबरक प्रशंसा मे पंचमुख श्री मती जी स्पष्ट कहबनि जे जेना अकबर आ अशोक क समय मे केन्द्र शक्तिशाली छल-तहिना ओ चाहैत छथि । ओना ई कथा भिन्न जे महाराणा प्रताप सन देशद्रोही अकबरो क समय मे छलहे । एहि सन्दर्भ मे अशोक महान छलाह जे कलिंग के ठंढा क देलनि ।

अहाँ के त मने होइत जे बिहारक वर्तमान मुख्यमंत्री श्रीमान चन्द्रशेखर सिंह स्पष्ट शब्द मे घोषणा केबनिहें जे केन्द्रक अर्थ होइह नेहू परिवार आ तेँ केन्द्र के शक्तिशाली बनेवाक अर्थ मेक नेहू परिवार के शक्तिशाली केनाह आ नेहू परिवार के शक्तिशाली बनेनाह—माने जेना नेहूक बाद श्रीमती गाँधी तहिना श्रीमति गाँधीक बाद आजुक नेता काइक आशा (Today's leader tomorrow's hope) राखीव गाँधी केँ विश्वासरुद्ध केनाह आ राखीव गाँधीक बाद काइक नेता परसूक आशा (tomorrow's leader day after tomorrow's hope) राहुक गाँधी के विश्वासरुद्ध केनाह आ राहुक गाँधीक बाद

आशा अछि जे हमर एहि ग्याख्या सं अहुँक राजनैतिक बुद्धिक किछु विकास होइत । ई पत्र नितान्त वैयक्तिक आ गोपनीय थिक—तेँ एकरा छपवाक कष्ट नहि करी ?

पत्रोत्तर नहि देवाक प्रबल आकांक्षी
श्रीमान् लालबुभुकर
बुभुनुक प्राम बासो

किलु देखल : किलु सुनल

विगत ३४ दिवस के अ० मा० मिथिला संघ कलकत्ता, अपन रजत जयन्ती वर्षक उपलक्ष्य में मिथिला-विभूति पर्वक आयोजन केने छल-स्थानीय रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालयक सभागार में। एहि अवसर पर एगो स्मारिका सेहो बहार कएल गेल कम सं कम दोसर दिन मंचपर कवि सम्मेलनक समय अपनहि हाथेगोर देखे स्मारिका बिहलनि संघक प्रोपराइटर श्री बाबू साहेब चौधरी। स्मारिका देख। सं पहिने लोकक मुँह नीक बला निहारि लेनाइ आबश्यक छलनिह—कहीं अपात्रक हाथक हाथ ने पड़ि जाइक। ओना बिहलक बाद कहि देखनिह—सम तैयार नहि भ सकलै। ओना ई बात दिगार मेळ के स्मारिकाक ठप्पर ने छल छेक—मिथिला विभूति पर्वक अवसर पर उपस्थित समस्त मैथिली प्रेमी के सन्देश 'जे हो स्मारिका मे कार्य-क्रम क विवरण नहि छैक। पहिल दिन जे एगो पचाँ बिहलक गेल छलैक तकर नमूना देखू—अखिल भारतीय मि० संघ कलकत्ताक रजत जयन्ती आ' मिथिला विभूति पर्वक कार्य-क्रम। ३-१२-८३ शनि ४ बजे सं। १. मनोनीत अध्यक्ष ओ अन्य अतिथि के मंचपर स्थान ग्रहण २. माध्य प्रदान ३. गोसाउनिक गीत ४. स्वागतार्थक भाषण ५. संघ अध्यक्ष भाषण ६. उपाध्यक्ष भाषण ७. प्रधान अतिथिक भाषण ८. प्रधान वक्ताक भाषण ९. मान-पत्र अर्पण १०. विशिष्ट व्यक्ति भाषण ११. अध्यक्षीय भाषण १२. कवि सम्मेलन १३. कंठ संगीत :—(अ) चन्द्रमणि (ब) सरस-रमेश (स) पवन गोविन्द (द) रमण (प) प्रदीप (क) रवीन्द्र महेन्द्र। मनमोहन-विजय बृहन्नारायण भा।

पचाँ मे छपल तिथि के बाद देखि जाए सपह नीक, कारण इहए कार्यक्रम प्रायः दुनू दिनक छल। दोसर दिन अतिरिक्त मे दृश्यक आयोजन छल आ से नीक छल त रमण, प्रदीप, मनमोहन-विजय आ बृहन्नारायणक कंठ संगीतक लोक वाट तकित रहि गेल। कविकोनि के पहिल दिन बिबहो नहि कराओल गेलनि।

जेना देखल, मिथिला विभूति मे किरन श्री मनिनन्द मिश्रकेन्द्र श्री देवनारायण बाबु आ विन्देश्वर मंडल सम्मानित मेलाइ। जेना सुनल, मधुर श्री आ उदिन बाबू के सम्मान भी० पी० सं पठा देल जेतनि।

दोसर दिन जे कवि सम्मेलन भेल तकर अवस्था केनि अदेय किरण श्री आ भाग लेनि सर्व श्री मायानन्द मिश्र वीरेन्द्र मलिक, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, रमण प्रदीप मैथिलीपुत्र, उदयचन्द्र भा 'विनोद' राम कोचन ठाकुर, विभूति आनन्द, कश्मण भा बागर अर्जुन ठाकुर, विनोद कुमार भा, सरस, चन्द्रमणि, रमेश, सनेही प्रेमनन्द दास, कृष्णकान्त भा आदि।

भाषण कचा मे प्रमुख उद्घाट श्री भोगेन्द्र भा, श्री शिवचन्द्र भा, श्री वैष्णू आदि।

एहि विभूति पूर्वक विशेषता छल—जे पचाँ सं भाषण करे 'विभूति' लोकनिक नाम चले नहि भेल। मान पत्र भेटि गेलनि पस।

जे जाइ मैथिल कुबजुषण डॉ० अगन्नाथ मिश्रक लेल ई आयोजन छल से नहि जाइ आ आयोजक लोकनिक स्थिति गाल स खसक सक भ गेलनि।

जे जाइ मिश्र कबहुन चर्च स्मारिका सं आयोजक लोकनिक ठोरपर चकमाउर देत छल तार मे एगो त एहे नहि देखाइ आ दोसर घुसुंघप नारायण मिश्र सं एगो केलाइ त तिनका दर्शक ओता लोकनि तेहन सम्मान देलकनि जे बिनु वकता बघर नहि अपन गेष्टहाउसकीरि गेलाइ। प्रन्त्रह हबार टका पानि मे।

जे कलकत्ता मे पहिले पहिले मैथिलीक मंच सं हिन्दी मे भाषण भेल। जे व्यक्ति पाठनाक चेतना समितिक मंच सं हिन्दी भाषणक विरोध केने छलाह—अपना मंच पर देश मनोयोग सं सुनैत रहलाह—कानो नहि पटरलओलनि।

जे कलकत्ता मे सभदिन जय मिथिला, जय-मैथिली, जय मैथिलक आवाज सुनल जाइत छल एहि बेर जय भारत आ जय हिन्दी बेसी ध्वनित भेल।

—जयदेव छाम

शिक्षाक माध्यम

की ई मैथिलीक बिबल विहार टेक्स्ट बुक करीरेशनक पदबंध नहि ?

ते हमरा लोकनिक माऊ देनाक वाली मिथिलांचल मे निम्नतम स्तर सं उच्चतम-स्तरपर शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो, जेना प० बंगाल, उड़ीसा, तामिळनाड आदि विभिन्न प्रान्त मे छैक। जं मिथिलांचल मे दोसर भाषा-भाषी छात्र छथि त एक पत्र हुनक मातृभाषाक अवसरे पढ़ाओल जाएत—छठम वर्ग सं अखन कि मैथिली भाषी छात्र सेहो एकटा अपर भाषा हिन्दी वा, अंग्रेजी वा अन्ये कोनो—पढ़ता—जेना आन प्रान्त मे अछि।

—सुजतना अली

बालमंच

अटकन मटकन

अटकन मटकन दहिया बटकन
बजै छौ हिन्दी त मार द बटकन
मिथिला मे रहि क हिन्दी बजै छौ
छा तोरे अन्न अपमानो करै छौ
सहै चुपचाप लगी लाजो ने कनियो
गरदिन पकड़ि क छगो दही पटकन
बिनु राज्य मिथिला खिबिल भेल रहै
भाषा विहीन भेल बौके तौ मरै
मायक ई लाज काज तोरे से जानि ले
जाति पाति भेद बिसरि जाबो त बढ़ै
आइ नबि बिगार गीत प्रीतक प्रयोजन छै
रणचंडीक आइवान करै मने मन

—रामलोचन ठाकुर

मैथिली पोथी/पत्रिका कीनू आ पढ़ू

इतिहासहंता (कविता संग्रह)	—	२/४ टाका
वेताळ कथा (हास्य-व्यंग्य)	—	४ टाका
जादूगर (अनुदित नाटक)	—	५ टाका
प्रतिध्वनि (अनु० कविता)	—	४ टाका
अर्द्धनारीश्वर (उपन्यास)	—	२५ टाका
मुन्शी रघुनन्दन दास : (व्यक्ति ओ कृतिरब)	—	७ टाका
मैथिली लोककथा	—	५ टाका

सम्पर्क करू :—

अरुणोदय प्रकाशन

कलकत्ता

मिथिलावासीक मांग :-

१. मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे स्थान हो।
२. केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
३. मिथिलांचल मे निम्नतम सं उच्चतम स्तरपर शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो।
४. मैथिली बिहारक दोसर राजभाषा हो तथा मिथिलांचल मे एकरा प्राथमिकता देल जाइक।
५. आकाराबाणो इतिहास तथा भागलपुरक प्रचारणक माध्यम भाषा मैथिली हो।
६. समस्तीपुर सं जयनगर धरि बड़ी लाइन बनाओल जाय।
७. मिथिलांचल मे यातायातक सुव्यवस्था हो।
८. मिथिलांचल मे कृषिक अवस्था मे सुधार हो तथा रौंदी दाही सं बचकाक सपाय हो।
९. मिथिलांचल मे कृषिपर आधारित सरकारी उद्योग-धंधाक विकास हो।
१०. मुजफ्फरपुर दूरदर्शन केन्द्रक प्रोग्राम मे मैथिली के प्राथमिकता देल जाइक।

मैथिली मुक्ति मोर्चा

कलकत्ता

अरुणोदय प्रकाशन ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेल श्री महेश्वर भा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स ३२ बी, बृन्दावन वैशाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित।

२४/१/८४
श्री गणेशाय नमः

मथिल संस्कृतिक आधार स्तम्भ

(प्रोफेसर हरिमोहन झा)

मिथिलाक संस्कृति अत्यन्त प्राचीन आ त्विक अछि। सरल जीवन आ उच्च चार एकर विशेषता। शील, संतोष शास्त्र-वन्त एवं धर्मनिष्ठता एकर नैसर्गिक गुण। एत विद्या-विनोद, मधुर परिहास एवं कतिपयपरायणता एकर भूषण। एहि संस्कृति'क आधार-शिला थीक आध्यात्मिक ष्टिकोण। औपनिषदि के युग सँ मिथिला अपना दार्शनिक विचारधाराक लेल प्रसिद्ध अछि। जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम प्रभृति महर्षि अही भूमि पर उत्पन्न भेलाह। एहने-एहने मनीषिक पुनीत साधना सँ एहिठामक सांस्कृतिक जीवन अनुप्राणित भेल अछि।

राजर्षि जनक जीवन-मुक्तिक प्रतीक छलाह। हुनका विषय मे ई उक्ति एखनहुँ प्रसिद्ध अछि—“मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दहति किंचन।” एहि सँ बढि कऽ अनाशक्ति-योगक उदाहरण और की भ सकइए? दूर-दूर धरिक जिज्ञासु हुनका सँ ब्रह्मज्ञान सिखबालेल अवैत छलाह। बृहदार-ण्यक उपनिषद् मे सेहो हुनकर सुयश-वर्णन भेटइए—“जनक जनक इति वै जनाः धावन्ति (२।१।१)” देवी भागवत मे कहल गेल छह—वंशोऽस्मिन् येऽपि राजानस्ते सर्वे जनकास्तथा। विख्याताः शानिनः सर्वे विदेहाः परिकीर्तिताः।”

(अर्थात् जनक वंश मे जत्ते राजा भेलाह, सभ हुनके जकाँ आत्मजानी। वेह केँ तुच्छ बुझबाक कारणेँ हिनका सभ केँ ‘विदेह’ कहल जाय लागल)।

मात्र राजादिके नई, मिथिलाक साधारण जनता आध्यात्मिक रंग सँ रंगल छल। एकर प्रमाण श्रीमद्भागवत मे भेटइए—“एते वै मिथिल राजनः, आत्मविद्या-विशारदाः। योगेश्वर प्रसादेन, ब्रह्ममुक्ता गृहेष्वपि।” जल मध्यक कमल जकाँ, संसार मे रहितउँ संसार सँ निर्लिप्त रहब एहि भूमिक आदर्श रहल अछि। इएह आदर्श भारतीय संस्कृतिक आत्मा थीक।

याज्ञवल्क्यक आत्मवाद दार्शनिक साहित्य मे विशिष्ट स्थान पाओल अछि। हुनकर श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन सम्बन्धी उपदेश सहस्राब्दि सँ एहि देशक सांस्कृतिक चेतना केँ जगवैत आवि रहल अछि। ओहि कालक मैथिल स्त्रियो तत्वदर्शिनी होइ छलीह। याज्ञवल्क्यक स्त्री मैत्रीयक वचन छनि “येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम्?” (अर्थात् जे अमृत, अमरज्ञान नहि अछि, से छऽ कऽ हम की करब ?) दार्शनिक गार्गी ब्रह्म विषयक गूढ़ प्रश्नादि सँ याज्ञवल्क्यो केँ चकित कए देने छलीह। न्यायशास्त्रक रचयिता गौतम से हो मिथिलेक विभूति छलाह। स्कन्द पुराण मे गौतमक निवास-स्थानक वर्णन एना अछि “आसीद् ब्रह्मपुरी नाम्ना मिथिलायां विराजिता, तस्यां वसति धर्मात्मा गौतमो नाम तापसः।” एखनउँ मिथिला मे गौतम स्थान आ गौतम कुण्ड प्रसिद्ध अछि। गौतम प्रणीत न्याय

सत्यतः मिथिला तर्क, शास्त्रक जननी कहल जा सकइ छथि। प्राचीन न्यायक प्रणेता गौतम आ नव्यन्यायक प्रवर्तक गंगेश—दुनू मिथिलेक संतान। अहिना, मीमांसा दर्शन अभिवृद्धिक श्रेय सभ सँ अधिक मिथिले केँ अछि। पूर्वमीमांसाक तीनू शाखा (कुमारिल, प्रभाकर तथा मुरारि मिश्रक) एतद् प्रादुर्भूत एवं प्रस्फुटित भेल। मिथिला मे न्याय ओ मीमांसाक अधिक उत्कर्षक कारण इहो भेल जे मिथिला केँ बौद्धदर्शनक पाथर बिहाड़ि सहए पड़लैक। बौद्ध तार्किकादिक आक्रमण सँ वैदिक कर्मकांड आ ईश्वरादि केँ बचएवा लेल मिथिला मे एक पर एक उद्भूत मीमांसाक नैयायिक होइत रहलाह। ई परम्परा कहएक शताब्दि धरि रहल।

मंडन मिश्र मीमांसाक सभ मे अग्रगण्य छलाह। हिनकर प्रकांड विद्वत्ता सुनिकऽ शंकराचार्य हिनका सँ शास्त्रार्थ करए हिनकर गाम (वर्तमान सहरसा जिलाक सुप्रसिद्ध ग्राम महिषी। महिषी अथवा महिष्मती। महर्षि वशिष्ठ अहीठाम भगवती उग्रताराक आराधना कएने छलाह।) आएल छलाह। तहिया मिथिलाक बौद्धिक स्तर केहेन ऊँच छल, से ‘शंकर-दिग्विजय’ सँ ज्ञात होइए। जखन गामक कोनो इनार पर शंकराचार्य कोनो पनिभरनी सँ मंडन मिश्रक विषय मे पुछलथिन तऽ उक्त पनिभरनी उत्तर देलकनि—“स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं वीरांगना यत्र गिरो गिरन्ति। द्वारस्थनी दान्तर सन्निवृद्धाः जानीहि तन्मंडन पंडितौकः।” (अर्थात् जइ दरबजा पर टांगल पिजड़ा मे सुग्गा-सुग्गी ‘ब्रह्म अप्पन प्रमाण अपनई थीक आ ब्रह्मक प्रमाण ई विश्व थीक’ अइ महान वाक्यक आवृत्ति कए रहल होइथ, तकरे मंडन मिश्रक स्थान बूझि लेब।) मिथिलाक स्त्री केहेन होइत छलीह, एकर ज्वलन्त उदाहरण मंडन मिश्रक पत्नी सरस्वती देवी छथि, जे ओहि ऐतिहासिक शास्त्रार्थ, मे मध्यस्थक कार्य कएलनि।

भारतीय दर्शनक इतिहास मे वाचस्पति मिश्रक बड़ आदरणीय स्थान अछि। छब्बो दर्शन पर समान अधिकार रखबा कारणे हिनका षडदर्शवल्लभ कहल गेल छनि। ई दरभंगा जिला, दाढ़ी गामक रहनिहार छलाह। उद्योतकरक न्याय वार्तिक पर ई अप्पन सुप्रसिद्ध ‘तात्पर्य टीका’ रचलनि, जकर आरम्भ मे ई लिखइ छथि—इच्छामि किमपि पुण्यं दत्तं कुनिवन्धनं कमनानाम् उद्योतकरगवीनामतिजस्तीनां समुद्रणात्।” (अर्थात्, उद्योतकरक बूढ़ि गाय सभ दल-दल मे फंसल छथि, तनिकेँ उद्धार कए थोड़बो पुण्य करए चाहैत छी।) वाचस्पति मिश्र बौद्ध तार्किक सभक खंडन करैत, एहेन विद्वता सँ न्याय शास्त्रक तात्पर्य सिद्ध कएलनि जे ई ‘तात्पर्याचार्य’ कहबए लगलाह। शंकर भाष्य पर हिनक सुप्रसिद्ध ‘भामती’ टीका वेदान्त क्षेत्र मे गौरवपूर्ण स्थान रखैत अछि। ‘भामती’ हिनकर विदुषी पत्नीक

हजुर माइ-बाप ! अपने सम्बन्ध मे कहनाइ शुरू करी, सहए ठीक रहत। किएक त जखन हम दोसराक सम्बन्ध मे कहैत छी त कतहु ने कतहु अपने परिचय प्रस्तुत करैत छी। खाहे हम दोसराक प्रशंसा करैत होइ वा निन्दा। दोसराक गुण-स्वभावक किरण आबि केँ

उदयनाचार्यक नाम सेहो अग्रगण्य। हिनकर ‘न्याय-कुसुमाञ्जलि’ ईश्वर विषयक अद्वितीय ग्रन्थ अछि। नास्तिक बौद्ध सभ संगे युद्ध कए आस्तीकवादक स्थापना करब, हिनके सन धुरंधर आचार्यक काज छल। हिनक सम्बन्ध मे एक किंवदन्ति अछि जे एक बेर ई कोनो कष्ट मे पड़ि गेलाह तऽ ईश्वर केँ सम्बोधित करैत बजलाह—“ऐश्वर्य मदमत्तोऽसि मामवज्ञाय वर्तसे, उपस्थितेषु बौद्धेषु ममाधीना तव स्थितिः।” (अर्थात् हे ईश्वर, अहाँ ऐश्वर्य-मद मे मत्त भऽ हमर उपेक्षा करैत छी। मुदा, बूझि राखू, यदि हमर अस्तित्व अहाँ पर निर्भर अछि तऽ अहाँक अस्तित्व बौद्ध सभक मध्य मे हमरे पर निर्भर अछि।) एहन छल मैथिल पंडित सभक आत्माविश्वास मैथिल पंडित सभक इहो गर्वोक्ति प्रसिद्ध अछी—“वयमिह पदविद्यां तर्क मान्वीक्षीकं वा यदि पथि विपथे वा वर्तयामः स पन्थाः। उदयति दिशि यस्यां भानुमान सैव पूर्वा नहि तरणिरदिते दिक् पराधीनवृत्तिः॥”

(अर्थात् भाषा ओ तर्क केँ हमसभ जिम्हर लऽजायब, सहए मार्ग बनि जएतइ। सूर्य जइ दिशा मे उगइए, सहए पूर्व दिशा कहावइए) ई सूर्य दरभंगा जिला, करियन ग्राम मे उदित भेल छलाह।

जइ प्रकार आठम आ दसम शताब्दि मे मंडन, वाचस्पति आ उदयनक प्रकाश मिथिला मे जावबल्यमान रहल तहिना तेरहम आ सोलहम शताब्दिक मध्य गंगेश, पक्षधर आ शंकर देदीप्यमान नक्षत्र जकाँ चमकैत रहलाह। गंगेश उपाध्याय नव्यन्यायक जन्मदाता छलाह। हिनकर निवास दरभंगा जिला, मंगरौनी गाम मे छल, ई करियन गाम मे अप्पन विद्यालय स्थापित कएने छलाह, तकरा डीह पर एखनउँ किछु चिह्नादि छैक।

मिथिलाक नव्यन्याय परम्पराक इति-हास गौरवपूर्ण अछि। तीन-चार शताब्दि मिथिला सँसै भारतक प्रमुख ज्ञानपीठ-विद्यापीठ बनल रहल। दूर-दूर सँ आबि कऽ विद्वान सभ एतए अवच्छेदकता, प्रकारता आदिक ज्ञान प्राप्त करए अवैत छलाह।

गंगेश उपाध्यायक नव्यन्याय परम्परा मे सभ सँ प्रसिद्ध भेलाह पक्षधर मिश्र। हिनका विषय मे प्रसिद्ध अछि—“शंकर-वाचस्पत्योः शंकर-वाचस्पती सदृशौ, पक्षधरप्रतिपक्षी लक्ष्मी भूतो न च क्वापि।” (अर्थात्, शंकर आ वाचस्पति, शिव अ बृहस्पतिक तुल्य छथि।) परन्तु पक्षधरक समक्ष तऽ किओ ने देखइ मे अवैत अछि। कहल जाइए जे ई जइ पक्ष केँ धरइ छलाह तकरा सिद्ध कऽ दइ छलाह।

अतःकरण सँ उकराइए आ फेर हमर प्रति क्रियाक शकल अस्तित्वार क लेए। भरिसक तँ कुनू दार्शनिक कहने छथि जे मनुक्खक तीन रूप होइ छइ। पहिल ओ, जे ओ स्वयं अपना बारे मे जनैए। दोसर ओ, जे

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

लाह आ हिनका सँ ‘मणि’ ‘आलोक’ प्राप्त कए नव द्वीप छए गेलाह।

मैथिल संस्कृतिक ओहि स्वर्ण युग मे मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन केहेन छल, तकर उदाहरणस्वरूप पंडित भवनाथ मिश्रक नाम गौरवपूर्णक लेल जा सकइए। ई दरभंगा जिला, सरिसव गामक निवासी दरिद्र ब्राह्मण छलाह। मात्र सवा कऽठा जमीन छलनि। ओइ मे जे साग-पात उपजइ छलनि ताहि सँ निर्वाह करैत छलाह। एहेन स्वाभिमानी छलाह जे कहिओ ककरो सँ कोनो याचना नहि कएलनि। तहँ ई ‘अयाची मिश्र’ नाम सँ विख्यात भेलाह। ई आजीवन विद्यादान कएलनि आ अन्त मे गंगालाभ कएलनि। गंगा सँ विदा होइ-काल ई श्लोक पढ़लनि—“अधीतमध्यापितमर्जितं यशः न सौचनीयं किमपीह भूतले, अतः परं श्रीभवनाथशर्मणः मनो-मनोहारिणी जाह्नवीतटे।”

हिनकर पुत्र शंकर मिश्र एहेन संस्कारी भेलाह जे पाँच वरखक अवस्था मे ई श्लोक रचि कऽ मिथिला नरेश केँ सुनौलनि—“बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती। अपूर्ण पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्प्रभु।”

ई श्लोक एखनउँ धरि गाम-गाम मे प्रसिद्ध अछि आ छोट-छोट बालक सभकेँ शैशवावस्था मे कण्ठस्थ कराओल जाइत अछि। शंकरक विद्या सँ प्रसन्न भऽ मिथिलेश हुनका प्रचुर पुरस्कार देलथिन। मुदा हुनकर माता भवानी तऽ अयाची मिश्रक पत्नी छलथिन। ओ शंकरक जन्मे-काल एक चमइन केँ वचन देने छलथिन जे शंकरक पहिल कमाइ ओकरा नेछाओरक रूप मे देल जएतैक, ई प्रतिज्ञा स्मरण अवि-तइ ओ सभटा सभति ओहि चमइन केँ दऽ देलथिन। मुदा ओहो चमइन तऽ मिथिलेक माटि-पानि पर जनमल छल। तहँ सभटा धन सँ एकटा सार्वजनिक पोखरि खुनबा देलक जे आवहु धरि चमइनभौ पोखरि नामे विख्यात अछि। आई सँ किछुए पीढ़ी पूर्व मिथिलाक जातीय चरित्र एतेक महान छल।

एहेन छल मिथिलाक संस्कृति, जे त्याग, संतोष आ स्वाभीमानक अदम्य ज्योति सँ जगमगा रहल छल। अही सांस्कृतिक विशेषताक कारणे मिथिला सहस्रोवर्ष पर्यन्त तीर्थ भूमि बनल रहल।

कहल जाइए जे पहिने मिथिलाक भूमि जलक आधिक्य कारणे बड़-बड़ आद्र छल। वैदिक युग मे आर्य सभ एतए आवि नदी-नदक काते-कात यज्ञ करैत एहि भूमि केँ रहवाक योग्य शुक्ल ज्ञनौलनि। तहँ एकर नाम ‘तीरभुक्ति’ पड़ल, जे आव तिरहुत अछि। एहिठामक एक-एक

आकाश

अङ्क-३४

मार्च-अप्रैल ८४

मूल्य-पचास पाइ

सम्पादकीय

प्रो० हरिमोहन भा

२३ फरवरी १९८४ क मनहूस दिन हमरा लोकनिक प्रिय साहित्यकार हरिमोहन बाबू के हमरा लोकनि सं छीनि लेखक। मनुख कतबो बुधियार आ बरियार किएक ने हो—ओ जे कतेक असहाय अइ तकर ज्ञान एहने एहने घड़ी मे होइ छइ। तँ अपन प्रियजन के दिन मास वा बरख नहि—सदाक लेख विद्युरेत देखियो केँ मओन रहैछ, अपन अक्षमता पर नोर बहा संतोष करैछ। निष्ठुर काल ओकर कमजोरी पर हंसैछ, अपन विजय पर ठहाका लगवैछ।

परञ्च कालो जतेक शक्तिशाली अपना केँ बुझैछ ततेक अइ नहि ओ मनुख केँ समाप्त क सकैछ मुदा ओकर कृति आ कीर्ति केँ नहि समाप्त क सकैछ आ असल मे सही मनुख त अपन कृतिये मे जीवैए। आत्मा का अमरता भनहि विवादास्पद हो परञ्च कृतिक अमरता सर्वमान्य थिक आ तँ जं कही जे हमरा लोकनिक प्रिय हरिमोहन बाबू, श्रद्धेय हरिमोहन बाबू मुइला नहि, ओ मरियो नहि सकै छथि त अनगल नहि होएत। हरिमोहन बाबू जीवै छथि अपन खट्टर ककाक तरंग मे, ओ जीवै छथि रंगशाला मे, ओ जीवै छथि कन्यादान आ द्वीरागमन मे।

प्रो० हरिमोहन भा माने वर्तमान युगक सर्वाधिक पठित साहित्यकार, प्रिय साहित्यकार हरिमोहन बाबू, हास्य सम्राट हरिमोहन बाबू, मिथिलाक दार्शनिक परम्परा प्रबल स्तम्भ हरिमोहन बाबू जीवैत छथि आ ताधरि जीवैत रहता जाधरि मैथिली भाषा-साहित्य। कहवाक प्रयोजन नहि जे हरिमोहन बाबूक प्रति उचित सम्मान / श्रद्धांजलि मैथिली भाषा साहित्यक केँ समृद्ध केनाइ ओकर विकासक पथ प्रस्तुत केनाइए टा होएत आर किछु नहि, किछुओटा नहि।

दही चूड़ा चीनी

—प्रो० हरिमोहन भा

खट्टरकका दलान पर बैसल भांग घोटैत छलाह। हमरा अबैत देखि बजलाह हौं-हौंओम्हर मरवाइ रोपल छैक, घूमि कऽ आवह।

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, आइ जयवारी भोज छैक, सैह सूचित करय आयल छी।

खट्टरकका पुलकित होइत बजलाह—वाह-वाह। तखन सोभे चलि आवह। दू एकटा धंगेवे करतैक त की हेतैक?.....हं, भोज मे हेतैक की सभ।

हम—दही चूड़ा चीनी।

खट्टर—वस, वस, वस। सृष्टि मे सभ सँ उत्कृष्ट पदार्थ यह थीक। गोरस मे सभ सँ मांगलिक वस्तु दही—अन्न मे सभक चूड़ामणि चूड़ा—मधुर मे सभक मूल चीनी! एहि तीनूक संयोग बूझै त त्रिवेणी संगम थीक। हमरा त त्रिलोकक आनन्द एहि मे बूझि पड़ैत अछि। चूड़ा भूलोक। दही भुवलोक। चीनी स्वर्लोक।

हम देखल जे खट्टर कका एखन तरंग मे छथि। सभटा अद्भुते बजताह। अतएव, काज अछेतो गप्प सुनवाक छोमे बैसि

हम चकित होइत छुछलियेन्ह—ऐं! दही चूड़ा चीनी सँ सांख्य दर्शन! से कोना?

खट्टरकका बजलाह—एखन कोनो हड़बड़ी त ने छौह? तखन बैसि जाह। हमर विस्वास अछि जे कपिल मुनि दही चूड़ा चीनीक अनुभव पर तीनू गुणक वर्णन कऽ गेल छथि। दही सत्वगुण। चूड़ा तमोगुण। चीनी रजोगुण।

हम कहलियेन्ह—खट्टरकका, अहाँक त भभटा कथा अद्भुते होइत अछि। ई हम कतहु नहि सुनै छलहुँ।

खट्टरकका बजलाह—हमर कोन बात एहन होइ अछि जे तँ आनठाम सुनि सकवह?

हम—खट्टरकका, त्रिगुणक अर्थ दही चूड़ा चीनी, से कोना बहार केलियेक?

ख०—देखह, असल सत्व दहिण मे रहैत छैक, तँ रज। चूड़ा लक्ष्मण होइछ, तँ तम। देखे छह नहि, अपना देश मे एखन धरि 'तमहा' चूड़ा शब्द प्रचलित अछि।

हम—आश्चर्य! एहि दिस हमर ध्यान

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जोरि सुझाह करब हम
विद्रोहो मिथिलाक जबान

देश

नकल करू आ नष्ट होउ

मैट्रिक परीक्षा समाप्त भऽ गेल अछि। एहि बेर बिहार परीक्षा समितिक एहि परीक्षा मे पाँच लाख सँ उपर परीक्षार्थी सम्मिलित भेल छथि। ई परीक्षा आ एकर परीक्षाफल अनेक अर्थ मे महत्वपूर्ण अछि, मुदा एहि परीक्षाक कोनो विश्वसनीयता नहि रहि गेल अछि।

परीक्षा मे चोरि करब रह-रहौं भऽ गेल अछि। मूल-चपाट सभ नीक नंबर सँ पास करबा लेल मोचंडी पर उतरि गेल अछि। जे लोक एहि चोरि केँ रोकशाक प्रयत्न करत, से मारि खायत।

एहि बरख अनेक नव बात भेल अछि। मिथिलांचल क थोड़ेक उदाहरण लेल जाय। दरभंगा जिला मे दू गोटा केन्द्राधीक्षक (सुपोल आ दरभंगा मारवाड़ी स्कूल) गिरफ्तार भेलाह आ कदाचार (परीक्षामे चोरि) क आरोप मे दण्डित भेलाह। मधुबनी जिला मे दू गोटा केन्द्राधीक्षक ड्योढ़ आ बरही-कुलपरास केन्द्र पर कदाचार मे गिरफ्तार भेलाह। हाजीपुरमे एक दण्डाधिकारी गिरफ्तार भेल छथि। सदरसा मे एक दिन एक दण्डाधिकारी चोरि करैत परीक्षार्थी केँ पकड़लनि आ प्रत्येक केँ एक-एक सय टाका जुर्माना कयलनि आ एहि जरिबाना सँ सुनैत छी जे सत्तर हजार टाका जमा भेल। एहि बेर नव बात ई भेल अछि जे कदाचार मे केन्द्राधीक्षक लोकनि दण्डित कयल गेलाह अछि।

चोरि किएक होइत अछि?

एकर उत्तर सोभ अछि। लोक परीक्षा मे नीक नम्बर आनऽ चाहैत अछि जाहिसँ ओ कम नम्बरवाला सभ केँ पछाड़ि आगाँ बढ़ि सकय। नीक नम्बर अनवा लेल परिश्रम सँ पढ़ब एक तरीका अछि जे आब पुरान

भऽ जाइ छैक। जखन उच्चर दही ओहि पर पड़ि जाइ छैक तखन प्रकाशक उदय होइ छैक। तँ सत्वगुण केँ प्रकाशक कहल गेलैक अछि। 'सत्व' लघु प्रकाशक मिष्टम्। तँ दही लघुपाकी की तथा सभ केँ इष्ट (प्रियगर) होइत अछि। चूड़ा कोष्ठ केँ बाहि दैत छैक। तँ तम केँ अवरोधक कहल गेल छैक। और बिना रजोगुण त क्रियाक प्रवर्तन हो नहि। तँ चीनीक योग वेत्रेक खाली चूड़ा-दही नहि घोंटा सकैत छैक। आब बुझलहक?

हम कहलियेन्ह—धन्य छी खट्टरकका। अहाँ जे ने सिद्ध कऽ दी।

खट्टरकका बजलाह—देखह, सांख्यिक मत्त सँ प्रथम बिकार होइत छैक महत् वा बुद्धि। दही चूड़ा चीनी खेला उत्तर पेट मे फूलि कय पसरैत छैक। यह महत् अवस्था

भऽ गेल अछि। नव तरीका अछि जे नीक नम्बर परेवी, पाइ आ मोचंडी सँ आनल जाय।

बोर्ड परीक्षा लेत अछि। जतऽ नम्बर बढ़ायब आ फेल के पास करायब कठिन बात नहि छैक। पाइक भुखल कर्मचारी हरियर देखौलासँ सभ किछु उनटा-पुनटा कऽ सकैत अछि।

एहि बेर परीक्षा बोर्डो कमाळ कऽ देलक अछि। दू नेपरक प्रश्न-पत्र बजार मे बिकायल। प्रश्नपत्रक 'फोटोस्टेट' अखबार सभ छपलक, ओहि पेपरक परीक्षा बाद मे भेल। मुदा ई खबरि परीक्षासँ पहिने जग-जानित भेल, तँ ओकर माजन कयल गेल।

बोर्ड परीक्षा खतम होइत, होइत पटना क दैनिक सभमे खबरि आयल जे प्रत्येक पत्रक प्रश्नपत्र आउट छल आ पटना तथा अन्य स्थान सभ पर नोट देलापर भेटैत छल।

सभ किछु जनैतो बोर्ड क अधिकारी तथापि परीक्षा करयवे कयलनि।

आब एहेन परीक्षा क काफी सभ जाँचल जायत आ तकरा आधार पर परीक्षा फल कयल जायत।

एहि देश मे परीक्षो अशुद्ध भऽ गेल अछि। परीक्षा फलो अशुद्ध भऽ गेल अछि। अशुद्ध लोक केँ उत्पन्न कऽ शुद्ध आचरण क आशा करब अशुद्ध थिक।

मिथिलांचल क लोक एहि मेडिया-धसान मे ककरो सँ पाछौं नहि छथि। एकर फल मुदा की होयत? की एहि सँ मिथिलांचल अगुआयत? प्रगति करत?

मिथिलांचलक मुख्य उद्योग थिक नौकरी। नौकरीक आधार डिग्री आ योग्यता दुनू थिक। साधारण नौकरी पयबा लेल सर्टिफिकेट पर्याप्त थिक। श्रेष्ठ नौकरी पदवा लेल सर्टिफिकेटक संग योग्यता आवश्यक। ताहिमे योग्यता सभ सँ आवश्यक। एहि योग्यता क जाँच लेल प्रतियोगिता परीक्षा सभक आयोजन होइत अछि। मैथिल नौकरी मे वड़ बेसी सन्दिआयल छथि, मुदा नीक नौकरी मे कम छथि।

एहेन नकली परीक्षा क सर्टिफिकेट कला लोक कोन नौकरी पौताह?

परीक्षामे नकल होइत अछि, तं विद्यार्थी मास्टर सभकेँ घास बूझऽ लगैत अछि। ओ किताब सभकेँ अछोप बूझऽ लगैत अछि। ओ अपना सँ पैघ हर व्यक्ति केँ टकदरआ बूझऽ लगैत अछि।

मोचंडी आ उदंडता, हिंसा आ अपराध बढ़यबा मे परीक्षा आ परीक्षाफल क इ पैघ हाथ छैक।

समाज नीचाँ मुँहे रुड़कि रहल अछि।

पिता : मृत्युसजा सँ / □ विभूति आनन्द

□□

यंत्रणापूर्ण जिनगीक समझा ऊँच-नीच
हमरा अगेजल अछि बाउ !
हम एकटा सोहजिनक गाछ भऽ जालहुँ
जकर सर्वांग भूआ सँ आक्रान्त रहैत आयल
हारल ई देह - गाछ तहिये ने कोकनि चुकल
जहिया सँ एकर देह पर दोसर गाछ अपन अस्तित्व बनाबऽ लागल ।

□

बाउ !
हम अपन एहि मानसिक सहरजमीन कें
लाल व्यापक बनयबाक प्रयास करैत अयलहुँ अछि,
ई चाहे तऽ फूसि-फटक भऽ जाइत रहल अछि
अथवा, शून्य मे विचरैत कोनो नीरा-जीवी
अथवा, विजया-सेवी मनुक्कल बकवास भऽ कऽ
एहि समाज द्वारा मान्यता प्राप्त करैत रहल अछि ।

□□

आ तँ,
जीवनक एहि सांध्य बेला मे
परिवर्तनक ओर हेरैत बितल सम्पूर्ण वय
आइ पुनः ओही प्रयत्नवादी मुद्रा मे
जुनुत बन्दने छहका लगा रहल अछि ।

□□

हमरा छोए,
अपन संस्कृतिक मोह आ बढप्पनक कटाइ जंगल मे
अनेरे बौआइत रहलहुँ
स्मृति मे जीबाक हमर-अहांक ई आम मानसिकता
मोहान्छन कऽ कऽ लोक कें तोड़ि कऽ छुज कऽ देत छै बाउ !

□□

अपन पितरक तर्पण करैत
आकि
मनुवादी परम्परा मे पलेत
कुल, गोत्र आ मूलक ओर-ओर मिलबैत
अथवा
गौरवपूर्ण इति-वृत्तिक बीच भिस्झरि खेलाइत
आइ जे कि हम वर्तमान सँ कटल रहलहुँ—
जीवनक सभ सँ अवलगाइ शब्द पर
स्वीकारक मोहर मारवा पर बितै छी ।

□□

आइ हम
हिमालयक कोरा मे बसल अपन गामक
बीच चौबट्टी पर ठाढ़
आंखि मध्य विराट शून्य कें लदने
अरीरक असह्य भार कें
दूटा कमजोर पंख पर
सम्हारि रखवा ने विफल भऽ रहल छी ।
ई एकटा मुद्रा थिक पश्चातापक
जे हमर दीर्घ जीवनक सोभ निष्कर्ष अछि ।

□□

हम आर अधिक ई पीड़ा नहि सहि सकब
हम जा रहल छी बाउ !
अहां सभ द्वारा उठल ई असंख्य तर्जनी
कखनो हमरा खोंछबैत सन बुझाइत अछि,
कखनो बेधेत सन छोतैत अछि मीत ।

□□

हम जीवनक सार्थकता मादे सोचियेता सकलहुँ—
कऽ नहि पौलहुँ किछु ।
जहिया जुआनी क उठान पर रही—
गबदी मारब नीक छोतैत छल
जहिया अनीतिक विरोध कऽ सकैत रही—
दृष्टि-लज्जा सँ छीबल रहलहुँ
वैचारिक स्तर पर जतने साकांच रही
व्यवहार मे ततने शिथिल होइत रहलहुँ
हमरा अहां सभ किन्नहुँ माफ नहि करब
अहां सभ जे आइ

लाल बुभुक्करक चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक जी !

नमस्कार सहे जय मैथिली !

आगा हाल-सुरति की लिखू ? अहांकें
त बुभुक्के अइ जे दिनानदिन मिथिलाक
बिगड़ैत हाल-रति सँ मनभरि मनहुक्खी
वाहो मास छबीसो दिन लाल बुभुक्कर कें
पेनहि रहैत छनि । ओना ओ बेर-बेर
महाकवि मालिक फामूला द मन कें बुभुक्के-
वाक प्रयास करैत छथि जे—

दिले नादां तुम्हे हुआ क्या है

आखिर इस दर्द की दवा क्या है

तुमको उनसे क्या की है उम्मीद

जो नहीं जानते क्या क्या है

किन्तु तैयो अब्भ मन बुभुक्कनहिरे
नहि । आ ताइ पर सँ कहै छी सम्पादकजी
पत्राक एक मासिक पत्रिका मे कलकत्ताक
कोनो छबीस बरस सँ बुभुक्कनिया करैत
नेतानी क साक्षात्कार पढ़ि त आर छितनी
भरि छगुन्ता मे पढ़ल छी । सम्पादक जी
अपने त नहिजे पढ़ने होएब कारण मैथिली
पोथी-पत्रिका कीनने-पढ़ने कहांदन अपने
लोकनि कें पतिया छोत अछि, परछव जं
पढ़ितौ त जानथि उगिलाहा जे मिसियोभरि
फूसि कहैत होइ अहीक सपत्त त अहूँ
कम सँ कम अवस्ते कहितौ—बलिहारी
सम्पादक लोकनिक विवेकक जे जे एहन वर्ण
शंकर वक्तव्य कें प्रामाणिक घोषित क
देखनि । सम्पादक जी अपन पहिलक चिट्ठी
मे हम अहां कें शीर्षासन करवाक सुझाव
देने रही । अहांके बुभुक्के अइ जे हम ने त
बिस्वा यतनक पटिया छी आ ने मुनि समाज
क प्रचारक । तखन एहन बात लिखबाक
कारण खाली अपनेक स्मरण शक्ति कें मजबूत
केनाइ छोड़ि आन की भ सकैछ ? आ जं
अपने हमर सुझाव मानि अभ्यास करैत
होएब त नाक दाबि स्मरण करैत चढ़, जेना
जेना हम कहैत जाइत छी ।

नेता जीक अनुसार कलकत्ता जे किछु
कष्टकल तकर श्रेय मात्र छओ गोटे कें
छैक जाइ मे तीन गोटे हुनक विरोधी

खेमासे छलथिन, जनिका लोकनिक संग
नेता जी हाईकोर्ट भरि मुकदमा लड़ल छथि
आ महाजाति सदनक आयोजन मे बम-छूरा
भरि चलल अछि । एक जन हुनकें कथाना-
नुसार दुलमुल छथि आ एक जन प्रायः बीसो
बरस सँ दिल्लीक बासिन्दा छथि । कौ, छइ
ने छगुन्ताक गण ? जे महेन्द्र नारायण भा
मिथिला-मैथिलीक पाछा अपना कें चौपट
क लेखनि वैद्यनाथ भा, चुकदेव ठाकुर आदि
क चर्चा नदारद ।

सम्पादक जी अपने कें त बुभुक्के होएत
जे मैथिली मुक्ति मोर्चाक बैसार मे मिथिला
राज्यक प्रश्न पर नेता जीक वक्तार बन्न भ
गेल रहनि परछव एहिठाम ओ अनका दुल-
मुल बना अपना कें दोषमुक्त क लेखनिहे ।

मैथिली पोथीक प्रकाशन जं मैथिलीक
काज मेल सम्पादक जी तखन कलकत्ता सँ
आइधरि जतवा पोथी प्रकाशित मेल्छ तकर
दशांसो हुनका द्वारा नहि मेल छैक परछव
वांकी जे संस्था सभ छैल्छ तकर नामो
जंच नहि ।

१७ दिसम्बर १९७० कें जे प्रतिनिधि
मंडल दिछी गेल छल ताइ मे त अहूँ रही
सम्पादक जी । तँ अहां के कायाक सपत्त—
जं हम फूसि कहैत होइत कहूँ—कि ओइ
प्रतिनिधि मंडल कें हजारक-हजार टाकाक
संग फूल माला सँ लाद हवड़ा टीशन पर
एही दुआरे लोक विदा केने छल जे ओ
लोकनि छलित बाबूक डेरा पर राज भोग
पाबि श्रीमतीजीक संग फोटो छपा घुरि
आबथि—आकि आमरण अनशत अथवा
मैथिली कें सविधान मे स्थान दिखबाक
लेल ? मुदा ताइ बिस्वासघात कें, जकरा
मुक्ति मोर्चाक आन्दोलनक बादे एहिठामक
लोक बिसरि सकल, नेता जी अपन कुतिल
बधारेत छथि ।

नेता जी कहै छथि जे मैथिल समाजक
ओ ऋणी छथि जे बेटी-भतीजीक कन्या-
दानक भार नहि देखनि । आशा अइ
(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

विकलांग स्थितिक भोग भोगि रहल छी ।

सभक भागी हमहीं छी/हमहीं टा छी ।

× ×

हम जा रहल छी प्राण,
मुदा संघर्षक ई प्रवाह चलैत रहवाक चाही !
मरनि ने भऽ जाय ई धार
हमरे जकां अहुँक संतति ने दिव्य ई उपराग
मनुक्कल स्वयं होइए अपन भाग्य विधाता
से जानब हे हमर जान
बेरागी ने भऽ पायब ई मोन-प्राण !

× ×

रामनामी चढ़ि ओढ़ि जीयब, चाहे
मंदिर-मस्जिद भऽ कऽ रहब, चाहे
पाग, पगड़ी आ पयजामक कोर तकैत रहब
तऽ रहि जायब मैथिल माने मिथिला बासी

× ×

अहां सभ कें एकटा सौँत मनुक्कल बनबाक अछि
मिथिला आ मारिसस क दर्द भोगबाक अछि समान रूपे ।
एकेटा होइछ
वियतनाम सँ भयसिम्भरि धरिक कथाक मूल कथ्य
से जानब हे हमर मीत
मुदा कानब नहि गीत
बाउ हे हमर मीत विदा

× × ×

दही चूड़ा चीनी

थिक। परन्तु एकरा हेतु सर्वगुणक अधिक्य होमक चाही अर्थात् दही बेसी होमक चाही। हम - अहा! सांख्य दर्शनक एहन तत्व दोसर के कहि सकैत अछि।

खट्टरकका बजलाह—यदि एहिना निमंत्रण दैत रहै त कमरा: सभ दर्शनक तत्व बुझा देबौह। त्रिगुणात्मिका प्रकृति द्रष्टा पुरुष केँ रिक्तैत छथि। एकर अर्थ जे ई त्रिगुणात्मक भोजन भोक्ता पुरुष केँ नवबैत छथि। तें नृत्यन्ति भोजनविप्रा:।

हम कहलिऐह—परन्तु खट्टरकका! पछिमाहा सभ त दही चूड़ा चीनी पर हँसैत छथि।

खट्टरकका अंगपोछा सँ भांग घोटैत बजलाह—हौ, सातु लिट्टी खैनहार दधि चिपटानक सौरभ की बुझनाह! पश्चिमक जेहन माटि बज्जर, तेहने अन्न बजरा, तेहने लोको बज सन। अपना देशक भूमि सरस, भोजन सरस, लोको सरस! चूड़ा पृथ्वी तत्व। दही जल तत्व। चीनी अग्नि तत्व। तें कफ पित वायु—तीनू दोष केँ शमन करवाक सामर्थ्य एहि मे छैक। देखह, अनादि काल सँ दही चूड़ा चीनीक सेवन करैत-करैत हमरा लोकनिक शोणित ठण्डा भऽ गेल अछि। तें मैथिल जाति केँ आइ धरि कहियो युद्ध करैत देखलहुक अछि?

हम—खट्टरकका काँ सँ कहाँ शर चला देखलुँ! बीच-बीच मे तेहन मार्मिक व्यंग कऽ दैत छिएक जे—

ख०—व्यंग नहि, यथार्थ कहैत छिऔह। देखह, भोजन सँ प्रकृति बनेत छैक। चाली माटि खा कऽ माटि मेल रहैत अछि। साँप बसात पीबि कऽ फनकैत अछि। सादेव सभ डबल रोटी खा कऽ फूलल रहैत अछि। मुर्गा खैनहार मुर्गा चूका छैत अछि। और हम सभ साग-भाँटा खा कऽ साग-भाँटा मेल छी। हमरा लोकनि भक्त (भात) क प्रेमी थिकहुँ, तें एक दोसरा सँ विभक्त रहैत छी। ताहू पर की त द्विदल (दाहि) क योग मेलै ताकय! तखन एक दल भऽ कऽ कोना रहि सकैत छी?

हम—अहा! की अलंकारक छटा!

ख०—केवल अलंकार नहि, विज्ञानो छैक। कोनो जातिक स्वभाव बुझवाक हो त देखी जे ओकर सभ सँ प्रिय भोजन की थिकैक? देखह, बंगाली ओ पछिमाहाक स्वभाव मे की अन्तर छैक? जेह भेद रस-गुणा ओ लड्डू मे छैक। रसगुला सरसओ कोमल होइछ, लड्डू ओ कठोर। रसगुला भूक प्रतीक थीक, लड्डू पश्चिमक। तें हम कहैत छिऔह जे ककरो जातीय चरित्र बुझवाक हो त ओकर प्रधान मधुर देखी।

हम—खट्टरकका, अपना सभक प्रधान मधुर की थीक?

ख०—अना सभक प्रधान मधुर थीक खाजा। देशत मे मिठाइ कहने ओकरे बोध होइछ। खाजा ने रसगुला जकाँ स्निग्ध होइछ, ने लड्डू जकाँ ठोस। तें हमरा लोकनि मे ने बंगालीवला स्नेह अछि, ने पंजाबीवला दृढ़ता। तखन खाजा मे

काकलु भक्कर

सम्पादक जी जे एहि वक्तव्य सँ अहं सहमत होएव जं ओ गप्प बिसरि जाइ जे कहियो नेताजीक संस्थाक मंत्री बनवाक विशेष योग्यता मानल जाइत छैक-ओकरा सर सम्पत्ती मे वा प्रभाव मे कोनो नीक बर खनाइ। १९७२ ई० क 'दर्शन' जं अपने स्मरणक उलटावी आ खास केँ अगस्त मासक त विषय आर स्पष्ट भ जाइत।

जहाँधरि नेता जीक नाट्यकार होए-वाक बात थिक से त पोथी छपि गेने सभ जनैछ। कहवाक प्रयोजन नहि जे छाल बुझकरक सेहो ई नैतिक आ वैधानिक दायित्व भ जाइत छनि जे नेता जी के नाट्यकार मानि लेथि। परञ्च अहाँ त ओही नगरक लोक छी आ नाटक सँ सेहो जुड़ल छी तें हम अहाँ सँ निष्कृती पुछए चाहै छी—कि सरिपहुँ ई नाटक नेता जी अपने लिखने छथि? एकटा गप्प आर—कतेक संस्था के सदस्य क क तोड़वाक श्रेय नेता जी केँ छनि तकरो पता छोनाइ छनि बिसरी। तें ने कहै छै सम्पादक जी जे—भङ्कल मुँह भूमनहि नीक, मुदा एहि नेता जी केँ के कहतिनि। सरपहुँ बुढ़ भेने लोक कि एना दुरि जाइए?

प्रत्येक परत फराक-फराक रहैत छैक, से अपनो सभ मे रहिते अछि।

हम—वाह! ई त चमत्कारक गप्प कहल। मौलिक।

ख०—ऐठ वा नासि बात हम बजि बाँहै ने छी।

हम—वास्तव मे खट्टरकका! अहाँ ठीक कहै छी। गाम-गाम मे गोलेरी, घर-घर मे पट्टीदारी भगवा। कवहरी मे पाग-पाग देखाइत अछि। से कियेक?

ख०—एकर कारण जे हमरा लोकनि आमिल-मरचाइ बेसी खाइत छी। तीख-चोख मेलै ताकय। तीतो मे कम रुचि नहि। नीम-भाँटा, करेल, पटुआक भोर...। हौ, जेह गुण कारण मे रहैतक सेह ने काय मे प्रकट होतैक। कटुता, अम्लता ओ तिक्तता हमरा लोकनिक अंग बनि गेल अछि। स्वाइत हम सभ अपना मे घेतैक कटाउभ करैत छी।

हम—परन्तु बंगाली सभ मे एतेक प्रेम कियेक?

खट्टरकका भांग मे एक ओखर चीनी मिलवैत बजलाह ओ सभ प्रत्येक वस्तु मे मधुरक योग दैत छथि। दाखिओ मीठ, तरकारिओ मीठ, माछो मीठ, चटनियो मीठ तखन कोना ने माधुर्य रहैतैह? अपनो जाति मे एहिना मीठक व्यवहार होमऽ लागय तखन ने। तें हम कहैत छिऔह जे अपना जाति मे जौ संगठन करवाक हो त मधुरक बेसी प्रचार करह। केवल सभा केने की हेतौह? 'भोज ने भात, हरहर गीत! गाम सँ दुगोला दूर करवाक' हो त 'दही चूड़ा चीनी लवण कदली वाडू बरफी'क भोज करह।

ई कहि खट्टरकका भांगक छोटा उठौ-छन्हि और दू-चारि बूँद शिवजीक नाम पर छीटि घट-घट कय सभटा पीबि गेलाह।

(खट्टरककाक तरंग सँ)

बेटी-भतीजीक चर्चा त नेता जी केलनि परञ्च बेटी भातिज बेर मे चुप्पी किएक? कहवी छह ने जे उचित कहने संग बिबुआए नेत हम अवल्ले पुछितियनि जे भीमान सोभे छूरी वा घुरा क दूळ त गेल नाके ने? आकि नहि?

सम्पादक जी कते कहू—एकरा अजगुत अनटोल रहै तखन ने। नेताजीक अनुसार बख दसेक सँ कलकत्ता मुइल अह। आव अही कते ज्ञान भाक जोग द क विचार जे राजभोग पञ्चोनाह त महान आन्दोलन थिक परञ्च मैथिलीक इतिहास मे सर्वप्रथम राज-धानीक राजस्य पर अपन सातुभाषाक न्यायोचित अधिकार लेल जे मैथिल सन्तान शोणित बहुओलनि आ लाठीक मारि खेलनि तकर उचावचौ नहि। एकरे ने कहैत छह जीबिते गाय गीड़नाइ। मुक्ति मोर्चाक दिङ्भंगा अधिवेशनक समय जे ई नेता जी पीठ मे चूड़ा भोक्लनि से लोक भने बिसरि जाओ मुदा सम्पादक जी हमरा त पुरे पसेरी भरि बिस्वास अह जे अहाँ नहि बिसरल होइह।

नेता जी आर एगो नव गप्प कहल-निहँ—सम्पादक जी। अपने केँ त बुझल होइत जे कुम्हारक कुकुर जकरे हाथ मे माटि बागल देखैत छह तकरे पाछू लागि जाइए। से नेता जी तहिना कहादन राजनैतिक गंध पाचि पटनियो संस्था आ महासंस्था सँ जुड़ि गेलाह। जे व्यक्ति मैथिली अकादमी केँ पठिनिये कोना दोसर संस्था कहि आलोचना नेने छथि तथा डा० जगन्नाथ मिश्र तें मैथिली प्रेमी छथिये नहि बल्कि जाहि राजनीतिक दल सँ सम्पत्ति छथि वेह दल सभ सँ बेसी मैथिलीक क्षति आइ धरि केलक अछि। लिखने छथि से जे आइ एहि संस्था क प्रोपराइटरक पाछा नाइडि जोखैत पीरै छथि ते तकर कारण त अवल्ले छैक। आ से छैक 'उजरा खाम' जे प्रेस धरि नहि कलकत्ता हौसपिटलक बेड धरि पहुँचि जाइत छैक। आ से उजरा खाम जकरा हाथ मे नेता जी देखैत छथिन तकरे पाछा लागि जाइत छथि। ओना जं एकरा नेता जी साफे स्वीकार क लिखि त छाल-बुझकर केँ आपत्ति के कहए, पथियाभरि प्रसन्नता होइतिनि। कहबियो छह जे देखि पाकल आम सेह ने मेलाह ईल भा। आ कि नहि? आ तें जं नेता जी अपन चेला चामुन्दाक संग हवाई अड्डापर जा केँ ओही जगन्नाथ मिश्र केँ फूलक माला पहिरा इलाह त अजरजे की? बिन पेनक लोटा त मिथिला मे रहस्य पाओल जाइए।

सम्पादक जी पत्र अनावश्यक रूप सँ दन्तार मेल जा रहल-ह, तें समात केनाइए उचित। अपने तं हमर बेर-बेर पादवद प्रायना जे एकरा अपनहि धरि राखी। कम तं कम चर्चित पत्रिकाक सम्पादक लोकनिक गीढ़-दृष्टि सँ अवल्ले बचावी अन्यथा हुनको लोकनिक प्रामाणिकता ने कहीं संदिग्ध भ जाइए।

प्रज्ञोत्तर नहि वेवाक प्रबल आकांक्षी श्रीमान छालबुझकर बुझलुक श्रमवासी।

देखा-जोखा

लोक ओकरा बारे मे जने छह आ तेसर ओ जे कि ओ सरिपहुँ होइए।

किन्तु हजुर एह तीनू रूपक भलावे एक चारिम रूप सेहो मनुक्खक होइ छह। ओ ई, कि जे ओ नहि होइए, माने जे ओ बनवाक इच्छा रखैए, जाइ सँ ओकरा आगा वदवाक वा उन्नति करवाक आकांक्षा जनमै छह। संभवतः इएहओ चारिम आयाम छह जकरा द्वारा मनुक्ख जिनगी मे किछु क छैए। हजुर जहिया हमरा होश मेल तहिया अपना के एक समृद्ध परिवारक दुख्खा बन्वाक रूप मे पाओल। तहिया सभ तरहक सुविधा छैक। पिता रसिक मन छलाह। माँ परम संस्कारी। बाबा कट्टर सनातन धर्मी। नाना आर्य संभाजी। दाइक दुकुम परिवार मे चलैत रहैक आ हम ओकर एकलौताक पहिल सन्तात। माने दाइक अधिनायकवादक उत्तराधिकारी। आ फेर समय करोट फेइलक जे रहैक से नहि रहलै। दूठल लोक छल आर ओकर अतीतक याद। हजुर यादक एक नम्मा सिलसिला छह जे शुब भ गेल त बिलमैक नाम नहि छि। संक्षेप मे एतवे कही जे लिखा एक नहि ओकर भीतर आ ओकर संग चलैत कतेको खिस्ता।

तें माइ-बाप अपनो बारे मे कहनाइ बह सहज नहि। किएक त जखन केओ अपना बारे मे कहैत त ओ भीतरे-भीतर फौरन अपना के 'खड पर्वन' मे तब्दील क छैए। बड़ खतरनाक काज छह ई। किन्तु आदमी त जनामिसे अइ खतरा उठावै लेल। खाँह ओ स्वयं केँ कतरवाक हो वा दोसरा केँ कटरवाक किंवा अपना-आप केँ परिवार, मित्र, समाज वा देश मे बंटवाक—हो। हालांकि घटना कवनो अहाँ केँ अवस्थित धरि पहुँचय नहि देत, किन्तु कतौ ने कतौ पहुँचाओत धरि अवल्ले।

ई पहुँचनाइ विशेष अर्थ रखैछ। खास केँ तखन जखन कि अहाँ अपना बारे मे कहैत दोसर केँ समेटि रहल होइ।

हजुर दोसरा केँ समेटवाक सेहो बड़का छुलफ होइ छह। आखिर जिनगी, अलावे अपन फिरीशानी, दुख:खुल केँ एक छुलफेक रूप छैत छह।

कसूर माफ हो। हजुर माइ-बाप, जं हम कही जे एह समाज मे बढ़िया लोकक कहियो ने खगता मेलै। जं होइतै त अहाँक वा हमरा देखैत एह समाज मे पाइ ल केँ 'करखान' नामक जे दिनाय पसरि रहल छह ओ कहिया ने खतम भ गेल रहितै। किन्तु जहिना दिनायवला केँ कबएवाक आदति पड़ि जाइ छह आ कबएनाइए मे ओकरा परमानन्द प्राप्त होइ छह—ठीक इएह हाल हमरा सभक अह। शिकाइत करवाक ठीक-दारी त लोक नेने अइ परछव जान-अनजान मे आइ 'करखान' केर हिस्सेदारो बनेत जाइए।

आओर अहाँ त जनिने छी माइ-बाप, शिकाइत वेबस लोकेटा करैह।

मैथिली आन्दोलन आ मैथिलीक
साहित्यकार

प्रश्न उठि सकैत छैक जे एही भारत मे जखन आन जाति सभ साल-दू साल मे भयन माइ के लैक तँवक पराकाष्ठा पर पहुँचि जाइछ तखन मैथिल जाति आहूँ तीस-पैंतीस साल से मात्र प्रस्ताव-परि कियैक सोमित अछि। हमरो जनतिये एकर सभ उत्तर छैक जे कोनो लबाइ दुव द सत्तावादी सहि आरम भ जाइत छैक। एहि लेल तँवारी करय पड़ैत छैक जाइ मे बल्लो लागि जाइत छैक। एहि लैवारी क इस जातीय संघर्षक भूमिका कहि सकैत छी जकर निमित्त मे सभ सँ पहिल ओ प्रधान भूमिका साहित्यकारक होइत छैक। ई भूमिका संघर्ष निमित्त ओहो महत्वपूर्ण होइछ जेना कि मुकानक लेल ओकर नीचा साहित्यकार लेकनि स्वराभारणक अपेक्षा जेनी सचिवन आत्माभिमानक अधिक ओ स्वदेनशील होइत छथि। ओ अपन रचनाक माध्यम अपन जातिक राष्ट्रवशाली अतीत के स्वराभारणक सोना उपस्थित करैत छथि जाइ ले लोक मे ओकर प्रति मोह जगैक, गौरव बोध होइक। एकर भाषा-संस्कृति, साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक करैत जातिक विभिन्न समुदायक एक सूत्र मे रहैक। एषाण करैत छथि तथा रीति-रिवाज महाभारी संल के विदेशी आक्रमण धरि मे केना सभ कछो समान प्रभावित होइछ। एहि तरङ्ग विषयक प्रतिपादित करैत लोक के संग मिल रहबाक तथा अपन अस्तित्व रसाय संगोद्वेग संघर्ष करवाक लेल प्रेरित करैत छथि। एकर दोसर शब्द मे जातीय चेतना कहल जा सकैछ। जे हेतुनो मैथिली मे एहत काज तहि मेलत स्वराभारण के इहो नहि पता छैक जे ओ मैथिल थिक आ मैथिल एक जाति थिक तथा जाति आर्यन सर्वथा भिन्न वस्तु थिक। इहए कारण छैक जे लोक अपने मुहँ बिहारी बनि जाइछ वा दोसरोक मुहँ ई शब्द सुनि छजित नहि होइछ। तमसाइत नहि अछि अपितु 'महाराजी सुरि' जकाँ गौरवान्वित होइत अछि। तँ उदयनाचार्यक गर्वोक्ति ओकरा लेल कोनो महत्त्व नहि रखैछ, लोरिक, सलहेस, बठा चमार आ 'गौरैयाक सत्ता'क पेठ भरे लेल बगाल स पञ्जाबधरि बँटाइत अछि। तँ जे एक वाक्य मे कहैत कोनो जातिक अस्तित्व रक्षा नहि ओकर विकासक मूलाधार थिक इहए जातीय चेतना जकरा अभाव मे पैघ स पैघ जाति विनाश केँ प्राप्त होइक आ इतिहासो ओकरा सत नहि रखैत छैक। एहि सन्दर्भ मे हम जखन मैथिली साहित्य दिस सकैत छी तँ पूर्णतः निराश होमय पड़ैछ। स्पष्ट छैक जे साहित्यक सिरजनहार मेलाह साहित्यकार आ से साहित्यकार जे अखरि, अपाटक आन्तर हो, चेतनाहीन हो, श्रान प्रवृत्तिक हान्त साहित्यक स्थिति जे केहन होएत से ककरा सँ तुकाएल नहि। इहए कारण थिक जे मैथिलीक साहित्यकारक लेल देश मिथिला नहि भारत मे जाइछ कारण मिथिला केँ देश खिलनाइ मे हुनको वंकीरताक बोध होइत छनि, राष्ट्रद्रोहक गंध लागैत छनि। ओना हमरा बुझल अछि जे 'आमार सोनार बाङल' (भारत नहि) लिखि रवीन्द्रनाथ कवि गुल आ विश्व कवि बनि गेलाह। इहए कारण थिक जे मैथिलीक साहित्यकार जखन कलम पकड़ै छथि तँ सर्वप्रथम कोठाक माषाणक अभ्यास करैत छथि परन्तु जखन ओइठाम कोनो पुछारि वा मोजर नहि होइत छनि अथवा लतिया केँ दूर क देल जाइत छथि—तखन हारने मित्रा सुगरा खाए जकाँ मैथिली मे खिलनाइ प्रारम्भ करैत छथि। जे एकाध गोटे केँ कोठावालीक सरण मे स्थान मैथिली जाइत छनि—त ओही थारी खाली क केँ नहि उठाबक सत्कारक बही भूत

मिथिला राज्य कहिया धरि !

एहिठाम ई कहि देव आवदयक जे जाहि मैथिलीक संहियकारक हम सब कहल-ए
तकर अपवादो अबले छथि—परंच अपवादो त अपवादे थिक। ओना हुनरा सना हेइ
लोक एही आशा में जीवि रहल-ए जे आइ ने कालि इएह अपवाद नियमक रूप लेल आ
तखने मिथिला-मैथिल-मैथिली अपन समस्त व्याप्योचित अधिकार प्राप्त क सकत।

—अग्रदूत

एहि ठामक लोक अपन एम० एल०
 ए०, अथवा एम० पी० अथवा मिथिलाक
 कोठापर बहाल मंत्री जँ जहिया कहियो भेड़
 करैत अछि, तँ अपन वैयक्तिक, स्वायत्त गप
 करैत अछि अथवा ककरो वैयक्तिक स्वायत्त
 पूर्तिके लेल दलाली करैत अछि । ककरो
 नौकरी लेल, ककरो बदली लेल सेहो पैरवी
 करैत अछि । जकरा सँ भागड़ा भेल, तकर
 बदली लेल सेहो पैरवी करैत अछि । एहन
 लोक जे पटना-दिल्ली बेसी काल दोड़ैत
 अछि । साल मे दस-बीस हजार कमाण
 चाहैत अछि । ई लोक कोनो ग्रामक विकास
 लेल कहियो पैरवी नहि करैत अछि । एहन

क. वाच्यकारक निमित्त मान बसता है, अर्थात् एक कभी मानत जा एक दुकड़ी रोटी खाने के लिए मैथिली के हाथ चढ़ा देता छैथ । आ पस्थिति में सबसेममति से प्रस्ताव पारित मानिह अमित कोठाक भाषाएक अंग थिक आ ते क देल जाय । ते मैथिलीक कोनो महाकवि नै रहितहुँ कोठाक भाषा मे मोजरा प्रस्तुत करै थलीक महाकवि दूरा आसी छौडाक समकीपर ले छैलै छैथ । ते कोनो महाकवि अपन फेरे मे मैथिलीक महाकवि अपन मातृभाषा कोठाक भाषा ट पानिक अपील अंक के प्रकाशित श्री प्रदीप एहि अंक मे श्री घनवक्क 'प्रवागश' विशेष एहि बिन्दु पर आबि के अति परम्परावादी से ले विनियार साहित्यकार मे कोनो पाठ्यक्य नहि । ते प्रवेशक विशेष मे बहराएल सिक्क जुलूस मे जे उएह मैथिलीक नाम पर लोक सिक्कैए । अकरा मातृभाषाक मान्यताक आन्दोलन छुँ आ आन्दोलन

— अग्रदूत

प्रसंगवश

- घनचक्र

मानव अपना सभक भारते टा मे नहि, अपितु संपूर्ण विश्व मे जतऽ-जतऽ शासनक लेल जनतांत्रिक पद्धति के स्वीकार कएल गेलक अछि, ओतऽ वृद्ध स्तर पर दू टा चीज समान रूपे परिलक्षित होइत छैक - जनता द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रकारक 'मांग' आर सरकार द्वारा निःशेष रूपे देल गेल किसिम किसिमक आश्वासन। परिणामक दुटना कएला पर कतहु कम-बेश भन्ने भऽ सकैछ मुदा 'मांग'क 'स्तर' आ सरकारी 'आश्वासन'क 'प्रकृति' मे सर्वत्र समानता भेटत। जन्माक मांग पर सरकारी आश्वासनक समीकरण के हल कएवा मे लागल, प्रशासन-तंत्र सभसँ व्यस्त देखवा मे आओत मुदा समीकरणक दूनु पक्ष मे मानव संख्येक वृद्धि टा होइत देखल गेलक अछि, आर किछु नहि। ई 'मांग' आर 'आश्वासन'क चोरा-तुकी कोनो नव वस्तु वा घटना नहि छियेक वरन् ताबिके सँ चल आबि रहलक अछि परन्तु एहि मे एकटा बात तथ्यपरक छैक, ओ ई जे अराजिक / अवसमर्थ मांगक लेल देल गेल आश्वासनक निःशरता के लक्ष्य कऽ लेत छैक त ओ दैतखिन्दी पर उतरि अवैत छैक आर तखन ओकरा जे किछु प्राप्ति भऽ जाउक (कुकुरक काढ़ा स्वरूप) ओ ओहि मे तृप्तिक अतुल्य कऽ लगैत छैक वा दुतकारि देल गेला पर अपन नांगरि सटका सहरि जाइत छैक मुदा समर्थ एवं सक्षमक औचित्यपूर्ण मांगक निमित्त देल गेल आश्वासनक अवहेलनाक फलस्वरूप स्थिति विस्फोटक रूप धारण कर लेत छैक - केकटा कुक्कुट मे स्मृति-रजता प्रारंभ भऽ जाइत छैक, ई एकटा ऐतिहासिक तथ्य थिक जकरा तकारल नहि जा सकैत अछि। ओना एहि तथ्य के सेहो अस्वीकार नहि केल जा सकैछ जे अराजिक / अवसमर्थ सभसँ मांग नाजायजे होइत छैक वा ओकरा कोनो औचित्य नहि रहैत छैक वरन् सरकार एवं प्रशासन-तंत्र अराजिक / अवसमर्थ लोक सभक चरित्र के जीवन्त रहैत छैक ते ओकरा सभक जायजो मांग के लटका देत छैक - ओकर निमित्त देल गेल आश्वासन पर ध्यान नहि देत छैक - ने कहियो ध्यान देलकैक आने देतैक।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य मे जे हम सभ अपन-अपन स्थितिक पर्यवेक्षण करी त पलक हेतु ई निर्णय करवाक लेल प्रायः सभकेँ समझि जाय पड़त जे वस्तुतः हम सभ कोन गोल सँ सम्पर्कित छी ? अर्थात् अमर्थ / अराजिक गोल सँ वा समर्थ / सक्षम गोल सँ ? ओना हमरा जनैत मैथिल त अमर्थ / अराजिक भइये नहि सकैत अछि ? ? ? ? आ जे हम सब दोहर गोल सँ सम्पर्कित छी अर्थात् अपना के सक्षम / समर्थ बुझैत छी त मैथिल-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक लेल न्यायोचित एवं औचित्यपूर्ण मांगक एहन भीषण उपेक्षा किछक भऽ रहल अछि ? हम सभ प्रक्रियाओल किछक जा रहल छी ? एहि तथ्यक अन्वेषणक लेल हमरा सभ के सभ सँ पहिने अपन-अपन आत्म निरीक्षण (Self Introspection) कऽ पड़त पछाति अपन मांगक औचित्यक विश्लेषण

कऽ पड़त आर विफलता अवफलताक कारण ताकऽ पड़त।

एहि तथ्य के अस्वीकार नहि केल जा सकैछ जे अपना के जागरूक कहनिहार मैथिल समाजक नब्बे सँ पंचानवे प्रतिशत मैथिल सिद्ध नहि भऽ सकैत छथि। अतएव, हुनका लोकनिक मांग मे हुनका लोकनिक निहित स्वार्थ, स्व-प्रचारक आकांक्षा-एवं स्वयं के दोहरा पर आरोपित करवाक अतिरिक्त आर की भऽ सकैछ। हम अपन व्यक्तिगत अनुभवक आधार पर ई कहवाक साहस कऽ सकैत छी जे मैथिल-मैथिल आर मैथिलीक इहँस समुदाय अछि जे मुखौटा लगा कऽ जीवित रहल अछि - ई समुदाय मैथिल जनताक सभ वर्ग मे विद्यमान अछि खाहे ओ कृषक समुदाय हो, श्रमजीवी हो, चाकरी पेशाक वर्ग हो, वणिज समुदाय हो, राजपुरुष वा राजनीतिज्ञ हो। जे निष्पक्ष भावें देखल जाय त आजुक मैथिल समाजक स्वरूप सर्वथा परिवर्तित देखवा मे आओत जे पूर्णतया सुविधावादी एवं अवसरवादी भऽ गेलक अछि, जकरा अपना पर विश्वास नहि छैक, जकरा अपन माटि-पानि, अपन संस्कृति, अपन भाषा आर दूरि-भासक प्रति स्नेह नहि रहि गेलक ममलक बाते कोन। गाम-घर सँ लऽकऽ महानगर धरि छिड़िआएल मैथिल समाज के ई महामारी वृद्ध स्तर पर प्रसिद्ध कएने छैक आ जे समय रहैत एहि रोगक उपचार नहि केल गेलक त एकर परिणाम भीषण भऽ सकैछ। गाम-घर चौआ-ढहना आउ, कतहु एहि बातक आभास नहि भेटत जे सिधिलक लेल सेहो कोनो समझा छैक। खेतिहार सभ कृषि कार्य मे लीन, मध्यम वर्गीय समाज मामिला-मोकदमा मे बाझल, चाकरी पेशा वसासभ अपनै मे अलमस्त, वणिज-व्यापारी समाजक लेल नोन-तेलक भाव मे उतार-चढ़ावक अतिरिक्त कोनो ससारे ने छैक, शिक्षक-छात्र के सरकारी आजीक पाछन उल्लंघन मे लागल अपना भाषा मे बातो करवाक लेल ककरो पलखैत नहि। ओ तऽ अन्य अछि मैथिलक स्त्रीगण समाज जे एखनो धरि मैथिली आ मैथिल-लाक लोक कछा के जिओने अछि। सोसै मैथिली चौआ आऊ, कतहु कोनो समझाक चर्च नहि भेटत मुदा तेयो मैथिलीक जे पत्र-पत्रिका अछि ओहि सभ सँ ज्ञात होइछ जे 'समस्या' मैथिलक पर्यायवाची शब्द बन गेलक अछि। अन्यान्य भाषाक पत्र-पत्रिका सभ मे सेहो यदा-कदा एहि तरहक समाचार पढ़वाक लेल भेटि सकैछ। प्रश्न उठैछ जे मैथिलक लेल जखन कोनो प्रकारक समस्ये नहि, मैथिलक लेल जखन एकर कोनो औचित्य नहि अपन माटि-पानि सँ जखन ककरो मोहे नहि अपन मातृभाषा सँ जखन ककरो अनुरागे नहि त ई समस्याक प्रति जिज्ञासा भाव की ? ई जिज्ञासु लोकनिक के ?? हिनका लोकनिक के चीन्हा आवश्यक नहि अनिवार्य बुझवाक चाही।

हमर कहवाक आशय ई कथमपि नहि जे हमरा सभक समझ कोनो प्रकारक समस्या नहि अछि। घर सँ बाहर धरि विभिन्न प्रकारक समस्या सब घुरस जकाँ घुँह चौते ठाढ़ अछि। भारत सन अर्द्ध विकसित देश

मे समस्या आर अभाव नहि रहैतक त आर कतऽ रहैतक - ओ जतऽ धरि मैथिलक प्रश्न अछि ओतऽ समस्या आर अभाव नहि रहवाक त प्रश्न नहि रहैत छैक परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे की वस्तुतः मैथिल समुदाय के अपन समस्या आर अभावक पूरा ज्ञान छैक ? की मैथिलक जनता के ई बात ज्ञात छैक जे ओकरा सभक सब सँ पैघ समस्या की छियेक ? कोन प्रकारक अभाव ओकरा सभक जीवन मे व्याप्त छैक जाहि लेल सरकारक समझ 'मांग' राखल जा सकैछ ? अभाव आर समस्याक संगे सटल रहैत छैक 'मांग' (Demand) जकर समुचित ज्ञान मांग केनिहार के रहैत छैक जे ओकरा सभकेँ एक छुट भऽ अपन दल नायक चुनबाक लेल प्रेरित करैत छैक। आर दल-नायक ओहि अभाव-प्रस्त, समस्याग्रस्त समाज के शिक्षा बोध देत छैक - युद्ध-नितिक निर्धारण करैत छैक। सरकारक समझ कमबख्त रूपे 'मांग' रखैत छैक जे व्यक्तिपरक नहि भऽ स्वभावतः समष्टिक क कल्याणक निमित्त होइत छैक। आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सरकार के कतहु भिडरवालाक स मना कऽ पड़ैत छैक त कतहु लालइ गाँक। एहि परिप्रेक्ष्य मे ज अपन मिथिला क्षेत्रक 'मांग' पर विचार करी त देखवा मे आओत जे मिथिलक जन समुदाय के अपन 'अभाव' आर समस्याक समुचित जानकारी नहि छैक, उचित ज्ञान नहि छैक - अर्थात् जे अभावग्रस्त अछि ओकरा एहि बातक कोनो चिन्ता नहि छैक जे ओ अभावग्रस्त अछि वरन् एहि प्रकारक अभावग्रस्तता आर समस्यादिके ओ अपन नियति मानि नेहै अछि। मिथिलक मुख्य जनता के अपन अभाव आर समस्याक प्रति कोनो प्रकारक चिन्ता नहि छैक आर ओकरा एहि अनभिज्ञता (Ignorance) के अपन स्वाध्यायनक आधार बना रहल छैक किछु गलत-गुलत राजनीतिज्ञ, राजपुरुष, किछु मध्यमवर्गीय तथा कथित जागरूक लोक किछु साहित्य, सेवा आर किछु एहिप्रकारक चलता-पुर्जा लोक। किछु स्वार्थी तत्व द्वारा कान्तिक नारा सतत देल जाय रहलक अछि मुदा ओ कतहु जोर नहि पकड़ि रहलक अछि आने पकड़ैतक कारण आकांक्षा मैथिल के एहि स्वार्थी तत्व सभक दुरगति-धनिक ज्ञान भऽ गेलक अछि किछु नौदिक वर्ग एवं किछु साहित्यकारक जेतौती पर ओ सुगुलायल अछि। तै मिथिल के एकटा पृथक राज्य बनेबाक सुगमरीचिका देखाओल जाउक वा मैथिली के बिहारक द्वितीय राज-भाषा बनेबाक आन्दोलनक आह्वान कएल जाउक वा मिथिल के औद्योगिक परिवेश दिखवाक लेल कान्तिक बिगुल बजाओल जाउक, मैथिल समाज ताबतधरि नहि जागत यावत् धरि ओकरा ओकर 'समस्या' आ 'अभाव'क ज्ञान नहि कराओल जाइत छैक, एहि प्रकारक आन्दोलन सँ समबद्ध स्वार्थी तत्व सभकेँ निष्कासित नहि कएल जाइत छैक। मुदा एहि समस्याक समाधान हैब ओतेक सरल नहि। हमरा सभक समझ सभसँ पैघ समस्या अछि नेतृत्वक - सफल नेतृत्वक अभाव मे मिथिलक जन-मानवक मनोबल दृष्टि गेलक अछि ओकर सौंय आ सामर्थ्य छिड़िया गेलक अछि - आवश्यकता छैक दृष्टल मनोबल के जोड़बाक छिड़िआएल सौंय आर सामर्थ्य के वटोरि कऽ एकत्रित करवाक

आवश्यकता छैक मैथिल के मिथिला राज्यक सम्बन्धमा देखा कऽ 'वोट' वटोरऽवाला महा-पुरुष सभक तिरस्कार करवाक - स्थलित राजनीतिज्ञ द्वारा शासन मे पुनः प्रवेशक लेल मैथिल जनताक समझ पसारल जाय जाल के छिन्न-भिन्न करवाक।

मुदा ई कार्य सभ के कत ? मैथिल समाज फौफ काटि रहल अछि। राजनीतिक सभ भ्रष्ट भऽ गेल छथि !! राजनीतिक दल सभ मात्र शासन इच्छाक प्रयास मे व्यस्त अछि, बुद्धिजीवी वर्ग अलहदा अलहदा गोल बना एक दोहरा के पछाइवाक दाव में चलेवा मे व्यस्त अछि अन्ततः एकर निदान की ???

देयक आधुनिक परिवेश मे आर्थिक, राजनैतिक वा कोनो प्रकारक समस्याक समाधान सरकार द्वारा ताबत धरि नहि केल जाइत छैक यावत् धरि समस्या सभकेँ संगठित भऽ कमबख्त रूपे सरकारक समझ नहि राखल जाइत छैक - सरकार पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपे दबाव नहि देल जाइत छैक। आई द्रष्टव्य अछि जे एहि सब कायक निमित्त जनता के इच्छापूर्वक वा अनिच्छा सँ कोनो ने कोनो राजनीतिक दल पर निर्भर करहि पड़ैत छैक कारण राजनीतिक दल सभ एहि सभक लेल प्रागत संगठन कइल जाइत छैक - सक्षम होइत छैक। भारतीय राजनीति मे राजनैतिक दल सभक छवि वधपि विकृति भऽ गेलक अछि तथापि ई सभ कार्य ओकरे सभक माध्यमे भऽ रहलक अछि। तै हमरा सभकेँ अपन समझाक प्रति देल गेल सरकारी आश्वासनक पूर्ति लेल आइ ते कहिह, कोनो ने कोनो दलक सङ्घ मे जाइये पड़त वा कोनो एहन राजनैतिक दलक संगठन करय पड़त जकरा लेल मिथिल मैथिल मैथिलीक समस्या समोपरी होइक। देशक प्रतिष्ठित राजनैतिक पार्टी 'कांग्रेस' सँ कोनो प्रकारक आशा करब व्यर्थ हैत खाहे ओ इन्दिराजीक काँग्रेस होति वा जगजीवनजीक वा अन्य किनो क। लोकदल - चौधरी चरण सिंहक व्यक्तिपरक नीति सँ आकांत भऽ छयवा रहलक अछि भारतीय जनता पार्टी अद्वि विहारीजीक चरणगाढ़काक परिक्रमा कऽ रहलक अछि जनता पार्टी अपने भीडुका ओकराहटि आ सरकारी मे फँसल प्राण वायुक लेल प्रणायाम कऽ रहलक अछि तखन वाँचल नामपंथी पार्टी सभ से भारतीय साम्यवादी पार्टी (सी०पी०आई०) के धृष्टित चरित्र देखि लोक सभकेँ आप साम्यवादी विचार धारा सँ सेहो अनाशक्ति उत्पन्न होमय छलकैक अछि - तथापि दू एकटा एहन नामपंथी पार्टी सभ छैक जे निष्ठापूर्वक अपन काय करवाक प्रयास करैत छैक - जकरा जन समर्थन भेटैक तऽ किछु आशा ओकरा सँ कइल जा सकैछ। तै एहन बिषय परिस्थिति मे साक्षात् भय ज हम सभ कोनो एहन पार्टी विशेषक चुनाव कऽली तथा ओकर संग दियेक तै हमरा सभ के बहुत किछु सफलता भेट सकैछ। मिथिलक जनमानस के भूकमोड़ि कऽ उठावऽ मे मिथिलक छात्र समुदाय के जगावऽ मे जे हमसब निष्ठापूर्वक कोनो निष्ठायान पार्टी के सहयोग करियेक त सकल जाय आर जखरी भऽ सकैत अछि मुदा ई सब करवा सँ पूर्व हमरा सभकेँ एहि बातक खेयाल सतत राखब पड़त जे हमर सभक चुनाव

प्रसंगवशा

— घनचक्र

मान अपना समक भारते टा मे नहि, अपितु संपूर्ण विश्व मे जतऽ-जतऽ शासनक लेल जनताधिक पद्धति के स्वीकार कएल गेलेक अछि, ओतऽ वृद्ध स्तर पर दू टा चीज समान रूपे परिलक्षित होइत छैक — जनता द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रकारक 'मांग' आर सरकार द्वारा निःशेष रूपे देल गेल किसिम-किसिमक आश्वासन। परिणामक तुलना कएला पर कतहु कम-बेश भने भऽ सकैछ मुदा 'मांग'क 'स्तर' आ सरकारी 'आश्वासन'क 'प्रकृति' मे सर्वत्र समानता भेटत। जनताक मांग पर सरकारी आश्वासनक समीकरण के हल करवा मे लागल, प्रशासन-तंत्र समझौते व्यस्त देखबा मे आओत मुदा समीकरणक दूर पक्ष मे मान संख्येक वृद्धि टा होइत देखल गेलेक अछि, आर किछु नहि। ई 'मांग' आर 'आश्वासन'क चोरा-तुझी कोनो नव-वस्तु वा घटना नहि छिपेक वरन् ताबिके सँ चल आबि रहलैक अछि परन्तु एहि मे एकटा बात तथ्यपरक छैक, ओ ई जे अपाहिज / असमर्थक मांगक लेल देल गेल आश्वासनक निःसारता के लक्ष्य कऽ लेत छैक, तँ ओ दैतखिस्टी पर उतरि अवैत छैक आर तखन ओकरा जे किछु प्राप्ति भऽ जाउक (कुकरक काड़ा हल्लव) ओ ओहि मे दृष्टिक अनुभव कऽ ओत छैक वा दुतकारि देल गेला पर अपन मांगरि सटका सभरि जाइत छैक मुदा समर्थ एवं सक्षमक औचित्यपूर्ण मांगक निमित्त देल गेल आश्वासनक अवहेलनाक फलस्वरूप स्थिति क्रिस्टोटक रूप धारण कर लेत छैक — केकटा कुश्मेत्र मे स्फुर-खलना प्रारंभ भऽ जाइत छैक, ई एकटा ऐतिहासिक तथ्य थिक जकरा नकारल नहि जा सकैत अछि। ओना एहि तथ्य के सहो अस्वीकार नहि केल जा सकैछ जे अपाहिज / असमर्थक समष्टि मांग ताजायजे होइत छैक वा ओकरा कोनो औचित्य नहि रहैत छैक वरन् सरकार एवं प्रशासन-तंत्र अपाहिज। असमर्थ लोक समक चरित्र के जीवने रहैत छैक, तँ ओकरा समक जायजो मांग के लटका देत छैक — ओकर निमित्त देल गेल आश्वासन पर ध्यान नहि देत छैक — ने कहियो ध्यान देलकैक आने देतैक।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य मे जँ हम सब अपन-अपन स्थितिक पर्यवेक्षण करी तँ पलक हेतु ई निणय करवाक लेल प्रायः समक समक जाय पड़त जे वस्तुतः हम सब कोन गोल सँ सम्पर्कित छी? अर्थात् अमर्थ / अपाहिजक गोल सँ वा समर्थ / सक्षमक गोल सँ? ओना हमरा जनैत मैथिल तँ असमर्थ / अपाहिज भइये नहि सकैत अछि ? ? ? ? आ जँ हम सब दोसर गोल सँ सम्पर्कित छी अर्थात् अपना के सक्षम / समर्थ बुझैत छी तँ मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीन विकासक लेल न्यायोचित एवं औचित्यपूर्ण मांगक एहन भीषण उपेक्षा किहक भऽ रहल अछि ? हम सब प्रक्रियाओल किहक जा रहल छी ? एहि तथ्यक अविवेक्षणक लेल हमरा सब के सब सँ पहिने अपन-अपन आत्म त्रिरीक्षण (Self Introspection) कऽ पड़त पछाति अपन मांगक औचित्यक विश्लेषण

कऽ पड़त आर विफलता अशफलताक कारण ताकऽ पड़त।

एहि तथ्य के अस्वीकार नहि केल जा सकैछ जे अपना के जागरुक कहनिहार मैथिल समाजक नब्बे सँ पंचानवे प्रतिशत मैथिल सिद्ध नहि भऽ सकैत छथि। अतः एब, हुनका लोकनिक मांग मे हुनका लोकनिक निहित स्वार्थ, स्व-प्रचारक आकांक्षा-एवं स्वयं के दोसरा पर आरोपित करवाक अतिरिक्त आर की भऽ सकैछ। हम अपन व्यक्तिगत अनुभवक आधार पर ई कहबाक साहस कऽ सकैत छी जे मिथिला-मैथिल आर मैथिलीक इहद समुदाय अछि जे मुखौटा लगा कऽ जीवि रहल अछि — ई समुदाय मैथिल जनताक सब वर्ग मे विद्यमान अछि खाहे ओ कृषक समुदाय हो, श्रमजीवी हो, चाकरी पेशाक वर्ग हो, वणिज समुदाय हो; राजपुरुष वा राजनीतिज्ञ हो। जँ निष्पक्ष भावें देखल जाय तँ आजुक मैथिल समाजक स्वरूप सर्वथा परिवर्तित देखबा मे आओत जे पूणतया सुविधावादी एवं अवसरवादी भऽ गेलेक अछि जकरा अपना पर विश्वास नहि छैक, जकरा अपन माटि-पानि, अपन संस्कृति, अपन भाषा आर लुरि-भासक प्रति स्नेह नहि रहि गेलेक ममत्वक बाते कोन। गाम-घर सँ लऽकऽ महानगर धरि छिड़िआएल मैथिल समाज के ई महामारी वृद्ध स्तर पर प्रसिद्ध कएने छैक आ जँ समय रहैत एहि रोगक उपचार नहि केल गेलेक तँ एकर परिणाम भीषण भऽ सकैछ। गाम-घर जौआ-वहवा आउ कतहु एहि बातक आभास नहि भेटत जे मिथिलाक लेल सेहो कोनो समस्या छैक। खेतियार सब कृषि कार्य मे लीन, मध्यम वर्गीय समाज मामिला-मोकदमा मे बाधिल, चाकरी पेशा बलासम अपनै मे अलमल, वणिज व्यापारी समाजक लेल नोन-तेलक भाव मे उतार-चढ़ावक अतिरिक्त कोनो संसार ने छैक, शिक्षक-छात्र के सरकारी आशंक पाछन / उल्लंघन मे लागल, अपना भाषा मे बातो करवाक लेल ककरो पलखैत नहि। ओ तऽ भय अछि मिथिलाक स्त्रीगण समाज जे एखनो धरि मैथिली आ मिथिलाक लोक कला के जिओने अछि। सोसि मिथिला जौआ भाऊ, कतहु कोनो समस्याक चर्चा नहि भेटत मुदा तयो मैथिलीक जे पत्र-पत्रिका अछि ओहि सब सँ ज्ञात होइछ जे 'समस्या' मिथिलाक पर्यायवाची शब्द बन गेलेक अछि। अन्यान्य भाषाक पत्र-पत्रिका सब मे सेहो यदा-कदा एहि तरहक समाचार पढ़वाक लेल भेटि सकैछ। प्रश्न उठैछ जे मिथिलाक लेल जखन कोनो प्रकारक समस्या नहि, मैथिलक लेल जखन एकर कोनो औचित्य नहि अपन माटि-पानि सँ जखन ककरो मोहे नहि अपन मातृभाषा सँ जखन ककरो अतुरागे नहि तँ ई समस्याक प्रति जिज्ञासा भाव की ? ई जिज्ञासु लोकनिक के ? ? ? ? ? हिनका लोकनिक के चीन्हा आवश्यक नहि अनिवार्य बुझवाक चाही।

हमर कहबाक भाष्य ई कथमपि नहि जे हमरा समक समक कोनो प्रकारक समस्या नहि अछि। गर सँ बाहर धरि विभिन्न प्रकारक समस्या सब सुरसम जकाँ मुँह बोते ठाढ़ अछि। भारत सन अर्द्ध विकसित देश

मे समस्या आर अभाव नहि रहैतैक तँ आर कतऽ रहैतैक — आ जतऽ धरि मिथिलाक प्रश्न अछि ओतऽ समस्या आर अभाव नहि रहबाक तँ प्रश्न नहि रहैत छैक परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे की वस्तुतः मैथिल समुदाय के अपन समस्या आर अभावक पूरा ज्ञान छैक ? की मिथिलाक जनता के ई बात ज्ञात छैक जे ओकरा समक सब सँ पैघ समस्या की छियेक ? कोन प्रकारक अभाव ओकरा समक जीवन मे व्याप्त छैक जाहि लेल सरकारक समक्ष 'मांग' राखल जा सकैछ ? अभाव आर समस्याक संगे सटल रहैत छैक 'मांग' (Demand) जकर समुचित ज्ञान मांग केनिहार के रहैत छैक जे ओकरा समक एक जुट भऽ अपन दल जायक चुनवाक लेल प्रेरित करैत छैक। आर दल-नायक ओहि अभाव-प्रस्त, समस्याप्रस्त समाज के शिक्षा बोध दैत छैक — युद्ध-नितिक निर्धारण करैत छैक। सरकारक समक्ष क्रमबद्ध रूपे 'मांग' रखैत छैक जे व्यक्तिपरक नहि भऽ स्वभावतः समष्टिक कल्याणक निमित्त होइत छैक। आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सरकार के कतहु भिडरवालाक समझा कऽ पड़ैत छैक तँ कतहु लालझंभाक। एहि परिप्रेक्ष्य मे जँ अरन मिथिला क्षेत्रक 'मांग' पर विचार करी तँ देखबा मे आओत जे मिथिलाक जन समुदाय के अपन 'अभाव' आर समस्याक समुचित जानकारी नहि छैक, उचित ज्ञान नहि छैक अर्थात् जे अभावप्रस्त अछि ओकरा एहि बातक कोनो चिन्ता नहि छैक जे ओ अभावप्रस्त अछि वरन् एहि प्रकारक अभावप्रस्तता आर समस्यादिक ओ अपन नियति मानि नेते अछि। मिथिलाक मुख्य जनता के अपन अभाव आर समस्याक प्रति कोनो प्रकारक चिन्ता नहि छैक आर ओकरा एहि अनभिज्ञता (Ignorance) के अपन स्वायत्ताभ्रमक आधार बना रहल छैक किछु गतल-गुथल राजनीतिज्ञ, राजपुरुष, किछु मध्यमवर्गीय तथा कथित जागरुक लोक किछु साहित्य सेवी आर किछु एहिप्रकारक चला-चलवाँ लोक। किछु स्वार्थी तत्व द्वारा काल्पनिक तारा सतत देखजाय रहलैक अछि मुदा ओ कतहु जोर नहि पकड़ि रहलैक अछि आने पकड़तेका कारण अधिकार मिथिल के एहि स्वार्थी तत्व समक दुरभिलक्षिक ज्ञान भऽ गेलेक अछि किछु बौद्धिक वर्ग एवं किछु साहित्यकारक जेतौती पर ओ सुगुणायल अछि। तँ मिथिला के एकटा पृथक राज्य बनेबाक सुगमरीजिका देखा-ओल जाउक वा मैथिली के बिहारक द्वितीय राज-भाषा बनेबाक आन्दोलनक आह्वान कएल जाउक वा मिथिला के औद्योगिक परिवेश दिव्बाक लेल काल्पनिक बिगुल बजा-ओल जाउक, मैथिल समाज ताबतधरि नहि जागत यावत् धरि ओकरा ओकर 'समस्या' आ 'अभाव'क ज्ञान नहि कराओल जाइत छैक, एहि प्रकारक आन्दोलन सँ समबद्ध स्वार्थी तत्व समक निष्कासित नहि कएल जाइत छैक। मुदा एहि समस्याक समाधान हेतु ओतेक सरल नहि। हमरा समक समक्ष समस्य पैघ समस्या अछि नेतृत्वक — सफल नेतृत्वक अभाव मे मिथिलाक जन-मानसक मनोबल टूटि गेलेक अछि ओकर सौय आ सामर्थ्य छिड़िया गेलेक अछि — आवश्यकता छैक दृढ़ मनोबल के जोड़बाक छिड़िआएल सौय आर सामर्थ्य के बटोरि कऽ एकत्रित करवाक

आवश्यकता छैक मैथिल के मिथिला राज्यक सम्मन्धारा देखा कऽ 'वोट' बटोरवाला महा-पुरुष समक तिरस्कार करवाक — स्थलित राजनीतिज्ञ द्वारा शासन मे पुनः प्रवेशक लेल मैथिल जनताक समक्ष पसारल जाय जाल के छिन्न-भिन्न करवाक।

मुदा ई कार्य सब के कात मैथिल समाज फौफ काटि रहल अछि। राजनीतिक सम भ्रष्ट भऽ गेल छथि !! राजनीतिक दल सब मान शासन इथिथिथि-प्रयास मे व्यस्त अछि, बुद्धिजीवी वर्ग अलहदा अलहदा गोल बना एक दोसरा के पछाड़वाक दाव पैच चलेबा मे व्यस्त अछि अन्ततः एकर निदान की ???

देशक आधुनिक परिवेश मे आर्थिक, राजनैतिक वा कोनो प्रकारक समस्याक समाधान सरकार द्वारा ताबत धरि नहि केल जाइत छैक यावत् धरि समस्या समक संगठित भऽ क्रमबद्ध रूपे सरकारक समक्ष नहि राखल जाइत छैक — सरकार पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपे दबाव नहि देल जाइत छैक। आई द्रष्टव्य अछि जे एहि सब कायक निमित्त जनता के इच्छापूर्वक वा अनिच्छा सँ कोनो ने कोनो राजनीतिक दल पर निर्भर करि पड़ैत छैक कारण राजनीतिक दल सब एहि समक लेल प्रागत संगठन कएल जाइत छैक — सक्षम होइत छैक। भारतीय राजनीति मे राजनैतिक दल समक छवि संघर्षि विद्युति भऽ गेलेक अछि तथापि ई सब कार्य ओकरे समक माध्यमे भऽ रहलैक अछि। तँ हमरा समक अपन समस्याक प्रति देल गेल सरकारी आश्वासनक पूर्ति लेल आइ ते जाबि, कोनो ने कोनो दलक शरण से साहस भेटत वा कोनो एहन राजनैतिक दलक संगठन करय पड़त जकरा लेल मिथिला मैथिली मैथिलीक समस्या सर्वोपरि होइक। देशक प्रतिष्ठित राजनैतिक पार्टी 'कांग्रेस' सँ कोनो प्रकारक आशा करम व्यर्थ होत खाहे ओ इतिहासिक कांग्रेस होमि वा जंगजीवनजीक वा भास्य कितानी क। लोकदल — चौधरी चरण सिद्धक व्यक्तिपरक नीति सँ आकात भऽ छपट्या रहलैक अछि भारतीय जनता पार्टी अखल चिहारीजीक चरणगुदकाक परिक्रमा कऽ रहलैक अछि जनता पार्टी अपने भीखुका ओझराहटि आ सरकारीनी मे फँसल प्राण बायुक लेल प्रणायाम कऽ रहलैक अछि तखन जौबल नामधेयी पार्टी सब से मांस-तीय साम्यवादी पार्टी (सी०पी०आई०) के धुणित चरित्र देखि लोक समक आत साम्यवादी विचार द्वारा सँ सेहो अनाशक्ति उत्पन्न होमय लगलैक अछि तथापि दु-एकटा एहन नामधेयी पार्टी सब छैक जे निष्ठापूर्वक अपन कार्य कएवाक प्रयास करैत छैक — जकरा जन समर्थन भेटैक तऽ किछु आशा ओकरा सँ कएल जा सकैछ। तँ एहन विश्वक परिस्थिति मे साक्षात् भय जँ हम सब कोनो एहन पार्टी विशेषक चुनाव कऽली तथा ओकर संग दियेक तँ हमरा सब के बहुत किछु सफलता भेट सकैछ। मिथिलाक जनमातृक के भक्तमोहि कऽ उदाहरण मे मिथिलाक छात्र समुदाय के जगावऽ मे जँ हमसब निष्ठापूर्वक कोनो निष्ठावान पार्टी के सहयोग करियेक तँ सकल कार्य आर जल्दी भऽ सकैत अछि मुदा इ सब कार्य सँ पूर्व हमरा समक एहि बातक खेयाल सतत राखए पड़त जे हमरा समक चुनाव

मैथिली राज्य

लोक कोनो प्रखण्ड कोनो जिला अथवा कोनो राज्यक विकास लेल ने कहियो बाजल आने बाजल चाहैत अछि ।

एहेन स्वार्थी जनताक संगठन नहि भऽ सकैत अछि ।

एहेन छोटो जनताक बात पटना आ दिल्लीक छोटका नेता सब किएक सुनैत छथि ? ओ अपन निर्वाचन-क्षेत्र केँ हाउ' बुझैत छथि । बिना काज कयने ओ चुनाव जीतऽ चाहैत छथि । दस-बीसटा भोटक ठीकदार केँ ओ मिला कऽ राखऽ चाहैत छथि जे हुनक क्षेत्र मे जयकार करैत रहैत ।

हमरा ओहि ठामक नेता लोकनि मिथिलाक नेता बनियो ने सकैत छथि । ओ अपन निर्वाचन क्षेत्रक नेता छथि आ ओकरे नेता बनऽ रहल चाहैत छथि ।

अपना ओहि ठामक नेता लोकनि अपन चुनाव क्षेत्र टा केँ देश, राज्य, जिला-सरकार बुझैत छथि । ओतने दूर ओ पकड़ी सड़क बिजली आ पुलक बात करैत छथि ।

जे सियरी-बख्तियारपुरक नेता छथि, ओ जयनगरक बात नहि सोचैत छथि । जे पंडौलक नेता छथि, से बाँकाक बात नहि सोचैत छथि ।

अपना-अपना निर्वाचन क्षेत्रमे दही पर चीनी परसनिहार नेता मिथिलांचलक बात करैत छथि, तँ छोट भछि जे ओ ठकैत छथि आ कोनो मनोविकृति क कारणो बड़-बड़ा रहल छथि ।

ई लोकनि एम० एल० ए० क भोट जीतबा लेल जनताक छुशामद करैत छथि, बाकी बात लेल दिनका लेल जनताक कोनो सोजर नहि अछि ।

भोट जीतब आ तकर बादक काज लेल ई लोकनि जगदम्बाक कृपा पर अवलम्बित छथि, योग-टोन आ भाग्य पर आश्रित छथि ।

जतऽ नेताक दृष्टि एतेक एकांगी हो ततऽ मिथिलांचलक बात करब पाखंड बुझावत अछि । स्वतंत्रता भेटलाक एतेक बरस बादो मिथिलांचलक विकास नहि भेल अछि आ ने ताहि दिशामे कोनो प्रकारक सूर-सार देखवा मे अवैत अछि ।

एखन दिल्ली दूर अछि ।

बिना जागरण आ संगठन कयने ई दिल्ली एहिना दूर रहत ।

जय मैथिली

बालगीत

करिया भुम्भरि सेलै छी
ढोल पटापट मारै छी
लीख पटापट मारै छी
शुभित गीत जे मनकष के
तकरै मारै जाय छी ॥

एके धरती समतल रहिना
बाटल कहाँ अकास छइ
एके ज्ञान सुरुज छइ तहिना
एके बहै वसात छइ
भेद-भाव के बात करै जे
तकरै मारै जाय छी ॥

इर्षा-द्वेष हटाबै छी
घृणा-विभेद मेटाबै छी
बुद्धि-विवेकक दीप लेसि हम
प्रेमक ज्योति पसारै छी ॥

—राम लोचन ठाकुर

मैथिली पोथी आ पत्रिका कीनू आ पढ़ू

	मूल्य
१. इतिहासहंता रामलोचन ठाकुर	२/४ टाका
२. बेतालकथा—कुमारेश काश्यप	४ "
३. प्रतिध्वनि (अ०) रामलोचन ठाकुर	४ "
४. जादूगर रामलोचन ठाकुर	५ "
५. मैथिली लोककथा रामलोचन ठाकुर	५ "
६. अर्द्ध नारीश्वर—मणिपद्म	२५ "
७. मुन्शी रघुनन्दन दास : व्यक्तित्व ओ कृतिश्व (संकलन)	६ "
८. निष्कलंक—जगदीश भा	३ "
९. जुआएल कनकनी—महेन्द्र मलंगिया	३ "

अरुणोदय प्रकाशन सं भेटि सकैछ

अरुणोदय प्रकाशन ३३ ५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ के लेल श्री महेश्वर भा द्वारा प्रकाशित तथा पायनिहार आर्ट प्रिन्टर्स ३२ वी, बुन्दावत वैशाल स्टीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित । सम्पादक : श्री जगदीश भा

शिक्षा मंत्रीक नाम पत्र

सेवा मे

प्रो० श्री नागेन्द्र भा,

शिक्षा मंत्री,

बिहार सरकार, पटना ।

महाशय,

अपने के ज्ञाते होएत जे प्राथमिक स्तर

धरि मातृभाषाक माध्यम सँ शिक्षाक अधि-

कार संविधान स्वीकृत छैक आ ई अधिकार

भारतीय नागरिकक मौलिक अधिकारक

अन्तर्गत अवैत छैक । खेदक बात जे सँतीत

कर्स देश स्वाधीन भेलक उपरान्तो बिहार

सरकारक मैथिली विरोधी नीतिक कारणे

मैथिली भाषी छात्र अपन एहि प्रमुख आ

पवित्र अधिकार सँ वंचित राखल गेल अछि ।

एकरा कागजी मान्यता भनहि देखल होइक

परञ्च वास्तविकता इहए छैक जे मात्र पहिल

आ दोसर वर्गक पोथी मैथिली मे उपलब्ध

छैक दोसर वर्ग धरि मैथिली आ तेसर वर्ग

सँ हिन्दीक माध्यमे पढ़नाइ जे कतेक अनु-

विधानक ओ अव्यावहारिक छैक से कह-

नाक प्रयोजन नहि । स्वभावतः कोनो नेता

आ तकर अभिभावक मैथिली माध्यम केँ

नहि चुनैत अछि । तँ आवश्यक छैक जे

अनतिविलम्ब वर्ग आठ धरिक समस्त विष-

यक पोथी मैथिली मे उपलब्ध कराओल

जाइक । अपने स्वयं मैथिली भाषी छी

मिथिलांचलक प्रतिनिधि छी तथा ई विभाग

अहाँक अधीन अछि त निवेदन जे शीघ्र

एकर व्यवस्था कराओल जाय । एहि संदर्भ

मे हम अपने के स्मरण दिबाबय चाहैत छी

जे नवम्बर १९८० मे जखन हमरा लोकनि

पटना मे अपनेक निवासस्थान पर अपने सं

भेंट केने रही त अपने अपन अंतर्मर्षता

देखबोने रही परञ्च से अवमर्षता त आइ

नहिजे अछि, बरन एहि विभागक अपने

सर्वेसर्वा छी ।

ज्ञातव्य जे एहि संदर्भ मे हम राष्ट्रपति

केँ सेहो पत्र लिखने छलियनि संविधानक

तात्पर संशोधन (१९६६) द्वारा प्रदत्त

विशेष अधिकारक अन्तर्गत बिहार सरकार

केँ निर्देश देवाक आग्रह केने छलियनि ।

जेना कि हमरा शाप संख्या-११०/रा०

दिनांक २२ जून ८४ द्वारा सूचित कएल

गेल छल उचित करवाइ हेतु राष्ट्रपति सचि-

वालय बिहार सरकार केँ लिखि चुकल छैक

(पत्र संख्या—३६५-पी १११३११८४

दिनांक २४-१-८४) ।

आशा अछि जे अपने यथा शिघ्र एहि

संदर्भ मे उचित कार्य क सङ्केतीत कोटि

मैथिली भाषीक दीर्घ आकांक्षक पूर्ति क

सकब ।

जय मैथिली

भवदीय—

राम लोचन ठाकुर

संयोजक

मैथिली सुक्ति मञ्च, कलकत्ता

लेखा-जोखा

एक परिवारक सभ बच्चा एक रंग नहि

होइत छैक । वंशानुगत कोनो बीज होइत

छैक से हम नहि मानैत छी आ ने संस्कार

सन बायबीय भावना मे हमरा कहियो

विश्वास भेल ।

हजूर माइ-बाप, हम कबूल करैत छी

जे हमर ज्ञान वा जानकारीक परीषि नइ

छोट अछि, तँ जे अतीन्द्रिया छैक, तकरा

सम्बन्ध मे हमर कोनो वक्तव्य नहि । ज्ञानक

अथाह सागरक असंख्य लहर छैक । के

कते जानि पओलक तकरे पता कतेक के

छैक ? खाली एक बातक पता अछि हमरा

कि हमर बाल मनपर जे प्रश्न अंकित भेल

उल से आइयो अनुत्तरित अछि । हमर

पहिल रचना शाप ग्रन्थ अहिल्या छल

भोकरा संग छल केने छलियनि । गौतम

इन्द्र केँ शाप देने छलियनि से त बुझय जाग

होइछ परञ्च अहिल्या निरपराध होइतहुँ

शाप ग्रन्थ भेलीह । पता किइक माइ-बाप

ई छलनामही व्यवस्था आजुक दिन नहि

युगो सँ एहिना होइत एले-ए । जे शोषित

अइ तकर आर शोषण होइत छैक । जे

शासक अइ ओ दुश्चक्र चलेबै आ ओकर

प्रतिद्वन्दी ओकर दमनक अभियान । किन्तु

निरपराध अहिल्या, शासक पक्ष आ विपक्षक

दुश्चक्रक बीच निरन्तर पिसाइत रहैछ । कि

अहाँ केँ एहत नहि बुझि पड़ेछ, हजूर माइ

बाप ।

✽

कह लोचन कविराय

माइक, हथ्या करैत अछि, कंठ मोकि कए पुत

श्राद्ध करए पुनि वैदिकी, कनियों नहि अजगुत

कनियों नहि अजगुत करए पुनि भोज जवारी

मुंह देख केँ दान करैत छि लोटा-थारी

कह लोचन कविराय, विलक्षण बुद्धि जगाइक

पाचक भेल मधाइ, सधल सभ कर्जा माइक

समिति रचना

वर्ष—१ अं—१

अक्टूबर, १९८१

मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

बालचन्द्र विजावह भाषा
दुहु नहि लगइ दुजन हासा
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई गिबइ नाअर मन मोहइ
देसिल बयना सभ जन मिटइ
ते तइसन जम्भओ अबहइ

—विद्यापति

अइ स १ सए वर्ष पूर्व, जवन कि भाषा चेतना नामक बस्तु कम सं कम भारत मे नहि छल, ताह समय मिथिलाक सन्तान कविपति विद्यापतिक ई घोषणा निश्चित हमरा लोकनिक लेल गर्वक विषय थिक। कहवाक प्रयोगन नहि जे आगा चलि केँ सुरुतुरसी आदि विभिन्न कवि केँ अपन भाषा मे काव्य रचनाक प्रेरणा एतहि सं प्राप्त भेलनि।

विद्यापति जाइ इदता आ विश्वासक गंगे ई घोषणा केलनि, तहिना एकर पालन सेहो आ तकरे परिणाम मेळ जे मिथिलाक भाषा-साहित्य चन्द्रमाक आलोकहि जकाँ देश-कालक सीमाक अतिक्रमण करवा मे सफल भेल, मैथिली मे काव्य रचना परम्परा नेपाल सं आसाम धरि आ उड़ीसा सं बंगाल धरि बनि गेल, जहर शेष कड़ीक रूप मे बीसम शताब्दीक बंगालक 'मानुसिंदेर पदावली' थिक।

ई जनकवि विद्यापतिक जनवादी चेतनाक परिणाम छल जे जनगणक कथा व्यापक चर्चा साहित्य मे भेल, जनभाषा साहित्यिक भाषाक गणिमा प्राप्त केरक। इएह कारण छल जे विद्यापति जनगणक कंठहार बनि गेलाह, हुनक रचना मात्र हमरधार्मिक सांस्कृतिक नहि देनन्दन जीवनक अंग बनि गेल। ई विद्यापतिक लेखनी शक्तिक फल छल जे 'बहलोल'क सैनिक शक्ति केँ परास्त केलक आ मिथिलाक स्वाधीनताक रक्षा केलक। तँ विद्यापति मैथिलीक पर्याय बनि गेल छथि।

खेदक विषय जे अइ पुनः मिथिलाक माथ पर दुर्दिनक मेघ मरझा रहल-ए'। मैथिली तर राहुग्रस्त भेल छथि। मैथिल सन्तान अवचेतनावस्था मे पड़ल अइ, साहित्यकार अरवाद केँ छोड़ि श्वानवृत्ति मे लागल छथि आ शिवसिंहक स्थान पर कतेको 'बहलोल' जनमि गेल ए। एहना अवस्था मे खगता अइ एक नजि अनेको विद्यापतिक जे नवचेतनाक शूल फूकि सकथि, भैरवीक आराधना क पुष्पक निर्माण क सकथि, बहलोलक लोल दागि मैथिली केँ राहुमुक्त क सकथि आ आकाश के मेरमुक्त क नव आशोक पसारि सकथि। 'देसिल बयना' हुनके स्वागतार्थ प्रतीक्षारत अइ।

शक्ति-पूजा

भगवती दुर्गा शक्तिक प्रतीक छथि। भासुरी शक्ति प्रवृत्तिक विनाश आ देवी शक्ति गृहस्थिक प्रतिष्ठाक निमित्तहि दिनक प्रादुर्भाव भेल छल। ई अरन कर्म मे सफल-भूत भेल छलीह आ तँ युगों सं हमरा लोकनि उत्तम मनवेत आवि रहल छी। शक्ति स्वरूपा भगवतीक पूजाचना करैत आवि रहल छी।

भगवती दुर्गा मातृरूपा छथि। माइक रूप मे दिनक पूजा-ध्यान हमरा लोकनि करैत आवि रहल छी। मां अरन नेना केँ सिनेह करैत छैक, शक्ति-सदबुद्धि प्रदान करैत छैक, हमरो लोकनि तकर आकांक्षा खेत छी।

आब प्रश्न उठै जेकि हमरा लोकनि एहि पूजाक अधिकारी छी? पूजाक निमित्त जे पवित्रता, इदता, सत्यनिष्ठा आ समर्पणक भावना आवश्यक—से हमरा लोकनि मे अइ? रामायणक अनुसार मैथिली केँ रावण अपहरण क कल गेल छल। मर्यादा पुष्पोत्तम राम प्रण ठनलनि जे एहि काजक निमित्त रावण केँ उचित शिक्षा द क ओ मैथिली केँ आपस अनताह। रामायणक कथा संग महाकवि निराशक 'राम की शक्ति पूजा' बला कथा जोड़ि दी त आर नीक होएत। तदनुसार राम अपन प्रण केँ पूरा करवाक निमित्त शक्तिक पूजा केलनि, पूजाक समय हुनक कुलडाली सं एगो फूल तिपत्ता भ गेल, जकर अर्थ भेल पूजा भंग भेनाई वा अपूर्ण रहि गेनाह। रामचन्द्र कनिजो विचलित नहि भेलाह, ओ नहि बिसरलल जे ओ कमलनेत्र छथि आ तँ तुरन्त अपन आँखि

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
ढाड़ि-जारि सुडाइ करव-हम
बिद्रोही मिथिलाक जवान

—रामलोचन ठाकुर

बाढ़ि : अइ नदिया के यह बेवहार

मिथिला मे एक बड़ प्रचलित कहवी छैक जे 'देवो दुर्बल घातकः। कारण मिथिला एकर भुक्तभोगी अछि। बेर बेरक प्राकृतिक विपर्यय एकर रीढ़ कमजोर कऽ देने छैक। भाग्यवादी मिथिला आर बेसी भाग्यवादी बनल जा रहल अछि। एहि वर्ष पहिने रौदीक प्रकोप छैक आ समस्त मिथिला धू धू कऽ जरि रहल छल। खेत सबमे लहलहाइत वीया-बालि-जरि गेलैक। घर खाली आ बाहर साफ। जवन वर्षा होमय लागैक तऽ लोकक मन मे एक लछास एलैक आ ओसब अपन सम्पूर्ण शक्ति सं चास-बास मे लागि गेल छल। ठीक एहने समय मे बाढ़ि एलैक आ लोक त्राहि त्राहि करय लागल, ओकरा सामने रोजी-रोटीक समस्या चकमाउर देमय लगलैक।

मिथिलाक भरिसकेँ कोनो एहन अंचल हेटैक बाढ़िठाम नदी नहि होइक। एहि देशक प्रायः समस्त ग्रामांचल नदीक परि-सर मे बसल अछि। ओना तऽ नदी प्राकृतिक सम्पदा थिक आ खास कऽ ओहि देशक हेतु बाढ़िठाम लोक-जीवन कृषि पर आधारित होइक ताढ़िठाम एकर आर बेसी उपयोगिता आ महत्ता छैक। परंच इहो तहिना सत्य जे सम्पत्तिक संगे विपत्ति सेहो रहैत आयल अछि। सम्पत्तिक सुरक्षा आ उचित उपयोग नहि पओने विपत्ति केँ टारल नहि जा सकैछ। वर्षाकाल मे ई नदी सभ भरि जाइत छैक आ उल्लय लागैत छैक आ संगहि ताण्डववृत्त करय लागैत छैक। ई नृत्य मिथिला वासीक हेतु केहन विनाशकारी भऽ जाइत छैक तकर प्रत्यक्षरूप एखन बहुते ठाम भेटि सकैत अछि।

मिथिलाक पेघ पेघ नदी मे गंगा, कोशी, कमला, बलान, गंडक, करेह, वागमती आदि अछि। बाढ़ि मे एहि नदी सबहक भूमिका रहैत छैक बाध बोन मे लागल-जजात केँ हूवायव, गाम-घर केँ

दहायव आ माल-जाल केँ भसियायव। कोशी एखनहुँ मिथिलाक लेल अभिधाप बनलै अछि। एहि बेरक बाढ़ि सं ओना तऽ समस्त मिथिला प्रभावित भेल अछि मुदा कटिहार, सदरसा, पूर्णिया, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर जिला सभ मे बहुत अधिक एकर विभिषिका रहलैक आ तँ सबसँ अधिक क्षतियो मेलेक अछि। एहि सं लाखों लोकक जान-मालक क्षति मेलेक अछि आ ओसब आश्रय बिहीन भऽ गेल अछि—वीया-पुताक संग लोक नट जकाँ बाटे-घाटे बौआ रहल अछि। अयाचीक सन्तान आइ पावभरि अल आ पाँच हाथ बंस्त्रक लेल विकल भऽ रहल अछि। व्यवस्थाक तरफ सं जे अनुदान भेटि रहल छैक तकर कये कोन? ई तऽ ओतुका लोकक दाखन व्यये गवाही दऽ रहल अछि जे ओकरा सबहक एहि अव्यक्त कष्ट केँ दूर करवा मे ई अनुदान कतेक सहायक भऽ सकलैक अछि। अनुदानक विशेषांश अफसरक कोष केँ निश्चित भरलकैक अछि आ अलगांश ओहि दुःखक समुद्र मे छीटल गेलैक अछि।

बाढ़ि मिथिलाक लेल कोनो नव घटना नहि। नदी-मातृक देश मिथिला अदौए सं एकर कोपभाजन रहल अछि आ तँ एहिठामक लोक एहि सं अभ्यस्त भऽ गेल अछि। दोसर उपाइयो ने छैक? सरकारी अवहेलना आ मैथिल जातिक अवचेतना-दुनू एहि लेल समानरूप सं दायी। तँ प्रतिवर्ष बाढ़िक ताण्डव लीला होइत छैक। प्रतिवर्ष लोक मरैत अछि, घर आंगन खसैत छैक आ चास-बास भसैत छैक आ एकरे पीठ पर अवेत छैक नाना रंगक रोग व्याधि। लोक मरैत अछि, घिसियोर कटैत अछि। कतय छैक ओकर एहि सस्मयाक निदान? समाधान केँ करैक? देश तऽ आजाद भेल मुदा ३३ वर्षक बादो एहिठामक ई समस्या समस्ये बनल रहि गेलैक। किएक? —जयदेव लाभ

कनिजो विचलित नहि भेलाह, ओ नहि बिसरलाह जे ओ कमल नेत्र छथि आ तँ तुरन्त अपन आँखि बहार कय भगवती पर शेष पुष्पक रूप मे चढ़ैवाक हेतु उद्यत भेलाह। भगवती तेखन प्रकट भेलथिन विजय पर प्रदान केलथिन।

आइ फेर मैथिली अशोक वाटिका मे बन्दिनी छथि आ हम चारि कोटि मैथिल सन्तान चुप-चाप हाथ पर हाथ धेने बैसल छी। कि हमरा लोकनि माइक दूध नहि पीने छी? कि हमरा लोकनिक देह मे शोणित नहि? कि हमरा लोकनि बहिर छी जे बंगला देश, असम, दक्षिण अफ्रिका, फिजीस्ताइन वा आयरलैंडक गर्जन नहि सुनाइ पड़ैए? आ कि हमरा लोकनि नपुंसक छी? आ जँ से छी त की अधिकार अइ शक्ति पूजाक? आ जँ से नहि छी त आउ—एहि पवित्र आ शुभ अवसर पर हमरा लोकनि अपन मातृ भाषाक उद्धारक शपथ ली तेखन शक्ति पूजाक सार्थकता आ उसवक उपयोगिता।

चि
रा-
दि
जि
पर
चा
बी
र मे
हा-
ए।
कन-
मके
इपण
न आ
जाक
उठल
हलनि
पहिने
१।

गाम सं दूर मिथिलाक मजदूर

कलकत्ताक रिक्सा बाहक

कृषि प्रधान मिथिला देश मे श्रमक महत्ता आहि ए काल सं बुझल गेल ए आ मात्र बुझलै छै नहि गेल ए एकरा बड़ पैघ स्थान देल गेलै-ए। ई गौरव मिथिले देश केँ छै जे माथ पर राजमुकुट आ हाथ मे लागनि छेने कुनू राजा हरचाहि केने छथि। राजर्षि जनक केँ इष्टान्त इतिहास मे अगतीम अह। तँ मिथिला धन धान्य सं भरल-पुरल छै। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नहि छै, ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छै। इहँ कारण छै 'जे' एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छै, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल। केँ नहि जने-ए जे भारतीय ई गोट दर्शन मे चारि गोट एही भूमिक देन थिक। पश्चात आबि केँ स्थिति बदलि गेलैक। लोक श्रम केँ अबलाह नजरिने देखल लागल आ श्रमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक चोकर रूप मे बुझल जाय लागल। श्रमविभाजनक आधार पर बनल समाज व्यवस्थाक स्वस्थ-सबल देह मे वर्ण बाँटक गान्धी लागि गेलै। प्रज्ञाक कथन जे 'गुण आकर्मक आधार पर' हम चारि वर्णक सिंजन कएल ए' विसरा देल गेल आ तकरा स्थान पर ब्रह्मम सुह सं ब्राह्मण आ बाहि सं राजपूत आदि जनबाक कथा केँ मटि देल गेल राजर्षि जनकक हर जोत-वाक काज केँ नून तेल लगा मिथक बना देल गेल। तथा कथित उंच वर्णक हेतु आब लागनि घेनाइ पाप भ गेलै आ एही-ठाम सं मिथिलाक अद्योगतिक इतिहासक आरंभ होइए।

श्रम केँ हेय बुझनाइ तथा एहि सं विमुख भेनाइ विलासिता आ संचयक प्रवृत्ति केँ जन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुनः शोषण प्रवृत्ति केँ जन्म देल। स्वभावतः श्रमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बाँटि गेल—शोषक ओ शोषित। एक दिस शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लगलैक त दोसर दिस शोषित श्रमिक वर्गक अभाव यातनाक बीच। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छै आ धन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नग्न नृत्य प्रारंभ भेल।

एक दिस जनसंख्या वृद्धि आ दोसर दिस उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानु-दिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितहुँ ओह मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि कएल गेलैक। कबे केँ करैत ? भूस्वामी अइदी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दोसर दिस श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छै। ताइ पर सं रौंदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लगलैक। जीविकाक अन्याय साधन रहलैक नहि। एहि यंत्रायुगहुँ मे मिथिला

मे कलकारखानाक विकास नहि भ सकल। एकरो कारण मैथिल जातिक अवचेतनता तथा वृणित राजनीति आ बंचक मिथिलाक राजनेतागण छथि। आजुक राजनीतिक पहिछ शर्त होइ छै जनता केँ मुर्ख बना-कए रखनाइ तथा अभाव मे रखनाइ, आ एहि निमित्त आवश्यक छै जनताक भाषा, ओकर सभ्यता-संस्कृति केँ नष्ट क देनाइ। राजनेतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिस श्रमिक वर्ग केँ दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि वस्त्र नहि उप-लब्ध भ सकलै। पेटक स्वाजा मे ओ स्वर्ग हुँ सं पैघ अन्न जननी-जन्मभूमि केँ, अन्न भाइ-बहिन, पत्नी आ नेना केँ परिजन-पुरजन केँ तेजि शहर दिस पड़ाएल।

मिथिलाक श्रमिक भारतक कुनू शहर सं बेसी बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अह। एहिठामक जट्ट मील हो वा गंजीमील वा छापाखाना सभ ठाम मैथिल श्रमिकक बहुलता छै। आका वाला, ठेकावाला आ रिक्सावाला मे अहो प्रतिशत मैथिल अह।

रिक्सा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छै पहिछ त साइकिल रिक्सा जे आनोठाम पाओल जाइए परंच दोसर तरहक रिक्सा जे मात्र एही ठाम टा पाओल जाइए ओ थिक 'टाना—रिक्सा'। 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली भेल खीचनाइ। एहि मे रिक्सा चालक नहि रिक्सा खिचनि-हार होइए। एकर आकृति एनमेन टमटम सन होइत छै आ टमटमक घोड़ाक स्थान मे एहिठाम मनुख रहैए—मनुक सन्तान। घोड़ाक गंदनि मे घंटी रहै छै आ एकरा हाथ मे हथड़ा पर टन-टन मारेत गाड़ी आ बस सं बचेत ओकर संग दौड़ैत।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिक्सा छै आस्वभावतः एगारह हजार परिवारक नून-रोटी एही सं चले छै।

एहि रिक्सा पर बेसत काल प्रायः अन्न केँ अमानुष लोचवा लेल बाध्य भेल छै। बेसाखक टहाटही दुपहरिया मे जखन सुबन गोसाइँ आगि वोकरे छथि आ नीचा बाटक पीछ घमि जाइ छै तखने खाली देह आ खाली पश्चे दू-तीन आदमीक सवारी लय दौड़ना मे जे की परिश्रम होइ छै तकर हमरा लोकनि कल्पनाओ ने क सकै छी। तहिना अखाढ़ मे जखन सुसलाधार बर्खो होइत रहै छै बाट पर पानि जमि जाइ छै आ खाबि-खुबिक पता नहि चले छै, आंकड़-पाथर जागि जाइ छै—जेहन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पाथरे चलबी असंभव तेहना स्थिति मे सवारी लय दौड़नाइ क

परिश्रम आ खतराक अनुमान सहजहि कएल जा सकै छै। आ एहन जीतोड़ परि-श्रम केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छै। एह मे दू टाका रिक्सा मालिक केँ देमय पड़े छै। बाँकी मे अन्न खेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिभाड़र।

ओना त छे तैक मे एगो रिक्सा भेटि जाइ छै, परंच सेहो जुत्ता एकरा लोकनि केँ नहि रहै छै जे अपन रिक्सा कीनि सकल। दोसर बात जे खाली रिक्सा कीनि लेला सं त होइ नहि छै। रस्ता घाटक जे स्थिति छै ताइ मे सदिखन किछु ने किछु मरमति लगले रहै छै आ ताइपर सं पुलिसक खर्च आप क छै। तेहना स्थिति मे भाड़ा पर रिक्सा लेनाइ छोड़ि दोसर उपाये की छै ? भातें मालिक केँ द 'क' जे वचे छै ताइ मे भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र सपनाए बनल रहि जाइ छै। टेया—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, लोरिक सलहेस—श्रम सं विमुख नहि होइत। ओ श्रमक महत्ता, माँ बाप आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य केँ नीक जकां बुझे। तँ एक टा पांच रोटी आ एक कप चाइ पीवि दिनभरि रिक्सा नेने घंटी बजबैत दौड़ैत रहैए।

एमहर बंगाल सरकार बाट जामक बहला क केँ विनु लाइसेंसक रिक्सा केँ बल करवाक योजना बना रहलैए। कहवाक प्रयोजन नहि जे वास्तव मे जाइ टूक-टेम्पूक कारणे आ ट्राफिक पुलिसक बड़ी ओसूचीक कारणे बाट जाम होइ छै ताइ पर सरकारक किछु चलि नहि सके छै आ तँ अपन 'पामार'क उपयोग एही अंगठित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अह। एहि ठाम मात्र पांच हजार रिक्सा केँ लाइसेंस छेक आ बाँकी विनु लाइसेंसक अह।

मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आजुक युग मे सिनेमा केँ प्रचार वा लोक शिक्षाक सभ सं सहज आ कारगर माध्यम कहल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छेक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। बिहारक तीन गोट प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ महगी एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि। ओना भोजपुरी मे कएकटा सिनेमा बनयो केलक अछि आ नीक जकां चललैक अछि। मगही मे सेहो सघन खाय लेल सिनेमा बनल छलैक परंच सभ सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि। एमहर कएकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परंच आइपरि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९७८ मे हमहुँ एहि क्षेत्र मे पदावर्ण कएल स्व० राजकमल चौधरीक अमर कथा 'ललका पाग'क संग। ई एगो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बजैत

बंगाल सरकार नव लाइसेंस बनेल नहि अह। एहि महगीक युग मे बेसी दिन एही 'बहरिया' बोझ लेल तैयार नहि अह सं कारण किछक ने होउ, परंच एत छै जे एकर बन्न भ गेने छै इज बेकार बनि जायत। एकरा लोक 'युनिवर्स' (संगठन) नहि छै। संगठनक प्रहसन भेल रहैक। नेत निश्चिते रिक्सा खिचनिहार ना पड़ा गेलै आ प्रदर्शनकारी रिक्सा सभक पुलिस नीक बर्का पीटाइ एकरा लोकनिक लेल बजनिहार छै छै। फलतः बेकार मजदूर केँ अप धुरि गेनाइ छोड़ि दोसर कुनू द्वार छै। परंच समस्या छै जे गामे ई सभ की करत ? की खाएत-पी केना गुजर चलैत ? कहादन देश भेल छै आ इहो सभ ताइ अनाद नागरिक छी। संविधान मे लिखल सभ नागरिक समान छै। सभ केँ रंग अधिकार छै आ एके रंग सुविधा भेटैत। ओना इहो नीके से बात एकरा लोकनि केँ नहि बुझैत। एकरा लोकनि केँ नहि बुझल छै जे उन्नत लोकक उन्नति होइ छै आ सभ ताही लोकक अंश थिक। मुद भवसे दुःख छै जे ई सभ बिहारी आ बिहारक मुल मंत्री बाबू श्री जग मिसर छथिन जे एकरे गाम-घरक छथिन। चुनावक समय मे गामे जाइ—छथिन आ गरिबहा लेल म रास की कहादन करवाक गण कहे छ कि से गण खाली चुनावेचारी रहै आने सरिपहुँ हुनका लग एकरा लोकनि समझाक निदानक कुनू योजना छनि ?

—मुजतबा अ

अछि भारतीय नारक आदर्श सीत प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि। एहि कथ वर्तमान समय मे बड़ बेसी आवश्यकता उपयोगिता छेक। तँ हम एहि कथ चयन कएल।

सिनेमा संसारमे यद्यपि हमर प्रथ पदावर्ण छल परंच नाट्य-मंचक दीर्घ ७ पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जगतक ख्यातिनामा कलाकर लोकनिक संग सहयोग हमरा प्राप्त छल। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे जं ई फिल्म बनि सकल त निश्चिते टकर के होइत। प्रमाण मे एकर गीतसभ जे रेकर्डिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिल्म मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छै आ गीत रेकर्डिंगक अतिरिक्त कला-कार-चयन आ दृश्य चयनक काज सेहो शेष क लेल गेल छै। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ जं अर्थ लगओनि-शेषांश पृष्ठ ४ पर

गाम सं दूर मिथिलाक मजदूर

कलकत्ताक रिक्सा बाहक

कृषि प्रधान मिथिला देश मे अमक महत्ता आहि काल सं बुझल गेल-ए आ मात्र बुझलै टा नहि गेल-ए एकरा बड़ पैघ स्थान देल गेल-ए। ई गौरव मिथिले देश केँ टा छइ जे माथ पर राजमुकुट आ हाथ मे लागनि घेने कुनू राजा हरबाहि केने छथि। राजर्षि जनक केँ इष्टान्त इतिहास मे अगतीम अइ। तँ मिथिला धन धान्य सं भरल-पुरल छल। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नहि छल, ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छल। इहए कारण छइ जे एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छल, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल। केँ नहि छने-ए जे भारतीय इ गोट दर्शन मे चारि गोट एही भूमिक देन थिक। पश्चात आबि केँ स्थिति बदलि गेलैक। लोक अम केँ अजलाइ नजरि देल्य लागल-आ अमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक लोकक रूप मे बुझल जाय लागल। अमविभाजनक आचार पर बनल समाज व्यवस्थाक स्वस्थ-सबल देह मे वर्ण बादक गान्ही लागि गेलै। ब्रह्माक कथन जे 'गुण आकर्मक आधार पर' हम चारि वर्णक सिंहरजन कएल' ए' विसरा देल गेल आ तकरा स्थान पर ब्रह्माम मुह सं ब्राह्मण आ बाहि सं राजपूत आदि बनबाक कथा केँ मटि देल गेल राजर्षि जनकक हर जोत-बाक काज केँ नून तेल लगा मिथक बना देल गेल। तथा कथित उंच वर्णक हेतु आव लागनि घेनाइ पाप भ गेलै आ एही-ठाम सं मिथिलाक अयोगतिक इतिहासक आरंभ होइए।

अम केँ हेय बुझनाइ तथा एहि सं विमुख भेनाइ विलासिता आ संचयक प्रवृत्ति केँ जन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुनः शोषण प्रवृत्ति केँ जन्म देल। स्वभावतः अमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बाँटि गेल—शोषक ओ शोषित। एक दिस शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लगलैक त दोसर दिस शोषित अमिक वर्गक अभाव यातवाक बीच। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छइ आ धन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नरन नृत्य प्रारंभ भेल।

एक दिस जनसंख्या वृद्धि आ दोसर दिस उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानु-दिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितहुँ ओइ मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि कएल गेलैक। करबे केँ करैत ? भूस्वामी अइदी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दोसर दिस अमिक वर्ग शक्तिहीन छल। ताइ पर सं रौंदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लगलैक। जीविकाक अन्याय साधन रहलैक नहि। एहि यंत्रायुगहुँ मे मिथिला

मे कलकारखानाक विकास नहि भ सकल। एकरो कारण मैथिल जातिक अवचेतनता तथा घृणित राजनीति आ बंचक मिथिलाक राजनेतागण छथि। आजुक राजनीतिक पद्धति शर्त होइ छइ बनता केँ मुर्ख बना-कए रखनाइ तथा अभाव मे रहनाइ, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक भाषा, ओकर सम्पत्ता-संस्कृति केँ नष्ट क देनाइ। राजनेतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिस अमिक वर्ग केँ दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि बस्त्र नहि उप-लब्ध भ पओलैक। पेटक स्वाळा मे ओ स्वर्ग दु' सं पैघ अन्न जननी-जन्मभूमि केँ, अन्न भाइ-बहिन, पत्नी आ नेता केँ परिजन-पुरजन केँ तेजि शहर दिस पढ़ाएल।

मिथिलाक अमिक भारतक कुनू शहर सं बेसी बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अइ। एहिठामक जूट मील हो वा गंजीमील वा छापाखाना सब ठाम मैथिल अमिकक बहुलता छइ। भाका वाला, ठेकावाला आ रिक्सावाला मे अस्वी प्रतिशत मैथिल अइ।

रिक्सा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छइ पहिल त साइकिल रिक्सा जे आनोठाम पाओल जाइए परंच दोसर तरहक रिक्सा जे मात्र एही ठाम टा पाओल जाइए ओ थिक 'टाना—रिक्सा'। 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली भेल खीचनाइ। एहि मे रिक्सा चालक नहि रिक्सा खिचनि-हार होइए। एकर आकृति एनमेन टमटम सन होइत छइ आ टमटमक घोड़ाक स्थान मे एहिठाम मनुख रहैए—मनुक सन्तान। घोड़ाक गंदनि मे घंटी रहै छइ आ एकरा हाथ मे हथड़ा पर टन-टन मारेत गाड़ी आ बस सं बचेत ओकर संग दौड़त।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिक्सा छइ आस्वभावतः एगारह हजार परिवारक नून-रोटी एही सं चले छइ।

एहि रिक्सा पर बेसत काल प्रायः अगना केँ अमानुष सोचवा लेल बाध्य भेल छी। बेसाखक टहाटही दुपहरिया मे जखन सुबह गोसांइ आगि वोकरे छथि आ नीचा बाटक पीछ घमि जाइ छइ तखने खाली देह आ खाली पछरे दू-तीन आदमीक सवारी लय दौड़ना मे जे की परिश्रम होइ छइ तकर हमरा लोकनि कल्पनाओ ने क सकैत छी। तहिना अखाड़ मे जखन मुसलाधार बखौ होइत रहै छइ बाट पर पानि जमि जाइ छइ आ खाच्चि-खुधिक पता नहि चले छइ, आंकड़-पाथर जागि जाइ छइ—जेहन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पाएरे चलबी असंभव तेहना स्थिति मे सवारी लय दौड़नाइ क

परिश्रम आ खतराक अनुमान सहजहि कएल जा सकैछ। आ एहन जीतोड़ परि-श्रम केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छइ। एइ मे दू टाका रिक्सा मालिक केँ देमय पड़े छइ। बाँकी मे अन्न खेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिभांडर।

ओना त छ बे तक मे एगो रिक्सा भेटि जाइ छइ, परञ्च सेहो बुत्ता एकरा लोकनि केँ नहि रहै छइ जे अपन रिक्सा कीनि सकल। दोसर बात जे खाली रिक्सा कीनिते लेला सं त होइ नहि छइ। रक्ता घाटक जे स्थिति छइ ताइ मे सदिखन किछु ने किछु मरम्मत लगले रहै छइ आ ताइपर सं पुलिसक खर्च आप क छइ। तेहना स्थिति मे भाड़ा पर रिक्सा लेनाइ छोड़ि दोसर उपाये की छइ ? भातें मालिक केँ द 'क' जे वच्चे छइ ताइ मे भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र सपनाए बनल रहि जाइ छइ। ऐया—मिथिलाक हजार-हजार अमिक, लोरिक सलहेस—अम सं विमुख नहि होइछ। ओ अमक महत्ता, माँ बान आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य केँ नीक जकाँ बुझे। तँ एक टा पाँच रोटी आ एक कप चाइ पीवि दिनभरि रिक्सा नेने घंटी बजबेत दौड़त रहैए।

एमहर बंगाल सरकार बाट जामक वहला क केँ बिनु लाइसेंसक रिक्सा केँ बस करवाक योजना बना रहले ए। कहवाक प्रयोजन नहि जे वास्तव मे जाइ ट्रक-टैम्पूक कारणे आ ट्राफिक पुलिसक बड़ी ओखरीक कारणे बाट जाम होइ छइ ताइ पर सरकारक किछु चलि नहि सके छइ आ तँ अपन 'पामार'क उपयोग एही अंगठित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अइ। एहि ठाम मात्र पाँच हजार रिक्सा केँ लाइसेंस छेक आ बाँकी बिनु लाइसेंसक अइ।

मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आजुक युग मे सिनेमा केँ प्रचार वा लोक शिक्षाक सभ सं सहज आ कारगर माध्यम कहल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छेक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। बिहारक तीन गोट प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ महगी एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि। ओना भोजपुरी मे कएकटा सिनेमा बनवो केलक अछि आ नीक जकाँ चललैक अछि। महगी मे सेहो सप्पत खाय लेल सिनेमा बनल छलैक परञ्च सभ सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि। एमहर कएकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परञ्च आइवरि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९७८ मे हमहुँ एहि क्षेत्र मे पदावर्ण कएल स्व० राजकमल चौधरीक अमर कथा 'ललका पाग'क संग। ई एगो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बजेत

बंगाल सरकार नव लाइसेंस बनेबाक प नहि अइ। एहि महगीक युग मे ओ बेसी दिन एही 'बहरिया' बोझ केँ दो लेल तैयार नहि अइ सं कारण जे किशक ने होउ, परञ्च एत धरि छइ जे एकर बन्न भ गेने छ हजार व बेकार बनि बायत। एकरा लोकनिक 'युनियन' (संगठन) नहि छइ। एक संगठनक प्रहसन भेल रहैक। नेता सभ निश्चिते रिक्सा खिचनिहार नहि छ पढ़ा गेलै आ प्रदर्शनकारी रिक्सा मज सभक पुलिस नीक जकाँ पीटाइ केलकै एकरा लोकनिक लेल बजनिहार केओ छइ। फलतः बेकार मजदूर के अपन गा. सुरि गोनाइ छोड़ि दोसर कुनू द्वारा ना छइ। परञ्च समस्या छइ जे गामे जा। ई सभ की करत ? की खाएत-पीत ? अ केना गुजर चलैत ? कहादन देश अजाम भेल छइ आ इहो सभ ताइ अबाद देशक नागरिक छी। संविधान मे लिखल छइ जे सभ नागरिक समान छइ। सभ केँ एके रंग अधिकार छइ आ एके रंग सुख-सुविधा भेटैत। ओना इहो नीके छइ जे से बात एकरा लोकनि केँ नहि बुझल छइ। एकरा लोकनि केँ नहि बुझल छइ जे देशक उन्नते लोकक उन्नति होइ छइ आ इहो सभ ताही लोकक अंश थिक। मुदा एते अवसरे बुझल छइ जे ई सभ विहारी छी आ बिहारक मुख मंत्री बाबू श्री जगन्नाथ मिशर छथिन जे एकरे गाम-धरक लोक छथिन। चुनावक समय मे गामेगाम जाइ—छथिन आ गरिबहा लेल मारिते रास की कहादन करवाक गथ कहे छथिन कि से गथ खाली चुनावेचारी रहै आ आने सरिपहुँ दुनका लग एकरा लोकनिक समस्याक निदानक कुनू योजना छति ?

—मुजतबा अर्ल

अछि भारतीय नारिक आदर्श सीताक प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि। एहि कथाक वर्तमान समय मे बड़ बेसी आवश्यकता आ उपयोगिता छेक। तँ हम एहि कथाक चयन कएल।

सिनेमा संसारमे यद्यपि हमर प्रथम पदावर्ण छल परञ्च नाट्य-मंचक दीर्घ आ पर्वत अनुभव तथा सिनेमा जगतक व्या-तिनामा कलाकर लोकनिक संग सहयोग हमरा प्राप्त छल। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे जं ई फिल्म बनि सकल त निश्चिते टकर के होइत। प्रमाण मे एकर गीतसभ जे रेकर्डिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिल्म मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छेक आ गीत रेकर्डिंगक अतिरिक्त कला-कार-चयन आ दृश्य चयनक काज सेहो शेष क लेल गेल छेक। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ जं अर्थ लगओनि-शेषांश पृष्ठ ४ पर

लोककथा

महाकाली

(स्मिथिलाक बेटी सीता भारतीय नारीक आदर्शक रूप मे मानल जाइ छथि। भगना ओइठाम कहबो छह— सीता जन्म बियोगे गेल, हुल छोड़ि दुल कहियो ने मेर। परचव, धर्य, कष्टना आ त्यागक प्रतिमूर्ति सीताक आत्मभिमान पर जनन चोट पहुँचलनि त ओ महाकालीक रूप धारण केलनि। मिथिला मे प्रचलित लोककथाक आधार पर प्रस्तुत अइ उइ चिरन्तन कथा—महाकाली।)

लंका विजयक उपरान्त अपन वनवासक अवधि शेष कइ राम जानकी आ लक्ष्मणक संग अयोध्या फिरलाह। कतेको दिन तक हुनका लोकनिक सकुशल फिरवाक आनन्द मे उरख चलेत रहल। जखन ई क्रम शेष भेलक त किछु दरबारी सम प्रस्ताव केलनि जे रावण सन पराक्रमी के कम करवाक उपलक्ष्य मे महाराज रामक बाहिक पूजा हेवाक चाही। विरोधक प्रस्ने ने उठ सकैत छल। पूजनोत्सवक तैयारी बड़ जोर-शोर सँ चलय लागल। सीता केँ सेहो एकर भनकी लगलनि। तेथो ओ एकदिन राम सँ पुछि देलथिन—फेर कून उरखक आयोजन भ रहल छह? महाराज राम अचरज सँ प्रतिप्रश्न केलथिन—अहाँ केँ नजि पता? सीता व्यंग्य सँ बिहूँ सेत बजली—जखन केओ कहबे ने केलनि त पता रहत कोना? असलमे तकर प्रयोजने अहाँ लोकनि नजि बुझैत छी। स्त्री त मात्र आदेश पालनक निमित्त होइत अइ। ओकरो जे आत्मा होइ छह, हृदय होइ छह, से सोचबाक पड़लथि अहाँ लोकनि के कहाँ अइ। राम बजलाह—हमरा खेद अइ जे अहाँ सँ विचार नजि लेल। प्रजागणक विचार छनि जे महा-पराक्रमी राजा रावण के जय करवाक उपलक्ष्य मे हमर बाहिक पूजा हो। प्रजाक विचार मे हम तेना भ केँ बड़ गेलहुँ जे जनिका द्वारा पूजा होइत तिनको मत लेनाइ बिसरि गेलहुँ। परचव आन बाहरि अहाँ अनन स्वीकृति नजि देव—ई पूजा नजि होइत।

सीता कहलथिन—इम स्वीकृति नजि देव से अहाँ किष्क सोचि लेलहुँ? काओ बहुत अगुआ ने छह।

राम—से जते किष्क ने अगुआ जाओ—तकर चिन्ता हमरा नजि।

सीता—अहाँ इमर विचार पुछे छी अथवा स्वीकृति चाहे छी?

राम—निश्चिते विचार पुछे छी। जं अहाँक विचार ई काज उचित हो तखन स्वीकृति दिय'।

सीता गंभीर स्वर मे कहलथिन—अहाँ के पता अइ जे रावणो सँ बेध परा-क्रमी आर एगो रावण अइ। जाइ देशक महिलागण कोचुकवश रावण के पकड़ि

ओकरा दसो मासपर दीप बरओने छलहि आ बड़ अनुनय विनय केलाक बाद ओकरा मुक्ति भेटल छलक। ताही पताल लोकक राबा सखवाहुँ रावण छलनो जीवेर। राम गंभीर भ गेलाह आ भरसँ चुप्पे बहरा गेलाह। प्रात मेने भरिनगर मे डिगडिगया पीटवा देव गेले जे बाहरि महाराज राम सखवाहुँ रावण पर विजय नजि पओताह ताधरि ई उरख स्थगित रहत।

जखन लक्ष्मण केँ ई बात पता चलनि त ओ फन केँ राम लग पहुँचला आअबी केलथिन—भाइ हमरा भासा देल जाओ इम आइए सांझपर ओकरा परास्त कइ बन्दीबना आपस आवि जायव। उरखक आयोजन स्थगित नजि हेवाक चाही।

महाराज राम बिहूँ सेत कहलथिन लखन ई अहाँक शक्ति सँ बाहरक बात थिक। हमरो शक्ति सँ बाहरक। एहि निमित्त हमरा हुनू भाइक संग वेदेहीक रहनाइ परमावश्यक अइ। जाउ हनुमान केँ कहियतु रथ तैयार करयि आ वेदेही केँ सेहो तैयार हेवाक निवेदन करवनि। हमरा लोकनि आर देरी नजि कय शिघ्र विदा होइ।

लक्ष्मण रामक मुँह तकैत चुपचाप विदा भेलाह। कनिज कालक बाद रथ तैयार भेल। रामक बामदिस जानकी आ दहिना मे लक्ष्मण बैसल। सारथी हनुमान।

जखन रथ सखवाहुँ रावणक राज्यक सीमा मे पहुँचैत गुप्तचर द्वारा ओकरा खबरि लगलक। ओ ओहीठाम सँ तौर छोडलक आ समदिया द्वारा समाद लेलक त पता चललक सारथी बानर निपत्ता भ गेलक। रावणक वाण सँ हनुमान सातसमुद्र पार फेका गेलाह। ओ दोसप वाण छोडलक त लक्ष्मण के सहइ गति। तेसर मे राम मुझित भय रथ पर टरि गेलाह। तकर बाद ओ कतेको वाण छोडलक परंच सभ व्यर्थ गेलक। सीता विकलशून्य जकाँ रथ पर बैसल छलीह। रावण के जखन सभ पता चललक त ओ ध्यानस्थ भेल। ओकरा बुझना मेँ देरी नहि लगलक जे रथ पर बैसल महिला दोसर केओ नजि आदि शक्ति थिकीह। शक्ति उपासक हेवाक कारणे ओ मनेमन हुनका नमस्कार केलक आ अपन भूलक लेल क्षमा याचना केलक।

एमहर देवलोक मे खलबली मचिगेल आ सभ देवाधि देव महादेवक ओतय पहुँचलाह जे कुनू द्वारा धराउ ने त अनर्थ भ जायत। देवगणक आकुलता देखि महादेव प्रस्थान केलनि। ओ सीताक समीप अपन रूप बदलि पहुँचलाह आ हुनका खिसिष्टवाक हेतु नाना तरहक व्यंज्य वाण छोडय लगलाह—वय्य छी हे देवी स्वामी मुइल पड़ल लक्ष्मण सन देयोर मरल, हनुमान सन सेवक मरल जकरा अहाँ अन्न

कविता

वसन्त गीतक मादे

(कवि जीवकान्तक डेउ)

एक गोठ

स्पन्दनहीन-वदास

पतझड़ वन मे

भेल छल हमर जन्म

आ

छत्तीस बर्ष धीतशक बादो

स्थिति ओहिना छइ

ओना

सूनु त हमरो अइ जे

कहियो एहिठाम रहैत छल

बारहोमास छत्तीसो दिन

वसन्त बहार

आ ताही आशा मे हम

पटवैत आएल छी साध्यानुसार

एहि पतझड़ वन केँ

वसन्ते सन

पावस सेहो दन्तकथा बनि चुकल-ए

एहना स्थिति मे

हमरा सँ वसन्तगीतक आशा

करबे होइत अनुचित

भाइ हे!

आउ ने

हमरा लोकनि संग मिलि पटाबो

(कारण)

गाछ सभ पखनो अइ प्राणवत त

हमरा विश्वास अइ

आइ ने कालि

एहि मे होएतैक नव पलव

रंग-बिरंगक फूल

जकर मादक गंध सँ महमह करत सर्वत्र

पोवि मधु मातल मधुप गुंजन करत

तखन

हमहुँ लिखब आ

निश्चिते लिखब

वसन्त-गीत जे

अकाशक नहि

परिवेशक उपज थिक

—रामलोचन ठाकुर

अमर, हेवाक वरदान देने छलियनि तेथो अहाँ लेखे धन सन। ई त अहाँ सक हो। मानव रूप मे आवि मानव के कंकित किष्क करैत छी।

एवं प्रकारे बहुत कहलाक बाद सीताक ध्यान भंग भेलनि। क्रोधमे अविष्ट हुनक शरीर कारी भ गेलनि ओ खोपा बान्हल केश खुनि फहराय लगलनि। ओ रथ सँ उतरि सोमे विदा भेली आ जे सामने मे पड़नि ताहि मे बहुतो त हुनक भयंकर रूप देखि आतंके सँ प्राण त्यागि देलक। एक राक्षस हुनका पर प्रहार केलकनि ओ तकर हाथ पकड़ि कत्ता छीन लेलथिन आ पेर स मदिरा आगा बड़ि गेलीह। ओ कत्ता सँ सभक माथ छोपैत अगुआइत रहली आ जखन सखवाहुँ रावणक नगर शून्य भ गेल त दोसर दिस घुरली। सीताक रणवंदी रूप सँ पुनः देवगण धवरेला ओ सोचलनि ज एना मे त धरती लोक बिहीन भ

जाइत। ओ सभ फेरि महादेव लग पहुँचि अनुनय विनय केलनि। अठरन दरन महादेव एहिबेर आनि महाकालीक वादमे पड़ि रहलाह। उदमूखी कालोक नजरि नजि पड़लनि आ हुनक पहर महादेवक छातीपर पड़लनि। ओ कत्ता सवधानि नीचा तकलनि त महादेव केँ चीन्ह लाजे नी कूचि लेलनि आ पुनः अपन पूर्वक रूप मे आवि गेलीह। सीताक इइ रूप महा-कालीक रूप मे सर्वत्र पूजित होइ-ए। सीता आपस रथपर झलीह आ अपन कन-गुनिया आगुर चीरि अमृतपान करा रामके चेतन अवस्था मे अनलनि। फेर लक्ष्मण आ हनुमान के खोचि बीवित केलनि आ सभ व्यंज्य फिरलाह। रामक बाँहिपूजाक बदला सीताक बाँहिपूजाक प्रस्ताव उठल परंच मैथिली तकरा अस्वीकार केलनि ताहि दिन सँ सीताराम माने राम सँ पहिने सीताक नामक परिपाटी चल्य लागल।

वाल्मीकि

चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अबे छी तोरा ले किछु लबै छी जतय बहै छइ गंगा-कमला-तकरे गीत सुनबै छी ॥ जाहि माटि सं जनमलि सीता सपह हमर ई धरती याज्ञवल्क्य गौतम, कपिल के भुमि रहत नबि परती सुगो शास्त्रक गध करै छल तकरे गीत सुनबै छी ॥ ई लोरिक-सलहेसक धरती ई शिवसिंहक धाम छइ महादेव बनि चाकर अपला मिथिला देश महान छइ जाधरि चान-सुरज ता रहतै सपह रापथ दोहरवै छी ॥

— रामलोचन ठाकुर

मैथिली सिनेमा ...

हार मोहदूतर मेति जायि त ई मासक अन्दरे फिल्म बनि के तैपर म चावत । ओना एहि लेउ हम बिहार सरकार सं ठेरो सम्पर्क करवाक प्रयास करैल परजव सरकार दिव सं पत्रक उत्तरो तक नहि आबि सकल ।

फिल्म आइ आनो दृष्टि सं उपयोगी अछि । आइ बेकारिक के समझा छेक तकर बहुदूरपरि समाधान एहि नाम्ने म सकेत छेक । कतेको युवा इद कलाकार मे त कमिश्नर के सेबी-रोटीक संझि अपन प्रतिभा विकासक जुयोग मेति सकेत छनि । बम्बईया फिल्म सम, जे बिरोध के सस्त मनोरंजक होइए, लाखक लाख टाका मिथिलांचल सं ल जाइछ । मैथिली फिल्म भेने ताइपर रोक लगतेक आ घरक पाइ धरे मे रहत । मिथिलाक व्यवसायी लोकनि देखा-देखी एहिमे अग्रसर होय-ताइ । फिल्म उद्योग के आर्थिक सहयोग छेक एगो केन्द्रीय संस्था छेक—एन० एफ० डी० सी० (National Film Development Corporation) जे राज्य सरकार माध्यमे फिल्म उद्योग के अर्थ सहयोग देत छेक । महाराष्ट्र, प० बंगाल, तामि नाडू, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य-सरकार एहि सं प्रचुर टाका लय अपन-

द्विभङ्गा—हमरा लोकनिक दृष्टि-भंगा प्रतिनिधि सूचित केलनिहें जे स्थानीय मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा नवम्बरक दोसर सप्ताह मे एगो दुदिना सम्मेलनक आयोजन करय जा रहल-ए । पहिल दिन मिथिलाक सर्वांगीण विकास पर विचार-विमर्श होयत । एहि मे समस्त मिथिलाक प्रतिनिधि भाग लेथि तकर प्रयास चलि रहल ए । दोसर दिन चिराट प्रदर्शन होइत जाहि मे व्यामग पचास हजार लोक के माग लेसक बात अइ ।

जनसंघर्ष मोर्चा इहो निर्णय लेउक ए, जे मार्च १९८२ मे अन्तपुर मे एकटा अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य सम्मेलन आयोजित करत । कार्यक्रमक सफलता लेल 'देसिल बयना'क शुभकामना ।

× × ×

टिप्पणी—हमरा लोकनिक टिप्पणी प्रति-निधि सूचित केलनिहें जे अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्लीक तत्वावधान १४ सितम्बर के होमयवला प्रदर्शन । १४४ मंगक कार्यक्रम तत्काल स्थगित म गेलए । ई कार्यक्रम कहिया धरि हैत से अज्ञात अइ । शतभ्य जे श्री भोगेन्द्र झा, एम० पी० एहि संस्थाक पृष्ठ पोशक छथि तथा राजेन्द्र नाद, हुसमदेव नारायण यादव, शिवचन्द्र झा (सांवर) आदिक सहयोग एहि संस्था के प्राप्त छइ । देशक राज-बानी मे हेवाक कारणे तथा राजनैतिक नेता लोकनि छात्रछाया मे रहवाक कारणे ई संस्था निश्चिते मिथिला मैथिली निमित्त बहुत काम क सकै-ए आ हमरो लोकनि तकर आशा करैत छी । बेसी त भविष्ये कहत ।

अपन राज्यक फिल्म उद्योग के बढ़ा रहल अछि परन्तु बिहारक अर्थमन्त्रालय कारणे बिहार राज्य एहि सं वंचित अछि । एकर हिल्लाक टाका बम्बई मे कुञ्ज रहल छेक । बिहार जन रेव आ सम्प्रदायी प्रदेश मे एगो फिल्म स्टूडियोतक नहि मेनाइ केहन लज्जास्पद विषय थिक से सहजहि सोचल जा सकैछ । कहनी छेक जे बेरे बुरिबक त जेतुक के लेत ? पता ने बिहार सरकारक ई बुरिबके छेक अथवा ओ बिहारक विकास नहि चाहैत अछि । परंच स्थिति येह छेक आ मिथिलाक संगहि समस्त बिहारक लेखक, कलाकार, तक निश्चयन सरकार सं ई अपेक्षा रखैत अछि जे ओ आबहु एहि दिवा मे सतर्क होअओ आ समुचित प्रयास करओ ।

—श्री कान्त मंडल

आन्दोलन समाचार

मैथिली मुक्ति मोर्चाक अपील

मिथिला मे दुर्गापूजाक परम्परा बड़ पवित्र आ प्राचीन अइ । लाख दिकदारो अछेतो निश्चिते एह खेप समस्त मिथिला मे पूजनोत्सव होएत आ बहुतोठाम सांस्कृतिक कार्यक्रम होएत । मोर्चा समस्त प्रबुद्ध युवावर्ग सं निवेदन करैए जे समस्त सांस्कृतिक कार्यक्रम मैथिली मे कएल जाय । जतय कतौ नाटक मंचन हो से निश्चितरूपे मैथिली मे हेवाक चाही । माइक अर्चना माइक भाषा मे हो—कोटक भाषामे किजहु नहि । गंगाबलक बदला तारी-दारुक उपयोग सर्वथा अनुचित—से ध्यान राखल जाय ।

मिथिलाक छी—मैथिल छी

मैथिली बचाउ—हिन्दी इटाउ

मैथिली बाजू, पढ़, लिख । समकाम मैथिली मे कर ।

चन्दाक दर—

एक प्रति	पचास पाइ
सठियाना	पांच टाका
पांच सालक	बीस टाका

वितरक लोकनि सं—

'देसिल बयना' क एकेन्टी छेक सम्पर्क कर—

वितरण व्यवस्थापक,
अखणोदय प्रकाशन,

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाव । कम खर्च मे सुन्दर दंग सं अधिक प्रचारक छक मात्र साधन ।

सम्पर्क कर

विज्ञापन व्यवस्थापक
अखणोदय प्रकाशन,

लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

- अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनाय पठाव ।
- 'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक । आन्दोलन सम्बन्धी रचना के अप्रधिकार देल जायत ।
- मिथिला-मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव ।
- 'देसिल बयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ ।

कह लोचन कविराय

जगन्नाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगहा छान
खइ उमकी माइय सतत निधिन कएल बयान
निधिन कएल बयान माल ई सरङ्गताली
अपन के खाएत सोचत शुभ अनके खाली
कह लोचन कविराय बजा नट जूदो लगवू नाथ
बेचू बर कसाइक हाथे ई अछछ जगन्नाथ

बालगीत

चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अबे छो
तोरा ले किछु लबे छो
जतय बहै छइ गंगा-कमला-
तकरे गीत सुनबै छी ॥
जाहि माटि सं जनमलि सीता
सहइ हमर ई धरती
बाह्यवन्त्य गीतम, कपिल के
भूमि रहत नबि परती
सुगो शास्त्रक गाय करै छल
तकरे गीत सुनबै छी ॥
ई लोरिक-सलहेसक धरती
ई शिवसिंहक धाम छइ
महादेव बनि चाकर अएला
मिथिला देश महान छइ
जाधरि चान-सुरुज ता रहतै
सहइ शपथ दोहरबै छी ॥
— रामलोचन ठाकुर

मैथिली सिनेमा

हार प्रोड्यूसर मेटि जायि त ६ मासक
अन्दरे फिल्म बनि के तैयार भ जायत।
ओना एहि लेल हम बिहार सरकार सं सेहो
सम्पर्क करवाक प्रयास कएल परख सरकार
दिस सं पत्रक उत्तरो तक नहि आवि
सकल।

फिल्म आइ आनो एहि सं उपयोगी
अछि। आइ बेकारिक जे समस्या छैक
तकर बहुतदूरपरि समाधान एहि माध्यमे
भ सकै छैक। कतेको युवा छुट्ट कर्षकार
मे त कमिशनियन के रोजी-रोटीक संगहि
अपन प्रतिभा विकासक सुयोग मेटि सकै
छनि। बम्बइया फिल्म सभ, जे बिशेष के
सस्त मनोरंजक होइए, लाखक लाख टाका
मिथिलांचल सं ल जाइछ। मैथिली
फिल्म मेने ताइपर रोक लगतेक आ घरक
पाइ घरे मे रहत। मिथिलाक व्यवसायी
लोकनि देखा-देखी एहिमे अग्रसर होय-
ताइ। फिल्म उद्योग के आर्थिक सहयोग
लेल एगो केन्द्रीय संस्था छैक—एन०
एफ० डी० सी० (National Film
Development Corporation) जे
राष्ट्र सरकार माध्यमे फिल्म उद्योग के अर्थ
सहयोग देत छैक। महाराष्ट्र, प० बंगाल,
तामि नाडू, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य-
सरकार एहि सं प्रचुर टाका लय अपन-

आन्दोलन समाचार

द्विभङ्गा—हमरा लोकनिक दक्षि-
भंगा प्रतिनिधि सूचित केलनिहें
जे स्थानीय मिथिला जनसंघ मोर्चा
नवम्बरक दोसर सप्ताह मे एगो दुदिना
सम्मेलनक आयोजन करय जा रहल-ए।
पहिल दिन मिथिलाक सर्वांगीण विकास
पर विचार-विमर्श होयत। एहि मे समस्त
मिथिलाक प्रतिनिधि भाग लेथि तकर
प्रयास चलि रहल-ए। दोसर दिन विराट
प्रदर्शन होइत जाहि मे व्यामग पचाव
हजार लोक के भाग लेबाक बात अइ।

जनसंघ मोर्चा एही निर्णय लेलक-ए,
जे मार्च १९८२ मे बनारस मे एकटा
अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य सम्मेलन
आयोजित करत। कार्यक्रमक सफलता
लेल 'देसिल बयना'क शुभकामना।

× × ×

दिल्ली—हमरा लोकनिक दिल्ली प्रति-
निधि सूचित केलनिहें जे अखिल भारतीय
मिथिला संघ, दिल्लीक तत्वावधान १४
सितम्बर के होमयवला प्रदर्शन। १४४
भंगक कार्यक्रम तत्काल स्थगित भ गेल-ए।
ई कार्यक्रम कहिया बरि हैत से असात
अइ। शतव्य जे श्री भोगेन्द्र झा, एम०
पी० एहि संस्थाक पृष्ठ पोशक छथि तथा
राजेश यादव, हुकूमदेव नारायण यादव,
शिवचन्द्र झा (रासद) आदिक सहयोग
एहि संस्था के प्राप्त छइ। देशक राज-
धानी मे देवाक कारणे तथा राजनैतिक
नेता लोकनि छात्रछाया मे रहबाक कारणे
ई संस्था निश्चित मैथिली मैथिली निमित्त
बहुत काज क सकै-ए आ हमरो लोकनि
तकर आशा करै छी। बेसी त भविष्ये
कहत।

अपन राज्यक फिल्म उद्योग के बढ़ा रहल
अछि परन्तु बिहारक अकर्मण्यताक कारणे
बिहार राज्य एहि सं वंचित अछि। एकर
हिसाक टाका बम्बइ मे फुका रहल छैक।
बिहार सन पेश आ सम्पत्तिशाली प्रदेश मे
एगो फिल्म स्टूडियोतक नहि मेनाइ केहन
सहजस्यद विषय थिक से सहजहि सोचल
जा सकैछ। कहथी छैक जे बरे बुरिक त
जेतुक के छैत? पता ने बिहार सरकारक
ई बुरिक के छैक अथवा ओ बिहारक विकास
नहि चाहैत अछि। परन्तु स्थिति यैह छैक
आ मिथिलाक संगहि समस्त बिहारक
लेखक, कलाकार, तक निशियन सरकार सं
ई अपेक्षा रखैत अछि जे ओ भावहुं एहि
दिना मे सतर्क होअओ आ समुचित प्रयास
करओ।

—श्री कान्त मंडल

मैथिली मुक्ति मोर्चाक अपील

मिथिला मे दुर्गा पूजाक परम्परा बड़
पवित्र आ प्राचीन अइ। लाख दिकदारो
अछेतो निश्चित एइ खेप समस्त मिथिला
मे पूजनोत्सव होइत आ बहुतायत सांस्क-
तिक कार्यक्रम होइत। मोर्चा समस्त प्रबुद्ध
युवावर्ग सं निवेदन करैत जे समस्त सांस्क-
तिक कार्यक्रम मैथिली मे कएल जाय।
बतय कतौ नाटक मंचन हो से निश्चितरूपे
मैथिली मे हेबाक चाही। माइक अचना
माइक भाषा मे हो—कोठक भाषामे
दिबहुं नहि। गंगाबलक बदला तारी-
दारुक उपयोग सर्वथा अनुचित—से ध्यान
रखल जाय।

मिथिलाक छी—मैथिल छी

मैथिली बचाउ—हिन्दी हटाउ

मैथिली बाजू, पढ़, लिख। सभकास
मैथिली मे कर।

चन्दाक दर—

एक प्रति	पचास पाइ
सलियाना	पांच टाका
पांच सालक	बीस टाका

वितरक लोकनि सं—

'देसिल बयना'क एकेन्सी लेल सम्पर्क कर—

वितरण व्यवस्थापक,

अग्रणोदय प्रकाशन,

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाव। कम खर्च मे सुन्दर दंग सं
अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क कर

विज्ञापन व्यवस्थापक

अग्रणोदय प्रकाशन,

लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

- अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाव।
- 'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी
रचना के अप्रतिपादक देल जायत।
- मिथिला-मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव।
- 'देसिल बयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।

कह लोचन कविराय

जगन्नाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगहा छान
खइ उमकी भाइय सतत निधिन कएल बयान
निधिन कएल बयान माल ई सरङ्गताली
अपन के खाएत सोचत शुभ अनके खाली
कह लोचन कविराय बजा नट जलदी लगबू नाथ
बेचू बर कसाइक हाथे ई अलख जगन्नाथ

स्मृति रचना

वर्ष-१ अंक-२

नवम्बर, १९८१

मूल्य-पचास पाइ

सम्पादकीय

विद्यापति स्मृति-पर्व

कोनो जातीय विभूतिक स्मृति पर्व मनेबाक पाछा निर्विवाद रूपे एक गोठ महान आ पवित्र उद्देश रहैत आयल अछि। हमरा जनतबे, ओ उद्देश थिक ओइ विभूतिक शक्तित्व आ कृतित्व सं शिक्षा लेनाइ हुनक स्मरण सं जातीय गर्वबोध आ चेतना जाग्रत केनाइ आ जातीय एकता के संयुक्त केनाइ जे कोनो जातिक सर्वांगीण विकासक मूलाधार थिक। कहबाक प्रयोजन नहि जे कहिया कहियो विद्यापति स्मृति पर्वक शुभारंभ जे कोनो मनीषी कएने होएताइ तिनका मोन मे इएह पवित्र भावना सजिहित छल होएतनि।

ओना त मिथिला मे एक सं एक विभूति भ जुकल छथि आ सभक स्मृति पर्व मनओनाइ संभवो नहि बुझना जाइछ। तथापि कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर, कविपति विद्यापति, महाकवि डाक, महाकवि चन्दा भा, महाकवि लालदास, महानबी जोरिक, लोकसेवक महावीर राजा सखेस आ दीनाभद्री आदि विभूतिक स्मृति पर्व मनओनाइ वर्तमान संदर्भ मे बड़ बेसी महत्व रखैत अछि। किन्तु, खेदक विषय जे वर्गवादी दृष्टिकोणक कारणे विद्यापति के छोड़ि आर समस्त विभूति लोकनि के बिहरा देल गेल आ विद्यापति स्मृति पर्व सेहो अपन उद्देश-पूर्ति मे पूर्णरूपेण अवफल प्रमाणित भेल अछि।

आजुक विद्यापति-स्मृति पर्वक जे रूप अछि से मिथिला-मैथिलीक नाम पर कलंक छोड़ि आर किछु नहि थिक। सांस्कृतिक कार्यक्रमक नाम पर हिजराक नाच होइत अछि, कवि सम्मेलनक नाम पर ग्राहीक ग्राही भाट सभ फकदा पाठ करैत अछि आ भद्रश्रिया बैंग सन कंड फारि-फारि भूइतोइ लोक सभ अना के मैथिली सेवक कहि प्रचारित करैत अछि। ओतवे किछ मिथिलाक मित्राकर-बन्धुवंद सभ सेहो एहि मंच पर पूजित होइत अछि। आ एहि मद मे लालो टाका फूकि देल जाइत अछि। एकमात्र पटनाक चेतना समिति एहि मद मे लाल टाकाक लगभग खर्च करैत अछि। न स्पष्ट कही त आइ जे विद्यापति-स्मृति पर्वक विकृत रूप अछि तकर पूर्ण श्रेय एही संस्था के छैक।

कविपति विद्यापति महान विद्रोही-प्रगतिशील कवि छलाह, बीर कवि कलाह, लोक कवि छलाह आ छलाह महान दार्शनिक, राजनीतिवेत्ता, समाज सुधारक। परञ्च हुनक नात अछि जे आइबेरि मात्र श्रृङ्गारिक कवि या कलनोकाक भक्त-कवि कहि हिनका अपमानित कएल जाइत रहल अछि आ ताइ हेतु सभ सं उपयुक्त मंचक रूप मे प्रयोग कएल जाइत रहल अछि हिनके स्मृति पर्वक मंच। मैथिलीक नाम पर जे सता-बिक संस्था बनल अछि ओ सालभरि मनहि मुइल पड़ल रहओ परञ्च एहि अवसर पर ई पर्व मना अपन जीवन्ता के प्रमाणित करवेटा करत।

आइ समय भावि गेल अछि जे एहि घृणित आयोजनक मात्र बहिष्कारेटा नहि खुलि के विरोध हो। एहि मे खर्च होमयवला पाइ सं मैथिली पोथी-पत्रक प्रकाशन हो तथा मैथिलीक सरकारी मान्यता लेल संवर्षक मद मे खर्च हो। इएह विद्यापतिक प्रति सभ सं प्येव आ पवित्र अर्पण अछि होएत।

जय मैथिली

निज भू-भाषा हित मरय
मरय ने, अमर ~~बनेत~~ अछि
तकरे गाथा विश्व ई
गाओत, सदा ~~बनेत~~ अछि

—मैथिली सुक्ति मोर्चा

कलकत्ता

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
छाहि-जारि सुझाह कब हम
बिद्रोही मिथिलाक जवान

बुद्धारी-भत्ता बनाम सत्ताक राजनीति

अन्यान्य प्रान्तीय सरकारे जका बिहार सरकार सेहो बुद्धारी-भत्ता योजना चालू केलक अछि। ई भत्ता बुद्ध लोक के भेटैत छैक जे काज करैक जोकर नहि रहैत अछि तथा गुजर-बसर करैक दोसर द्वारा नहि रहैत छैक। स्वभावतः लोक एहि योजनाक स्वागत केलक। परञ्च प्रश्न उठैत अछि कि सरिपहु ई भत्ता अवसर-अवहाय बुद्ध-पुरनिवा के भेटैत छैक? भत्ता-दानक पाछा कोन भावना काज क रहल अछि—लोक सेवाक आ ने स्वजन पोषणक? कि एतौ तने घृणित राजनीतिक गुटबन्दो काज क रहल अछि?

देसिक बयनाक घनस्यामपुर संवाद प्रतिनिधिक अनुसार एहि भत्ताक नाम पर खुलि के स्वजन पोषण आ राजनीतिक दल-बाबी चलि रहल अछि तथा अगिला चुनावक आधार क्षेत्र तैयार केल जा रहल अछि। ई भत्ता ओकरे भेटैत छैक जे मुखिया सरपंचक समर्थित हो, सत्ताधारी दलक समर्थक हो। भनहि ओकर उमेर तीस-पैंतिसे किछक ने होइक आ लगानी भीरानी किछक ने करैत हो। किछु ओहनो व्यक्ति के भेटैत छैक जकरा सं अगिला चुनाव मे नीक सहयोगक उमेद सरकार के छैक। दोसर दिस जे सत्ते अवहाय अछि तकरा संग पूर्ण नञ्कमेठ फेड जा रहल छैक। डाली-हारी चढ़ेबाक पश्चात किछु लोकक मनोकामना त पूरा भ जाइत छैक परञ्च जे दोसरदलक समर्थक रूप मे चिन्हार अछि अथवा डाली-हारी चढ़ेना मे असमर्थ अछि—तकरा लेल कोनो द्वारा नहि छैक। बी०डी०ओ० सं एत० डी०ओ० तक दौड़-वड़ा केलाक बादो कुछ आवश्यकता छोड़ि आर किछु प्राप्त नहि होइत छैक। एहि अज्ञात-अनटोलक विरुद्ध जं कतो केओ बाजल त ओकरा पाछा सरकारक बर्दीबारी सं बिना बर्दी बला सिपाही चरि लागि पड़ेत छैक आ सुस्वाथर बेसा देत छैक।

एहन एकटा घटना अछि मनीगाछी ब्लौकक पूर्वी क्षेत्रक। कुर्वा हाइस्कूल मे विशाल जनसमावेश छलक। ब्लौकक सभ कर्मचारी, थाना-प्रभारी आ क्षेत्रक एम० एल० ए० प्रो० श्री नागेन्द्र झा उपस्थित छलाह। टाका बाँटल जा रहल छल। महावीर पासमान पंक्ति मे टाढ़ छलाह। नाम स्वीकृत भेल छलनि ते पाइ भेटबाक पूर्ण आशा नेने। परञ्च बलन दाता लग पहुँचलाह त आकाश-पतनक स्थिति। तीन पीढ़ी सं दोसरक जमीन मे बसल महावीर पासमान मे भाव बोनि करैक बुझा नहि छनि। हुनक अपराध छलनि जे

ओ सी०पी० आइ के 'वोट' देने छलथिन। महावीर पासमान बइमान नहि छथि। जमीन्दार बलन हुनका उधार्य चाहलकनि त सी०पी० आइ० मदति देने छलनि आ अखनो विपत्तिक समय मदति करैत छनि। ते सी०पी० आ० इ० के वोट देनाइ हुनका उचित बुझैत नै।

महावीर पासमान टाका नहि भेटला सं हताश नहि भेलाह। ओ बी० डी० ओ० लग अरन फरियाद पहुँचलनि। परञ्च ताइ सं किछु नहि भेलनि। स्थानीय युवके सभ एहि अनैतिक विरोध केलक त सरकारी अफसरक कोपभाजन बनि गेल। अन्ततः पूर्ण समर्थन अभाव मे ओहो सभ खुली साधि लेलक। बी० डी० आ साहेब के एतवे सं संतोष नहि भेलनि त दरोगा पुलिसक संग एकरा लोकनिक घरपर आक्रमण केलनि। सरकारी अधिकारी-लोकनिक आंगन मे प्रवेश अन्ततः लोक के अनर्हतात लगलक आ कर्तव्य बोध जगलक। आरंभ भेल यापर-मुचका सं हिनका लोकनिक स्वागत सं उर्वरि नहि सकलाह। स्थितिक गंभीरता देखि सशरी एम० एल० ए० साहेब प्रकट भेलाह आ अपन दाव सं सरकारी अफसर लोकनि के भरोसा मे सकल भेलाह। संवाद पठेबाक समय बरि दरोगा साहेब अपन क्षेत्र सं फरार छथि। ओना ओहो वेसल नहि छथि आ बश्कटा फरबरी केश दर्ज क के युवक लोकनिक नामे वारंट जारी करा देने छथिन। एहिना छथि केन्द्र पासमान। टाकाक बदला हुनक घर उजारि देबक पड़यंत्र नीक जकां रचल जा रहल अछि।

बी० डी० ओ० एत० डी० ओ० सं एम० एल० ए० आ मंत्री घरि गुप्त सम-भौता भेल अछि ते शिक्षात जते होइछ तते चपा जाइछ। दोसर एहना स्थिति मे शिक्षात वा विरोध करवे के करत? येह थिक बुद्धारी-भत्ताक वास्तविक स्थिति।

—जयदेव लाभ

नव पोथी

सुविख्यात लेखक डा० ब्रजकिशोर वर्मा
मणिपद्मक सामाजिक उपन्यास
अर्धनारीश्वर
कोनू आ पढ़

संस्कृतक सारापर सचाक बबूर

संस्कृत भाषा मात्र मिथिला में नहीं, समस्त भारतवर्ष में देवभाषाक नाम से ख्यात अइ आ एकर लिपि, जे वर्तमान में मैथिली, हिन्दी, नेपाली आदि लेखन में प्रयोग होइए—देवाक्षरक नाम से। ओना त देवता-एक अस्तित्व संदिग्ध अइ तखन हुनका लोकनि द्वारा कुनू भाषाक प्रयोगक प्रश्न उठओनाइ अनर्गल, परञ्च एतबाधरि सत्य जे हिन्दूक समस्त धर्म ग्रंथ एही भाषा में छै। ओतवे किछक, एकर जे विशाल साहित्य भंडार छै आ दीर्घ परम्परा छै से एखनो कुनू भाषाक हेतु इर्ष्याक विषय भ सकैछ। किन्तु, सभ होइतहु ई भाषा मृतावस्था केँ प्राप्त भेल आ तकर एकमात्र कारण छै जे ई कहियो लोक भाषा नहि बनि सकल।

हमहर बरल दिन सँ मिथिलांचलक संगहि समस्त बिहार में संस्कृत प्रेमक बाढ़ि सन आबि गेल अ। भरिखे कुनू गाम छुटल हो जाइतअ संस्कृत विद्यालयक स्थापना नहि भेल हो से भनहि कागतेपर किछक ने भेल हो। ई भिल कथा जे ओइ गामक लोक संख्या हजारो सँ थोर छै आ ताइठाम पहिनिह सँ अंग्रेजी अपर बा मिडिल स्कूल विद्यमान छै। इहठाम ई लिखि देब अनुचित नहि होइत जे अंग्रेजी स्कूल में सेहो संस्कृत पढ़ेबाक पूर्ण व्यवस्था छै, भनहि से ऐच्छिक किछक ने होइक। एहने एक गोठ गाम अइ मधुबनी जिलाक करमनी। इहठाम प्राचीन संस्कृत पाठशाळा अतिरिक्त अंग्रेजीक मिडिल स्कूल पहिनिह सँ रहलक बादो दू गोठ नव पाठशाळा खुल्लल अ। एगो संस्कृत प्राथमिक सह माध्यमिक विद्यालय आ दोसर संस्कृत प्राथमिक सह माध्यमिक बालिका विद्यालय। एहि गाम सँ आब कोस उत्तर अवस्थित पाचीमोहन गाम में सेहो दू गोठ प्राथमिक-सह-माध्यमिक संस्कृत विद्यालयक स्थापना भ चुकल अ। एतौ पहिने सँ एगो अपर प्राइमरी स्कूल विद्यमान छै आ घरक अभाव में मिडिल स्कूल नहि बनि पओ-छैक खन कि विद्यार्थी बड़ बेसी छै। जे स्कूल छै से प्राचीन गुरुकुल जकाँ गाछी में चढि रहल छै आ मेघ देखिते गुबबी लोकनि छुट्टीक घंटी डुन-डुना देत छथिन। अवोध चटिया सभ खुशी सँ कुदेल फनेत घर चउ जाइए। घरक चिन्ता ने गामक, लोक केँ छैक ने सरकार के। आ लगभग एहने स्थिति मिथिलाक सभ गामक छै, अपवाद केँ छोड़ि।

बिहार सन खिचरि प्रदेश में आ खास केँ मिथिला में, जाइठाम जातीय चेतना नामक वस्तु नहि छैक अपन भाषा-संस्कृति सँ लोक पूर्ण उदासीन अइ आ अपन अधिकार प्राप्तिक लड़ाई में नुसकताक परिचय द चुकल अ ताइठाम हजार संस्कृत-प्रेमक बाढ़ि देखि ककरो अनुता अगि

सकैत छैक। की सरिपहुँ ई संस्कृत प्रेम थिके आ ने आन बिछु ?

एहि प्रश्नक सटीक उत्तर पेना छैक हमरा लोकनि केँ कनेक पाछा जाय पड़त। १० जून १९८० केँ बिहारक वर्तमान मंत्री मण्डल अपन पहिल बेसार में उर्दू केँ बिहारक दोसर राजभाषा बनेबाक निर्णय लेलक। पहिने ई कहि देब आवश्यक जे उर्दू सेहो बिहारेक किछक समस्त भारत में कुनू मुसलमानक मातृभाषा नहि छैक। भाषा धर्मक नहि क्षेत्रक होइत छै आ स्वभावतः जे जाइ क्षेत्र में स्थायी भावे निवास करैछ ताही क्षेत्रक भाषा ओकर मातृभाषा होइत छै। परञ्च इहो सत्य छैक। जे संस्कृत जेना हिन्दूक लेल तहिना उर्दू मुसलमानक लेल आ खास केँ तथाकथित हिन्दी प्रदेशक मुसलमानक लेल धर्मक भाषा थिके। मुसलमानक समस्त धर्म ग्रंथ एही भाषा में छै। ई भिल कथा जे संस्कृतक पंडित वर्ग जकाँ मुस्लिम-सौलबी केँ छोड़ि सर्वसाधारण के ई भाषा अबितो ने छै। किन्तु धर्मक प्रति कने बेसी कट्टर हेबाक कारणे लोक केँ एकरा प्रति मोह छैक आ बिनु जनने बुझने एकर समर्थक बनि जाइए। बिहार सरकार एही कट्टरता सँ काम उठओलक।

धर्म भनहि जे कुनू किछक ने हो एकर उत्तराधिक सचाक कवचक रूप में भेल छैक। ई मानव जाति केँ विभिन्न टुकड़ी में बाँटि ओकरा अलग बना देने अइ जाइ त ओ एकदम भय शोषणक विरोध नहि करैक। धर्म सर्वसाधारणक विरुद्ध महान पड़यंत्र थिक जे सत्ता द्वारा अबाध शोषणक पथ प्रस्तुत करैए। आ सत्ता भनहि राजतंत्र वा तथाकथित प्रजातंत्र जे किछक ने हो ओकर चरित्र अइ छैक। उर्दूक मान्यता-धर्मक आधार पर जनताक विरुद्ध एक घृणित पड़यंत्र छोड़ि आर किछु नहि थिक। जन कंठरोध आ भयभीती में कइ बन्नेबाक एहि पड़यंत्र में बिहार सरकार अपन कुशल नायक डा० जगन्नाथ मिश्रक नेतृत्व में किछु समयक लेल सफल अवलसे भेलाह। एहि नीति सँ एतेपरि अवलसे भेले जे आब मिथिलाक कुनू मुसलमान अपन मातृभाषा मैथिली नहि पढ़त ओकरा बदला में उर्दू पढ़त। मैथिली पढ़ने ओकरा नोकरीक आशा नहि छैक जे उर्दू सँ छैक। ई दिगंर वात जे उर्दूओ नोकरी नहि दिया सकैत छैक—पहिल खेप में भनहि पाँच-दस हजार केँ बीविका भेटि गेलैक। परञ्च प्रत्यक्षक सामने लोक प्रमाण नहि तकेत अइ।

आइ भाषा विचारक बाहेतेय नहि बीविकोपार्जनक साधनो अइ। अंग्रेजी पढ़ल लोक एही दुआरे आरंभ केलक आ एखनो पढ़ैए जे एकरा द्वारा बीविका भेटव सहज छैक। मैथिलीक सरकारी मान्यताक मांगक पाछा इहए कारण छैक। दोसर मातृभाषाक

गाम सँ दूर : मिथिलाक सजदूर-२

कलकत्ताक ठेलावला

महानगर कलकत्ता सन विशाल विकसित आ व्यस्त शहर में बाट बाट जाम रहनाइ साधारण बात छैक ओ पथयात्री केँ जेना रैहल-खैहल भ गेल छैक। ट्राम-बस, ट्रक टेम्पू टेक्सी ग्राइवेट कारक बीच रिकवा ठेलाक अस्तित्व अनायासे ककरो ध्यान अपना दित आकर्षित क केना में पूर्ण रूपेण सकल होइए। ई जेना कहैत हो जे मनुख सबोंपरि थिक मशीन ओकरापर विजय नहि पाबि सकैछ, ओकर स्थान नहि उ सकैछ। पेश सँ पेश कलकत्ताला भनहि अते किछक ने पसरि बाओ रह उद्योगक अस्तित्व ओ

माध्यमे जातीय चेतनाक विकास तथा जातीय एकता सशक्त होइत छैक जे देश-जातिक सर्वाङ्गिक विकासक मूलाधार थिक। इहए कारण छैक जे १० जूनक पश्चात् मैथिली आन्दोलन एकटा नव मोड़ लेलक आ पहिल खेप मैथिल सन्तान अपन शोणित सँ पटनाक राजपथ केँ जुबा देलक। ई आन्दोलन नकारात्मक नहि सकारात्मक छल, ककरा विरोध नहि अपन न्यायसंगत अधिकार प्राप्तिक लक्ष्य आ तँ एकर आगि एखनो प्रवृत्ति अइ जे समय पाबि कल-नहुँ दावानलक जन्म द सकैए। ओना मिथिलाक जयचन्द-मिर्जापुर एकरापर अवलसे संकीर्णताक सेदुल ओनाक प्रयास केलक आ असफल भेलापर लोक केँ दिगभ्रमित करा छैल संस्कृत विद्या-विकासक पड़यंत्र रचलक।

सरकारक एहि घोषणाक पाछा दू गोठ उद्येश छैक। पहिल त मैथिली आन्दोलन केँ दिगभ्रमित केनाइ कारण महाराबी मान्यता एखनो लोकक मन सँ नहि हटले-ए ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ केँ छोड़ि आन वर्ग रखनो अपना के मैथिल कहबा में संकोच बोध करैए आ अपन मातृभाषा के मातृभाषाक रूप में स्वीकार करबा सँ हिचकिचाइए। लोकदलक उदय एहि विमर्श केँ बढ़ेबा में आगि में पीक काज केलक। फलतः मैथिली आन्दोलन में बहुसंख्यक ओही वर्गक लोक छल जे संस्कृतक पोषक रहल-ए आ संस्कृतक द्वारा ई सुविधा भोगी वर्ग अपन स्वार्थपूर्ति होइत देखि आन्दोलन सँ विमुख भ जायत। दोसर एहि वर्गक सरकारी चमचा सभ केँ मास्टर नामक 'कौरा' भेटि जेतैक आ ओ सदा सरकारक पाछा नाउड़ि डोलेत रहत। मुस्लिम तमुंदाय में जे सरकारी चमचा छल तकरा उर्दूक माध्यमे 'गार' द्वारा देल गेलैक। एहि तहसे शासक दलक पाया मजबूत बनि जेबाक पूर्ण संभावना छैक। ओना हेतैक की से त भविष्ये कहत परञ्च एतेपरि निःसंकोच कहल जा सकैए जे अपन समस्त कृतित्वक अछेतो मिथिल-मैथिलीक अवो-जातिक छेद पूर्ण जिम्मेवार इहए ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थ रहल-ए।

नहि भेटा सकैछ। संविधानक पोथा बते मोट किछक ने हो विदेशी खातानुवृत्ति शाही में बेसल लोक आ ठेला विचैत लोक समान नहि भ सकैए।

ठेलागाड़ी माने ओ गाड़ी जकड़ा ठेल केँ उ गेल बाय। ई बैलगाड़ीक विकृतरूप थिक बाइ में जुआ व्ययवा वाला नहि होइत छैक। एकर दुरा वेल्गाड़ी जकाँ सठल नहि रहैए अछितु दुनू ब्रॉन्क नीत्र हाथ डेढ़क बगल खाडी रहैत छैक बकर मुँह मोट रवी सँ मिलाओल रहैछ। एहि में (शेषांश पृष्ठ ३ पर)

से जे हो परञ्च सरकारी घोषणाक पश्चात आन्दागाहीसँ संस्कृत विद्यालय खुल्ल लागल। ओना त एकर अवधि बहुत पहिने समाप्त भ गेलैक मुदा स्कूल एखनो खुलि रहल-ए। दू-तीन बरल पहिने सँ खाता-पत्र तैयार कइल जाइछ आ पटना बा केँ 'बैक डेट' में लोक दरखास्त द अवेष्ट। 'इन्स्पेक्शन चार्ज' सरकार मात्र तीन से टाका रखने छैक आ सेहो से-पत्राव उपरी देसे 'बैक डेट' में बसा होइत छैक। आर किछ बेसी देने 'इन्स्पेक्शन' केनिहारक चपन करबाक अधिकारो लोक केँ भेटि जाइत छैक। परवी लेल अपन क्षेत्रक कमिटी दम-दल-दम वा पराजित नेता छथि। शिका अगिला चुनाव में 'वोट'क गारंटी चाही।

माध्यमिक विद्यालय छेद ओकरा नाने परती-परत जे कुनू तरहक आठ कट्टा जमीन रबीष्टी हेलाक चाही। खाता में छात्रक नामक अभाव नहिह जे होइत छैक। असली स्थिति देखवे के करैछ ? सदासी बीदावाद ! वोट बीदावाद !! गामक बते जे भवंड छोड़ा छल आ खास केँ 'हिन्दुरा-कोरि' बला, जे मैथिल त नहि पास क सकल मुदा कुनू तरहें माध्यमिकक प्रमाण पत्र उतर क लेने अइ—एहि स्कूल में शिक्षक बनि गेल। ई भिल बात भेले जे ओकर, संस्कृतक हिजय तक नहि करय अवैत छैक। एगो शिक्षक महोदय विगत बरलक, खाता खाता तैयार करैत छलाह जाइ में हमरा सोफे में लिखलनि 'ग्रीष्मा अवकाश'। एहि तरहें संस्कृतक केहन विकास होइत से त भूभले अइ तखन मैथिलीक अहित अवलसे होइत। हमरा लोकनि संस्कृत-पाठशाळा में पढ़ने छी मैथिलीक माध्यमे। संस्कृत पाठशाळा में व्याकरण, श्योतिष वा न्याय सभ मैथिलीक माध्यम सँ पढ़ाओल जाइत छल। आजुक एहि स्कूलक भाषा हिन्दी छैक संस्कृत एक विषय अनिवार्य, अवलसे रहैत परञ्च आन विषय सभ अंग्रेजी स्कूले सन रहत आ तँ जिभाषा फार्मुलाक अन्तर्गत छात्र मैथिली नहि पढ़बा केँ बाध करल जाइत। एक शब्द में कही त संस्कृतक सारापर सचाक बबूरक गाछ रोपबाक ई पड़यंत्र थिक। —अमरदूत

मैथिली आन्दोलन

मैथिलक आन्दोलन बनब' पड़व

भारत आ नेपालक समृद्धिवाली भाषा परिवारक सदस्य होइतो मैथिली के अपन वाचन अधिकार नहि भेटलेक अछि। चौदहम शताब्दी सं आठम शताब्दी धरि ल' गेलहु' मैथिली सम्मानित भाषा सूची मे स्थान नहिपावि सकल अछि। भारत नेपाल मिला तीन करोड़क दावा वजनहारक होइतो आइ शासकीय निकाय सं उपेक्षित पड़ल अछि आखिर की कारण छै एहि अवहेलनाक ?

एकर पृष्ठमे खोजबले मैथिली भाषा क' संग कश्मलगेर वर्ग वादी बलात्कारी सभ क' कलई खोल पड़ल। मैथिली के पौती पेटारी किंवा पोथी-पतराक परिधिमे समेटिक' रखनिहार पुरना संस्कृताइ पंडित लोकनि एकरा जन जीवन सं काटिदेख लीन्ह। ब्राह्मणेतर वर्गक लोक एकरा अपन भाषा मानवा पर तैयार नहि भेलाह। हुनक मानसिकता मे अटकल पचल जे सन्देह रहनिह से क्रमिक व्यवहार सं पुष्ट होइत गेलन्हि आ ओ लोकनि अपनाकेँ मैथिली भाषासँ फराक राखि लेलन्हि। आ जेकि ओ वर्गजे दावा कयनिहार वर्गक शतपति-शत बेसी छल, एहि दीशि रुचि नहि देखौ लक एकर बिराट भाषाभाषीक सूची होइतो एकरा अरु वर्गक भाषा हयबाक सरकारी ठप्पाक मारि भोग पड़लैक मैथिली केँ।

भारतेमे नहि, नेपालो मे सरकारी स्तर किंवा उच्च सरकारी ओहदाक लोक सभ सचरि ई० धरि इएह धारणा बनमोने छलाह जे मैथिली एक वर्गक मात्र भाषा थीक। मुदा तकर परिवर्तन एत भ'गेलेक अछि एत बहुभाषीमे लोक एहिदोष सं मुक्त अछि।

भारतीय क्षेत्रमे हमदेखैत छी मैथिल वर्गमे बिराट असमानता। भाषा ल' क' एखनो लोक मैथिली अहं भाषा अछि से कहबाले आन्दोलन करैत अछि। सभा करैत अछि-पत्र पत्रिकामे विचार छपैत अछि। ई दुर्भाग्य नहि सं आर की मेल। पटना दरभंगा सहरा, खजौली, जयनगर, रदिका, कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई-सभठाम मैथिली भाषाक मान्यताले संगठन आ कार्यक्रम संचालि छथि। बरोबरि कार्य क्रम सभ घोषित रहल अछि। लोक सभ अमल सेहो करैत रहलाह अछि। मुदा, हमरा बनिते हिनका सभकेँ बाहिरुपमे सहि योग भेटनाक चाही ताहिरुपमे कोनो कोन सं भेटैत नहि होयतनि से हमरा अहि विस्वास अछि। एकरो मूल मे उएह भाषा सम्बन्धी असमर्थता प्रमुख कारण मानल जा सकैछ।

मैथिली पत्र-पत्रिका निकलैत अछि। एखन तं आवाहन पत्रिका आ पत्र हमरा आगामे राखल अछि। बहिना खुशी होइत अछि ई जागरणक दौर देखिक। बहिना कत्ती दखन भान सेहो अछि ई दीप जीवी

नहि रहि सकत। एहि निराशाक की कारण मैथिली भाषाक प्रति समवेत आकर्षणक अभाव ?

मैथिलीक पुस्तक सभ निकलैत अछि। मैथिली अकादमी सन-सन मात्र सरकारी संस्था निकालि पावि रहल अछि। सेहो ओकर तीनगोट लक्ष्यमे एकगोट मात्र पुरा भ' रहल छैक। मुदा एहि सं अतिरिक्त मैथिली पोथी प्रकाशनक की हलित छैक। एक तं प्रकाशकक अभाव छै नहि सकत। जं छथियोगेल तं कीनत नहि। एकर मूल मे सेहो सम्पूर्ण मैथिल केँ भाषा साहित्यप्रति लगावक अभाव मानल जयनाक चाही।

आखिर मैथिली सम्बन्धी कोनो विकास क' काच मे सम्पूर्ण मैथिलक असहयोग कियार महत्वपूर्ण बाधा अछि। अपन भाषा आ साहित्यक प्रति विराग कयौ छैक ? तं हम कहब कहियो जनाओल अन्हरजाली मे फंसल लोक अन्हरगेल अछि। भोतिआ गेल अछि।

तएँ मैथिली आन्दोलनकेँ दू दिशामे मोरू। एकटा गाम दीशि-दोसर अधिकार दीशि। एकटा महत्वपूर्ण दिशा मेल, गाम-गाम, घर-घरमे पेरू। मैथिली भाषा अहाँक भाषा थीक से ओकर चिनवारमे लिखाउ। ओकरा बालबच्चा, से समाज दे-दीआद सभक दीमागमे भरू। ओकरा महत्वदीओ। ओकर पढ़ल लिखल समाज केँ मंचदीओक, हाथमे भंडा दीओक, नेतृत्व दीओक। अहमकेँ जगवियौ ओहिबर्गक। ओ वर्ग जागत मैथिल जागत आ जलन मैथिल जागत सम्पूर्ण मैथिली जागत। मैथिली आन्दोलनकेँ मैथिलक आन्दोलन बनाउ।

—रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

कलकत्ता ठेकावला

ओतबा बगइ रहैत छैक जे एक आदमी ओह मे पेशि केँ टाढ़ भ सकै। बड़दक स्थान मे इएह आदमी गाड़ी धीचेर। नाभिक नीचा रस्ती पर जोर देत आ हाथ सं दुनू बांस पकड़ने। पाछा सं एक आदमी ठेलैत रहैत छैक। भरिगर बोझ भेने खगता अनुसार एक अथवा दू आदमी दुनू कात पहियाक पाछा सं जोर लगावैत छैक। कोनो कोनो ठेकामे जुआम स्थान पर हाथ दु-एक बांस रहैत छैक जकरा दुनू दिस दू आदमी पकड़ि केँ धीचेर।

कलकत्ता मे लगभग १० हजार ठेका छैक जकर बेसी भाग बड़ा बाजार मे छैक। बड़ाबाजार व्यापारक केन्द्र हेबाक कारणे काज भेटब सइज होइ छैक। आन अंचलक ठेकावला केँ कहियो काज भेटैत छैक कहियो नहि भेटैत छैक। जाइ बाट मे टूक टेम्पू नहि जा सकैछ ठेका ताहू बाटे चलि जाइछ। दोसर सामानक मात्रा कम रहने टूक टेम्पू क' भाड़ा मे लाभ नहि भ सकैत छैक-एव-आम्रतः ठेकाक प्रयोजन।

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

कविता

बहिनदाइक नाम एगो चिट्ठी

बहिन दाइ !

अहाँक चिट्ठी भेटल छल

मुदा सतारा देवा मे भेल बड़ बिलम्ब
फूसि भिष कही जे/छलहु' बड़ व्यस्त
सरिपहु' की लिखी/वा किएक लिखी
तकरे नजि क पओने छलहु' निर्णय
तैं बहिन दाइ !

उतारा देवा मे भेल बिलम्ब।

बहिन दाइ !

हम बनेत छी जे अहाँ एहूबेर

बनओने इएव शामा-चकेबा

तकने इएव हमर बाट

लगापर आगि बिरदावन मे / आ नजि पावि हमरा

भेल इएव उदास / बहल इएत आखि सं दहो-बहो नोर।

किन्तु बहिन दाइ !

अहाँ मानी वा नजि मानी

थिक धरि ई सत्य / जे

कुन दावानल केँ नजि मिन्हाओल जा—सकैछ

सोवना लोटा सं/आ,

जेना अहाँ लिखने छी—

ठीके हम बड़ बदलि गेलौहें

हम बुझैत छी / जे बिरदावन / ओ बिरदावन नजि रहि गेल-ए

आइ / एकटा नजि

इबारक हजार सुगिला जनमि गेल-ए / आ

इएह बिरदावन थिक ओकरा सभक स्थायी आवास

एकर पुरान गाछ सभक बोधरि मे

एक सं एक अन्नोष विषयर करेए निवास

आइ

इहिठामक वसातो-अइ विषयुक्त / साँसो लेबाक अनुपयुक्त

तैं

हमरा विचारें / एकरा धरिह गेनाइ थिक नीक

मिन्हाक प्रयास सर्वथा अनुचित

शक्तिक अपव्यय / जे करबाक थिक संचय

आगामी कालिक निमित्त

जखन कि हमरा लोकनि लगाएब

निश्चिते लगाएब / एगो नव बिरदावन

पटाएब / दुनू डबरीक पानि सं नजि

अपन धाम सं / आ फुलाएब

रंग-विरंगक फूल / अपन आशाक अनुकूल

अपन कल्पना केँ देब वास्तव रूप।

बहिन दाइ !

हम मानैत छी / आ अहूँ मानब

जे आइ / अपनने गाम मे

हम सभ छी अनठिया-अनचिन्हार

जकर नजि छइ कुनू पता-ठेकाना—

सरिपहु' कतेक अवहय थिक ई पीड़ा

मुदा/ताहू छेल

कयमपि उचित नजि कानब / बरन्

चीन्हब अपन शक्ति आ

बाहरोक शब्द केँ अकानब—आ

एगो प्रण ठानब

त कालि—आगामी कालि

हमरो एगो परिचय रहत

बिरदावनक हम—हमर बिरदावन।

—रामलोचन ठाकुर

चिट्ठी पुरजी

देसिल बयनाक प्रवेशांक भेटल। कतेक नीक लागत से वर्णन नहि कए सकइत छी। बास्तब मे पत्रिकाक भाषा, विषय आओर सफादन बेस सुन्दर आर उपयोगी भेल अछि। एहि प्रयास हेतु अपना दिसि सं आर "मैथिली समाचार" परिवार दिसि सं शतशः अभिनन्दन आओर शुभकामना स्वीकार करू।

—डा० रुद्रकान्त मिश्र, इलाहाबाद

देसिल बयना पहुँचल। मन प्रफुल्लित भए गेल। हम हार्दिक शुभकामना व्यक्त करैत छी ओ पत्रिका पढ़ए फुलए से कामना करैत छी।

'देसिल बयना' जन जीवनक प्रतीक बनए से हमर इच्छा अछि आ तखने विद्यापतिक भाषाक समुचित समादर होएत।

'बिनु भाषाक लोक अछि

बानू मृतक समान

चरैत घास पीवैत पानि

मात्र पशुक समान'

हमरा आशा अछि ओ पूर्ण विश्वास करैत छी जे अपने लोकन जाहिरूप सं मैथिली माक सेवा करैत छी तकर मूल्य भावी पीढ़ी पेवे करत।

—डा० मदन मिश्र, भद्रपुरा

जहिना देसिल बयना सब जन मिट्टा तहिना ई पत्रिका सब मैथिल पुत्र के मीड लगेत रहैत आ ई अनवरत प्रकाशित होयत रहए इहो हमर विचार अछि। हमर सब शुभकामना आ सहयोग बनल रहत।

—सूर्य नारायण मंडल, नई दिल्ली

देसिल बयना लेल बहुत रास शुभकामना। भरिसक सहयोग देवा मे पाछू नहि हटब, विश्वास राखी। अगिला अंक सं न्यूज आपूर्ति करब।

अपने लोकनि मैथिली लेल ज्ञान-प्राण लगा देने छी। हमरो छात्र लोकनिक किछु कर्तव्य भय जाइत अछि जकर निर्वाह करब, से आशा अछि।

—वीरेन्द्र झा, दड़िभंगा

देसिल बयनाक पहिल अंक देखलौं। जौं ई 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' के प्रमुख मासिक पत्र थिक तखन एकरा एतेक सामान्य ढंग सं छपने मुक्ति मोर्चाक अवस्था हैत।

हमर निवेदन जे एकर प्रकाशन स्तरीय ढंग सं केल जाए। मुक्ति मोर्चा एखनवरि की सम कयलक आ भविष्य मे की सम करबाक योजना बना रहल अछि से ईमानदारी सं छापि देल जाए। ओहि अंकक एक प्रति श्री धर्मेन्द्र कुमार पता सं पठा देल जाए। 'मिहिर' मे एक बेर ओ मुक्ति मोर्चाक प्रति किछु अपमानजनक शब्द-सभक प्रयोग कएने छलाह, जकर जबाब हम 'मिहिर' मे पठा देने छलौं।

—नवीन चौधरी, हबड़ा

मिथिला एक्सप्रेसक सामने धरना

हमरा लोकनिक उत्तर कलकत्ता प्रतिनिधि जनओलनिहें जे गत २५ अक्टूबर के विशाल संख्या मे मैथिल युवक लोकनि हावड़ा टीशन पर जमा भेलाह आ पश्चात् रेल पटरी पर धरना दय मिथिला एक्सप्रेस के पचास मिनट धरि अटकाओने रहलाह। बाद मे अधिकारीक आश्वासन भेटलाक बाद पटरी मुक्त भेल आ स्वभावतः गाड़ी घंटाभरि विलम्ब सं प्रस्थान केलक। युवक लोकनिक मांग छलनि जे उत्तर बिहारक लेल मात्र दू गोटा गाड़ी देवाक कारणे बड़ दिकदारी होइत छैक तें गाड़ी बढ़ाओल जाय। पूर्व रेलवेक मैनेजर महोदय अपन आश्वासन पूरा करवा लेल छठि पावनधरि हावड़ा बरौनीक एगो स्पेशल गाड़ी देवाक घोषणा तकर परते क चुकल छथि। ओना त उचित छलैक जे गाड़ी समस्तीपुर तक जाइत आ रोज जाइत, परञ्च—

मिथिला आ नार्थ बिहार एक्सप्रेस— इहो दू गोटा गाड़ी हावड़ा सं पहिने समस्तीपुर जाइत छल आ आब गोरखपुर तक जाइत। गोरखपुर चल गेने एतेवरि अवस्ते भेलेह जे भीड़ बढ़ि गेलेह आ

देसिल बयना आलुक आन्दोलनात्मक कार्यक्रम मे जाइ सं मैथिली ओ मिथिला के नव स्फूर्ति आ मृतप्राय आत्मा मे संजीवनीक संचार करय एहि लेल हमर हार्दिक कामना अछि। पत्र-पत्रिकाक पृष्ठ पर कोनो भाषाक साँव चलेत अछि। देसिल बयनाक प्रथम अंक देखि कतेको सन्तोष अछि। मुदा एकर प्रभाविता पर सन्देह बुझना जाइत। कारण एकरा संगे एकटा पृष्ठक अभिवृद्धि आवश्यक। देसिल बयना आने मेथ मन्त्र स्वर मे सुतक-सिद्धरल, हूबले-पिछड़ल, भांग-ताड़ी-गाँवा मे हुबकी लेल मृतप्राय मैथिल जनमानस के उद्वेलित करय एहि लेल हमर आह्वान अछि। हमरा जे सहयोग कहब से देब।

—वेद्यनाथ बिमल, गलभा

□ प्रिय पत्रलेखक बन्धुगण !

जय मैथिली।

सुभाष आ सहयोगक आश्वासन लेल आभारी छी। एक खेप फेर कहि दी जे 'देसिल बयना' आन्दोलनक पत्र थिक, फेशनक नहि। एकर उद्देश आन्दोलनात्मक चेतना जाग्रत केनाइ थिक—टेबुल शोभा बढ़ाओनाइ नहि। एकरा ताही दृष्टिसे देखल जाय। जं एहि मे कोनो खासि बुझना जाय तं निम्न अंकोच लिखी, ताइ तरहक रचना पठावी—हमरा लोकनि तकर स्वागतेटा नहि करब—आमाही सेहो रहब। पत्रिका अपन उद्देश मे सफलभूत तखन होइत जखन कि एकर प्रवेश गाम-गाम मे होइक—ई जन-जग। लग पहुँच सकए। एहि कार्य मे अपने लोकनिक सहयोगक अपेक्षा अछि एतासे प्राप्त होइत—ताही विश्वासक संग—

—संपादक

संगहि घुरतीकाल लोक के मुम्पफरपुर वा समस्तीपुर मे चढ़ि पओनाइ असंभव भ गेलेह। एक त गेट पहिने सं बन्द रहै छइ आ जं कोनहुना एक-आध टा खुबबो केलेह त मारि-पीट बभिएटा जाइत छैक लोक दू दू, तीन-तीन दिन तक लाउटकारम पर बेसल रहैछ—खुलल-पियावल। आफिस फेक्टरी मे काब केनिहार के नागा भेला सं से फिरीशानी होइत छैक तकर अनुमान त भुक्तभोगीह क सकैह।

लामग बीस बर्ल पहिने सं इहो दू गोटा गाड़ी छैक जाइपर सम्पूर्ण उत्तर बिहार नेपाल आ उत्तर प्रदेशक एक पेस भागक लोक के निर्भर करय पड़ैत छैक। तहिना ई दिकदारी सेहो नव नहि छैक। ओना लोक संख्या एह बीस बर्ल मे कते बढ़लैक तकर अनुमान सहजे कएल जा सकैछ। तें खगता त ई छलैक जे गोरखपुर तक जं लाइन गेबे कएल त ताइ छेल आर कम स कम दू गोटा गाड़ी देल जाइतैक आ ई दुनू गाड़ी समस्तीपुर तक रहैत। दड़िभंगा तक बढी लाइन भेने ओतय तक जाइत। परञ्च उचित सं सरकार के की मतलब ? केदार बाबू गोरखपुर क्षेत्र के गाड़ी देलथिन सेहो की थोड़ ? मिथिलांचलक लोक मुहल अइ तें सीमांत क्षेत्र होइतहु जननगर के कहय दड़िभंगाक बढी लाइन सेहो गताल-खाता मे पड़ैत छैक। एहि निमित्त एक नहि अनेक बेर रेल मंत्रालय के लिखल गेलह, परञ्च जवाबो नदार्द। कम स कम जनता सरकार मे ई भद्रता अवस्ते छलैक जे जनताक भाव अभियोग सुनेत छल—गोत्रोत्तर देत छलैक। कमिष सरकार त गोर माउग गोरवे आन्दर। तें आवश्यकता छैक जोरगर आन्दोलनक। हिरवा खुबि लेने स्थायी समाधानक अपेक्षा नहि कएल जा सकैछ। आशा अइ जे युवकगण अगिला दिन लेल तैयार रहता। देसिल बयनाक शुभ कामना।

बल्लभचक्राव ठेकावाला

ठेकावालाक मेहनति सेहो रिकसावलाक अनुरूप छैक। नद्दा-बाबा अंचल मे एक ठेकाक दैनिक आमदनी ५० सं १५० तक होइत छैक जाइ मे तीन स चारि आदमी तक रहैत अइ एहि मे चालिस टाका महिनवारी खानाक सलामी लगेत छैक। ताइ-पर सं दिन मे ५-१० टाका ट्राफिक पुलिस के समय पड़ैत छैक। पुलिसक गारि आ दुरवचन उपकारे मे भेटि जाइत छै।

कह लोचन कविराय

चमचा गुण के खान थिक कहैछ वेद-पुराण
जकरा चमचा छइ जते से ततवैक महान
से ततवैक महान राजनेता युग चेता
प्रातिशील कवि, कथाकार, शिल्पी, अभिनेता
कह लोचन कविराय करय सभ संभव चमचा
भारत भाष्य विधाता जय-जय-जय हे चमचा

एहि तहसे जे उपार्जन करैह, ताइ मे भयन खर्च आपशिधर के मनिआइत। खेना इक लेल एकरा लोकनि के बेसी चिन्ता नहि रहैत छैक। जत'तत' मोड़ पर सव-आ' बला बेसल रहैत छैक। सातुखा' पानि पीवि तुमब जाइह। राइत मे ठेलेपर सुति रहल। दिकदारी होइ छइ, बरिसकाल'मे। परञ्च घर भाड़ा लेबाक दम्भ रहैत नहि छैक। केहनो टुटली महेया लेत केहनो अंचल मे लेत से बेदु से स कम मे भेट निहार नहि। दुरस्थ गेने काब मे अमुविबा हेतैक। फलतः कठिन परीश्रमक पश्चातो खान पानक ठीक नहि रहैत छैक आ तें इहो लोकनिक देह पर कहियो माउस नहि होइत छैक।

एहि घंवा मे बेसी लोक भोजपुरी क्षेत्र क अइ। मिथिलांचलक मुंगेर, मुजफ्फरपुर चम्पारनक मजदूर सभ अइ। मजुबनी दड़िभंगा आदि क्षेत्रक मजदूरक संख्या रिषवा मे बेसी छैक ठेका मे बड़ थोड़। से जे कुनू घंवा मे किएक ने हो सभक-अभ आ आर्थिक स्थिति समाने छैक। सभक संग अपन डीह ढावर छोड़बाक विवसता छैक जीवनक प्रति मोह छैक आ अमक प्रति निष्ठा छैक।

—मुजतबा अली

बाल गीत

हुका-लोली

हुकालोली खेले छी हम
मस्तर के झड़कावे छी हम
भ्रष्टाचार भगाने छी हम
मैथिल-पुत्र कहावे छी हम ॥

महगो के ललकारे छी हम
दुराचार के बारे छी हम
अन-जन-लक्ष्मी पर करेछी
निर्वनता बेलबे छी हम ॥

मेद-भाव के मेठवे छी हम
दंभ-द्वेष के घट्टवे छी हम
बाट-घाट मे दीप जरा के
घर-घर श्योति जगावे छी हम ॥

परिजन, अरिजन हो वा हरिजन
सभ सं हाथ मिलावे छी हम
हुकालोली गीत गावे छी
नव उल्लास पसारे छी हम ॥

—सूर्य नारायण मंडल

समिति रचना

वर्ष—१ अंक—३

दिसम्बर, १९८१

मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

६ दिसम्बर

बर्ष मे तीन सय पयसति दिन होइत अछि। बेरा-बेरी एक बेर क सभ अमेत अछि आ चल जाइत अछि। दोसर तरहे कही त नीति जाइत अछि। काळक्रमे लोक ओकरा विचरि जाइत अछि। फेर दोसर बर्ष अमेत छेक आ ओहिना नीति जाइत छेक। ई नियम आदि कालहि स चलेत आबि रहल अछि आ आबि विश्व-ब्रह्माण्ड रहत चलेत रहत।

परञ्च जे कोनो नियमक अपवाद होइत छेक। एतु नियमक अपवाद छेक। अपवाद होइत अछि ओ दिन जे कोनो व्यक्ति, समाज वा जातिक मानस पटल पर एगो अमिट छाप छोड़ि जाइत अछि। ई दिन जखन अमेत अछि त अपना संग ओहि विशेष घटनाक कथा-गाथा केँ नेने अमेत अछि आ लोकक मानस पटल परक निम्नतम प्राय स्मृति केँ पुनः नव क जाइत अछि। ६ दिसम्बर मैथिल जातिक लेल एहेने एगो दिन थिक, गौरवोन्मूलक दिन। बर्ष रूपी आकाशक तीन सय चमोसठिटा नक्षत्रक बीच सूर्य सन पुनः प्रचंड-दोदीत।

ई उअइ दिन थिक बहिया ग्रामांचल स प्रवासवरिक मैथिल पटना में जमा भेल छल। मेले छल अपन संविधान सम्मत अधिकार प्राप्ति संघर्ष लेल। जमा भेल छल मायक दुखन पवित्र अमन मातृभाषाक न्यायोचित सम्मान-अधिकार प्राप्ति संघर्ष लेल। ई उअइ दिन थिक बहिया मैथिलक सिद्धान्त स गगन गुंजायमान भेल छल, शहर दलमलित भेल छल। ई उअइ दिन थिक बहिया न्यायक बोरखाधारी अन्यायी जगन्नाथ मिश्रक सरकारक बोरखा उतरि गेल छलेक, आसन डगमगा गेल छलेक। सरकारी बर्दीधारी गुंडा सभ आतंकित भ उठल छल। लाठी गोलीक बल पर बनल आ चलेत सरकार केँ फेर लाठी-गोलीक सहारा लेमय पड़ल छलेक। परञ्च तेयो सिंह शावक सन निडर मैथिल सेनानी सभ अपन लक्ष्यपथ पर बढ़ैत गेल छल। ओकरा पर लाठीक प्रहार होइत रहलेक, ओकर रक्तक चार बहैत रहलेक किन्तु पणर पाछू नहि भेलेक, मुंह स आह नहि बहरेलेक। बहरेलेक त उअइ ओजस्वी नारा—हिन्दू मुसलिम बीर जवान। हम सभ छी मिथिला सन्तान ॥ हमरा चाही माइक बोल। आनक बोली दूरक टोल ॥

आ तें ६ दिसम्बर अन्यान्य तिथि स फराक अछि, महत्वपूर्ण अछि, अविस्मरणीय अछि। ई उअइ दिन थिक जे मैथिली आन्दोलन केँ नव मोड़ देलक, सही रूप देलक आ मैथिल जाति केँ एहि कलंक स मुक्ति दिअओलक जे ओ अपन अधिकार प्राप्ति लेल संघर्ष नहि क सकैत अछि, 'शोणित नहि' बहा सकैत अछि। आ तें मिथिला-मैथिलीक इतिहास मे ई दिन अमर रहत। अमर रहत कलकत्ताक मैथिली मुक्ति मोर्चा। अमर रहत पटनाक निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ। अमर रहताह मैथिली पुत्र नथुनी भों, सुशील, विजय पाठक तथा अन्यान्य समस्त मैथिली सेनानी लोकनि।

६ दिसम्बर अमर रहत। ई प्रतिबर्ष आओत आ जाचि मैथिली केँ समस्त न्यायोचित अधिकार नहि भेटि जाइत छेक-बाह लेल कि आन्दोलन भेल छल—मैथिल जाति केँ अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक उद्धारक लेल, अपन मायक दुखक लाज राखेक लेल उसकमे रहत। ई प्रतिबर्ष आओत आ मैथिल जाति केँ अपन सहोदरक शोणितक बदला लेबाक लेल उत्साहित करैत रहत। ई प्रति बर्ष आओत आ मैथिल जाति केँ ओकर अग्रजक बीरताक कथा-गाथा कहि-कहि प्रोत्साहित करैत रहत, कर्तव्यक स्मरण करैत रहत। ई प्रतिबर्ष आओत आ मिथिलाक अभिनव जयचंद-मिर्जाफरक स्मरण दियैत रहत, ओकरा प्रति घृणा भरैत रहत आ मिथिला केँ एहि जयचंद-मिर्जाफर रूपी कलंक स मुक्त करबाक पाठ पढ़ैत रहत।

६ दिसम्बर मिथिलाक लेल ओहिना थिक जेना बंगालक लेल २१ फरवरी। फर्क एतवाचि अवसरे छेक जे २१ फरवरीक इतिहास बंगालक बन्धन-बन्धन केँ जानल छेक—स्मरण छेक आ तें बन्धन-बन्धनक कंठ स सुनल जाइत अछि—आमार भाइहर रक्के रंगा

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

मैथिली आन्दोलन

एकांगी इतिहासक कुफल

जहिया कहियो आ जतय कहियो मैथिली आन्दोलनक चर्च चलत त केओ केओ बाजिए देताह-एह, मैथिलो सं कतहु आन्दोलन भेलै ? ई गप्प ततेक सद्बताक संग बाबल जाइए जे एहि मे सदेहक जेना कुन गुंजाइसे ने रहैक, विचार करबाक कुन खाते ने होइक। विद्वान-बुद्धिमान लोकनि अपन बातक सत्यता सिद्ध करबा लेल मिथिलाक भौगोलिक-ऐतिहासिक स्थिति पर व्याख्यान देताह, मनहि लोक बिश्वास करबो वा नहि। परञ्च जं सत्य पुछल जाय त आइधरि केओ महानुभाव इहिपर नीक बर्का विचार नहि क पओलनि भयवा विचार करवाक खगता नहि बुझलनि। तें आइ एकर बड़ बेसी खगता छेक जे आर विलम्ब नहि क एहि विषय पर नीक बर्का विचारल जाय। विभिन्न दृष्टिजे विभिन्न कोन स विचारल जाय

हमरा जनतब ई गप्प बिहकुल निराधार अइ जे मैथिल जाति आलसी होइए, डेरबुक होइए आ तें ओ मेहनति नहि क सकेए, आन्दोलन नहि क सकेए। ई गप्प सत्य जे जाइताम जीवन-यापनक साधन सुलभ रहैत छेक ओ थोड़वे अम मे उपलब्ध भ जाइ छेक ताइ ठामक लोक बेसी परीश्रम नहि करैए। कुप्रियवान मिथिला-देशक माटि ततेक ने उपजाउ छेक, प्राकृतिक सम्पदा तते बेसी उपलब्ध छेक जे निर्विवाद लोक केँ थोड़ मेहनति बेनहि सन्ता सहजता स जीवन निर्वाह भ जाइत छेक। पूर्व मे लोकक संख्याक संगहि खगता सेहो सीमित छेक आ संचयक प्रवृत्ति आइ कालखन प्रबल नहि छेक।

एकुशे फेजबारी, आमि/भुल्लि पारी ? ठीके बंगाली जाति एकरा नहि विचरि सकैत अछि। २१ फरवरीक परिणति थिक बंगला देश। ६ दिसम्बरक परिणति एखन सामने नहि आयल अछि। एकर ख्याति २१ फरवरीस नहि भ पओलकैक अछि। परञ्च ताइ मे ६ दिसम्बरक कोन दोष ? ई दिन मैथिलीक साहित्य कारक अवचेतनताक परिचायक थिक।

६ दिसम्बर १९८० क मैथिली आन्दोलनक बर्ष पूरा भ रहल छेक। बंगाल बर्का हमरा लोकनि एहि अवसर पर कोनो सभा समावेश नहि क रहल छी परञ्च एहि पावन अवसर पर फेर अपन शपथ केँ दोहरवैत छी जे जाचि मैथिली केँ अपन समस्त न्यायोचित अधिकार-सम्मान नहि भेटि जाइत छेक, हमरा लोकनिक संघर्ष जे ६ दिसम्बर १९८० केँ आरम्भ भेल छल, चलेत रहत। 'देसिल बयना' एहि मुक्ति चेतनाक संवाहक बनत। एहि लेल ओ मैथिलक जातीय चेतना केँ जगाओत, जातीय एकता केँ सशक्त करत आ संघर्ष चेतनाक निर्माण करत। मिथिलाक सर्वांगिन विकासक अतीतक त्रिभुवन विख्यात मिथिला केँ भविष्यो मे विश्वविख्यात बनेबाक कल्पना केँ उजागर करत, ओकरो साकार बनेबाक पथ प्रशस्त करत। एहि पुनीत कार्य मे हमरा लोकनि समस्त लेखक—पाठक लोकनिक सहयोगक अपेक्षा करैत छी।

जय मैथिली

तें जं लोक थोड़ अम करैत छल त ओकरा अहदी वा कोढ़ि किजहु नहि कहल जा सकैए। राजस्थान मे पीवाक पानि लोक केँ दू कोस तीन कोस दूर स आनय पड़ैत छेक-तें परीश्रम बेसी हेबैटा करैतक। किन्तु ओकरो जं दरबजैपर उपलब्ध भ जाइ त मात्र परीश्रमक हेतु परीश्रम नहिजेटा करत आ जं करबो करतत से मुखताइ हेतैक।

जं आलुक संदर्भ मे विचार कएल जाय त मैथिल समुदाय अन्यान्य कुनहु जाति स कम परीश्रम नहिजेटा करैए। तेयो जं ओकर आर्थिक स्थिति अबलाइ छेक त ताइ लेल सम्पूर्णरूपे ओकरा दोषी नहि कहल जा सकैए। तीन-तीन खेप लोक धान रोपि मायल परञ्च दश गेलेक। फेर रोपलक त एखन रोदी मे बरि रहल छेक। ई त निश्चित रूपे सरकारक उपेक्षाक फल छेक जे ओकर समस्त प्राकृतिक सम्पदा आइ विपदाक मूल बनि गेल छेक। कलकत्ता, पटना, दिल्ली, पंजाब—जतहि देखू मिथिलाक मजदूर दिन-राति अपन बाम चुभा रहल-ए। रिक्सा, टैक्सा, भाका हो वा चक्कल, गंजोक्कल, प्रेस, ट्राम, बस वा अन्यान्य कारखाना मैथिल मजदूरक भरमार छेक। परञ्च जे पाइ ओ उपार्जन करैए तकर सिंहाभाग परदेश मे खर्च भ जाइ छेक। जं ओकरा अपने देस-कोस मे चाकरीक सुविधा रहितैक त निश्चित ओकर आर्थिक स्थिति आइ दोसर तरहक रहितैक।

जहांधरि दोसर आरोपक प्रश्न अइ जे मैथिल जाति वीरबंका नहि होइए। ओ लड़ाकु जाति नहि अइ सेहो निराधार (शेषांश पृष्ठ ७ पर)

भक्तावला भा मोटिया

संग रहल जाय। तखन न-न बकी ओकरा सभक दिन चर्याक, सुविधा-असुविधाक, आशा-आकांक्षाक पता चलि सकत छेक। ई बात जनितो एहि स्तम्भक आरंभ करबाक पाछा इएह उद्येश छल जे एकर खगता छेक। परञ्च इहो गप्प सत्य जे तखन मिथियोभरि एकर आभास नहि छल जे ई कार्य एतेक कठिनाई छेक आ ने इएह अनुमान छल जे एते विशाल संख्या मे मिथिलाक सर्वहारा वर्ग एहि महानगर मे रहि रहल-ए। विद्यापति पर्वक मंच वं कएक बेर कएकटा नेताक मुँह सुनने छी जे कलकत्ता मे लाखोंक संख्या मे मैथिल छथि। ई गप्प त उएह लोकनि कहताइ जे हुनका लोकनिक मैथिल सूची मे ई वर्ग सामिल अइ वा नहि परञ्च एतेक हम अबस्ते कहि सकेत छी जे ई सर्वहारा वर्ग जे कहियो कुनू मैथिलीक नाच गान मे नहि गेलए, ककरा इहो ने पता छेक जे मैथिल ककरा कहैत छेक आ ओहो मैथिल थिक—जं तकर हिसाब लगाओल जाय त एक लाख नहि तकर चौबेर मैथिल एहि महानगर मे रहि रहल-ए।

एहि सं पहिने हमरा किछु रिक्सा चालक सभक संग परिचय-सम्पर्क छल। सम्पर्क छल किछु कल-कारखानाक मजदूरक संग। ओकर अतिरिक्तो आन-आन घन्घा मे मिथिलाक मजदूर अइ से पता छल—परञ्च तकर संख्या जे एते विशाल छेक से निश्चित नहि जात छल। एकरा लोकनिक हेइ मे जाइत, गप्प-शप्प करैत बंगलाक सुप्रसिद्ध साहित्यकार शंकरक पोथी 'कतो अजाना रे' बेर-बेर मन पड़ि जाइत अइ। सरिपहुँ अपन भूमि सं दूर पेटक खाला मे बौआइत हमरा लोकनि एक दोसर सं कतेक फराक भ गेल छी। कतेक अपरिचित भ गेल छी।

भक्तावला भा मोटिया मे फर्क छेक। भक्तावला अपन समान भक्ता मे (एक तरहक पथिया) राखि माथपर उठवेए आ नियत स्थान पर पहुँचा देत अइ। मोटिया खाली हाथ रहै-ए। एकटा तौनी अबस्ते रहैत छेक—मुँरटा बढलक आ खास कं बसवा दोइए। ओना भक्तावलाक लेल ई सुविधा होइत छेक जे ठट्टोना समान छोट-छीन ओहा-उकड़ सम भक्ता मे राखि सकेल। मोटिया के से सुविधा नहि छेक। ओकरा बान्हल-छेकल मोटा चाहिएक आ एहिठामक मोटा की—बक्सा—उकड़ीक बक्सा, बाइ मे छोट छीन मशीन, मशीनक पाट-पुरजा वा अन्य वस्तु 'पेक' रहैत छेक

क छेक। त भक्तावला भा मोटिया मे फर्क आब नहि छेक—दुनू एकै थिक। दुनूक मजदूरी, समस्या समाने छेक।

टेरा, टुक व टेम्पू जोगर समान जखन नहि रहैत छेक, तखने भक्तावलाक प्रयोजन पड़ेत छेक। ओनहुना दोकान सं उठा के ठेला वा अन्य वाहन पर लदनाइ/उतारनाइ काल एकर प्रयोजन पड़ेत छेक। कुनू कुनू गली मे त मोटिया छोड़ि आन उपायो ने रहैत छेक। महानगर कलकत्ता मे एहि वर्गक मजदूरक संख्या लगभग दस-एगारह हजारक बीच छेक जाइ मे सात हजारक लगभग मिथिलाक अइ आ बाकी भोजपुरी अंचलक। एकर पेश संख्या ठेलेबला सन बड़ाबाजार मे छेक। किछु अन्यत्रो अइ। कुनू बजार मे बीस-पचीसक संख्या मे भक्तावला उपलब्ध भइए जायत जे भक्ता मे बाबू-बबुआनक तीमन तरकारी, आशमी वस्तु-जात दोइए। चालिस नम्बर स्ट्रान्ड रोडक एकटा मकान—मोडेल हाउस मे दुनू श्रेणीक मजदूरक संख्या साठि छेक। 'मार्शल हाउस' मे एकर संख्या लगभग अस्सीक छेक। एही सं अनुमान कएल जा सकेल जे एकर सही संख्या एहिठाम कतेक हेटेक—बलन कि एहि तरहक व्यवसायक केन्द्र मकानक संख्या एहिठाम हजारोंक छेक।

भक्तावला के सुविधापूर्वक दू श्रेणी मे विभक्त कएल जा सकेल। पहिल श्रेणी मे ओहि तरहक लोक अइ जे कुनू दोकान घेने अइ—ओइ दोकानक कुनू समान बिकेले, कतौ पार्सल मेले त पहुँचा आओत। ओकरा अछैत दोसर के ओ काज नहि दैतैक—नियमतः। दोसर श्रेणीक मजदूर अइ जे कुनू दोकान सं सम्पर्कित नहि अइ—बलन जे कहलक, भाड़ा पटलेक त काज क छेक। दोकान सं सम्पर्कित मजदूर भाड़ा मोटामोटी निर्धारित रहैत छेक—परञ्च छुट्टा मजदूरक लेल तकर कुनू ठीक नहि। ई भिन्न बात जे दोकानदार बेसी त नहिजे देमय चाहैतैक—कमे मे काज चलेबाक प्रयास करत, परञ्च बेर पढ़ने बेसियो देवहि पड़ेत छे।

एकरा मजदूरक दैनिक कमाइ दस-पन्द्रह टाकाक बीच छे। विभिन्न अंचलक चौथीठ मोट मजदूरक संग सम्पर्क केला पर हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ। असु-विधा स्वाभाविक। एक त ई लोकनि किछु कहन सं पहिने मारिटेराव प्रस्ने पुछ्य लगैत। केर कहत जे हम किछक कहव ? कहला सं हमर समस्याक की समाधान भ

सकेल ? ओना एकरा लोकनिक संदेह, विराग आ तामस स्वाभाविक छेक। से जे हो, कुनू हाट-बजारक मोटिया कहियो पांच टाका त कहियो दस टाका कमाइए। पन्द्रह टाका कहिया भ जाइ छह निश्चिते कुनू नीक लोकक मुँह देखि उठन रहैत—जे एकरा लोकनिक कल्पना छेक। एहि मे कल्पनाक मोटिक लोकनिक स्थिति छेक छेक। ओना ई बरि लो वे कहियो न ओहो लोकनि २५-३० टाका केवल त कहियो भरि दिन हाथ पर हाथ घेने बेसले रहि जाय पड़ेत छेक। छुट्टीक दिन दोकान सभ बल रहैत छेक आ तें एकरो सभक छुट्टी। एहि तरहें हिसाब केने हरा-हरी पञ्चोत्रे चारि सेष, महिनबारी एकरा लोकनिक कमाइ भेलैक। परीश्रमक त प्रश्ने ने हो। माथ पर एक-एक मनक बोझ लेने छ-सात आ दस तछा पर चढ़-नाइक परीश्रम अनुमान हमरा लोकनि केना क सकैत छी—जे ओनहुना पांच-छ तछा चढ़वा मे तीन बेर सुस्ताइए। आ एहि कठिन श्रमक पश्चात जे कमाइ होइ छह ताइ मे अपन खेनाइ-पीनाइ, पहिरन-ओढ़न आ फेर गाम पर क मनिआइए।

पैतीस बर्लक महावीर साहु कोठी बंगड़ा (कमतौल) गामक रहनिहार छथि। मिथिलाक सर्वहारा वर्गक स्वच्छ-सुन्दर संस्कार-व्यवहार दिनक विशेषता थिक। मैथिलक बाजब मधुर—स्वामाविके—महा-वीर भी एकर प्रत्यक्ष प्रमाण। हमरा संबंध मे माइ-बहूत जिशासा केलाक बाद ओ बड़ सहजता सं हमर सभ प्रश्नक जवाब देलनि। हुनके देखादेखी आनो समाज सभ अग्रणीक आ हमर मदति कएलनि। ई मोडेल हाउसक एगो छोट-छीन कमनीक संग सम्पर्कित छथि। कहलथि जे पचास किलोक एगो पैटी लगभग आध कोस भरि ल जेवाक भाड़ा चारि टाका बान्हल छेक। दिनका गाम पर आठ आदमीक परिवार छनि। छोट-छीन गृहस्थी छनि। कने मने खेत, सामान्य उपजावारी। आन समाज सभ गामेपर छनि। ई असगरे बाहर छथि। कुनूना चलि रहल छनि। पुछे-लापर खुशी होइत कहलथि जे अपन देस-कोस मे जं काज भेटय त किछक लोक वेद तेजि एते दूर पर रहव ? एहने सन भावना प्रायः सभ समाजक छलनि।

रजौन पालीक भगेलन साहु (पचीस बर्ल) छुट्टा मजदूरी मे छथि। तहिना छथि छवीस बर्लक जुआन रामचन्द्र साह जन्म स्थान छनि सिमरिया। गामपर छ आदमी क आश्रम। कमोआ असगरे। नैने मे बाबूजीक देहान्त भ गेलनि आ तें परिवारक बोझ हिनके कंधापर। रामचन्द्र भी कने बेटी छेक छथि। स्वष्ट रहनि बिहारो मे त कठकरखान खुबने केलेह मुदा के देत हमरा सभ के नोकरी ? सभ अपन-अपन गोटी सुतारय पर लागल अइ। बाहरक—लोक के काज भेटैत छेक मुदा ओहिठामक लोक के पुछनिहार केओ नहि। रामचन्द्र

साहु पहिने लिचड़ी भाषा मे बाजब आरम्भ केने छलाइ परञ्च हमर मैथिली मे बिशासक बाद अपनहि मैथिली मे उत्तर देमयलाछाह।

दाइमा गाकक बिन्देश्वर साहु 'छतीस बर्ल' सं गप्प करैत रही त बड़फराइते बहु-बन्दा बासुदेव साहु। बेंगड़ा निवासी सुमान। एहमे बारह बरिस वं प्रिमियर इन्टरमिडियेट मे काम करैतो मुदा पाइ नहि छैत ? महावीरजी डटकथिन—ई कि कुनू युनियन के लोक छथिन वा नेता वे हिनका ई सभ कहे छहुन। ई की करयुन। ई त पत्रिका मे छपयिन तें पुछै छथिन।' बासुदेव साहु बिधुआसन गेल। पत्रिका मे की हेटे से छपने।

प्रायः एह सं बेबाय स्थित छनि सदन मार्केटक जुनेश्वर मंडलक। लगभग साठिक उमेर भेलनि। डाँढ़ लीबि गेल छनि परञ्च कमेता नहि त खेताइ की ? घर आश्रम केना चलतनि। बारह-तेरह बर्लक फेकन मरतो आ ओकर दोस लगभग ओही वयसक अवध यादवक स्थितिक चर्चे की कएल जाय। एहि वयस मे मोटा भक्ता उठौनाईक कल्पनाए भयावह थिक। परंच एहि दुनू यारक लेल बन-वन। भक्ता मे बेसल मस्ती मे हंसी-मजाक रहल छल जखन हम पहुँचलहुँ। ठीके, एहि मस्तीक बिलु जीनगी त भार भ जेतैक ने। एहि सभ सं फराक कथा-व्यथा छेक सुलेमानक। सुलेमान हमरा प्यानो पर नहि चढ़ैत, ओ अपन बेटीक संग अपन भाभा मे गप्प नहि करैत। उनठिक तकलहुँ त भक्ता मे बेसल, तौनी सं पीठ आ दुनू ठेहुन के लपेटने, जेबी सं बेरियाक कमाइ दू टाका बहार क अपन बेटीके रातुक भानस लेल देत। गामघरक प्रति घृणा सं मन भरल छेक। गाम मे निवास नहि छेक। गामक नामो लेमप ओ नहि चाहेछ। गामो पर जथा-बाल नहि छेक। मात्र दू कटा बारी छेक, जाइने तीमन तरकारी उपबवेत छल आकनवाली गामे-गामे घुमि बेचेत छेक। अपने इरो घेनेछल। मुदा पचास टाकाक कर्ज मे सभ स्वाहा भ गेलैक। आइ फूट-पाय पर भाबि गेल अइ। बरल साते-आठे मेल छेक गाम छोड़ना। एहिठाम ठीके अइ कुनू हाइ बेरवा नहि। जतवे कमाइए ततवे खाइए। ककरो देगार नहि खय पड़ेत छेक गादि गंजन नहि सुनय पड़ेत छेक। भाषा सं जुझना गेल जे सुलेमान मधुवनी अंचलक रहनिहार छथि। सामान्य तइ : एह एकरा लोकनिक स्थिति छेक। बीबिकाक सुरक्षा उचित मजदूरी आदिक देखमाळ छेक कुनू संगठन नहि छेक। संगठन मेळ छेक परंच नेता त बहि वरि क लोक होइत नहि छेक। नेताक फराके वरि होइत छेक आ ओ अपने हाथ सुतारय मे लागल रहैत। एकरो लोकनिक संग सएह मेल छे। तखन परिवेश लोक के बहुत किछु सिखाइत छेक। इहो सभ एक (शेषांश पृष्ठ ७ पर।

६ दिसम्बर, १९८० : एकटा अभिमत संस्मरण

ई कहऽ नहि पड़त जे कोनो आंदोलनक पृष्ठभूमि बुझिबै वर्ग तैयार करैत छैक। कोनो सामूहिक समस्या लेल ई वर्ग अनायास एक जुट भऽ जाइत अछि। ई मानऽ पड़त जे मिथिला मे सेहो एना भेलैक अछि। समय-समय पर गोष्ठी, सभा मंच आ पत्रिकाक माध्यम सं आवाज उठा-ओल गेलैक अछि। मुदा एहि सब मे नीहित स्वार्थक प्रमुखता रहलैक। तथा कथित मैथिली सेवो मैथिली मिथिलाके आगू में राखि अपन उल्लू-सोभा करवा मे ध्यस्त रहल। कोनो ने-कोनो तरहें अपन स्थान समाज में बना लेबाक लेल लोक के ठकेत रहल। एहि सं मैथिली मिथिलाक काज पछुआइत गेलैक। आ मिर्जाकरक पताका फहराइत रहलैक। एकर फलत उदाहरण अछि वर्तमान बिहार सरकार आ ओकर मिथिलाक प्रति किया कलाप, मुदा मैथिल एहि-लफुआ सभ सं कहिया तक ठकाइत रहैत ? आ तकरा जबाब देलकैक दिसम्बर, १९८० क दिन।

६ दिसम्बर, १९८० क पहिने तक लोकक चारणा रहैक छै मैथिल आंदोलन नहि कऽ सकैत अछि, अर्थात् खून नहि कऽ सकैत अछि। मैथिल पनिमरु होइत अछि, ते ओकर जोश आ गर्म-गर्म अभिव्यक्ति चिनमार आ घुरै तक रहैत छैक, ओकर साहस आ पैरुल टाट घुसकावऽ आ आरि छाँटऽ तक रहैत छैक, ओकर बुधियारी ममिला आ परीक्षा पास करऽ तक रहैत छैक। मुदा, ६ दिसम्बर, १९८० एहि चारणाकें मिथ्या प्रमाणित कऽ देलक। तथा कथित मैथिली मिथिला सेवो के दति आंगुर काटऽ पड़लनि। मैथिली के मजा कऽ लायबला निर्लज्जक माथ ठनकि उठलैक। गोलैसी आ तिकम लगाकऽ मंच पर सुशोभित होवऽ बलाक होव ठेकान पर आबि गेलैक आ सभसं बेसी 'लोक-प्रतिनिधि' तथा मिर्जाकरछा छूटि गेलैक, ओकर कुली डोवऽ लगलैक।

शुल्लु गांधी मैदान सं आरम्भ भेलैक। विश्वास रहैक जे पटनाक बुद्धिजीवी मैथिलक अमार लागि जेतैक, मैथिलक भीड़ गांधी मैदान सं कऽ आर ओकें धरि ठेकि जेतैक। एहेन विश्वास कऽ लेबा मे आशंकाक कोनो प्रश्न नहि उठैत छलैक। कारण एहि सं पूर्व बनता सरकारक समय पटना मे भेल एकटा आर प्रदर्शन जाहि मे पटनाक सूट आ टाइट चारीसभ सेहो मैथिलीक सपूत कहवऽ मे लाजक अनुभव नहि कयने रहथि। मुदा एहि प्रदर्शन मे हुनका लोकनि के कोन भय, केहेन बाधा वल

केलकनि नहि जानि सरकार ककर आ ककरा लेल ? तकर ज्ञान नहि रहलनि ? हाथ अछि जे एखनो तक मैथिलक अर्थ ओ लोकनि किछु मुही भरि तथा कथित सभ्य लोक तक सीमित राखबाक चेष्टा मे छथिमुदा, एहि गलत चारणाक निराकरण ६ दिसम्बर, १९८० क दिन कऽ देलक। असली मैथिल-पुत्र सभ माटिक रंग लाव कऽ देलक। जौ आबो अपइत सभ हेर बनल रह्य त जनताइ ओ, आ जनतनि हुनकर भविष्य। ई बात अवलस छैक—ने अपइत मरय ने छुतहर कुट्य अर्थात् अपइत लगलै नहि मरेत अछि। मुदा ओ मरत अवलस ताहि मे संदेह नहि।

ओहि दिन चोटाएल संतान सभ के दबाइ-बीरोक जरूरति छलैक। ओम्हर किछु लोक चिन्हार होवऽ लेल प्रेस मे पतियानी मे ठाढ़ छल। एम्हर ओकर संगी कुदरि रहल छलैक, ओम्हर ओ सभ अलवारक पला मे अपन-अपन नाम छपवऽ लेल बेहाल छल। एहि सं बेसी निर्लज्जता आर की भऽ सकैत छैक ? एहि सं बेसी घृष्टता आर की भऽ सकैत छैक जे सुचा आंदोलकारी लाठीक मारि सं ओषवाच भेल छल, आ ओम्हर किछु लोक सत्ता-धारीक ओतऽ चिन्हा-परिचय करवा मे, हुनकर स्तवन करवा मे लागल छलाह। वाइ रे विवेक।

जे होइत छै से नीके होइत छैक। बहुत के चिन्हाक मौका लोक के भेट-लैक। ओकर छल-बल-कल देखबाक अवसर छलैक। एकटा कहबीयो एहेन सन छैक—कुक्रिये नाभो, कि सुक्रिये नाभो। केहेन हास्यास्पद बात—जे एगो बन्धु हमर दर्दक बीगेशा नहि कऽ, कहलनि—हमही हुवि गेलौ तऽ कहना नाभो छपेत। हमरा लागल जेना ओ आर ब्लाकक पुलिसक हँडिया होथि। मुदा, ते कि लोक एहि सं हतोसाह भ जाइत ? ते कि हम अपन संवैधानिक अधिकार छोड़ि देव ? जौ मरवत माटि लेल जाहि सं हमर सभक शरीर बनल अछि। हमरा शरीर पर मात्र ओकरे अधिकार छैक जकर दूध पीनि हमरा सभक जीवन संचरित भेल अछि। ६ दिसम्बर, १९८० एकर पक्षा सवूत छैक। ओ दिन मैथिल संतानक बीचक दस्तावेज छैक।

माय के माय कहवा मे लाज कभीक ? वयोवृद्ध शेखर जी, सर्वश्री भीम भाइ, प्रवासी भाइ गोकुल नाथ जी, पूर्णेंद्र जी एवं भाइ राजमोहन जी अपन कर्तव्य नीक जेका निमाइत रहलाह। मुखिया जी आ

विरंचि जी ? श्री चंद्रकांत खौं आ श्री पीताम्बर पाठक पूर्ण सक्रिय छलाह कि कैली से किछु नहि, आ कहलक त बड़े अवलाह। एकदिस प्रजातंत्रक रक्षार्थ पत्र-पत्रिकाक निष्पक्षता पर जोर आ दोसर दिस प्रेस पर आन्तरिक दबाव। प्रेस बल कऽ देबाक धमकी। माटि-पानिक सन्तानक खून आर-ब्लॉक चौरास्ता पर बसल, से भूठ, निहत्था शांत प्रदर्शनकारी पर ताड़मतोड़ लाठीक प्रहार भूठ : मैथिली तीन करोड़क भाषा, से भूठ, मिथिलाक मुखलमानक भाषा मैथिली, से भूठ, अर्थात् सीता, जनक आ विद्यापतिक मिथिला भूठ। तखन सत्य को ? सत्य मात्र बिहार सरकार घोषणा, आ सत्य मात्र सरकारी इन्कुर द्वारा प्रेस मे समाचार के तोड़ि-मरोड़ि कऽ छापि देबाक बलात्कार/रेडियो प्रसारण मे मनमाना हस्तक्षेप। सनठाम हस्तक्षेप। मायक नहि भऽ सकल से आन ककर ? तकर अविस्मरणीय भेल ६ दिसम्बर, १९८० जकर मुख्य नारा छलैक :—

हिन्दू-मुस्लिम घोर जवान,
हम सब छी मैथिल संतान।

बाहि सरकारक गणतंत्रक खाल ओहि लोक हितक इनन करव कर्तव्य छैक, जे ओ संविधान मे ताख पर राखि शासन करैत, जे ओ गोली डंडा हाथे निरीह बच्चा, कुशकाय बृद्ध अवज्ञा स्त्री पर निर्मम प्रहार करैत, ओकरा पर भरोसा कयनाइ कोनो तरहक भौचित्य नहि रखैत अछि। जे नेता लोकनि भूतपूर्व सरकारक समय अयना के मैथिली-भक्त सावित करैत छलाह, जे प्रतिनिधि लोकनि आश्वासन दैत छलाह जे सत्ता मे अवैत देरी लोक मांग के पूरा अवलस करताइ, हुनका लोकनिक चरित्रक कोन विश्वास ? सरकार मातृभूमिक संतान के एहेन कुख्यात संघ आ दल सं सम्बन्धित होयबाक निराचार घोषणा कऽ सकैत अछि बाहि दलक एक भाषा फर्मा मे विश्वास छैक, जे दल मैथिलीक घोर विरोधी अछि, मिथिला सपूत के कहां तक अरबडते ? आ जे नहि अरबडले तै ६ दिसम्बर, १९८० क दिन एकटा जगजियार अभिमत चेहरे इतिहास मे सदा सदा के छेड़ अंकित करैत मायक मुक्ति लेल संघर्षक शुभारम्भ कय-कल।

- सुशील

शोणित दे शोणित मैथिलार्थ

मिथिला गौरव डा० लक्ष्मण भूत मिथिला-मैथिलीक उद्धारक लेल आन्दोलन-शूल फुकेने रहथि आ कान्तिदर्शी वीर कवि राधवाचार्यक कलम कान्तिक चिनगी उगिलय लागल। मिथिलांचल सं प्रवासधरि पसरल मैथिलक बीच राधवाचार्यक विहनाद सुनाइ पड़लैक—शोणित दे शोणित मैथिलार्थ, प्यासें तकथल अछि खड़ग हमर। किन्तु गाम-धरक सुतल स्वनामधन्य मैथिल बंधु लेल घन सन। शोणित त दूर रहओ, घाम पर्यन्त देवाक कृपा नहि केलनि।

कारण स्पष्ट अछि। कान्ति बाध-बोनक फलिल नहि थिक कोनो शास्त्र-विरोधक फल-फूल नहि थिक। ओ तें अदभ्य जीवनो शक्ति, पौरुष पुञ्ज सं निःसृत लाल लाल, गरम-गरम चिनगी थिक जे अतुल्य वातावरण पबिते घचकि उठैत अछि। एहि लेल समर्पित भावना, एकाग्र निष्ठा, धैर्य, साहस आ संयमक संग मोन मे उच्चाल तरंग जकां उमंगक लोल लहरि उठनाइ आवश्यक। किन्तु एतय त विद्यापति पर्वक मंच सं उच्चाल तरंग उठैत अछि। विद्यापतिक पदावलीक संग उमिला नागरक आंचर, गोदइ महाराजक तबला आ अवसरक पारखी राजनेताक मेष-गर्जन (वर्षा नहि) सं उच्चाल तरंग उठैत अछि। गुटबन्दी मे व्यस्त स्वार्थ लोछुर, क्षुद्र स्वाभावक कतिपय कविक किल्लोल मे उठैत अछि—कान्तिक आह्वान—

डा० लक्ष्मण भूत के गारि पढ़ब, राधवाचार्य के कुहरेत छटपटात छोड़ि देव,

दामोदर लाल दास के बेहाल देखब आ विशापति पर्वक मंच सं मैथिलक गर्वक कमाल देखब।

आब ई स्पष्ट भ गेल अछि जे मैथिलक दूटा वर्ग अछि—समर्पित सेवक आ सोदागरक। हुनूक अलग-अलग उद्येश छैक। मैथिली के अपने वपीती बुझयबला सोदागर वर्ग सदिलन मधुर भङ्गाव ताक मे बकध्वान लगौने रहैत अछि त दोसर दिस समर्पित लोक दिन-राति रचनात्मक कार्य मे व्यस्त। जं साहित्य के बात कएल जाय त आधुनिक मैथिलीक प्रकाशित साहित्य सं बहुत बेसी अप्रकाशित अन्धकारक दुनिया मे पड़ल अछि। जं मूल्यांकन कएल जाय त निश्चित ई अप्रकाशित साहित्य प्रकाशित साहित्य सं बेसी विलक्षण आ स्तरीय अछि। परञ्च एकर रचयिता सभ स्वाभिमानी आ भाषा प्रेमी हेबाक कारणे सदा अमु-बधा मे रहला अछि, अनचिन्हार रहलाह अछि। ई बुझितहुं तथा कथित मैथिलीक कर्णधार लोकनि गुम्मी लवने छथि। सोदागार वर्ग समस्त सुल-सुविधा इधिया अपना स्वार्थ सिद्ध क रहल अछि। आ एहि दूटा विपरीत बिन्दुक बीच ठाढ़ छथि विद्यापति एक दिस ताकि हंघैत छथि त दोसर दिस घुरिते आंखि सं नोरक धार बहर लगेत छनि।

जय-जय भेरबि हजारो वर्षधरि सुनला आ गयला सं की हेतैक ? बाधरि शुद्ध

शेषांश पृष्ठ ६ पर

लकैतो

आइ दू टा घटना घटले।

मेसक नोकर चाउर-दालि, तीमन-तरकारी कीन' बराकर गेल रहए। ओकरा छूरा भिराक, चौरस्ता पर सबटा छीनि लेलके आ तकर एक्के घंटाक बाद, माने एगारह बजे एकटा छोड़ा पोलरि मे नहाए गेले आ झुबे गेले।

× × ×
एकटा हाल-बेहाल छे। चोरी, डकैती, छिनारी, हत्या, छुटि प्रभृतिक खबरि सँ आब ककरो कोनो तरहक उच्चे-बना, कि आश्चर्य, कि तामतव ने होइ छे। यँद किछु दिन पहिने सात बजे साँझ मे दू गाटे कं घेरि क स्कूटर, घड़ी, रुपैया छीनि लेलके। जेना चौबक दाम बढ़ने लोक कम स-कम समान कीन' लगेए तहिना एहन समाचार सुनि-सुनि मिर-मिरा क रहि जाइए आ साँझ मे घर सँ बहरेनाइ बन्द केने जाइए। ओना कहल जा सके छे जे सबठाम त इएद रामा एएइ खटोला छे। मुदा लोक जत' रहत तबुक्के सूर-ताळ गोल-माल हेवाक बेधी चिन्ता हेते ने।

जीवन—जेना बुझी चलैत रहै छे।
पेशा अइ, अंक वं कुशती लड़वाक।
ये वाभल रहो ओही मे। बरख समात मेलेइ से काज माने लेखा बड़ि गेनाइ स्वाभाविक छे—ताइ पर सँ एक त दाइ गोरे बड़ दोसर नदेहीह। अर्थात् इहो देखवाक रहै छे जे लाभ ओतवे हो जाइ सँ कम-स-कम टेक्क लगे, कम-स-कम मोनस देब' पड़े, इन्फोमेट देब' पड़े, अन्य सुविधा देब' पड़े। मुदा एकरो आवश्यकता कहाँ रहि पेटे भविष्य मे। बियरर बांड जिन्दावाद। फालुज सरकारक इहने समा-बान सब जं होइत रहलै त मुनीमी-कला त जेत गताल खसा मे खेर.....से लागल रही अंक स अंक मिश्रा' मे। तखने ओ पहुँचल।

—अरविन्द बाबू!

—की छो?

मुड़ी भुकीनहि पुछे छिये, अर पेशा मे लोकक मुलमंडल स बेसी महत्वपूर्ण आ ध्यानाकर्षक बुझ'ए छे केलकुलेटरक स्क्रीन पर उगेत-झुबैत हरियरका अंक सब।

—सुलोचन स सब किछु छी ने लेलके।

—की?

एकवेर किछु बूझा, मे ने आइल, जेना बेटी अन्वल भ गेला पर अग्रम-बगरम अंक सब स्क्रीन पर आब' लगे छे।

—सबटा छीनि लेलके।

—की छीनि लेलके?

अंकाम्यास एक खास मोड़ पर आबि गेल छल। मुड़ी उठा सके छलै से उठल।

ओकरा दिस ध्यान गेल। विलोचन छल—सुलोचनक छोट भाइ। पछिला मास एक नंबर महिमा एक पौआ आनि देने रहए हमरा लेल। एक कनमा पीबि क चौबीस घंटा सुतले रही। आश्चर्य लगेए जे लोक बोद्धा पर एत्ते जोर किए दे छे?... सुलोचन-विलोचन इजारीबागक महतो अइ। ओना ई दुनू त क्रमशः मेसक नोकर आ करखाना मे ठीका-मजूर अइ मुदा बेसी महतो सब पानि उधवाक काज करेए। महतो, पानि उधनिहारक पर्याव छे एत' कर तेलक दू टा टीनक एक भार पानि, पुरान गहिनी छ रुपैया मास, नव भाठ रुपैया मास, खुदरा आठ आना स ल'क एक रुपैया भार आ कम्पनी रेट बारह भारक एक हाजरी माने सवा छ रुपैया पानिक अकाळ छे एत'।

—तो केना एत्ते एत'!

विलोचनक ब्यूटी दोसर छिफ्ट मे रहै छे, अर्थात् दू बजे दिन स दस बजे राति चरि। एखन एगारह बाबि रहल छे।

—भोर मे बजौने छल भैया।

सहकमी धौदिया गेला। प्रश्नक बरखा होब' लागल, सुरक्षित वातावरण मे जे स्वभाविक छे से जिज्ञासा, उत्कंठा, आश्चर्य व्यग्र होब' लागल।

—की मेले?

—की छिनलके?

—कत' छिनलके?

—कते गोटे रहै?

—केना?

सबटा क्रमशः वक्तव्य, वक्तव्य क्रमशः शिकाइत आ से अंततः समर्पणक मुद्रा घ' लेलक।

—दस बजे दिन मे एहन कुकांड।

—राति-विराति जे ने हो सँद अनर्थ।

नागाजुन जेना अही क्षेत्रक लेल लिखने होथि' टंक सेर तो बम बिकता है' से बम, अलूक भाव स बिकाइ छे एत' एक तरहेँ कुटीर उद्योग भ गेल छे बम बनौनाइ साँझ होइत देरी ओइ पार स माने लाइनक ओइ पार स धूम घड़ाम आरम्भ भ बाइ छे भोर सुनवे जे डाका पड़ले की दू दलक संघर्ष छले की टेस्टिंग होइ छले की रखले-रखले फुटि गेले एक रातुक बात कहै छी एक्केस टा आवाज मेले बेरा-बेरी। भोरे दूधक दाम साढ़े तीन रुपैया भ गेले। राति मे दूधक बिकेता सबहक बेसार रहै, सर्वसम्मति व आठ आना प्रति सेर दाम बढ़ेनाक प्रस्ताव पास मेले ओ एक्केस बमक सलामी अही परित प्रस्तावक लेल ठोकल गेल रहै से एहिना होइत रहै छे, आ लोक हतप्रभ मेल जा रहलए। लगे मे त चेक पोस्ट छे।

—ओइ चौक स आनू बंगाल विहा-रक सीमा छे। सीमा पर चेक-पोस्ट छे। अस्सी वर्ग माइलक क्षेत्रफल मे एकटा साधारण पुलिस चौकी सेहो छे अपन समस्त सर्वशक्त विशेषताक संग। चौक पर सेहो

एकटा ने एकटा खाकी घासी रहिते छे—सबदिन।

—पुलिसके त अपन हिस्सा स ने मत लव छे। ओकरा कोन गर्ज छे हस्तक्षेप करवाक?

एहना मे घटना पर घटना मोन पड़ लगे छे, किछुए दिन पहिने एकटा ट्रक बला मने चौअन्नी ने देलके से चौक पुलिस ओकरा ट्रक पर लटक गेल झाइवर कैबिन दिस आ बहव 'कर' लागल झाइवर सेहो गाड़ी आस्ते अवस्स केलक मुदा रोकत किए? चौअन्नी पाटी स ड' कथीक? अंततः कहाँन पुलिस लिटअरिंग पकड़ि लेलके संतुलन बिगड़ले आ लगेक स्टुडिओ स बहराइत एकटा परिवार पर चढ़ि गेले झाइवर आ पुलिस संगहि पड़ाएक मर्द आ बेटी त तत्काल मरि गेले-स्पॉट डेड। पत्नी के जदि के अस्पताल ल जाएलले ओकरो रखे मे प्राण छुटि गेले। पेट मे कच्चा रहै, जान मालक आसुरशाक दोसर नाम छे बी० टी० रोड।

—सोभा बला पूल त हरदम जामे रहै छे।

—खेहारला पर त अवसरे पकड़ल जा सके छले।

—सुलोचना के हल्ला कर चाहे छले...

सीमा पर दह छे बलुआइ दह अही बलुआइ दह पर पूल छे महाबूद पूल बिहार दिस एकटा बोई ठाँकल छे अधिकतम भार पाँच टन' खालियो ट्रक पाँच टन स भारी होइ छे दिन मे कम स कम दू बेर पूल ब्राम होइ छे माल ट्रक सबहक दू बगली लाइन, शिक्षा, कार, टेम्पो आ लोक। पूल मले-रियाक रोगी जकाँ थरथराइत रहै, पूल जाम रहै छे। खेहारला पर डकते पकड़ल जा सके छले। सुलोचन हल्ला ने केने हेते।

—मुदा हल्ला केतहु स लोक सब दौड़िते?...

—लोक सब दिन प्रति दिन कायर डेरबूक मेरु जा रहलए।

....—सबके अपन जान के मोह छे।

—के डकते स दुधमनी मोल लेत ग हं, आन त जहान। अपन गरदनि आ पेट नाँचल रहक चाही अनकर धावक चिन्ता केला स अपनो लसेदू लगवाक सोरहनी आशंका त रहिते छे।

—जीवन अवग्रह मे पड़ल जा रहल छे

—लोक कोना बाँचत, कोना संसार चलाओत?...

—बात-बात पर बम-बाजी होब' लगे छे, चक्कू चमक लगी छे गोली चल लगी छे।

विलोचन कननमूँह छले, हकबका गेल ओ हमरा दिस देखेत रहल, हम ओकरा दिस देखेत रहलिये। संभवतः ओ चाहे छल जे अरविन्द बाबू किछु एहन करता आ की बजता जाइ स अइ स्थिति स उमास हैत हमरा ने बुझा रहल हल जे की चाबी अथवा करी मैटेरियल कंबम्पशन, सुटिलाइजेशन परसेडेब, प्राफिट रेशियो,

लंच डकैती एक्के मे मिश्र मेल माथ मे घोलमारि कर' लागल रहए।

—कत' छो सुलोचन?

एकटा सहयोगी हमर सहायता करे छथि ओना असल मे हमर सहायता ने छल ई। सहकमी लोकनिक वक्तव्य उदाहरण मेल जा रहल छले केना ककरा संगे की घटित मेले रेल मे रस्ता पर, बाजार मे, किछु दिन पहिने किछु साल पहिने, औखिक देखल, कानक सुनल, देखि भोगलछौं। क झुब-नाइ सेहो मिश्र मेल जा रहल छले बहस मे तखन ओको उदाहरण सब अविश्वे कवन, ककरा गाम मे, के झुबले तखन कथा अविश्वे लहाश बराब' पर, पुलिस स मोट-माट कर' पर, सबके, अइ सबहक कहवाक लेल एकटा क कथा त रहिते टा छे, मुदा ई कोनो सरकारी कार्यालय त छिप ने जे काब के तिठाँबलि द, चाइ पिबि-पिबि एहन एहन कथा सबहक पारायण केल जाए की सुनल जाइ। से बात समाप्त केनाइ आवश्यक छले, कखनो मैनेजर भाविक गरबनाइ आरंभ क सके छले हमरा किछु कुराइए ने रहल-जेना बचकर लागल हो। सहयोगी अइ स्थिति के भंग करे छथि। एकरे कहै छे पुरान चाउर।

—मोट पर।

विलोचन आर मिरमिरा गेल जेना इएह साधारण सन प्रश्न कचदरीक सम्मान होइ। हम केलकुलेटर के ऑफ करे छी। एत्ते काल स चाउर छल।

—बचबही।

आइ वाम के बत्ते जल्दी संभव हो खतम केनाइ आवश्यक लाग' लागल लंचक व्यवस्था सेहो देख' पड़त। लग-पास मे नीक होटल ने छे। दूर जाए पड़त जेवी टोविक, देखि लेलौ।

× × ×

—बात मुदा बड़ बिचित्र बूझा रहलए।

—हमरा त मुदा संदेह भ रहलए।

—संदेह हमरो भ रहलए। सुओवना सत्य ने बाबि रहलए।

—सरासर बदभावी क रहलए, नमरी खचर अइ।

—बड़ी साइकिल बेचि लेलकए अथवा ककरो बारने छले सँद छिनि-छोड़ि लेलके।

—एत' हमरा सबके नाटक देला रहलक। सार के फूटानी ने देखे छी।

एहन त ई ने बूझाइए।

हमर क्षीण प्रतिवाद छल। दू बरख स त देखि रहल छिह कहियो कोनो तरहक गड़बड़ी ने केने छल कम-स-कम कम नबनरि पर ने आएल छल।

एकरा सब के अहाँ ने चिन्है छिये अरविन्द बाबू, ई चकरवालि सब अहाँ ने बूझवे रग-रग बूझल अइ हमरा।

—अरविन्द बाबू त ककरे तकरे पर विश्वास क ले छथिन। एकरा आब मक्खन लगनाइ बुझिओ अथवा ने मुदा सब आग-

आइ प्रोफेशन मे अपना स सुपरियर के चिकनवेत रहनाइ आवश्यक बुझत बाइ छे से बल्ले अवर मेरु तखने ।

—एकटा भार बात छे । सुलोचनमा परस हमरा स पाइ मांग' आएल छल ।

—देखिये ?

—ने ।

रूपैया ओ हमरो स मंगने रहइ । ओकर सार आ बाप आएल रहै । सरबेटीक बियाह छलै । तीन सौ रूपैया मंगलक, हमरा ने छल-सत्ते ने छल । कहलिये, आन ठाम कोशिश कर । संभवतः सेहो ने भेलेत सौंफ मे डेरा पर आएइ कहलिये एक सौक व्यवस्था क देवो बाकीक भोगार बराडे । से ओ रूपैया एखनो बेबी मे अइ ।

—उहे त ने केलेक ।

—निश्चित रूप स साइकिल-घड़ी बेचि क' रूपैया घर पठा देलक पता लगा लिअ ओकर बाप आ सभ चलि गेल हते ।

—तखन त एकरा एत' देनाइ उचित ने हैत ।

—कने सोचिक देखियौ जे दिन देखार डकतो करत से दू-तीन सौके लेल ? घड़ी फालतू छलै की भी तिवाड़ी भी ? हं त डेढ़ सौ मे नव अनने रहिये कचे बरख चलीलिये भा बी ?

—साइकिल भा भी बला छलै-सेकेण्ड हैड । ओकर कचे देते तिवाड़ी भी ?

—साढ़े पांच सौ मे नव अनने रहिये । कचे बरख चली लिये भा बी ?

—तीन साल । डाइरेक्टर साहेबके सनक सवार भेलनि आ ओकरा दिया देलथिन अइबेर त फालतू साइकिल अनलौंश अहाँ ।

—चल, ने आवइ त अंगने टेढ़ ? साइकिल राख' जने छी अहाँ ?

बात-बात पर उतराचौरी केनाइ दुनू क विशेषता छनि । ओही बिच मे तिवाड़ी भी लीकार केलनि जे ओइ साइकिल के दू सौ-अढ़ाई सौ स बेबी ने देते केओ ओना ओ इहो जोड़लनि जे भा बी एक-दुसरे भरफंडी बना देने रहथिन साइकिल के । अही बात पर दुनू मे फेर आरम्भ होव' लगलनि मुदा तखने दरवान आबि गेल,

—तेयो कम स कम तीन सौ त भये गेल हैते ओकरा ।

—पाइ भारि लेलक आ भूटे के नेप चुआ रहलए ।

एक मिनटक लेल मानि लिअ जे सत्ते छनि लेलके त एकर अपन की गेल ? घड़ी साइकिल रहै कम्पनीक भा चाउर-दालि मेसक । तीमन-तरकारीक बे पाइ देने रहिये सेहो मेसक दू चारि थापर जं देने होइ सेहो टा भेले ओकर हिस्सा ।

ई छला मेस इंचार्ज । हिनका मेसक मील चार्ज बेसी भ जेवाक चिन्ता स लेलकनि संभवतः मुदा ठीके ओकर अपन कहाँ किछु छिलेले । अत्ते बेर मेसक चर्चा होइ छे लंच मोन पड़ि जाइए भूख आर जोर स लागि गेल ।

× × ×

दरवान आबि क' सुचित केलेक जे एकटा लक देहातक दस बारह बरखक छौंड़ा पोखरि मे डूबि गेलै । कम्पनीक गाड़ी स ओकरा लोक सब अस्पताल क जाइत गेलै ।

आइ गमीं बेसीए छलै । मुन्नाइ छलै जे उसिन क राखि देत चिरिक, सुलाए दे वला जे कहवौ छे तेहने रौद । कम्पनीक एरियाक पोखरि छे नहेवाक भा यत्र कूच काज करवाक लेल पानि सफाई होइ छे ओइ पोखरि स । चाकर त कम्मे छे मुदा बड़ बेसी गहौर छे । छौंड़ा उमंग मे कने आगू बढ़ि गेलै आ डूबि गेलै कहना क' लोक ओकरा बहार केलेक ।

—कोनो गड़बड़ त ने हैते साहेब ?

दरवान कम्पनीके इन्वास्व भ जेवाक शंका प्रसित छल ।

—ने, एहन कोनो बात त ने हेवाक चाही । हम ओकरा आवस्त केलिये ।

—पूछलकए ने ?

दरवान पूर्णरूपेण आवस्त होव' चाइ छल ।

—ने पुछि क त ने गेलए मुदा एहना हाल मे पूछवाक होस रहै छे लोकके । तौ जाइ ।

सुलोचन आबि गेल ओ आइल छल दरवानक संगहि मुदा पाछुए टाढ़ छल । संभवतः प्रतीक्षा क रहल छल जे दरवानक बात खतम होइ तखन सौंभा जाइ । टग हनेत आइल मनुआएल लटुआएल टाढ़ भेल ।

—की भेलौ सुलोचन ?

—बाबू । सबटा छीनि लेलक ।

—केना छीनि लेलकौ ?

—समान लक चौक पर इलिये त एकटा जान-पहिचानी मेटा गेलै । ओ अपन बेग हमरे घरा क गेलै पान खाइ छि । तखने तीनि गोटे आबिक घेरि लेलक आ पेट मे चक्कू भिरा देलक ।

—हला किछ ने केल्ही ?

—कहलक 'हला करवे त फाड़ि देवौ । फलेमेचे निचा मूहे तकैत रह एजी-ओभी तकलै त झुमि जा ।

—तखन ?

—भोरा, साइकिल भा घड़ी ल लेलक किछु खुदरा पाइ रहए से आ जेबी स चाभी बहार क लेलक तावत ओ जान-पहिचानी सेहो आएल । ओकर बेग त पहिनिह हमरा स छनि नेनहि रहै । चक्कू भिरा क ओकरा जेबी हंसोचि लेलकै । लगे मे एकटा टोक टाढ़ रहै, ओही पर चढ़िक भागि गेल ।

—चाभिओ ल लेलकौ ?

—हं

—तोहर जान-पहिचानीक की सब लेलकै ?

—आठ सौ रूपैया रहै बेग मे नैक मे जमा कर' आएल रहै । जेबीयो मे बीस पच्चीस रूपैया रहै, घड़ी रहै ।

—मेसक ताला तोड़' पड़तौ ?

सुलोचन चुप्पे रहल । चाभी हेरा गेलै त ताला तोड़हि पड़तै ।

—ई साफे एकर लापरवाही छिये ।

हिनकर टिपनाइ हमरा नीक ने लागल सुलोचन के डंठलधिन ताइ दुभारे ने, हमरा बातलाप मे अरन सुपरियर हेवाक अंदाज मे मुखशेप केलनि तँ अखल मे, हिनकर चालि हमरा एक्कोरती ने सोहाइए ।

—हमर की लापरवाही भेलै ?

सुलोचन मिरमिराएल ।

—चाभी ल क किछ गेलै वाजार ?

—त की करितिये ?

—दरवान लग जमा क क जेवाक चाही छै कोनो ओ तोहर घर छिभी जे डाट साहेब बका चलौ चाभी नचबेत बजार ! हमार बेर कहि चुकल छी । सब काज मे नवानी । पांचो ताला आव बेकार भ गेलै ? डेढ़ सौ त लगावे करतै । की ओ तिवाड़ी भी ?

—नतीस रूपये अनने छलिये । गोद-रेजक छलै ।

—लगौलही कम्पनीक सात-साढ़े सात सौ मे हरदिचून ।

ओ बरसि रहल छलथिन आ हम खौंभा रहल छलौं । नोकरक सोभा मे हिनका स भगदो ने केल बा सके छल । अपने राजदूतक चाभी संगे ल जाइ छथि कलकत्ता आ अलीगढ़ । ओना हमहुं क्यूटरक चाभी जमा क क नहिइ जाइ छिये...बात खतम करक चाही । समय सेहो भेल बा रहल छलै आ भूख तेज मेरु जा रहल छल । बातक सूत्र पकड़ौं ।

ओ मेस ताला तोड़वाक उपाय कर आ देखी जे लंचक कोनो व्यवस्था भ सके छे की ने ।

—कहाँ छे कोनो समान ?

—किछु ने छी ?

—भात आ दालि बना क गेल छलिये । ओकरा जेना भूद मोन पड़ल होइ ।

—अबछा । तो ओ गेट पर स ड्राइ-बर के पठा दे ग ।

—दूनु गाड़ो त गेल छे ओम्हरे ।

—किछ ? एक्केटा स ने ल जाइत गेलै छौंड़ा के अस्पताल ?

—दोसर गेलै अपना डाक्टर साहेब के बजाव' ।

—ओहो । हो...

साढ़े एगारह वाजि रहल छलै । आन दिन पिउन साढ़े बारह बजे मोन पाड़े छल तखन होइ छल जे आव उठक चाही । आइ एखने स अक्कड़ भूभा रहल छल । खेवाक लेल जाइ पड़त होइल । मुदा गाड़ी आओत तखन ने । पता ने कत्ते देरी लगतै ।

सब अपन-अपन काज मे लागि गेल छल । मेस मेबर सब मुदा अनमनाएल

सन । रहि-रहि क हमरा दिख देखेत आ गाड़ीक स्वर अकानेत । हमहुं कागत-पत्र सरिआव लागल रही । दरवान दोड़ल आएल । सब साकांक्ष भ गेल ।

—छेड़ा त मरि गेलै साहेब ।

हं ।

सबहक स्वर एक्के बेर उठलै आ निस्तब्धता पसरि गेलै । मात्र मशीनक स्वर आबि रहल छलै । जेना सब मनुख वीक भ गेल हो । गाड़ी आव मे त आरो विडम्ब भ जेतै ।

अइ खचराइ छौंड़ा के आइए, सेहो एखने हूबवाक छलै ! चूरी मंग होइ छे । एकटा मेस-मुका के नहिइ रहल गेलनि ।

× × ×

मोन-मेस निहालेत, मिमांशा करैत बारह बजाओल । मेस पढ़'चलौं । एखन पांच गोटे की किछु सदस्य बाहर गेल छथि । सुलोचन ताला तोड़ि चुकल कल । एक्केटा तोड़' पड़लै । बाकी क डूध्रीकेट चाभी भेट गेलै । दिन मे भाटा-रोटी आचा भात चले छे से ताही अनुपात मे बनल रहै । ओकरा उदरस्थ केल गेलै । आइ केओ, कोनो तरहक शिकाइत ने केलेक । भात-दालि मे शिकाइतौ की भ सके छलै ।

—मोटका चाउरक भात छी ?

मोटका चाउर सुलोचनक लेल रगहाइ छे ।

—ने, काहिइ सचि गेलै । आइ अने छलिये ।

× × ×

एकटा गाड़ी आबि गेल रहै । डाइरर डाक्टर साहेब के घर तक छोड़ि । एखनि तँ देरी भेलै । पांचो बन सवार भ क पांच माइल दूर होइल इन्निवास गेलौं । सीबनक पहिल बियर-सेशनक उद्घाटन भेलै ! अप्रेल आरम्भ छे तँ पहिल । टोटल एक सौ पाचासी रूपैयाक बिल उठलै । मेस इन्चार्ज देलथिन । पान खेवाक छिल फेर एक माइल आगू गेल गाड़ी ।

शुर्ती काल मेस इन्चार्ज पूछलह ।

अइ रूपैयाक, माने एक सौ पचासी रूपैयाक की करवे ?

मेस खर्च मे देखा दिओ । खाता त भोरे मे छलै ने ?

अइ बेर त जत्ते जे एडव्रस्ट क सकी ।

पानक पीक सभारेत हमर उत्तर छल ।

सम्मिलित ठहाका मे इन्जनक आवाज एक बेर डुबि गेलै

—कुणाल

★

रेल डकैती

प्रशासने लकैत अछि

रेल-दुर्घटना तथा रेल डकैती आइ-कालि भारतीय रेलक दिनवर्षा बर्का भ गेल अछि। समाचार पत्रक पाठक लोकनि सेहो एहि तरहक घटनाक समाचार या त पढ़ित नहि छथि वा जं पढ़बो के-नि तं बड़ सामान्य दंग सँ। स्वभावतः हुनकापर कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छनि। घटना भनहि छोट सँ छोट हो वा १२ नवम्बरक साठा अगत सन भा ६ जूनक बदलाघाट सन पेश सँ पेश किएक ने हो। तँ भरिसक लोक ई नहि जानय चाहैछ जे बखन एकटा बगी थकुचा भ गेलक तखन छ-ए आदमी केमा मुहल हेतक बखन सात सात टा बगी कोशीक पेट मे समा गेलक तखन सतरिह आदमी केना मुहल हेतक ? तँ लोकक मन मे भारतीय समाचार पत्रक प्रति जकर समाचार मे मिलियो भरि सत्यता नहि रहैत छक घृणा नहि जगैत छैक। लोक नहि जानय चाहैत अछि जे प्रेस-समाजीनताक बाहि लेल प्रेस बला सभ चिन्तिया रहल अछि असली अर्थ 'बलाकार' 'वर्णयुद्ध' 'धर्मयुद्ध' आदि जनविरोधी समाचारक उत्पादन प्रसारणे टा किएक होइ छइ। परञ्च एकटा भुक्तयोगी केँ एहिलेहक समाचार पढ़ि प्रतिक्रिया अवश्य होइत छैक आ सेह प्रतिक्रिया हमरा लिखवा छैक बाध्य कैलक अछि।

घटना बड़ छोट अछि समाचार पत्रक भाषा मे। पटनाक एगो समाचार पत्रक अनुसार लगभग आधा दर्जन लोकक सामान डकैत ल गेलक। लगभग शब्दक अर्थ अहाँ स्वयं लगा ली से हमर अनुरोध। ओना अहाँ अगो सोचि सकैत छी जे डकैतक दल मे छेकैक कतेक लोक आ ओकर सभक आवश्यकता कतेक सीमित छेकैक जे मात्र लगभग आधा दर्जन लोकक सामान लय बाँकीक जी-पान बकसि देलकैक। सत्ये संतोष नामक वस्तु एखनो कम सँ कम डकैत मे त छैक।

घटना विगत ८ नवम्बरक थिक। गाड़ी टाटा सुबभरपुर एक्सप्रेस। श्रीटायर क एकटा डिब्बा लगभग १२५ व्यक्ति, जाहिमे गोट दशक महिला छलीह अपन-अपन बगइ देने बखन गाड़ी खुजैत अछि। गाड़ी बखन बरीनी मे रकैत अछि त डिब्बाक लोकक संख्या दोवर भ जाइत अछि। ठीक-ठीक त नहि कहि सकैत छी, परञ्च किछु दूर गेलाक बाद गाड़ी फेर बिलमैछ आ फेर चलि पड़ेछ। रातिक लग-भग साढ़े एगारह बजे बखन राजेन्द्र पूलपर प्राय, बीच-बीचवा मे गाड़ी पहुँचैत त डिब्बा मे एगो दबल आंतक मिश्रित कोला हल सुनाइ पड़ेछ। पश्चात् देखल जाइछ जे छुरा पिस्तोल सँ लेछ गोर दसक लोक पर्सि-

वर केँ मारेत पीटैत नगदी घड़ी रेडियो तथा अन्य जेवर छीनि रहल अछि। हमरो पेटी के छुरा सँ फाड़ि रेडियो तथा टेबुल घड़ी ल लेलक। संयोगवश हम शेष मे रही आ ओकरो सभ केँ उतरवाक इइबड़ी रहैक तँ हाथक घड़ी कोनहुना बँचि गेल गाड़ी बरहिवा टांछन पर हुनू प्लेटफर्मक बीच रुकवाक अवस्था मे भेलक। डकैतक दल उतरि गेल आ संगहि गाड़ीक गति तेज भ गेलक। गाड़ी ऐकवेर बयूल मे रुकलक त हमरा लोकनि स्टेशन मास्टर केँ कइलियेक तखन एक व्यक्ति पेट मे छुरा छगल छेकैक तकरो दबाइ विरो मेलेक। फेर पुलिसोकेँ आगमन मेलेक आ हमरा लोकनि लगभग बीस आदमी सँ बयान लेल गेल।

आम जं समाचार पत्रक रिपोर्टर विचार करी त स्पष्ट भ जायत जे प्रकाशित रिपोर्ट पूर्णतः मनगढ़न्त अछि, फूटि अछि। एहि तरहक रिपोर्ट छपवाक पाछा निश्चित उद्देश छैक असामाजिक तत्व केँ बढ़ावा देनाइ, रेल प्रशासनक अक्षमता पर भ्रामन देनाइ। आ येह थिक भारतीय पत्रका-रिताक असली चरित्र।

आम कने घटना पर विचार करू। सुरक्षित डिब्बा मे प्रवेशाधिकार मात्र ओतवे लोक केँ रहैत छैक जे स्थान सुर-क्षित करबोने हो। तेहना अवस्था मे जं बरीनी मे ओतेक लोक दूकि गेल त निश्चिते टी० टी० साहेबक अनुकम्पा सँ कारण हुनको आमदनीक जरिया त बेह छनि। ओना डकैतक दल बरीनी मे उठल वा तकर बाद बखन गाड़ी बिलमल ततय से निस्तुकी त नहि कहि सकैत छी—परञ्च बरहिवा मे जेना गाड़ी थमलक आ तुरते स्पीड पकड़ि लेलक—ताइ पर विचार करी त स्पष्ट भ जाइछ जे ड्राइवरक साठि-गाठि डकैत दलक संग छेलक। स्वयं टी० टी० महोदय सेहो घटनाक समय उपस्थित नहि छलाह। हुनकेँ बयानक अनुसार भीड़क कारण ओ गाड़क डिब्बा मे छलाह। डिब्बा मे पुलिसक कोनो व्यव-स्थाए ने छल आ जं रहबे करैत त ओहो टी० टी० जकाँ घटनाक समय बाहरे रहैत। विचारणीय इहो थिक जे एहि अंचलक ई पहिल घटना नहि छल।

स्पष्ट छैक जे रेलकें भक्षक अछि। रेल प्रशासने डकैत अछि। जं उपरका कोनो अधिकारी एकर अपवाद होयि आ रेल प्रशासन केँ एहि कलंक सँ मुक्त करय चाहियि—त प्रेसबलाक अनुकम्पा सँ हुनका लग सही रिपोर्ट जाइछ ने पाओत। जनता मे अस्वक सामने प्रतिरोध करबाक मनोबल रहैत ने छैक संगहि आनो व्यवधान रहैत

छैक ! कोनो आवश्यक काम सँ नियत समय पर पहुँचनाइ वा नोकरीक हाजरी। तँ सम्पत्ति गमायो केँ भलेला सँ जुट्टी चाहैत अछि। आ एहि तरहें ई घटना विदेशी कर्म सन दिन दुजाराति चौगुना बढ़ल जा रहलछ।

—उदय कान्त मिश्र

शोणित दे शोणित मैथिलार्य

अन्तःकरण मे भैरवीक नाद, कल-कल निनाद नहि होयत।

हर्षक विषय जे हमहर दू वर्ष सँ जन सामान्य मे चेतना आयल। मातृभाषा प्रेमी प्रवासी मैथिल खूब जोर-शोर लगी-लनि अछि मुदा प्रवासी मैथिलक आन्दोलनक बात, हुनक गर्जन कि गाम घरि पहुँचि सकत ? मैथिली मुक्ति मोर्चा अथवा अन्य कोनो संस्थाक मेव मन्द स्वर सँ तखने गाम-घर जागत बखन गाम घरक सरस्मीन पर मैथिलीक हेतु संगठन होमय। मुदा से अछि नहि।

गाम-घर मे विद्यापति पर्व नहि मनौल जाइत अछि। पेश-पेश शहर आ राजधानी मे एकर आयोजन आदर्श अछि, जाहि सँ सरकारक कान पर डाकिन पड़य। मुदा एहि चोटक प्रभाव दूर-दूर घरि पसरल गाम पर तखने रहैत बखन एकाम निष्ठा, निष्पक्षता आ दलीय भावना सँ उपर उठि केँ आह्वान केँ जेत। परंच स्थिति त एहने अछि जे शोणित ककरो बहल आ शहीद कियो दोसर कइवेत अछि। राधना-चार्य कतबो युग-युग घरि विद्रोहक शंख झुकथु—शोणित दे शोणित मैथिलार्य कतबो हम सभ नय नय भैरवि गाबी, कतबो विद्यापति पर्व मनाओल जायत, अपन गामघर मे मैथिली ओहिना अवहे-लित उदास रहतीह। यावतघरि यथास्थिति बनल रहल, मिथिलाक क्षितिजपर दुर्दिनक कारी नेव मइराहते रहल।

• वैद्यनाथ बिमल

बोनिहारक गीत

चढ़ा ले रे बुधना तौ हंसुआपर शान रओ ॥
हंसुए मे शान अपन हंसुए गुमान हइ
हंसुए हइ अपन परान आर जान रओ ॥

हम सभ कमाणब आर खाएत केओ आन
लागर छगुन्ता ई हइ केहन विधान
ककरा ले' धर्म कर्म ककरा ले' देश हइ
अमरुख के ठकवा ले' हइ भगवान रओ ॥

सोनित सुखा क पसेना बनेलिऐ
तकरा चुआ क जे खेतो पटेलिऐ
बगिलै तँ धरती ई सोना सुगन्धि भरल
मरुआ, खेतारी, गहूम आर धान रओ ॥

रोपने छी कटवे आ घर अपन भरवै
अन्नक अभाबे ने आव हमे मरवै
ठकलक बहुत मुदा आव ने ठकवै हम
कालो सँ लड़वै अरोपि देवै जान रओ ॥

—राम लोचन ठाकुर

With the best compliment from :

★

ASHOK ROAD LINK

9, Munsli Sadruddin Lane,
Calcutta-7

एकटा गोपनीय पत्र :

संदर्भ मुख्यमन्त्रीक घोषणा

प्रसांग मैथिली

ओमान् स्वानामधन्य सम्पादकजी महोदयजी के जय मैथिली ।
आगा हाल-सुरति ई जे भरि छितनी उमेद छल जे बाबा विद्यापतिक वली मे अहाँ सँ भेट होएत आ भविष्य गप शप करब । पटनाक चेतना समिति जखन सभ बेर जवारी नोतिवे अछि तखन अहाँ छुटि जायब तकर संदेहे केना कइल जा सकैत छल । परञ्च जानथि बाबा वेदनाथ जे अहाँ के नहि पाबि जे हमरा कतेक कचोट भेट । ओना अहाँ के नोत नहि गेल आ नहि पटु चलो से नोक भेल । हमरा त पूरा-पूरी क्वीटल भरि विश्वास अछि जे जे अहाँ रहितौ त शुभ-शुभ के कलकत्ता आपस नहि जा सकैत छलौ । अहाँ पूछब जे तेहन कून बात भेलैक एहि खेप । त सेहो सुनिध लिय ।

अहाँ के त जनले होएत जे चेतना समिति जन्मकालहि सँ प्रतिबल जे बाबा विद्यापतिक वली मनबैत आयल-ए से आन संस्था सँ अपन फराक महसूस रखैत छेक । जतना टाका ई अखरे जवार खुशवा मे खर्च करे-ए, ततवा समस्त प्रवासी संस्थ मिलियो के ने क सकेल । अहाँ सभ ने तकर आलोचना केने रहिश्क जे एहि टाकाक अचो जे विद्यापतिक बीह पर खर्च कइल जाइत त आइ ओहिठाम नहुँया-कुकर नहि भुक्ते खोपड़ीक स्थान पर भव्य-भवन शोभायमान रहिते । परञ्च इहो त एही संस्थाक विशेषता छेक जे प्रतिबल राज्यक मुख्य मंत्री, राज्यपाल तथा अव्यय मंत्री लोकनि के बिभो करा आनि लेख या इहो लोकनि प्रतिबल मैथिलीक लेल छोन मदल बनेबाक घोषणा करैत रह-लाइ-ए । गत बर्ष जे एहि सनातन नियम मे व्यवधान भेलैक त एहि लेल निश्चित दोखी किछु भगची छौंदा सभ छल, नेकि ई संस्था वा मंत्री मदोदय । कहूँ त भला, ई केहन विचार-नियार जे स्वनामधन्य मुख्य मंत्री के पनहीक माला सँ स्वागत कइल जाय । आ तँ जे मुख्यमंत्री महोदय पतनकान ल लेलथि त वेनाइए की ? त से जे कहैत छलौ, एहि बेरक स्थिति सामान्य छलैक आ तँ मैथिल कुल-दुषण, बिहारक बड़द-पुत्र, जन-प्रतिनिधि, दुर्नामधन्य, मुख्य मंत्री प्रवर श्री श्री ८०१ श्री डा० श्री जग-नाथ मिश्र जी उपस्थित छलाह । ओ भरल सभा मे उन्मुक्त कंठे घोषणा केलनि जे आइ दिन सँ ओ मैथिलीक निमित्त किछु नहि करता । ओना ओ इहो कहलनि जे जखन लोक हुनकर सभ काज के मैथिली विरोधी कहैत अछि । त आव ओ एहन काज नहि करताह अहाँ के त एगो खिसा बुझल हएत, जे एगो बच्चा के सभ दिन माँ-बाप घरिया पहिरा देखिन । जहन छेटगर भेल त एक

दिन हुनकिन बाठ आई अपने घरिया पहिरा त । बेचारा कएक खेप ओरिया-ओरिया के घरिया पहिरलक मुदा ई लोकनि सभ बेर दूसिदेथिन । अन्त मे त कहिश् देलथिन—हाथ रे अपरोनक, एखन तक घरियो ने पहिरय एलह । एतवा सुनिते छौंदा घड़िया फेकि फनकए लागल—आब हम घरिया पहिरा ने करब नहुँटे रहब । माँ-बाप सोचलनि जे जे ई नहुँटे रहत त एकरा की हेतैक, टोल-पटोल त हमरे लोकनि क खिचास हेतए जे केहन अपाटक सन्तान के जन्म देलथि आ तकरा ओहिना छोड़ियो देत छथिन तै फेर पोलाभ्य लागलाह । किन्तु हुनक गप जे बेचारे मिसरजी के पोखोवियोवला केओ नहि ।

हम बुझैत छी जे अहाँ के उपरक खिसा अनसोझीत लागत । अहाँ सोचब जे ई हम मिसरजीक बचाव लेल गइल-ए । त जे सत्त पुछी त बाबू जे देखि पाकल आम सेह ने भेलाह ईल भा ।

ओना ई गप त हमहूँ जनेत छी जे जतय मुर्गी नहि रहैत छेक, परात ततहुँ होइते छेक । मिसर जी मैथिलीक-मिथिलाक लेल केवे की केलनिहे जे आव नहि करताह ? मिथिला विश्वविद्यालय हो वा बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान—ई त अखेय खू० ललित बाबूक देन थिक । ई एतेपरि अवस्ते केलनि जे मिथिला सँ पहिने ललित बाबूक नाम जोरि देलनि । हिनका के ज्ञान भाक योग देतनि आ बुझाओतनि जे हेयो सुख-चिराज ललित बाबू हमरा सभक लेल अखेय अवस्ते छथि-परंच मिथिला सँ पेघ नहि । ख० ललितो बाबूक आत्मा एहिधुणित पदयंत्र सँ छटपटाइत होइत । जं डार मे दम्भ अइ त एगो नव वि० वि० हुनकर नाम पर बना ने दियतु । रहलबात मैथिली अकादमीक । जं थोड़े कालक लेल मानियो छी जे ओ भोजपुरी अकादमी, उर्दू अकादमी वा चमचा अकादमी बना दितथि-मैथिली अकादमी छोड़ि सकैत छलाह । परंच से केने ओते पेघ संख्यक कुटुम्भ परिवारक भरण-पोषण केना होइतनि ? ओतबे किश्क, जनता सरकार जे मैथिली माध्यम सँ शिक्षाक प्रारम्भ केने छल—ई तकरो नीपि पोति देलनि । उनटे मुसलमानक भाषा कहि उर्दू के दोसर राजभाषा बना देलनि । एक गाम मे दू भाषा कहियो सुनलो ने छल । भइयारी मे भगदा बनेबाक भिनाउज करेबाक अभिनव तकनीक ! जं सत्त पुछी त अंग्रेजक समय मे ई भेल रहितथि त निश्चिते ब्रिटिश बहादुर हिनका 'लार्ड'क उपाधि सँ विभूषित केने रहति ।

परञ्च सभ जनितो-बुझितो हमरा की

गर्ज पड़ल-ए जे विरोध करी ? जखन भरल सभा मे ककरो गजरा नहि सहरलेक तखन लाल बुझकर के कुकर कटने छलनि ? असल मे जं पुछी त ई बातिश् हिनरा थिक—जन्मना भनहि नहि हो, कर्मणा । तेहना हालत मे हमरो जे बर्ष मे दू सभक परि लशि जाइए आ सध दू-एक भोजन दक्षिणा भेटि जाइए से अपने सँ किश्क छोड़ि दी ? एगो पाइ त केओ देनहारे नहि । एही विरोधक कारणे कतेको कवि कबु आमंत्रितक सूची सँ बारल छथि । कतेकोक नाम बाद मे काटि देल गेलनि ।

त तें कहल जे अहाँ रहितौ त चुप रहि ने सकैत छौँ आ जं किछु बजितौ त सरकारी-अर्ध सरकारी चमचा सभ द्वारा अंग-भंग कइए देल जाइत । तें हमर त सलाह अछि जे अहाँ वेटी कूद-फान नहि करी तेह नीक । कहलैक किने जे अपने बीने बापक नाम । ई भाषा छोड़ि दिय जे जे जनता मिसर जी के सिंहासन पर बैसलकनि से उतारियो सकैत छनि । असल मे हमरा लोकनि मूख के छिह त बना सकैत छी । किन्तु सिंहा के पुनः नूष बनेबाक मंत्र बिसरि गेल छी । संगहि अहाँक जननी जन्मभूमिश्च...बला नारा पुरान भ गेल अछि । आइ-कालि मिथिलाक नव नारा छेक रोट-कोट-नोटश्च स्वर्गादिपि गरीयसी ।

पत्र अनगल रूपे दीर्घकाय भ गेल तें शेष करैत छी । अन्त मे अपने सँ पादबद्ध प्रार्थना जे एहि अति नितान्त गोपन व्यक्तिगत पत्र के अपनहि तक सीमित राखी ।

पत्रोत्तर नहि पड़बाक प्रबल आकांक्षी
ओमान लाल बुझकर
बुझनुक ग्राम बासी

कलकत्ताक भाकावला.....
महानक सभ मजदूर अपना मे मेक केने अछि आपद-विपद मे एक दोसराक संग देत छेक । एक संग मिलि आवाज उठ-वेष्ट । ओना एकरा शुभ लक्षण मानक चाही । इहो संगतन एक मकान सँ दोसर मकान के जोड़ि सकेछ अपन आयाम बढ़ा सकैत । अपने मे सँ केओ नेता बहरा सकैत छेक आ तेखन उचित मजूरीक अपेक्षा कइल जा सकैत । जे वर्तमान मे निश्चित नहि भेटैत छेक ।

केनिंग स्ट्रीटक भाजी (परिचय लिख नाइ मना बेलनि) एगोकलेन्डर व्यवसायीक दोकानक संग संयुक्त छथि । हिनक आमदनी त आरो थोड़ छनि परंच तैयो निवाह क लेत छथि । आभम छोट छनि ।
—मुजतबा अली

एकांगी.....
अइ । ई बात सत्य जे मिथिलाक मोगोलिक अवस्थान एकरा बहुतेद वरि बाहरी आक्रमण सँ बचओने रहलैक आ जे हेतु बाहरी आक्रमण नहि भेलैक तें केओ महाराणा प्रताप वा शिवाजी एहिठाम नहि भेलाह । परञ्च इहो गप तहिना सत्य छेक जे जखन दिल्लीक लोदी मिथिलापर आक्रमण केलक त वीर शिवसिंह

विहनाद क उठाल । एक नहि अनेको खेप दिल्ली सल्तनत के मिथिला सन छोट छोन राज्य लग पराजित होमय पड़लैक । जं पुखी राबक संग तरुआरि केने चन्द्रबर दाई रहैत छलथिन त शिवसिंहक संग सेहो वीर कवि विद्यापति रहैत छलाह । की महावली लोरिक मिथिलाक संतान नहि छलाह ? जनिका टाल टोकने भूकम्प होइत छल आ जे अपन हुनू हाथे दू गोद दंतार हाथीक नाकड़ि पकड़ि ठेलमासुक देप सन फेकि देत छलाह एहन वीर सन्तान कश्कटा कुन देश जनमा सकल-ए ? आइ मनहि लोक के लोरिक एहि पराक्रम-गाथा मे अविश्वास होनि परञ्च महाभारत मे भीम द्वारा हाथी के आकाश मे फेकि देबाक कथा आ ठारजनक कथा-गाथा जं सत्य छेक त कुन कारण नहि जे महावली लोरिकक कथा-गाथा पर संदेह कइल जाय । लोक सेवक महावीर राजा सलहेस, राय रणपाल ओ हुनक बाळक गुगली रणपाल, बंठा चमार आदि वीर पुत्र सँ मिथिलाक इतिहास भरल अछि । एकदम निराधार थिक ई कहनाइ जे निश्चिते मनगदन्त थिक, फुवि थिक, एकांगी थिक । ई बात सत्य जे मिथिलाक अतीत साहित्य कलाक लेल स्वर्णयुग छल, चारिगोट दर्शनक जन्म स्थान रहल-ए । ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-कला, दर्शन सभ क्षेत्र मे ई पूर्व भारतक पथ प्रदर्शक रहल-ए । ई स्वाभाविकको छेक कारण मिथिलाक अतीत शान्ति सम्पन्नताक रहल-ए । किन्तु सभ रहितहुँ मिथिला मात्र एतबे सँ नहि अइ । जे मिथिला गणतंत्रक जन्मदाता अइ से निश्चिते ओकर रक्षाक महसूस सँ अपरिचित नहि रहल होइत । मिथिलाक इतिहास, मनहि जे कुनू कारणे हो, दोसर पक्ष के एकदम सँ बिसरा देने अइ, जे दोसर पक्ष थिक पुष्पायक वीरताक । तें लोक जनक-यश बल्लवक नाम त जनेए, गौतम-कपिलक नाम त जनेए मुदा शिवसिंह सलहेसक नाम सँ अपरिचित अइ, लोरिक-गुगलीक नाम सँ अपरिचित अइ । ई त अन्धवाद दी मिथिलाक सर्वहारा वर्ग के जे आइ भरि एहि महा पुत्र लोकनि के मिथिलाक महान विभूति लोकनि के अपन कंठ मे जोराओने अइ । तें महाराज वा गुगरी नाच मे तथाकथित पदल-लिखल घनी-मानी लोक मनहि नहि जायु—तैयो लोकक करमान पड़ैत रहैए । अपन माटि-पानि सँ जुड़ल, अपन वीर पूर्वजक गाथा हेवाक कारण महारानी मैथिल द्वारा नोति के आनल हिन्दी नाटक के इहो महाराज वा गुगली सलहेसक नाच आइ मिथिला सँ बेलेबा मे समर्थ भ रहल-ए ।

आइ इतिहासकारक ई पहिल आ प्रधान कर्तव्य छनि जे ओ उज्ज्वल पक्ष के प्रकाशित करथि जे कि छोट-मोट दोष के ल के फोसेदी सँ भोकर करबाक प्रयास करथि । ६ दिसम्बर १९८० क आन्दोलनक पश्चातो जं केओ कहैत छथि जे मैथिल आन्दोलन नहि क सकैए त ओ किन्नहुँ मैथिलक शुभचितक नहि छथि । एहि तरहक कथन मैथिलक मनोबल के तोड़बाक प्रयत्न पड़यंत्र छोड़ि आर किछु नहि थिक ।
—अप्रदूत

अप्रदूत
५/१२

सभा-समिति

नवकी दिल्ली, १० नवम्बर १९८१ स्थानीय मविलंकर समागार मे मिथिला संघ न० दि०) द्वारा दू दिना विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन कएल गेल । पहिल दिनक उद्घाटन कर्ता छलाह श्री केदार पाण्डेय रेल मंत्री, भारत सरकार तथा मुख्य अतिथि श्री वसंत साठे, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, भारत सरकार । अध्यक्षता केलनि पंडित श्री हरिनाथ मिश्र, संसद सदस्य । मुख्य वक्ता मे जनिक नाम छलनि श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, अमरावती मंत्री, भारत सरकार, ओ अनुपस्थित रहलीह । अन्योन्य गणमान्य व्यक्ति से सर्व श्री मोटा पासवान शास्त्री, तटीत चन्द्र मिश्र कृष्ण चन्द्र पंत, मो० शफी कुरैशी, डी० पी यादव, के० पी० तिवारी, शिव-चन्द्र भा प्रो० अजीत मेहता, राम उदाय पाण्डेय, श्रीमती अनीजा हमाम, आदिक नाम उल्लेखनीय अछि । सांस्कृतिक कार्यक्रम मे भाग लेलनि श्री सरोद जी, श्री मती सारदा सिन्हा । एहि अवसर पर एगो भव्य मजीरा नृत्य प्रस्तुत कएल गेल । अन्त मे श्री गुणानन्द ठाकुर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन कएल गेल ।

दोसर दिन, १ दिसम्बर उद्घाटन कर्ता छलाह पं० श्री लक्ष्मीकान्त भा, अध्यक्ष, आर्थिक सुधार आयोग, भारत सरकार । अपन उद्घाटन भाषण मे श्री भा जी कहलनि जे बंगला भाषाक उद्भव मैथिली सं भेल । विद्यापति के बंगलाक कवि मानवाक इहए कारण छल । वृत्त भाषा मे बहु समानता थलेक जे कालान्तर मे निरंतर सम्यक्क अभाव, स्थानक दूरी आ स्थानीय आवश्यकताक कारणे फराक होइत गेल आ बंगला भाषा ओ लिपिक अलग विकास भेलक । एहि संदर्भ मे ओ पूर्वांचलक भाषाक उद्भव ओ विकास एवं परस्पर प्रभावक गहन अध्ययनक आवश्यकता पर जोर देलनि । अपन अध्यक्षीय भाषण मे हिन्दुस्तान दैनिकक सम्पादक श्री विनोद कुमार मिश्र जी कहलनि जे विद्यापति पहिल कवि छलाह जे परम्परागत संस्कृत तथा अपभ्रंश के छोड़ि जन-भाषा मे काव्य रचना केलनि आ मात्र रचनाए नहि ओकरा लोक प्रिय सेहो बन-ओलनि । इहए कारण थिक जे एखनहुँ बरि घर-घर मे हुनक गीत गाओल जाइत अछि । मुख्य वक्ता श्री गंगा शरण सिंह जीक अनुसार विद्यापतिक काव्य मे आध्यात्म, भक्ति आर सौन्दर्यक अद्भुत समन्वय अछि । हुनक गीत मे गति, लय आर भावक तेहन सामंजस्य अछि जे ओकरा आधार पर कोनो सफल नृत्य नाटिकाक आयोजन कएल जासकेछ । आलोक मुख्य अतिथिक पद पर छलाह श्री वेदानन्द भा, भारत स्थित नेपालक राजदूत ।

एहि अवसर पर एक भव्य कवि

सम्मेलनक आयोजन सेहो भेल छल । आमंत्रित कविगण मे छलाह सर्व श्री महा कवि यात्री, राम उदाय पाण्डेय, रमानाथ अवस्थी, आर० सी० भारद्वाज, कवि चूड़ामणि 'मधुरा, कविवर सुमन, प्रवासी, अमर नारायण कुंवर, रवीन्द्र, महेंद्र धीरेन्द्र एवं मायानन्द मिश्र ।

अन्त मे सर्वश्री शिलाकांत, गिरीश, सरोज, लेखनाथ, सारदा सिन्हा, ए० के० सिंह, एवं नाटक प्रभागक कलाकार लोकनि द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल ।

(देसिल बयनाक दिल्ली प्रतिनिधि सूर्यनारायण मंडल द्वारा प्रेषित)

× × ×

कलकत्ता २१ नवम्बर ८१ बड़ा बाबाय युवक सभा हॉल मे मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति स्मृति पर्व मनाओल गेल । अध्यक्षता केलनि श्री मुकुटधारी मिश्र तथा प्रधान वक्ता छलाह मिथिलेन्द्रजी कवि पति के अर्द्धाब्धि दिनिहार अन्यान्य वक्ता-मे छलाह सर्वश्री बाबू साहेब चौधरी, राम लोचन ठाकुर, शरद चन्द्र मिश्र, ब्रह्म नारायण भा, श्रीदेव भा आदि । एहि अवसर पर विद्यापतिक 'सखि हे हमर दुखक नहि ओर' गीत पर आधारित भावनृत्य प्रस्तुत कएल गेल तथा आर संगीतक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल ।

कलकत्ता, १४ नवम्बर १९८१ । संस्कृत साहित्यक मर्मज्ञ आ मैथिलीक प्रकाण्ड पण्डित पं० जयकान्त भा 'श्रुतधर' क आकस्मिक निधन पर स्थानीय मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा एक शोक सभाक आयोजन विद्यापति विद्यामंदिरक सभागार मे कएल गेल । अध्यक्षता कएलनि परिषदक अध्यक्ष श्री मुकुटधारी मिश्र तथा भाग लेलनि स्थानीय सभ मैथिली सेवी संस्थाक प्रतिनिधि लोकनि । अर्द्धाब्धिक क्रम मे विभिन्न वक्ता लोकनि 'श्रुतधर जी' क व्यक्तित्व आ कृतित्वपर प्रकाश देलनि तथा ओहि सं शिक्षा लेबाक अनुरोध समस्त मैथिली भाषी सं केलनि । स्व० श्रुतधर जी मे काव्य सृजनक तथा कुनू वस्तु के नव दंग सं आ एकदम मौलिक रूप मे प्रस्तुत करबा अद्भुतक क्षमता छलनि । 'सीतायण' महाकाव्य मे सीताक गरिमाक उपास्थापन हुनक कला-कौशलक परिचायक थिक । मैथिली मे 'मेघदूत' ओ 'गीता-जलि'क पद्यानुवाद अपन विशिष्ट स्थान रखेछ । एकर अतिरिक्त ओ कतेको मैथिली सेवी संस्थाक संरक्षक छलाह । मैथिली भाषी सदा एहि विभूतिक श्रृंगार रहत । अर्द्धाब्धि अर्पित केनिहार मे छलाह सर्व श्री शरद चन्द्र मिश्र, कालीकांत भा, हरिश्चन्द्र मिश्र, मिथिलेन्द्रजी, राम लोचन ठाकुर, किशोरी कान्त मिश्र, एवं ब्रह्मानन्द सिंह भा । अन्त मे दिवंगत आत्माक शान्तिक हेतु दू मिनटवरी मौन प्रार्थनाक उपरांत सभाक विसर्जन भेल ।

बाल कविता

नजि छइ तकर विनाश

तरुआ तिलकोरक कद
ककरा लो ने नोक
अनसोहांत ककरा लगे
कोवर घर के गीत
किन्तु मात्रटा नीह सं
होएत की उपलब्ध
लोक नपुंसक के कद
की करैत प्रारब्ध
पुरुष सिंह निश्चित सकए
तोड़ि अकाशक चान
पुनि दुर्लभ एहि जगत मे
तकरा ले की आन'
मरियो अमर बनैत अछि
कीर्तिक संग महान
वयमहीन मनुष्य के
बचै ने नाम निशान
दिय' दिय' टा मात्र सं
भेटय नबि अधिकार
बंचलोटा बुरि जाइ छइ
तेहने छइ संसार
हाथ पसारल बाटपर
मरय हजारो लोक
कुकर बिलाड़ि मृत्यु पर
के मनबै छइ शोक
हाथ बढ़ा जे ल' सका
छइ तकरे इतिहास
जागल सदा सतर्क जे
नबि छइ तकर विनाश ॥

—राम लोचन ठाकुर

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाइ । कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन ।

सम्पर्क रुक

विज्ञापन व्यवस्थापक
अरुणोदय प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन

१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाइ ।

२—'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक । आन्दोलन सम्बन्धी रचना के अप्रधिकार बेल जायत ।

३—मिथिला मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाइ ।

४—'देसिल बयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ ।

कह लोचन कविराय

आइ एम एफ के कर्ज थिक एक दवा सओ मर्ज
बहु बेचि स्वाधीनता प्राप्त करब तें फर्ज
प्राप्त करब तें फर्ज अर्ज ई आइ समय के
समाजवादक तर्ज उत्स क्षमताक उदय के
कह लोचन कविराय ओ महा शत्रु देश के
जे करैत छि निन्दा कर्जक आइ एम एफ के

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर भा द्वारा प्रकाशित तथा पायनिगर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, बुन्दावन
वेशाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित । सम्पादक : श्री जनार्दन भा

स्मृति रचना

वर्ष—२ अंक—४

जनवरी, १९८२

मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

भीख नहि, अधिकार चाही

दिल्ली मे आयोजित विद्यापति-पर्व समारोहक उद्घाटन करैत रेलमंत्री श्री केदार पाण्डेय मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे सम्मिलित करवाक माग के समर्थन करैत एहि छल एक शिष्टमंडल के प्रधान मंत्रीक संग भेंट करवाक आवश्यकता पर जोर देलनि। ओ आरो कहलनि जे एहि शिष्टमंडलक नेतृत्व ओ स्वयं क सकैत छथि जे कहल जानि। केदार बाबू एहि सं पूर्व रांची मे सेहो ई घोषणा केने छलाह।

एहि मे कनिओ संदेह नहि जे केदार बाबू मैथिलीक शुभेच्छु छथि। मिथिलावासीक दीर्घकालीन माग आ आशा—मिथिला विश्व विद्यालय तथा बिहार लोकसेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हिनकहि मुख्यमंत्रीक काल मे भ सकल। मैथिली अकादमीक निर्माणहुं मे हिनक सहयोग सद्भावनाकें बिसरल नहि जा सकैछ।

बहोबर शिष्टमंडलक प्रश्न छह, हमरा पूर्ण स्मरण अह जे १९७० मे अखंड स्व. ललित बाबू मैथिलीक प्रतिनिधि लोकनि के कहने रहथिन जे एहि निमित्त संस्थाक नहि, संसदीय समिति (Parliamentary Committee) क प्रयोजन छैक, आ हुनके निर्देशानुसार एगो समितिक निर्माणो भेल छल जकर संयोजक छलाह श्री यमुना प्रसाद मंडल आ प्रायः मैथिलीक निमित्त यदा-कदा बबनिहार समस्त सांसद लोकनि सदस्य छलाह। खेदक संग लिख्य पड़ेछ जे ई समिति तेहन अकर्मण्य भेल जे एकर चर्चा नदारद। पता ने शिष्टमंडल सं केदार बाबूक तात्पर्य कोन तरहक शिष्टमंडल सं छनि। परञ्च जे एहने शिष्टमंडल सं होनि त आगा प्रयास केनाइ व्यर्थ। कहवाक प्रयोजन नहि जे मिथिलाक सांसद सभ 'चीटर्स' थिक, नमक हराम थिक। ओ खायत त मिथिलाक परञ्च पहरा करत दिल्ली पटनाक। दोख ओकरो सभक नहि छैक। ओ सभ हमरा सभ के, मिथिलावासी के बड़ो बराबर नहि बुझैछ। लाठी-लठेट' बीन्दावाद। करिया टाका बीन्दावाद !!

जं केदार बाबूक तात्पर्य आन तरहक शिष्ट मंडल सं होनि, जकरा सभक प्रयास आह्वार थोड़-बहुत काज भेलह, त ताहू संवत्स मे हम फेर १९७० क कथा दोहराब। १९७० क दिसभर मे एहि तरहक शिष्टमंडल प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी सं भेंट केने छल आ ओहो सहानुभूतिपूर्वक विचार करवाक आश्वासन देने छलीह। परञ्च १९८१ नीति चुकल। आह्वारि श्रीमती जी के एहि समस्या पर विचारा करवाक पल्लवति नहि भेलनि वा जानि ने सहानुभूतिक श्रोत्र सुला गेलनि। तें जं फेर कुनू शिष्टमंडल भेंट करबे करनि आ भ सकैछ फेर आहैन आस्वा सनो भेंटि जाइन तथापि संभावित फलक संभावना नहिजे बुझना जाइछ। स्पष्ट छैक जे आजुक राजनीति में, आजुक नेता लोकनिक लेल स्मार-पत्र वा अस्वासन कोनो महत्व नहि। आश्वासन ठकवाक लेल होइत छैक आ स्मार-पत्र भाषा ओ लोकनि बुझैत नहि छथि। ओलोकनि एकेटा भाषा बुझैत छथि क्रान्तिक, रक्तप्री क्रान्तिक। प्रमाण अह आसामक आन्दोलन।

केदार बाबू के हुनक सद्भावनाक लेल बन्धुवाद परञ्च हुनका बुझि लेबाक चाहियनि जे हुनको वक्तव्य सं मिथिलावाचक सांसदपर कोनो प्रभाव पड़निहार नहि। स्वान प्रवृत्तिक संग विवेकक प्रश्न ने उठि सकैछ। तें मिथिलाक रौंदी-दाही महाभारीपर पटना-दिल्ली दरबार मे बहस नहि होइ छह। तें किछु लाल सिन्धी भाषा के संविधान मे स्थान भेंटि जाइत छैक मुदा चारि कोटि लोकक मातृभाषा ओहि सं बारल रहैए। अक्षणाचल-मेघालय सन राज्यक निर्माण भ जाइ छह मुदा मिथिला के लिचड़ी राज्यक संग राखि देल जाइछ। इहए करण छैक जे मिथिला मे रेल-बस नहि वाटो-घाटक स्थिति सोचनीय छैक। कलहरखानाक चर्च की हो—एगो अशोक पेपर मिल बनले त सेहो उठि के आसाम चलि गेलें आ कोशी समस्या त 'एवर लास्टिंग स्टोरी' अहिए।

मिथिलावासी के भीख नहि, अधिकार चाहियेक। मैथिला के संविधान मे स्थान हो—से हमर न्योयोचित माग थिक। हमर अधिकार थिक आ तकर पूर्ति केनाइ सरकारक कर्तव्य। एहि निमित्त शिष्टमंडल क प्रयोजन नहि हेबाक चाही। परञ्च

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि जारि सुझह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जबान

जनकपुरक विद्यापति-स्मृति पर्व :

स्थिति आ अपेक्षा

जखन कवनो हमरा लोकनि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक चर्च करैत छी त निश्चिते भारत वा नेपाल ताह बीच मे नजि अवेए। एवो केना करत जखन कि मिथिला-मैथिल-मैथिली अपने आप मे सम्पूर्ण अह अनेक नजि-एक अह। ओतवे किहक, वियाह-दानहुं क समय हमरा लोक-निक मन मे एहि तरहक भावना नजि बनैए जे बीच मे एगो आदि छह जे एके जमीन के जमीनक फासल के दू भाग मे विभाजित करे छह, एक दिसक पानि के दोसर दिस जेबा मे बाधक होइ छह। आ इहए भावनाक नजि जन्मनाइ एह आदिक कृतमता के प्रमाणित करैए। परञ्च आह इहए कृतमता सत्य छह कारण एकरा पाछा राजनीति छह आ आजुक युग मे राजनीतिह सभ सं पैघ सत्य थिक। ओना भावना सं राजनीतिके जन्म लेबाक घटना कुनू नव नजि, किन्तु मिथिला-मैथिल-मैथिलीक संदर्भ मे एहि तरहक बात केनाइ नवम अचरबक बात केनाइ सन इहएत।

से जे हो, किन्तु ई बरि सत्य छह जे आह आदिक दुनू कातक मैथिल पछुआएल अह, ओकर भाषा-संस्कृति आ आन-समस्या सभ सरकार द्वारा अवहेलित छह। एहि संदर्भ मे एहि पारक तबा कथित गण-तांत्रिक आ ओइ पारक राजतंत्री सरकार मे वड़ बेसी फर्क नजि छह। फर्क नजि छह दुनू कातक मैथिल मे जे अपन दीन-हीन अवस्था लेल सरकार सं बेसी दोखी अपने अह कारण ओकरा मे त्याग बलिदानक भावनाक, जकर वड़ दीर्घ आ गौरवशाली परम्परा मिथिलाक रहलह—एहनो पूर्ण अभाव छैक। अभाव छैक संवर्ष चेतनाह। किन्तु, जे थोड़ बहुत चेतन लोक अह से अपन मान-मर्यादा छैल, अपन अधिकार पेवालेल मुगबुगा रहल-ह, आवाज बुलन्द क रहलह।

एहि सभक अतिरिक्तो नेपालक स्थिति भारत सं भिन्न छैह। ओहठाम राजतंत्र

छह परञ्च भारत मे तथाकथित गणतंत्र। इतिहास प्रमाण अह जे नेपालक राजवंश मैथिलीक प्रबल पक्षवर आ पोषक रहलह जखन कि भारतीय गणतंत्र जन्मजात मैथिली विरोधी। नेपाल मे मैथिली भाषीक संख्या भारतीय मैथिली भाषीक संख्याक एक चौथाइ सं बेसी नजि छह। राष्ट्रीय जनगणनाक अनुसार अठारह जिला मे तिरफन लाल मैथिली भाषी छथि। ओना भारतीय जनगणना जखन चारि कोटि मैथिली भाषी के एको कोटि नजि लिखैए ताहठाम निश्चिते नेपालक जनगणनाक, सत्यता पर प्रश्न चिन्ह नजि लोकाक चाही, तथापि हमरा हिसाबे ई संख्या किछु पैघ अवलसे हेबाक चाही। जं जनगणनेक संख्या के सत्य मानि ली तयो नेपाल मे एकर दोसर स्थान छह। किन्तु खेदक विषय जे नेपाल सरकार एहनोचरि एकरा दोसर राष्ट्रभाषा नजि घोषित केलकह आ मैथिली भाषी क्षेत्र मे राजकाज एहि भाषा मे कर-वाक व्यवस्था नजि केलकह। ई निर्विवाद नेपाल राजवंशक आदर्श परम्पराक विपरीत थिक आ श्री ५ को सरकारक उदारता-सहृदया आ विवेक-बुद्धि पर प्रश्न चिन्ह लग-बेह। एहठाम हम० ए० बरि मैथिली पठन-पाठनक व्यवस्था छह मुदा शिक्षाक माध्यमक रूप मे मैथिली के स्वीकृति नजि देल गेलह। बूझना जाइए जेना ई सभ भारतक देखादेखी चलि रहल हो, जे निश्चिते एगो स्वाधीन देशक मर्यादाक प्रतिकूल थिक।

४-५ दिसम्बर के अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषद द्वारा जनकपुर मे आयोजित विद्यापति स्मृति पर्व के एही परिप्रेक्ष्य मे देखल जा सकैए। समारोहक उद्घाटन केलनि नेपालक भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री मातृका प्रसाद कोइराटा-मातृका बाबू गणतंत्रिक विचारक सुयोग्य आ अनु-भवी राजनेता छथि, मैथिलीक प्रबल पक्ष-वर छथि। एगो स्वाधीनता-प्रेमीक हेतु

असंख्यत त ई अछि जे सरकार काग्रेसी सरकार—जकर बर्चस्व सभदिन मिथिलावाचक मे रहलह, जन्मजात मिथिला-मैथिली विरोधी अछि।

आह समय आवि गेलह जे मिथिलावासी के साधुरूपी एहि सरकारी रावण के चीन्हा पड़तनि। चीन्हा पड़तनि एकरा द्वारा बनाओल। पठाओल वर्णप्रेमक स्वर्णमृग के जे वर्णकहलक बीच थीक आ आह-भाह मे कपर फोड़ौअलि करबैए आ सामूहिक समस्याक समाधान छैल, वातीय उत्थान छैल हमरा लोकनि के एक संग नहि होमय देह। हमरा लोकनि के अपने बाहुबल आ बुद्धिबल पर भरोस राखि भगुएबाक चाही। प्रश्न अस्तित्व क छैक। अधिकार भील माडने नहि भेटैत छैक। एहि लेल चाही संवर्ष—रक्त संवर्ष।

—जय मैथिली

दोसर बात जे ओ कहलनि से ई जे
 बाइ दोसर विद्यापतिक प्रयोजन अइ
 ठीके बाइ विद्यापतिक नाम जपने मैथिलीक
 विकास नहि हेतके। प्रयोजन छइ विद्या-
 पति परम्परा के बिहराक भा तँ एक नहि
 बनेको विद्यापतिक प्रयोजन—जे फेर एक
 खेप 'बाल चन्द बिगनावाइ भाषा'क उद्घोष
 क सकथि, मैथिली-साहित्य भंडार के भरि
 सकथि, बनबेतना बसा सकथि, पुरनक
 जिनगी क सकथि आ मिथिला-मैथिलीक
 ललित विकास क प्रयास क सकथि।
 प्रयोजन अइ मैथिलीक प्रचारेक असीमित
 साधकिय सुगमता लेवीक प्रयोजन
 बाइ तँ मैथिलीक बढि के बल लेवीक
 लेख लेखन लेखि, बसा सुन-बोच-
 सुनक लेख लेखि आ बिक के बल
 लेखन क लेखि

कालर रश्मि, विस्तारो नर के
कालर रश्मि, विस्तारो नर के
कालर रश्मि, विस्तारो नर के
कालर रश्मि, विस्तारो नर के
कालर रश्मि, विस्तारो नर के

—श्री सरस्व

६ दिसम्बरक प्रदर्शन

ठठपाल

मिथिलांचलक यातायातक समस्या पर लिखेत हम स्पष्ट कहने रही (देसकोष, जुलाई १९८१) जे एकर स्थिति कुनू साम्राज्यवादी देशक उपनिवेश सं नीक नहि छैक। हम इहो लिखि चुकल छी आ से पूर्णतः सत्य अछि, जे आजुक युग मे कुनू क्षेत्रक आर्थिक विकास बहुत दूर चरि यातायातक सुविधा पर निर्भर करैत। कस्बोक प्रयोजन नहि से एहि निमित्त हमरा लोकनि समय समय पर सरकारक समक्ष अपन असुविधा के रखैत ओकर समाधानक माग करैत रहल छी, किन्तु बहिरी कदत सन भारत सरकार आ तकर पोआ बिहार सरकार कहियो कान नहि पटपटोओलक। समस्या जतेक तते पड़ल अछि। धेरैक सेहो एकटा सीमा होइत छैक आ तकर अतिक्रमण सेने लोक दोसर बाट पकड़वा छैक बाध्य भ जाइए। ६ दिसम्बर १९८१ क घटना एकरे अवलंब प्रमाण थिक।

विगत ६ दिसम्बर के बिहार अवामी पंचायतक नेतृत्व मे मिथिलांचलक हजारी लोक हावड़ा टीशन पर जमा भेल छल। 'गाड़ीक चक्का जाम कर'—एकरा लोकनिक नारा छलैक आ नाक छलैक—हावड़ा तथा सियालदह सं एक-एक गोटा एक्स्प्रेस गाड़ी मुजफ्फरपुर क लेल देल जाय (२) मिथिला आ नार्थ बिहार मुजफ्फरपुर सं आगा नहि जाय, (३) हावड़ा मुजफ्फरपुरक एगो सुपर एक्स्प्रेस गाड़ी देल जाय, ललीसराय सं मुजफ्फरपुर चरि दोहरी लाइन हो तथा समस्तीपुर दरभंगा बड़ी लाइनक शिथ निर्माण हो। प्रदर्शनकारी सभ के पुलिस भीतर नहि जाय देखैके तें गाड़ीक चक्का जाम त नही भेल परजब प्रदर्शनकारी सभ भाषण नाराबाबी आरम्भ केलनि। ओना किछु व्यक्ति लाट फारम दिख बटुवाक प्रयास अवलसे केलनि फलतः पुलिसक लाठी चार्ज भेलैक आ गोटे पचाते लोक भाइत भेल। थोड़ेक काळक हेतु भीड़ अवलसे छिड़िया गेलैक परंतु नूर अहमदक सफल नेतृत्वक कारणे ओ सभ फेर बना भेल। भाइत लोकनिक प्राथमिक जिक्रिवा कलाओल गेल, मनेबर के माग पत्र देल गेल आ एमहर नाराबाबी चलेत रहल। एरेष्ट भेल सहकर्मी के नूर अहमद अपना जमानत पर मुक्त करवओलनि।

लाठीचार्ज मे गोपीकान्त झा के माथ कुटि गेलनि, राघवेंद्र झा, अब्दुल इसन आ कमलेश झा के सेरो वइ बेबी मारि लागलनि। एकर अतिरिक्त अब्दुल सिकुर, मो० कयुम, बनारसी प्रसाद, मो० अखतर, हर्षनाथ झा महेन्द्र ठाकुर आदि पचासो व्यक्ति बायल भेलाह। से जेहो परजब

प्रदर्शन सफल रहल आ तकर सर्वाधिक अर्थ छलनि नूर अहमद के आ तकर बाद अब्दुल सिकुर आ अब्दुल इसन के। जुलूस मे बिहार अवामी पंचायतक अतिरिक्त और दू गोटा फेस्टन देखल गेल छल—एस० एस० पी० ओ मिथिला संघर्ष समितिक।

एहि घटनाक बाद १४ ता० के बिहार भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री कपूरी ठाकुर बंगालक राज्यपाल आ रेल्वे रिफॉर्म कमिटीक चेयरमैन श्री बी० डी पाण्डे सं मेट केलनि आ हावड़ा तथा सियालदह सं एक बार गाड़ी देवाक माग केलनि। ओ इहो कहलथिन जे गत बीस वर्ष मे हावड़ा टीशन आ उत्तर बिहार तथा उत्तरी उत्तर प्रदेशक बीच चलेबला गाड़ीक संख्या मे बढ़ोचरी नहि कएल गेलए। कपूरी जी के बिस्मयो सं सही, विवेक भेलनि ताह लेल धन्यवाद देल जा सकैत। ओना सत्य त इहो अर्थ जे तीन वर्ष ओहो लोकनि सत्ता मे छलाह तखन किछु ने क सकलाह। एखनो दिल्ली दरबार मे हुनको दलक लोक अह, परजब सभ चुप्पी सवने अह। जं कपूरी जी एकरा समस्या मानैलथि त तकर समापनक निमित्त किएक ने पार्टी स्तर पर संघर्ष करैत छथि? गाड़ी हावड़ा टीशन पर नहि समस्तीपुर मे रोकनाक प्रयोजन छैक।

ओना त हम एहि सं पूर्वो लिखि चुकल छी जे एहिठाम सं जे लोक नार्थ बिहार आ मिथिला एक्स्प्रेस मे यातायात करैत तकर स्थिति आलूक वस्ता सं नीक नहि रहैत छैक आ तें रेल मंत्री के कहक बेर लिखल गेलनि। परजब, जहांवरि आन्दोलनक प्रश्न छैक ई आन्दोलन एहि ठाम नहि समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर मे देवाक चाही जे ओहठाम सं गाड़ी आगू नहि जाय। जं लाइनक विस्तार कएल गेल त गाड़ीक संख्या मे वृद्धि अवलसे देवाक चाही। आन्दोलन मात्र हावड़ा मुजफ्फरपुरक गाड़ी बंदबा छैक नहि मिथिलांचल सं भारतक सभ प्रधान शहर मे जाय आवय बजा गाड़ीक संख्या बटोवाक लेल आन्दोलन देवाक चाही। आन्दोलन देवाक चाही समस्तीपुर-बनारस (दड़िभंगा नदी) बड़ी लाइन निर्माणक निमित्त। आन्दोलन देवाक चाही मिथिलांचल मे नव रेल पथ निर्माणक निमित्त आ लोकल गाड़ीक संख्या बढ़ेबाक निमित्त। हमरा लोकनि जनेत छी जे जतेक समय हावड़ा सं समस्तीपुर जाइ मे लोख ततवे समस्तीपुर सं जयनगर वा भंसारपुर जाय मे लागि जाइत अह। जयनगर सं भंसारपुर जेबा मे भरिदिन समय लगैत छैक। आन्दोलन

एक गाम मे एगो गरीब लोक रहथि। ओ जेहने देलवा-मुनना मे सुनर, तेहने मेघावी आ तेहने पढ़वा-लिखवा मे चन्सगर। नाम रहनि ठठपाल।

ठठपाल बहुत दिन चरि परदेस मे रहि पढ़लनि। ओ बड़का विद्वान भ गेलाह। चारुभर हुनक विद्या बुद्धिक चर्चा होमय लागल। पाइयो-कौड़ीक नीक आमदनी होमय लगलनि। तखन दिनका अपन गाम, गामक माटि-पानिक सोह मेळनि आ ओ गाम चलि एलाह।

गाम पहुँचला पर ठठपालक खूब स्वागत भेलनि। सर-समाज मे कुनू काम-

चाही मिथिलांचल मे कलकारखानाक स्थापना आ विकासक लेल जे लोक के रोजी-रोटी लेल रने बने छिछिइ नहि पड़ैक। ई गप्पत निर्विवाद अर्थ जे आव कलकत्ता-पटना मिथिलावासीक लेल नहि रहलैक। अंगीय भावना आ राजनीति एकरा मे बढि रहल छैक—बहरिया के नोकरी नहि होइत छैक। तें आन्दोलन उपरोक्त विभिन्न समस्याक समाधानक निमित्त देवाक चाही। दोसर शब्द मे मिथिलांचलक सर्वांगिन विकासक निमित्त देवाक चाही।

हमरा लोकनि खलन कखनो मैथिली आन्दोलनक बात करैत छी त तकर अर्थ इहो रहैत अर्थ मिथिलाक सर्वांगिन विकासक हेतु आन्दोलन। आ तें मैथिलीक न्यायोचित अधिकार प्रातिक ओकर विकासक बात पहिने आवि जाइए। भाषा मूल बस्तु थिक। ई जातीय चेतनाक उत्पत्ति थिक। जातीय एकताक आधार थिक। जातीय चेतना आ एकताक अभाव मे कुनू आन्दोलनक कल्पना ने कएल जा सकैत, सफलताक बात दूर रहबो।

एहिठाम 'देवाक चाही' बला बात पर बहुतो के आपत्ति भ सकैत छनि किन्तु हम जानिये-बुझि के एकर प्रयोग कएलए। से एही दुआरे जे आन्दोलन नोकरियाहा पुत नहि क सकैत—ई काज राजनीतिक दलक, ओकर नेता लोकनिक छैक। राजनैतिक दलक विभिन्न शाखा विभिन्न समस्याक समाधानार्थ प्रदर्शन, जुलूस इहो-ताल क सकैत—करैक चाहियेक। तेखन समस्याक समाधान संभव। अन्यथा कलकत्ताक लोक अपन सुविचार्य हावड़ा मे आ दिल्लीक प्रवासी मैथिल दिल्ली मे भनहि गाड़ी रोकि लेथि—भ सकैत हुनक माग थोड़-बहुत पूराओ भ जाइन-परजब चारि कोटि मैथिलक समस्याक समाधान एहि तरहेँ किन्तु नहि भ सकैत।

रिपोर्ट—रामाधार मिश्र

उदम होइ त दिनका अरबधि के बजाओल जाइन आ विचार पुछल जाइन। परजब सभ होइतहु कखनो-काल दिनका मन मे एकटा बातक बड़ दुख होइन। से बात ई जे लोक दिनका ठठपालक नामे बसबनि। ई सोचलनि जे एते पढ़वा-लिखलाक बादो हम ठठपाके रहि गेलहुं। एहनो कतो नाम भेलै-ए? मुदा उपाइए की? गामक लोक खन्महि सं जाइ नामे बने-ए तकरा बदल लो केना जाय? हं, एगो उपाय छैक जं गाम छोड़ि दूर-देश चलि जाइ। ओतय कुनू नीक नाम राखि लेब। आ इहो सोचि ओ एक दिन अपन गाम छोड़ि विदा भ गेलाह।

बाइत-बाइत खलन ओ बड़ी दूर गेलाह त थाकिसन गेलाह आ तें एगो गोलक-बहि ओ बेसि सुलाय लगलाह। ओही गाछतर आर एगो लोक बेसल छल। ओकर पहिरन रत्ती-रत्ती भेल छलैक आ बगे बानि सं एकदम भीखारि बुझा रहल छल। ठठपाल के ओकरा पर दया आवि गेलनि। किछु जिज्ञासाक क्रम मे नाम पुछलनि त ओ कहलकनि—बनपति। दिनका मनहिमन-बड़ हँसी लागलनि मुदा हुंसेने बनपति अन्धधाने सोचय से विचारि ओकरा बाति उठि विदा भ गेलाह। कने दूर आगा एगो ढोल पर गेलाह त वियास लगलनि। सामने मे एगो लोक पर न बरि पढ़लनि, जे वो पोआर होइत रहए। लग बजा के एक लोटा पाइन देवाक आग्रह केलथिन। ओ भद्र लोक अपन दरबजा पर पोआर राखि लोटा माडि एक लोटा दटक पाइन दिनका देलकनि। पाइन पीवि ई वृत्त भेलाह त ओकर नाम पुछलनि। ओ कहलकनि—अवफी। ठठपाल आगा बटलाह। गाम सं बहाराबले रहथि कि एगो-अर्थी पर नबरि पढ़लनि। आगा-आगा अर्थी आ तकर पाछा, कटिहारीक विशाल पांती। मने-मने सोचलनि—निर्विवाद कुनू पैष लोक मुइल-ए, ने त एते कटिहारी कतये पावी। मृत लोकक परिचय बनवाक बड़ इच्छा भेलनि। अन्त मे एक आदमी सं पुछिह देलथिन—कून महाजन संसार त्याग केलनिहै? 'अमर साहु' ओ व्यक्ति जबाब देलकनि।

ठठपालक पश्चर ठमकि गेलनि। दिनका मन मे जेना बड़का विहाड़ि उठि गेल होइन। अमर साहु मरि गेलाह। अवफी पोआर दोइ छलाह आ बनपतिक देह पर गुदरीयो नदाराद। इहो त निक नामक महत्त्व। आ तकरे फेर मे पड़ि हम अपन गाम-घर सर-समाज, अपन परार तेजि पढ़ाएल जाइत छी। हमराखन मुर्ख के

हड़ताल आ तकर मुकाबला : बिहारी स्टाइल

बिहार सरकारक छ लाख नन गेजेटेड कर्मचारी आ स्कूल शिक्षक गत ११ दिसम्बर सं हड़ताल पर छथि। एहि हड़तालक चलते जे केहन भयानक स्थिति छैक से ओहीठामक लोक जनैत अइ। शहर मे त पीबाक पानियो भेटनाइ पराभव भ गेल छैक। बिजुलीक तेरने स्थिति छैक बखन कि सामान्यो स्थिति मे बिजुलीक जे ओह-ठाम स्थिति रहैत छैक से अगुलनीइ। गाम घरक त चर्चे ने हो। प्रति वर्ष बिजु गाम मे बिजुली खरहा गाड़ि-तार लगा देल जाइए—अखबार मे प्रचारित क देल जाइए जे एते गामक बिजुलीकरण भ गेल। ई भिन्न बात जे मास मे दुइयो दिन 'आइन' नहि रहैत छैक। अस्पताल समक स्थिति सम सं सोचनीय छैक—पानि, बत्ती आ कोकक अभाव। आरेशन शय्या पर पड़ल रोगी कुहरि रहल अइ—देखनिहारक पता नहि।

विचारणीय थिक जे एहन स्थितिक लेल जिम्मेवार के अइ? हड़ताली कर्मचारी, ने सरकार? उपर-उपर देखने त बुझवे करत जे दोखी सरकारी कर्मचारी अइ परजब बिजुलीक देखला-सोचलाक बादे अछटी बात फरिहा सकेछ—अछटी जिम्मेवार के चीन्हल जा सकेछ।

हमर विश्वास अइ जे कर्मचारी लोकनि सेहने हड़ताल नहि करैत छथि। हड़ताल फेसन किन्हु नहि थिक। बखन हुनका लग अगन दावी अदा करबाक कुनू दोसर बात नहि रहैत छनि तखने ओ हड़ताल पर जाइ छथि। दोसर शब्द मे कहने ओ बखन हड़तालक लेल बाध्य कएल जाइत छथि—तखने हड़ताल करैत छथि। आव देखबाक ई अइ कि सरिपहुँ एहन स्थिति आबि तुलायल छलैक?

हड़ताली कर्मचारी लोकनिक भोना त छोट-पेथ कएकटा माळ छनि परजब जे प्रधान माळ छनि आ जाइपर कर्मचारी आ सरकार मे बीच चलि रहल-ए ओ थिक चारिम तनखा संशोधन समिति (4th

इश्त? हम व्यर्थक विद्वान हेबाक दंभ पोसने छी। एहि तरहे सोचेत विचारेत ओ गाम धुरि एलाइ।

परात मेने संगी-साथी सम, जरूरा सम के हिनक गाम छोड़बाक विषय बुझल रहैक भेट होइतहि धुरि एबाक कारण पुछनि। ठठपाल सम के एके जवाब देथिन। ओ जवाब छलनि—जनपति देह पर लताफता नहि अस्फी टोथि पोआर अमर साहु के मरिते देखल भनहि नाम ठठपाल।

प्रस्तुति—अमरदूत

Pay Revision Committee) क सलाह के १९७८ फरवरी सं लागू कएल जाय। कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि तर-हक समितिक गठन सरकार करैत रहल-ए आ त ओकर नैतिक दायित्व म बाइ छइ समितिक सुझाव के माननाइ। विगत अप्रैल मे बखन कि समिति अपने रिपोर्ट बमा केने छल तखन संवदक गमी—वेसक मे स्वयं मुख्य मंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र बाबल छलाइ जे सरकार समितिक सुझाव के मानेए आ तकरा कार्य रूप देत। ओ आरो कहने रहथिन जे एहि छल अर्थ कुनू समस्या नहि छैक। परजब कनिजो दिनक बाद सितम्बर मे केबिनेट निर्णय छलक जे एकरा अक्टूबर सं कार्य रूप देल जायत आ फेर नवम्बर मे तीन आदमीक समिति बनल—एकर आर्थिक स्थितिक अध्ययन करैक। आइ मुख्य मंत्री कहि रहल छथि समितिक सुझाव लागू केला सं २८० करोड़ क आर्थिक चाप सरकार पर पड़ैत आ बिहार जे भारतक गरीबतम प्रान्त मे सं अछि—एकरा बहन नहि क सकेछ।

एहि तरहे स्पष्ट बुझना जाइए जे सरकार आइपर एहि संभव मे कुनू निर्णय नहि ल सकलए। संगहि दिन-पर-दिन गिरगिट सन रंग बदलेत रहल-ए आ एहना स्थिति मे कर्मचारी लोकनिक लेल हड़ताल छोड़ि दोसर बात नहि रहि गेल छलैक। जहापरि बिहारक गरीब हेबाक प्रश्न अइ, मुख्य मंत्री महोदयक बुद्धि पर लोक हंसिटा सकेछ। बिहार भारतक सभ सं बनी प्रान्त अइ, जरूर प्राकृतिक सम्पदा कुनू प्रान्तक हेतु इर्ष्याक विषय छैक। जं गरीब अइ त एहि खिचड़ी प्रान्तक लोक—बिहार! आ तकरा गरीब बना कए राखैक उद्देशे सं एहि खिचड़ी प्रान्तक निर्माण भेल छल। के नहि जनैए जे एहिठामक सम्पति सं बाहर कलकरखाना चलेत छैक आ लोक जीविका अर्जन करैए। एहिठामक लोक मनका दुआरिपर चाकरीक भीख मछेत फीरेए। दोसर बात—जं सरकार के अर्थ संकटक चिन्ता सत्ते छैक त किछक ने मंत्री लोकनिक खर्च मे कटीती कएल जाइए? किछक ने ओ लोकनि अपन जीवन पद्धति बदले छथि, योग-विलास के कमचेत छथि? एगो साधारणो मंत्रीक जीवन पद्धति अतीतक राजा महाराजा सं घाटि अइ की?

तैं स्पष्टतः कहल जा सकेछ जे एहि स्थितिक लेल पूर्णतः सरकारे जिम्मेवार अइ। ई मानितो जे लाख के बिहारक सरकारी कर्मचारीक जे चरित्र छैक से अति निन्दनीय रहल-ए आ तैं ओकरा प्रति लोकक सहायभूति मिसियो भरि नहि छैक।

एखनो बखन कि स्थिति खतरनाक रूप ल चुकल-ए, सरकार तसफीया करना लेल उत्सुक नहि बुझना जाइछ। ओ सम-भौताक गप्प त करैत अइ परजब दोसर दिस लाठी-गोलीक बल पर हड़ताल के दबेबाक पूर्ण प्रयास मे लागल अइ आ तकरे प्रमाण थिक जे समस्त प्रान्त मे तीमा सुरक्षा दल आ केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस के भरि देल गेल अइ। एहि सं स्थिति आर बिस्कोटक भ चुकल-ए कारण कुनू आंदोलनक प्रतिरोध सं शक्ति भेटैत छैक। दोसर दिस सरकार समस्त अस्थायी कर्मचारीक चाकरी समाप्त करबाक आ बहुलांश स्थायी कर्म-चारीक चाकरी स्थगनक आदेश द चुकल अइ। १७ दिसम्बर के जे मुख्य मंत्रीक नावा पर बेसार भेल आ पाँच आदमीक समिति एहि स्थितिक निपटारा लेल गठित भेल-ए, ताइ मे एकोटा मंत्री नहि छथि 'न्यूरोकेट' छथि, बनिकर सलाह सं ई स्थिति बन्म लेलकए। एहि सं इहो पता चलैछ जे मुख्य मंत्री के अपन सहयोगी लोकनि पर भरोसा नहि छनि, विश्वास नहि छनि आ ओ पूर्णतः 'न्यूरोकेट' पर निर्भर छथि। एहना स्थिति मे समस्याक धिन्न समाधानक संभावना त नहिह छैक देला चाही एहि प्रतिष्ठाक लड़ाइ मे उंट कून मुँह बेसेए।

—अमरदूत

(दस दिनक बाद उपरोक्त हड़ताल समाप्त भ गेल। समभौताक अनुसार चारिम PRC क सलाह के विगत अप्रैल सं लागू कएल जायत। मुख्य मंत्रीक अनुसार बिहार सरकार के सलाना सत्तर कोटि टाका एहि मे लागतेक आ तीस कोटि लागतेक एतथ ग्रेसिया मुगतान मे जे पाँच सय प्रति कर्मचारी के देल जेतैक।

—सम्पादक)

चारि गोट मिनी कविता

<4/1/77 6132

(१) सूर्योदय

● माइक आंचरतर सं
बहार कक मुँह अपन
बिहुँसि देलक
शिशु अबोध।

(२) राति

● दुरगमनियां कनियां बनि
बन्न संम महफा मे
बेटी प्रत्येक दिन
चलि जाइछ
देने बिछोड़ व्यथा
पसारि मन विरथी पर
कारी धन अन्धकार।

(३) चन्द्रमा

● परदेशी पाहुन केर
जोड़ैत होथि बाट जेना
खिड़की लग ठाढ़ि
कुनू राधिका।

(४) बर्खान्त

● इहो बर्ख
ओहिना बीति गेल
तुड़ अथबल सूर्य
बस गैरेजक
पछुआर में दूबि गेल।

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

‘देसिल बयना मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाव। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू

विज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन—

१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना ‘देसिल बयना’ मे प्रकाशनार्थ पठाव।

२—‘देसिल बयना’ मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना के अप्राधिकार देल जायत।

३—मिथिला मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव।

४—‘देसिल बयना’ स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।

लाल बुभुक्करक चिट्ठी

अमानवी, संवादक बी, महोदयबी ।
जय मैथिली ।

आगा हाल-सुरति ई जे पूर्ण तामसक संग लिख्य पढ़ि रह-ए जे हमर मना केलाक उपरान्तो अहाँ हमर पत्र के छापि देल आ मात्रा छापिष्टा नहि देल-तकर प्रति हमरो नामे सरकारी डाक सं पठा देल । बाबा वेचनाथ अहाँ के ततवोपर संतोष दितथि । किन्तु ताइपर सं अहाँ चिट्ठी लिखे छी जे एकरा सम्भव रूप मे देनाक नेवार अइ आ तँ हम नियमित रूपेँ एहि तरहक पत्र लिखि पठाओल करी । एकरे ने कहैत छइ 'बाबू पर नून छिट-नाइ ।' चिट्ठी पढ़ि मन त मेळ जे अहाँक मूँह नोचि छी परञ्च अहाँ त छी असिया कोसपर आ तँ अपने केय नोचि संतोष करय पड़ल ।

हेयो सम्पादक प्रवर ! मिथिला मे एगो कहवी छइ—बाँक की बानय प्रसव के बीड़ा ? से तकरे परि । अहाँ त परदेश मे छी । दोसर राज, दोसर राजा । तँ अपने किजानय गेलिए जे एहिठाम लोक केना खेपेइ । अहाँ सम सोचेत होइए जे मिथिला मे रहनिहार सब भरिसक मुइल-मुदी थिक—जे मैथिलीपर ओहन पेश बज्जपात होइतहुँ करोट नहि फेरलक । किन्तु असलियत से नहि छेक । असल मे कचोट आ तामस ककरा ने भेले ? किछु सरकारी कौरा पर पालित लोक केँ छोड़ि सब भीतरे-भीतर महुँरायल अइ । परञ्च डर होइ छइ बान-मालक, बीविकाक । जं अहाँ के विश्वास नहि हो त हमर इकार रहल, अपने ओमान् मुखमंथीइबीक क्षेत्र मे आवि जाउ । स्पष्ट भ जायत जे किछु बनी-मानी लोक, मुखिया-सरपंच तथा उनरा फीताबला अफसर छोड़ि सब तामसे विश्वस्य भेल अइ । परञ्च अहाँ कनियो केओ चूँ केकल कि उपरोक्त लोकक गिद-हटि ओकरापर पढ़ि बाइत छेक । सरकारी बेसरकारी गुंडा ओकरा पाछा लागि जाइत छेक आ नाके सूते पानि पिया देत छेक । नहि किछु भेले त यने-पुलिस करा देलक आ दू-चारि केस झुझा देलक । आ जेना कि कहवी छइ किने जे 'चोर न्याये नष्ट' से विरोधी अन्याये नष्ट भ जाइथ । सर्वत्र आतंकक मेघ पसरल छइ ।

ओना अहाँ कहि सकेछी जे एक आदमी के ने तंग कइल जाइ छइ, जं लोक संगठित भय आवाज उठावय तखन । त हमर उत्तर रहत—श्रीमान बुचियार बी महाराज, अते पोन पर हाथ चले छइ तते दोलपर चले तखन ने ? बानथि दिनकर दिनानाथ जे मिसियोभरि फूसि कहैत होइ, समाज ने काब आबय एहिठाम वर्णवादक तेहन ने बिगल छिड़िया देल गेल

छइ—जे लोक केँ संगठित केनाइ सं सहज भरिसक झुमरीक फूल अननाइ होइत । एहिठाम त तथाकथित पेश आ छोट वर्ण मे भेदा-भेदिकाक काहि चलेत छेक आ दुनू वर्णक मुँह पुनलसम सकड़ीरी सुइ-केइ । ने त आइ मिथिला-मैथिलीक कती ई हालत रहिते ? समसं अचरबक बात त ई जे जे सर्वहारा वर्ग मैथिली केँ अपन हिरदेक मणि आ कंठहार बना केँ रखलक—से आइ अपना केँ मैथिल कहितो ने अइ । मैथिल माने मेळ बामन ! आ बामन सम त बुभुके अइ—कनहा कुकुर माँडे तिरपीत । बामने ने मुखमंथी छइ । ओना खुशीक बात जे बामनो मे मज्ज-वर्गीय आ निम्नवर्गीय समुदाय मे चेतना एलेइ परञ्च बोलबाला समठाम बगलाबी मैथिलेक छइ । अहाँ के त बुभुके हैत जे एहि अंचल मे नोट अथवा सौट सं भोट लेल जाइ छइ । आ तँ हमरा बिबन्टल भरि विश्वास अइ जे अगिलो चुनाव मे अहाँक मिथिलाक मिर्जाफर विपुल मत सं विजयी हेताइ आ अहाँक सपना-सपने रहि जायत ।

तँ कहनाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे रामबीक इच्छा सं आ गुद गंगाक परताप सं—विद्रोहक आगि नीक जकाँ पबरेल छेक—मुदा उक्त लेखनाहर त चाही । से जं साइस हो त हमर नोट-इकार रहल । आ नहि हो त समसं बुरिबक दीनानाथ—माने लाले बुभुक्कर केँ नहि बुझियनि । हमर पत्र ने छापि आ ने कुनू तरहक सम्पर्क राखी—से अनुरोध । ओना त हम पहिनिह सं वदनाम छी । कहलके किने जे नामी चोर महदेवा—से तकरे परि । बानथि बाबा वेचनाथ बहिया सं अहाँ हमर पत्रा छापि देलइ तहिया सं हम विकास भगवानक पूजा छोड़ि मस्तानक पूजा मे लागल छी जे कोनहुना एहि खेप बाँचि जाइ । गत अन्हरियाक एकादशी सं चमचा सहस्र नामक रोजना पाठ सेहो आरंभ क देने छी । एही क्रम मे बगलाब चालीसा लिखनाइ जे आरंभ कइल से त आव ल्याचिएल छन अइ । विश्वास त अछिइ जे जं कहियो आक्रमण भेल त ई कृतिसभ हमर कवचक काज करत । आगा त उगिलहे बानथि ।

अपने सं फेर हमर आपाद-मस्तक प्रार्थना जे एइ पत्र केँ जुनि छापि दी । दोहाइ भोइपारक छी ।

पत्रोत्तर नहि पेनाक प्रबल आकांक्षी
श्रीमान लाल बुभुक्कर
बुभुक्कर ग्राम बासी

✱

एकटा आर गीत

देश-दशा

की भेलै किए भेलै, 'भैया ई केना भेलै
तीनू भुवनक परसिद्ध मिथिला, आइ किए पना भेलै
आइ किए पना भेलै, आइ किए पना भेलै
बल-बुद्धि-बिद्या किछु ने रहले, सब कत' हेरा गेलै

जकर माटि सं जनमलि सीता, अहिलाक शाप मेटा गेलै
देह अछैत विदेह कइलेक, से परताप कहाँ गेलै
से परताप कहाँ गेलै, से परताप कहाँ गेलै
सुमो शास्त्रक गम्प करै छल, से परताप कहाँ गेलै

ओ शिवसिंह सलहेस कहाँ छइ, विद्यापति कहाँ गेलै
नदया कुकुर तीन कोटि छइ, सिंहक नाम मेटा गेलै
सिंहक नाम मेटा गेलै, सिंहक नाम मेटा गेलै
ठोहि पारि क कनै मैथिली, की छलै आ की भेलै

—राम लोचन ठाकुर

१. मिथिलाक छी : मैथिल छी ॥
२. मैथिली बचाव : हिन्दी हटाव ॥
३. मैथिली बाजू, पढ़ू, लिखू ॥
४. मिथिला मे यातायातक सुव्यवस्था लेल,
रौदी-दाही सं मुक्ति लेल, कल-कारखानक
विकास लेल—जनमत तैयार करू ।
मैथिली आन्दोलन केँ सफल बनाव ॥
५. मिथिला-मैथिल विरोधी जयचंद-मिरजाफर के चीन्हि क राखू ।

निवेदक

मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता

मैथिली पोथी आ पत्रिका अपनो कीनू पढ़ू
आ अनको कीनबा पढ़वा लेल प्रोत्साहित करू ।

किछु बहु चर्चित पोथी—

- | | |
|---|-------------|
| १. अर्द्धनारीश्वर (उपन्यास) / मणिपद्म | दाम—२५ टाका |
| २. इतिहासहंता (कविता संग्रह) / रामलोचन ठाकुर | दाम—४ टाका |
| ३. वेताल कथा (हास्य-व्यंग्य) / कुमारेश काश्यप | दाम—४ टाका |
| ४. जुआयल कनकनी (नाटक) / महेन्द्र मलंगिया | दाम—२ टाका |
| ५. निष्कलंक (नाटक) / जनार्दन झा | दाम—२ टाका |
- देसिल वयना' कार्यालय सं भेटि सकेछ

आइ भिक्षापात्र नांज, चाहीं महाकालीक खप्पर

बन्धुगण !

युगों सँ हमरा लोकनि विद्यापति स्मृति पर्व मनबैत आ प्रस्ताव पास करैत आबि रहल छी परञ्च मिथिला-मैथिलीक समस्या बने छल तते पड़ल अछि। कहनाक प्रयो-जन नहि, जे प्रस्ताव-पारित केनाइ तथा मंच सँ बड़का-बड़का भाषण देनाइ, संगहि नेता लोकनिक आस्थापन देनाइ कोनो अर्थ नहि रखैत अछि। इ कहु सत्य हमरा लोकनि भरिसक एखनोघरि नहि बुझलौहें आ जाघरि नहि बुझब ताघरि समस्याक समाधान असंभव। तें, कोनो विभूतिक स्मृति-पर्व मनओनाइ बेबाय नहि, परञ्च प्रस्ताव पास केनाइक बदला अधिकार प्राप्तिक लेल संघर्षक शपथ लेब परमावश्यक। मोन राखू जे हाथ पसारने भिल्ल भनहि भेटि जाय मुदा अधिकार नहि। अधिकार छिनय पड़ैत छैक आ ताइ लेल त्याग, बलिदान आवश्यक। जे जाति मरनाइ नहि जनेए ओ ने त जीवाक महत्व बुझेए अब्बा ने जीवाक अधिकार रखैए। आ अपन भाषा-भूमिक उद्धार हेतु जे मरेत अछि, तकरा जं मरेवे मानि लेल जाइ त अमरता भेलैक की ?

निब भू-भाषा हित मरय,
मरय ने अमर बनेत अछि।

तकरे गाथा विश्व ई,
गाओत, सदा गवैत अछि ॥

मैथिली मुक्ति मोर्चा एही सिद्धान्त मे विश्वास करैत आ तें संघर्ष पथ निर्माण मे लागल अछि। परञ्च कोनो जातीय संघर्ष, जातीय मुक्ति-संघर्ष-जन समर्थन आ जनबलक सहयोग सँ सफल भ सकैछ। उदाहरणक लेल आसामक आन्दोलन केँ छे जा सकैछ—जकर आरंभ निश्चित छत्र वर्ग द्वारा भेल छलैक। परञ्च ज ओकरा विपुल जनसमर्थन नहि भेटितैक, ओहि संघर्ष पथ पर आवाज-बुद्ध-बनिता एक संग नहि उतरि अबैत त कि ओ एतेक प्रभावशाली भ पवैत ? तें हमरा लोकनि समस्त मिथिलावासी सँ आ विशेष केँ छात्र युवा वर्ग सँ अनुरोध करैत छी जे ओ लोकनि एहि निमित्त अपना केँ, अपन समाज केँ जागरूक करथि, तैयार राखथि। आन्दोलन दिनतका केँ नहि होइत छैक। आन्दोलनक आगि सुनिग रहल-ए ओ कलनो दावानलक रूप ल सकैछ।

—जय मैथिली
निवेदक :

रामाधार मिश्र
बास्ते—मैथिली मुक्तिमोर्चा,
कलकत्ता

चिट्ठी पुर्जो

‘देसिल बयना’क अंक-२ प्राप्त भेल। आभारी छी। मुक्तिमोर्चाक ई प्रयास अति श्लाघनीय—हमर हार्दिक शुभेच्छा स्वी-कारी। यथा-योग्य सेवा लिखी।

—धनचक्र

‘देसिल बयना’क तीनटा अंक देखबाक-पढ़बाक अवसर प्राप्त भेल। मैथिली मे जाहि तरहक पत्रक आवश्यकता छलैक—तकरा ई पूर्ति करैत अछि। ओना तऽ एकर सभ रचना उपरा-उपरी रहैत छैक परञ्च ग्राम सँ दूर मिथिलाक मजदूर हमरा विचार सँ सब सँ महत्वपूर्ण खम्ब थिक। जं अन्य रचना केँ छोड़ियो देल जाइ तऽ एकमात्र एही खम्बक कारणे देसिल बयना अमर रहत। ‘कह लोचन कविराय’ (यद्यपि दोसर अंकक पूर्ण प्रभा-वित नहि कऽ सकल) वाल-गीत तथा पहिल आ दोसर अंक मे प्रकाशित श्री रामलोचन ठाकुर जीक कविता तथा तेसर अंकक ‘बोनिहारक गीत’, दोसर अंकक ‘संस्कृतिक सारापर सत्ताक बबूर’ तथा ‘बुढ़ारी-भत्ता बनाम सत्ताक राजनीति’ एवं तेसर अंकक समस्त रचना एकर उपलब्धि थिक। ओ कुणालक कथा ‘डकैत’ यद्यपि पत्रिका मे बेसी जगह छेने अछि—तथापि प्रशंसनीय अछि। बहुत दिनक बाद एहन नीक आ सशक्त कथा पढ़बाक मौका भेटल। और अन्त मे एकर सम्पादक केँ एहन समयो-पयोगी सुन्दर-सशक्त सम्पादकीय लिखबाक हेतु अशेष धन्यवाद। ई पत्र चिरजीवी हो से हमर कामना। —राजेन्द्र कुमार सिंह

‘देसिल बयना’ प्राप्त भेल। विषय बलु देखि मन प्रफुल्लित भइ गेल। ई एक आन्दोलनात्मक डेग थिक आ माइल-स्टोन प्रमाणित भेल अछि। हमर सहयोग संग रहत।

—अनिल सुधा

पढ़ि अत्यधिक प्रसन्नता भेल। हम जाहि क्षेत्र मे छी ततए मैथिली भाषाक प्रति जनमानस मे कोनो भावना नहि। परन्तु ‘देसिल बयना’ ओ जागरण एहू क्षेत्र मे स्वल्प समय मे यथासाध्य कए देलक अछि।

—शम्भुनाथ झा

‘देसिल बयना’ दू खेप सँ पढ़बाक मौका भेटि रहल अछि। आइ-काल्हि... सेकड़ो पत्र-पत्रिका प्रकाशित भय रहल अछि। हमरा बुझने किछु केँ छोड़ि बाकी सब बिना आदर्श केँ सामने रखैत प्रकाशित भय रहल अछि। ओकर सवइक उद्येस्य छैक द्रव्यार्जन। द्रव्यार्जन लग आदर्श कतय भेटत ? तें ‘देसिल बयना’ सन-सन आदर्श पर आधारित पत्रिकाक प्रकाशन पर बल देमय पड़ैत। ‘‘‘‘‘हम प्रत्येक मिथि-लांचलक वासी सँ एहि पत्रक द्वारा अनु-रोध करैत छियेन्ह जे ओ सब ‘अपन डफली अपन राग’ नहि अलापि एकरा सहयोग अवश्य देथ। सहयोग अनेक ढंगक होइत छैक—रुपया-पैसाक सहयोग, आदर्शोन्मुख करववाला लेल लिखि और यदि ताहि मे समर्थ नहि छी तं कम स कम एक-एक प्रति प्रत्येक मैथिल केँ हाथ भइ केँ।

शुभकामनाक संग—

—मदन मोहन झा, अधिवक्ता,

बालगोत

क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलावासी रे

सीता कानि कहै छथि मिथिलावासी रे
मायक बोल बचा ले मिथिलावासी रे
जे सभदिन सभसँ आगू छल
सँद वनल छथि मिथिला सिथिला
विद्या-बुद्धि-कला वा हो बल
चारि कोटि सुत के माँ अवला
नवतुरिया उठ जागै मिथिलवासी रे
मायक लाज बचा ले मिथिलावासी रे
सभसँ मधुर मैथिली भाषा
चारि कोटि मैथिल के आशा
मिथिलाक्षर सन छपि पुरातन
करय उपेक्षा शासक रावण
उठ युवागण बनै राम अविनाशी रे
मैथिलीक मान बचा ले मिथिलावासी रे
उभय भारती सीता लखिया
गोतम विद्यापतिक भूमि ई
जे कहियो सभठा पूजित छल
आइ छिप सभठा अवहेलित
आबहुं चेत, बनै जुनि सत्यानाशी रे
क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलावासी रे

—सुभाष चन्द्र झा

विशेष सूचना

मिथिलाक सर्वांगिन विकासक हेतु अपेक्षित जनजागरण आ आन्दोलन पर विचार-विमर्शक सही मार्ग ताकबाक हेतु आगामी १० जनवरी केँ इन्द्रधवन मैदान (दड़िभंगा) मे प्रातः ६ बजे सँ सांझ ७ बजे करि मिथिलाक विकास मे अभिरुचि राखयवाला प्रत्येक संगठन आ राजनीतिक दलक एक दिवसीय प्रतिनिधि सम्मेलन, मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा आयोजित करत। एहि सम्मेलन मे भाग लेबाक हेतु मिथिलाक प्रत्येक प्रगतिशील बुद्धिजीवी आ श्रमजीवी केँ बादर आमन्त्रण।

—धर्मेन्द्र कुमार

संयोजक, मि० ब० मोर्चा, दरभंगा

‘देसिल बयना’ चन्द्राक दर :—

१ प्रति	५० पइसा
१ बर्लक	५० टाका
५ बर्लक	२०० टाका

पाइ पठेबाक पता—

श्री जनार्दन झा,
१७/६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

कह लोचन कविराय

बारिक पढ़ा तीत आ, हो बाजारक मीठ
कुहरि रहल तें मैथिली, छनियां टेरय गीत
छनियां टेरय गीत, नचैए पश्चिम गामक
चाम-दाम सँ मोहि, पुत सभ मिथिला घामक
कह लोचन कविराय, कलंकक लेपल कारिस
मैथिल युवजन मानि, मैथिली पढ़ा बारिक ॥

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेस्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनिपर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, वृन्दावन
बेहाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

स्मृति रचना

वर्ष—२ अंक—५

फरवरी, १९८२

मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

खगता मिथिलाक्षरक

लिपि आ भाषा मे उह सम्बन्ध छे जे देह आर मन मे । सुगठित स्वस्थ शरीर मात्र सुन्दर आ आकर्षक नहि होइत छे अपितु प्रबल मन आ स्वस्थ-सही चिन्तनक आधार सेहो होइत छे । तहिना सुन्दर-सुगठित लिपि सेहो कोनो भाषाक विकासक आधार होइत छे । इह कारण छे जे लिपिक निर्माण मे विद्वान लोकनि के अत्यन्त परीश्रम करय पड़ैत छनि आ एहि क्रम मे सुगह लागि जाइत छे । इह कारण छे जे कोनो जोवित जाति अपन लिपि के तेजि दोसर लिपि अपनेबाक लेल तैयार नहि होइत अछि ।

लिपि जे हेतु भाषाक देह थिक ते ओकर पहिल पहिचान थिक । ई लिपिक विशेषता छे जे पहिले नजरि मे दर्शक के अपन अस्तित्वक, अपन विशेष परिचितक मान करा दैत अछि । कहबाक प्रयोजन नहि जे ई परिचित गमा देने कोनो भाषाक भविष्य संदिग्ध भ जाइत छे, ओकरा चारुकात संकटक मेध सदिलन महराइत रहैत छे ।

उत्तर-पूर्वांचलीय नव्य-भारतीय भाषा सभ मे सभ सं प्राचीन आ समृद्ध भाषा होइतहु मैथिलीक स्थिति आइ सभ सं दयनीय आ सोचनीय छे आ तकर जवर्द्धन कारण छे मिथिलाक्षरक अवहेलना ओ देवनागरीक अभ्यर्थना । हिन्दीक कारा पर पालित तथा-कथित विद्वान लोकनि द्वारा यदा-कदा मैथिली के हिन्दीक बोली कहि देबाक दुस्साहसक आधार निश्चित रूपे ई लिपिक थिक । जाइ विद्यापति के ल क हमरा लोकनि एतेक नचेत छी, जं हुनको मैथिलीक देवनागरी मे प्राप्त भेल रहैत तं निश्चित हुनका मैथिलीक कवि मान्य करो-ओनाइ ओतेक सहज नहि भ पवैत । ओना मिथिलाक्षर मे रहितहु प्राचीन मैथिली नाटक सभ के हिन्दीक नाटकक रूप मे अवस्था लिखल गेल परञ्च ताहु मे मैथिलीक पाइपर पालित विह-नाटक वला मैथिले प्रोफेसरक पड़यंत्र छे जे समस्त पोथीक सूची आ परिचय उपलब्ध करा देलथिन । आ से होइतहु मान्य नहिओ भ सकलैक ।

थोड़ बहुत इह कारण छे जे बहुत दिन धरि विद्यापति बंगालक कवि मानल जाइत रहलाह । ओना ई मैथिलीक हित मे रहलैक ने त कविपतिक प्रायः समस्त पदक संकलन-प्रकाशन जे कि मित्र-मजुमदार महोदय दयक प्रयासे भेल से अकर्मण्य मैथिल जाति सं किछहु संभव नहि भ पवैत । आइयो चर्यापद तथा मैथिलीक प्राचीन नाटक खास के मल्लकालीन नाटक के बंगाली लोकनि अपन पोथी मानत छथि आ ताह पर बड़-बेसी काज भ रहल छे ।

स्पष्ट छे जे मैथिलीक विकास मे सभ सं पेश बाबक भेलह आ भ रहल देवनागरी लिपिक प्रचलन आ मिथिलाक्षरक तिरस्कार । एहि सं ई मात्र अपन विशेष परिचितिह टा नहि गमओलक-ए अपन जाति सं (पूर्वांचली भाषा-समूह सं) सेहो कटि गेलह । आ जाइ विजातीय भाषाक संग जुटल वा बोझि देल गेल-से सुरसा सन एकर बाट मे जेसब अवसर पविते गीझि जेबाक ताक मे अछि । ई विजातीय भाषाक सामिप्य एकर स्वरूप के घूमिठ त करवे केलेक संगहि मिथिलाक संस्कृति तथा मैथिलीक रूचि के सेहो विकृत केलेक आ ओकर जातीय चेतना एकता के, जातीय संस्कार के पूर्ण तरहे नष्ट क देलकैह ।

ते आइ जं सरपहु हमरा लोकनि अपन जातिक, भाषा संस्कृतिक अस्तित्व रक्षा करय चाहैत छी, ओकर विकास चाहैत छी त ई अनिवार्य छे जे अपन लिपिक रक्षा करी, ओकरा प्रयोग मे आनो । प्रश्न उठि सकै जे एते दिनुका बाद पुनः मिथिलाक्षरक प्रयोग मे बाधा-व्यवधान कि नहि होतैक । उत्तर छे—होतैक । कोनो नौक काज मे हमार बाधा-व्यवधान अबैत छे—परञ्च से स्थायी नहि, क्षणिक होइत छे । एते दिन हमरा लोकनि पातर मे पथ विहीन नौआइत रहलौह आ भाव जलन घरक बाट भेटि गेलह त जतेक थाकल-ठेहिआएल किछक ने होइ—घरसुहा चल्बाक शक्ति-गति अप्रतिम होइत छे । निश्चित समय सं पहिने हमरा लोकनि पहुँचि सकैत छी ।

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

मैथिली आन्दोलन

मिथिलाक जन-आन्दोलनक सन्दर्भ मे

जीवित रहबाक लेल मनुष्य के ने मात्र प्राकृतिक प्रतिकूलताक विरुद्ध सतत् संघर्ष करऽ पड़ैत छे अपितु ओकरा समाजक ओहि प्रतिक्रियावादी शक्तिक विरुद्ध सेहो संघर्ष करऽ पड़ैत छे जे अपन रजानैतिक एवं आर्थिक वर्चस्व बनौने रहबाक लेल वर्गीय एवं जातीय शोषण उत्पीड़नक वल-पर समाज के जर्जर, कंगाल, मूक ओ बहिर बना, ओकर अग्रिम विकास के 'सील' कऽ दैत छे । वर्गमेद बला समाज मे वर्गीय शोषण-उत्पीड़न, जातीय वा राष्ट्रीय शोषण-उत्पीड़नक माध्यम सं अभिव्यक्ति पवैत छे । मिथिलासन पिछड़ल क्षेत्रक जनता ने मात्र वर्गीय बरन् जातीय वा राष्ट्रीय शोषण-उत्पीड़नक शिकार होइत रहल अछि । जतऽ किछु अर्थ लोभ्य व्यापारी, पदसत्ता लोभ्य राजनीतिज्ञ आर किछु सामंतवादी विचारधाराक पोषक सभ एकजुट भऽ मिथिलाक अधिष्ठित एवं अविशित जनताक शोषण करैत आर ते आइ वर्तमान मे ई आवश्यक नहि अनिवार्य भऽ गेलैक अछि जे एहि राष्ट्रीय शोषणक विरुद्ध चलाएल जा रहल संघर्ष के अविलम्ब गति देल जाय—मिथिलाक संस्कृति, भाषा-साहित्य, कला-कोशल, वाणिज्य-व्यापार, उद्योग-धंधा आदि के उचित संरक्षण दऽ मिथिला क्षेत्रक विरुद्ध चलाओल जा रहल पटवन्त्र के विफल कऽ देल जाय ।

आबादी प्रातिक पश्चात् अपना देश मे जे प्रगति भेल अछि ओकरा नकारल नहि जा सकैत मुदा जाइस्तरपर मिथिलासन अविकसित क्षेत्र उपेक्षित राखल गेल अछि ओ वस्तुतः विचारणीय अछि । ओना सरकारी स्तरपर कागजी उन्नति आर विकासक अम्बार लागल छेक मुदा वस्तुस्थिति ई जे मिथिला के माध्यम बना, केन्द्रीय एवं राज्य सरकारक टहल सभ मात्र

अपन-अपन आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति के मजबूत आ स्थायी बनेबाक बन्दोबस्त कएलनि अछि आर किछु नहि । कृषि विकासक नामपर जे थोड़-बहुत खाद आ बीज उपलब्ध कराओल जाइत तं पानि निपचा भऽ जाइत, सिंचाइक नाम पर जं पाँच-दस गोटा 'बोरिंग' आदिक व्यवस्था कराओल जाइत तं बिजली विला जाइत भने जनता के मात्र आस्थावनक बोझ सं ताहि रूपे दबेबाक प्रयास कएल जाइत रहल अछि आइ आबादीक ३४-३५ वरखक पश्चातो मिथिला ओतहि अछि जतऽ आइ सं ३४-३५ वरखक पूर्व रहल—शिक्षाक अव्यवस्था, कृषिक ह्रास, गाम-गाम भइल टूटली मड़ेया, चाकरीक लोभ मे नौआइत मिथिलाक शिक्षित युवा वर्ग, आवागमनक अव्यवस्था, सांस्कृतिक पेट मे जुझा केपेटने रौरव नकई यातना भोगैत साधनहीन समाज, जीवित रहबाक अभिलाषा नेने गाम गाम सं पंजाब-हरियाणा, बंगाल-आसाम—पड़ाइत बूढ़, जवान—मिथिलाक वर्तमान चित्र इह रहि गेल अछि । आ रहबो करत एहिना यावत्परि भारतक मानचित्र मे मिथिलाक रेखाङ्कन नहि भ जाइत—आधरि सरकारी रेकार्ड मे मिथिलाक अपन खेस-साता नम्बर नहि लिखा जाइत छे ।

भौगोलिक दृष्टिकोण सं, भारतक सुरक्षा एवं अखंडताक लेल जतना महत्व मिथिलाक छे ओतेक महत्व ने दिहल के देल जा सकैत आ ने पटना के । भारतक सीमान्त प्रदेश इहबाक कारणे मिथिलाक अपन अलग महत्व छे । सामरिक-सुरक्षा के दृष्टि मे राखि सरकार इतहु विराट 'एरोडूम'क निर्माण रातो-राति करा सकैत—डिबीजन डिबीजन 'मलेटरी' एक्टेटा कऽ सकैत मुदा मिथिलाक विका-

भारत मे एखनो साक्षरक संख्या पचीस प्रतिशत सं बेसी नहि छे । मिथिला मे त आरो कमे इह । एहि मे शिक्षित संख्याक अनुमान सहजहि लगभग भऽ सकैत । शिक्षितक लेल एक घंटाक समय जं रोब देथि त सात दिन सं बेसी मिथिलाक्षर लिखवा मे किछहु नहि लगतनि । जे नेना सभ अक्षरारंभ करत तकरा लेल जेहने रोमन वा देवनागरी तेहने अपन लिपि । बरू अपन हेबाक कारणे आर सहज होतैक । जहांतक पोथी प्रकाशनक गण्य छेक ताहु मे विशेष अशुविधाक संभावना नहि । बंगला आ अरुमिषाक लिपिक संयोग सं सहजहि मैथिली अक्षर भेटि सकैत । लगातानुसार एकरा किछु नव-सहज रूप देल जा सकैत, जेना बंगला मे कएल गेल छलैक । खास के 'उ' कारक मात्रा मे एकरुपता आवश्यक छेक कारण प्राचीन बर्तनीक अनुसार किछु आखर मे ई मात्रा लगने ओकर रूप बदलि जाइत छेक आ सहजे चीन्हा मे नहि अबैत ।

आद्याह नहि विश्वासो भ छे जे मैथिली प्रेमी विद्वान लोकनिक तथा आन्दोलनकर्ता लोकनि एहि पर ध्यान देताह आ गंभीरता पूर्वक सोचता । समय जते नीतेत अछि—अवकाह होइत अछि ते श्रमता आवश्यक ।

● जय मैथिली

सक नामपर सरकारी-तंत्र गुमही किएक लायि लेत अछि ई एकटा अति विचार-णीय प्रश्न ! एहि परिप्रेक्ष्य मे जं गंभीरता सं विचार कएल जाए तं ई स्पष्ट भऽ जाइत जे 'मिथिलाक विरुद्ध राजनीतिज्ञ लोकनि द्वारा एक गोट भयंकर षटपन्थ कएल गेल अछि जे मिथिलाक जनता केँ विकर्षित कऽ शासन मे बनल रही— खाहे ओ राजनेता लोकनि कोनो पार्टी सं सम्बन्ध होय। की तीन सट्टेतोन करोड़ मैथिल केँ ई दयव्यतिष्ठित केँ बनौने रहबाक चाही ? बौक बनत, इन सभ एहि चिन्ता केँ अपन प्राणव्य धूनि हाथ पर हथ बहने बेसठ रही ? केओ स्वामिमानी मैथिल एहि दयनीय स्थिति केँ अपना मोन सं स्वीकार नहि कऽ सकैछ—भार एतहि यक्ष-प्रश्न उत्पन्न होइछ—“कः पन्था ? यद्यपि एहि प्रश्नक उत्तर युधिष्ठिर द्वापर-युग मे वऽ चुकल छथि मुदा हुनकर उत्तर (महाजनेन) आधुनिक काल मे अप्रासंगिक भऽ वऽ रहि बाइछ कारण महापुरुष बला—निर्धारित पथक अन्वेषण सं पूर्व 'महापुरुष'क अन्वेषण करऽ पड़त आर अपना मिथिला मे एहन महापुरुषक अभाव प्रायः सभ केँ खटकत मिथिला मे “कुर्वी पुरुष” अगणित भेटि सकैछ मुदा 'महापुरुष' कतऽ पावी ? जं से रहैत तं मिथिला सन पुण्य भूमिक ई दर्शा ! मैथिलीक एहन अवहेलना !! मैथिलक ई अपमान !!

अतएव, हम सभ जे संवर्षप्रथ निर्धारित कएने छी ओकरा आर सुव्यवस्थित रूपेँ आगाँ बढ़ावऽ पड़त, अवन संवर्ष मे तीव्रता आनऽ पड़त आ तखनहि हम सभ कोनो फलक आशा कऽ सकैत छी । ई प्रायः सभ केँ आभास हैत जे एखनपर मिथिलाक जागरूक प्रहरी सभ भाषाबला फ्रांट पर अपन मोर्चा जमौने छथि एहरे किछु दिन सं मिथिलाक लेल “सम्पूर्ण-क्रान्तिक” परिभाषा प्रचारित ओ पारि-भाषित कएल जा रहल अछि । एहिठाम ई कहब प्रासंगिक हैत जे भारत सन विशाल जनताधिक देश मे केन्द्र सरकारक समक्ष तत्काल ने राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय समस्या सभ प्रस्तुत रहैत छैक जे मिथिला सन उपेक्षित मूलखंडक भाषाक समस्या पर ओकर ध्यान आकृष्ट कराएब जं अर्धभव नहि तं कठिनाई अवसर कहल जा सकैछ । तें हमरा सभक ध्येय ई हएबाक चाही जे येन-केन प्रकारेण केन्द्र सरकारक ध्यान आकृष्ट करा सकी । एहि संदर्भ मे मात्र भाषाक सरकारी मान्यताक समस्या केँ पर्याप्त नहि कहल जा सकैछ । जं एकवेर केन्द्र सरकार केँ ई बात स्पष्ट रूपेँ भान करा देल जाइ जे मिथिला मे ओ सभ तखन वर्तमान छैक—ओ सभटा साधन उपलब्ध छैक जे एक गोट स्वतंत्र प्रान्तक लेल आवश्यक कहल गेलैक अछि मने एक गोट पृथक राज्य बनबाक सभटा योग्यता मिथिला रखैत अछि तं एकहि बेर केन्द्र सरकारक भूक खुलि बढैत आर अनेरे मिथिलाक केकटा समस्याक समाधान स्वयं भऽ जय-तेक (एहि संदर्भ मे श्री दिनराज शाण्डिल्य जी द्वारा कएल गेल कार्य केँ नजर अन्दाज नहि कएल जा सकैछ) ।

मिथिलाक बौद्धिक वर्ग लगभग दू दसक सं जनताधिक माध्यम केँ अपना, केन्द्र सरकार सं आग्रह करैत रहल अछि जे 'मैथिली' केँ सरकारी मान्यता प्रदान कऽ (संविधानक अष्टम अनुसूची मे सम्मिलित कऽ एकर प्राचीन प्रतिष्ठा केँ संरक्षण देल जाओ—प्रतिय सरकार सं सेहो आग्रह करैत रहल अछि जे ओ एहि संदर्भ मे उचित डेग उठावऽ मुदा ओकरा मुँह पर जुवा मारैत बिहारक सुशेखर मैथिल मुख्यमंत्री जनाव बागलख मिश्र साहेब अनायास “हिंम मन्त्र” बायस”क रेकार्ड बना केँ पेशि उठलाह—“अस्सकाम कावेकुम !” यतनाक सोच पर पर चढ़ि अमान देवऽ लालाह “ओ मैथिली भाषी लोकनि, कष्टक्षय कऽ लियऽ” या लिहल रहि-लिहल “!!” एकर कि अर्थ ? मने हम सभ खोज छी ? जायज मांग छल मैथिलीक लेल सरकारी मान्यता आ नाजायज रूप सं बढा गेल माथ पर उर्दू !! आवऽ रेटैत रहू आलिख जे-पेटे” आर अदा करैत रहू नमाज !! एहि सं बढि कऽ आर की दुर्भाग्य भऽ सकैछ हमर सभक ! मुदा एकरा मात्र दुर्भाग्य कहबां सं काब नहि चलत । जं समयावधि एकर प्रतिकार नहि केल गेल तं असम्भव नहि जे काहि बिहार सरकारक नवका अध्यादेश जारी होइक जे मिथिलाक जनता मे जे एखन बरि 'टीक' नहि कटवौने होइ आर 'कट्टा' नहि करवौने होइ से अविलम्ब 'टीक' कटवा लेथु आर 'कट्टा' करवा लेथु” आ पश्चत् जगन्नाथ बाबू गामे-गामे घोषणा करने फिरताह जे एहि काब मे विलम्ब नहि हएबाक चाही—ई दिछो दरबारक आदेश छियेक !! हमर कहबाक ई तार्तय नहि जे उर्दू भाषाक विरोध हएबाक चाही उर्दू अपना देशक एक गोट अति समृद्धि आर विकसित भाषा छि । उर्दूक क्षमता पर कोनो प्रकारक प्रश्न चिह्न नहि लगाओल जा सकैछ आ उर्दू कि विश्वक कोनो भाषाक अनादर नहि हएबाक चाही कारण कोनो देशक भाषा-साहित्य, ओहि भूखण्ड विशेषक सम्पदा आर सांस्कृतिक प्रतीक होइत छैक । ई इतिहास सिद्ध तथ्य छियेक जे जं कोनो भूखण्ड विशेषक तथ्यता ओ संस्कृति केँ नष्ट करव अभीष्ट हो तं ओकर भाषा-साहित्य पर प्रहार करू । जतऽ बरि मैथिलिक प्रश्न अछि, एखनपर एकरा कोनो भाषा सं विरोध नहि रहलैक अछि आने रहतैक मुदा एकर अर्थ ई नहि जे समदर्शिताक दर्शनक क्षण एकर गरदनहं मरोड़ि देल जाइ मिथिलाक प्राचीन

मिथिला विभूति महाकवि डाक

मिथिलाक माटि जेहने उपजाउ अह तहिना एहि ठामक लोकक मस्तिष्क सेहो आ विशेष केँ एकरे बलसर मिथिला कहियो तीन लोक मे विख्यात छल । एहिठाम एक सं एक विभूतिक जन्म भेल अह जे सरिपहुँ दोसर देशक हते इध्याक विभूति रहल । तें आश्चर्य नहि जे कतेरो विभूति केँ कालक्रमे विचारा देल गेलह आ महाकवि डाक सेहो एहने विभूति मे सं छथि । ओना एहो निश्चिन्त जे जे कुन बाति अपन विभूति केँ चिरि बाहर ओकर अन्तः पतन अनिवार्य छैक आ वर्तमान मिथिला एकर स्वतंत्र प्रमाण छि ।

ओना त महाकवि डाकक सम्पन्न अहबिर कुनू ग्रामाणिक शोध नहि म सकलह परजव दिनक अरनहि रचना जे युगो सं एक कंठ सं दोसर कंठ मे प्रवाहित होइत आवि रहल ए दिनक अक्षिप आ कुतिलक नीक परिचय उपलब्ध करैल ।

दिनक जन्मस्थान तथा समयक सम्पन्न एखनो बरि निस्तुकी नहि म पभोकर ए परजव कहल जाइछ जे वर्ण सं ई यादव छलाह । एहि तथ्यक पूर्ति दिनक अरनहुँ पद सं होइह—जं ओकरा दिनक सही रचना मानि लेल जाय—जेनाकि—कहि गेल डाक गोआर । एकर सत्यताक आधार

एहो छि जे वर्णवादी कुंठकार मध्य समाज ब्राह्मण-कर्णकायस्थ सं इतर वर्णक एहि प्रतिभा केँ नहि स्वीकार सकल आ एहो एगो कारण छि जं एहन विराट प्रतिभा सम्पन्न विभूति केँ विचारा देल गेल ।

कारण मनहि जे हो परजव एतबाबरि सत्य जे एहन प्रतिभा मात्र मिथिला मे नहि, अन्यत्रो दुर्लभ अह । महाकवि डाक मे बहुमुखी प्रतिभा छनि । हुनक साहित्यिक प्रतिभाक स्वतंत्र प्रमाण अह हुनक ग्रंथ 'डाक रचनामृत' सं सरिपहुँ अमृत दुख छि । ओना त ई सही सेहो अग्रगण्य सन अह आ तथा कश्चित मैथिलीक पोथी प्रकाशन संस्था जे लाखो टाका खर्च क केँ भालू-फालतू पोथी छपेह—तकरा सभ केँ एहन पोथी छपवाक प्रयोजने ने बुझाह छह, परजव मिथिलाक विशाल जनकंठ एखनो एकरा बोधोनेवार अवसर अह आ भविष्यो मे रहत से विश्वास अनाया से होइह ।

महाकवि डाक मात्र कवि ए नहि छलाह, कृषि विज्ञान दिनका अतुलनीय पटु व छनि ।

(शेर्पा पृष्ठ ५ पर)

सम्पदा ओ संस्कृति केँ नष्ट कऽ देल जाइ । मैथिलीक संग अनायास कऽ बिहार सरकार अपन बाहि अदूरदर्शिताक प्रमाण देलक अछि, ओहि लेल कम सं कम जगन्नाथ बाबू केँ मैथिली भाषी कहियो माफ नहि करतनि ।

एहि सभ शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध, वैचारिक क्रान्तिक पड़ाव हम सभ पार कऽ चुकल छी—आव आवश्यकता अछि अपन संघर्ष केँ सही बरातलगर, सही योद्धाक माध्यमे गति दी—तोत्र करो । मुदा ई हमर सभक दुर्भाग्य कहल जा सकैछ जे सही योद्धाक निर्माण पूर्णरूपेँ एताबधि नहि भऽ सकल अछि तें संघर्षरत मैथिल योद्धा लोकनिक ई प्रथम कर्तव्य आ दायित्व भऽ जाइत छनि जे एहि संघर्ष लेल सैनिकक चयन कऽ ओकरा युद्ध-स्तरपर प्रशिक्षित करयि । प्रशिक्षित सैनिकक युद्ध नियमबद्ध आ कौशलपूर्ण होइत छैक तथा विजयभीक संभावना शत-प्रतिशत बढि जाइत छैक ।

एखनपर सरकार संग हमरा सभक जे संघर्ष होइत आवि रहल अछि ओकर सभ सं कमबोर पक्ष अछि सफल नेतृत्व एवं मिथिलाक जनसाधारणक सहानुभूतिक अभाव । अपन लक्ष्य केँ प्राप्त करबाक लेल हमरा सभक लेल ई आवश्यक नहि अनि-

वाप भऽ जाइछ जे मिथिलाक स्थिर जन-मानस केँ हिंकारी, अवचेतन मे पड़ल प्रभुन विवेक सं झुकलौह कऽ उठा दी आर एहि निमित्त हमरा सभ केँ मिथिलाक मुख्यभूमि सं सम्पर्क साधऽ पड़त, गामे-गाम जाकऽ जेतिएर श्रमिक केँ विश्वास दियावऽ पड़त जे ओकरा देह मे आव मजु हडियेता सावित छैक—मासु नोचा गेल छक, शोणित बिचा गेल छैक—विद्यार्थी समुदाय केँ बुझावऽ पड़त जे हुनकर सभक शिक्षाक कोनो ओचित्य नहि—जं मिथिला जीवैत नहि रहल तं हुनको सभक गणना मृतकेँ मे केँ जइतनि—भ्रष्ट राजनेता लोकनि केँ चेतावऽ पड़त जे ओ लोकनि अपन भागद समेटथु—मिथिला आव आर शोषण-उत्पीड़नक केँ बर्दास्त नहि कऽ सकैछ—जं ओ लोकनि राजनीति कऽ चाहैत छथि तं स्वच्छ राजनीति करथु; मिथिला केँ मिथिला केँ गौरव दियावयु, आर मिथिलाक दिगभ्रमित मतदाता केँ सिखावऽ पड़त जे ओलोकनि अपन मत मात्र मैथिल राजनीति केँ देबि भने एहि भीषण शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध संघर्ष मे मिथिलाक बचा-बचा केँ संग लऽ कऽ चलऽ पड़त तखनहि लक्ष्य-प्राप्ति संभव ।

— पनचक्र

With the best compliment from :-

Technodying & Bleaching Works

195/1, M. G. Road, Calcutta-71 0007

पाकिस्तानी कथा

इफ्तारो

‘भरिदुका उपासल छी। गरीब के एक-दुकड़ी रोटी मैटोक। अछाई अहाँक भला करताह।’ ई आर्तखर, कलपनाइक पुनरावृत्ति द्विपटी कलक्टर साहेबक मकानक जनानीमहल मे प्रवेश करेछ। द्विपटी साहेबक धर्मपत्नीक मेजाज ओहिना सभ समय चढ़ल रहैत छथि, ताइपर सं भरिदुका उपास। स्वभावतः एहि शोकांतखर सं खोभा उठैत छथि। ‘भरिदिन ई कपर-कपडा भीखमंगा सभ जानि ने कून चुहै मे रहैत, मुदा सभक पड़िते जं कने चैन सं रोजा छोटय देस कि बिनबिना क बहार इहैत।’

‘अछाई अहाँक मेहरबानी पर दुआ करताह—उधर कपितखर लगातार बहरा इत रहल।’

‘नवीबन ! ओ नवीबन !! परसुका मधुर सभ जे रहै से भीखमंगा कैद दही।’

नवीबन—अर्थात् नोकरी—बचिया-हठल। जाइत-जाइत माथपर अंडरा राखि छेलक। बेगम साहिबा बरबाक खोफा पर ओकरल दुनू बेटा आ स्वामीक बाट ताकि रहल छलीह। सामनेक टेबल उजर दपदप कपडा सं भांपल छेलक आ ताइपर नाना तरहक मुल्वाडु खाद्य-सामग्री। सामग्री ततेक छले जे भार जे बलु आइब बांकी छले, तकर रखवाक जगहो नहि। छने-छन ओ पड़ी देखि रहल छलीह आ अपेय भ रहल छलीह जे कलन रोबा भांगि एक लिछी जदपान मुँह मे देती।

एक त ओहिना बेगमक लिटलिटाई मेजाज सं नोकर-चाकर तंग रहैत छल ताइपर रमचानक समय त ई मेजाज भार दुग पर चढ़ि जाइल। प्रायः सभ तामस निवाइ छइ नवीबनक कपारपर। बेचारीक कुलखुट मे केओ छेक ने आ तें सम्पूर्णरूपे बेगम पर आश्रित। बेगम साहिबा सेहो अपना दिस सं कनियो कमी नहि रखैत छथिन। मारि-रीट सं कहियो कनियो कुठित नहि होइ छथि। बरन एहि विशेष काजक लेल बाइ-गमी बारहोमास छतीसो दिन एगो पंखा हाथे रहैत छनि।

‘ओ निकम्मी ! ओतय जा क मरि गेलै ने की ? बहरा किण ने होइ छी ?’

नवीबन चट-पट मुँह पोछैत बरंडा दिस अगुआएल। हाथ मे कणकटा मधुर नेने बिदी दिस चढ़ल।

‘हमहर आ त देखियौ केटा छी ?’

मन मसोसि क नवीबन बुझि गेल आ बेगम साहिबाक सामने जा हाथ पसारि देलक।

‘अंय ! माथ दूटा ?’ बेगम गरजलीह।

‘ओ पणियाही राखसनी ओते मधुर सभ भेल

की ? निश्चित गीदि गेलै। देखियौ, लग आ।’

‘नजि-नजि, हम नजि खेलौहै—’ नवीबन कहैत रहल आ बेगम साहिबाक आखि रंजन रसिम जका नवीबनक मुँहक भीतर मुकाएल एक दुकड़ी मधुर पर पड़ि गेल। बेगमक पंखा तयारे छल, तरातर लगकी ओकरा डंगावय। ‘बोरनिया, चुड़ेल। इधर रोजा होइ छइ ?’

‘खोदातछा दुआ करता। बुढ़, आन्दर अफाहिज के कने इफ्तारी मैटोक।’ बाट पर सं ई खर लगातार आवय लागल।

‘ओ—बाप रे ! आर नजि मलिका-इन। अहाँक पहर पकड़े छी बेगम साहिबा फेर कहियो ने खेन। इध बेर छोड़ि दिअ हम खोदा कसम कइ छी।’

‘बम्ह ने तोरा हम कसम खोअये छी।

आह तोही ने की हमरी ने।’

‘अछाई अहाँक बाल-बच्चा के भला करताह।’ फेर उधर कणखर।

एकदम इमि गेलाक बाद बेगम साहिबा नवीबन के पहर सं ठेलैत बनडी जो मुँहभरि की। मधुर सभ भीखमंगा के देने आ। कलन सं ने बेचारा कंठ फाड़ि क चिचिया रहलए। आ इहो द दिभरी। चंगेरी सं कने भूखल मुँहक दालि देत कहथिन। अंबरी सं अपन नोर पोछैत नवीबन बहरात दिस अगुआएल।

× × ×

नया-रास्ता निश्चित कहियो नव-रहल हते परञ्च एखन खाबि-खुषि भरल छइ। दुनू कातक मकान सभक हालात सेहो तेहने। खाकी एगो मकान एखनो रहय जोगर छइ। बाट ततेक चौड़ा जे एक कात मे तांती, लोहार, कुम्हार सभ दोकान सजा क बेसि सकेछ। गरमीक राति मे त तते ने खाट पसारल रहै छइ जे कुनू गाड़ी-घोड़ा भरि टोलक लोकक बिनु निन्न लोहने जाइए ने सकेए।

टोलक लोक सभ तीनटा मसजिद रहवाक कारणे खूब गर्बित। गरीब-गुरबा सभक कुसंस्कारक सुयांग ल मोट हेबा लेल मुझा सभ मे बेश प्रतिद्विद्धता। बच्चा सभ के कोरान स शुक क क तंत्र-मंत्र, यंतर-मंतर खिलौनाइक सभ समय प्रतिद्विद्धता चलिह रहैत छेक। एक शब्द मे कहने लोक के ठकबाक समस्त कौशल अपनौने।

एहि सभ सतपरीअमी लोकक बीच तीनटा फालतू-आलसी परिवार बास करैए, जेना सघन बनक उजरा पीपड़ी सभ सजीव गाछ के नष्ट करवा छेल। मुझा सभक पोशाक बेश साफ सुधारा दोसर दिस जकरा सभक कान्ह पर भार राखि ई सभ मौज करैले, से सभ मैज-मुचेल मे पड़ल। मुझा सभ भद्र लोक भेल आ बोनहार सभ नीच जगतक—असभ्य।

प्रायः गोर जीसे सुदखोर खान सोझा

सोझी एइ इलाकाक लोकक शिकार पर निर्भर अइ। दहल दनमनाएल एगो

मकानक छत पर कचराक बीच ओ सभ रहैए। उत्तर पश्चिम सीमान्त सं आवल एहि बनेया दलक सभ सुदखोर। लोक एकरा सभ सं डेराहए। कुनू एवगदभा स्त्री ओकर सभक लग द क नहि जा सकेछ। एहि इलाकाक प्रायः सभ लोक एकरा सभक रिनियां अइ आ मोटाउ सुदि सधेवा मे सभक स्थिति पजान्तक।

दिनभरि एकरा लोकनिक घरक केवार बस रहैतक आ ई सभ ह्रिष चानवर जका भरि शहर टहलान मारत। सौमलन रोटी माउस छेने फीरत। कैटलीह एकर सभक शारीक काज करैतक। सभ एकेठाम खाद्यत इहो चुवेत-चुवेत एखन उजर भ जेत त बाटपर फेकि देत। ओइ इवड़ीपर हमला लेल बाटपर कुकुर सभ जेना तयारे रहैछ। शेष रातिभरि कुकुरक कटाउभ सुनल जाइछ।

खान सभ खेनाइ-पीनाइ शेष क शिवावक खाता ल बेसि जायत। एक-एक पाइक शिवाव करत। फेर केओ-केओ हुकाल क मैज कुचेल कसमलपर पड़ि रहत। जे कने फुरीवाज रहल शहरक एक चकर मारेलेल बहरा जायत।

सुदि खेनाइ मुसलमानक लेठ धर्म-शास्त्रक निषेध छेक। किन्तु निर्दयतापूर्वक सुदि अमुलेतो ई सभ नमाज पढ़ा आ रोबा रखवाकाल बड़ निष्ठावान जेना खोदा ताळा के भूष द क प्रसन्न राखस जाइत हो। स्वभावतः रमजानक समय मुखे

काहिम मैज सभक पड़ैत-पड़ैत फीरि भवेत। सूर्यास्तक ठोक पष्टा भरि पड़िछा सभय जेना वीते ने चाहय। केओ-केओ मानसो मे लागि जाइत आ वांकी बरंडा-पर टहलान दीत। लग दने कुनू असगर जनानी के जाइत देखि आर घंट नमरा दीत आ अश्लोक शब्दक वाण छोड़ैत। मुदा कान सदिकन सजक रहिते जे कलन मस्तिद मे अजान पड़ैतक-मानेभरि दिनक उपास समा-तिक घोषणा हतेक।

एकरे सभक हंगामाक कारणे दोसर कातक मकान खाली पड़ल छेलक। परञ्च बजारक हते लग आ हते पेच मकान मात्र नीच टाका भाड़ा मे पाबि एइ टोलक नव बासिंदा असगर अजी सोचने छल जेना ओ कुनू नव वस्तुक आविष्कार केने हो। तें बेसी खोज-खबरि नजि ल अपन माय बीबी आ बच्चा के ल क सोम्ते एइ मकान मे आवि गेल। बीबी नवीमा के सेहो बड़ पछिन्न पड़ैले। ओ बलु जात सरियावय मे लागि गेल। परंच पड़िले दिनक सौभ मे कने सुस्तेवाक हेतु ओ उपरतलाक खिड़की लग ठाढ़ि भय नीचा नेना-सुटकाक खेळ देखैत छल कि इठात ओकर शाशु आवि ओकरा भीतर ल जाय चाहलक।

ओइ ! महिषा खान सभ के त देखू। केना ताकि रहलए जेना आखिक डिग्हा बहार भ जेतक।

नवीमा घरकर मे देखलक जे बरंडापर भीड़ केने खान सभ ओकरे दिस ताकि

रहल छेक आ हंसि-हंसि इशारा क रहल छेक। एखन खान सभ देखलक जे नवीमा ओकरा सभ दिस देखेछइ त आर ओर सं ठिठिभाय लागल। नवीमा निश्चित भावे चुपचाप देखैत छल-ता ओकर शाशु खर कान ने पड़ैलेक—‘मौरीह के कनियो लाल-बाल न अ होइ त मनुषाक कून दोख ?’

कह बरल सं नवीमा आ असगरक बीच एगो दुर्वीच दूरी बनल छइ। दुनू पितिओते भाइ बहिन छलभा ने ने ने बागदान मैज रहै। परंच रेवाज एहन जे भेंट-घांट प्रायः नहि जे जका होइ। ओना कहियो काळ बुढ़वा-बुढ़ियाक आखि मे छाउर भोकि दुनू भेंट क छैत छल। जाइठाम जनानी के भन्तपुरक बासी बना राखल जाइ छइ ताइठामक लेल एहि तरहक घटना साधारण बात भेलै। बाद मे ओकरा दुनूक बीच प्रेम बढ़ैले आ चिन्ही पुरखी सेहो चरय लगलक आ तकर बाद असगर नवीमा के स्कूल मे भर्ती करावेलेक ओर करय लगलक।

जवानीक शक्ति, अस्वाह-उमंग कॉलेज जीवनक आरम्भ मे असगर ओहन छात्र सभ मे सं छल जे सभ देशक स्वाधीनताक बात छोड़ि आर किछु सोचिब ने सकेत छल। किसानक गरीबी, धर्मोन्धरक घोषण बोनहार सभक दुर्दशाग्रन्थ अन्वया आ पूंजी पति सभक सर्वग्राही लिखा भादि सभ विषय पर गर्म-गर्म भाषण देवाक लेल ओ देश जनप्रिय छल। जेहने सुबका, तेहने अध्ययन छात्र सभ ओकरा उदीयमान नेता हिशबे देखितेक। नवीमा लग सेहो नाय-कोचित, धर्मदुक् मामिला मे कनियो कम नहि। नवीमा लग ओ अपन रंगीन कार्यावलीक रूप उपस्थित करैत। भल-बार मे ओकर नाम देखि नवीमाक छाती स्यासन भ जहतैक। ओकर सखी-वहेली, परिवार-पुरजन मे केओ एहन नजि छले बकरा मे असगर सं बेसी देश प्रेमक भावना होइक। नवीमा सेहो ओकरा संग नव जीवन आरम्भ करवाक हेतु अपना के तयार करय लागल। अत्यन्त संवेदनशील, बुद्धिमती एहि बालिकाक चिन्ता चारा के एहि पथपर अग्रसरित करै लेल मात्र कने हंगितक खगता छले। शिघ्र ओ भारत वर्षक समस्या सभ सं परिचित होमय लागल आ सम्भाव्य समाधान सोचि ओकर मन आनन्द विभोर भ जाइ। भारतक स्वाधीनता क्रमशः ओकरामन मे स्थान बनवैत गेलै आ देशक लेल प्राणो देवाक हेतु ओ तयार भ गेलि।

असगर काळेज जीवन शेष होइतहि बिवाह कैलक आ तकर बाद आइब पढ़ना आरम्भ। नवीमा ई देखि अवाक रहि गेल जे असगर ओकरा अपन कणक-टा राजनैतिक संगी सं परिचय करौनाइ आ गर्म-गर्म भाषण तक सीमाबद्ध अइ। फेर सोचैत जे भ सकैए पढ़नाइक कारणे एना होमय आ पढ़नाइ शेष होइतहि ओ पूर्ण-रूपेण राजनीति मे भाग छैत।

वस्तुतः नवीमाक राजनैतिक उत्साह जेना दिन-दिन बढ़त गेले, असगरक उमंग ठंडा पड़ेत, गेले। नवीमाक प्रथम उत्तर मे ओ नाना तरह महाना वतिआय लागल। कहियो कहिते- शिम हमरा लोकनि के संतान हएत। फेर कहिते बच्चा एखनो तते छोट अइ जे एकरा छोड़ि बड़ा देना उचित नहि। बच्चा बच्चा को दितक मेले आ हमर नवीमा केरो अलम के राजनैतिक कार्यकाल तेसर क लेखक लखन एकरा अलमर कहने के अलमर नवीमा लेल ओकरा नीक बका प्रयास कर गइले। आ पास देखाक बाद नोकराक प्रयास मे लागि गेल।

जे जे होइ, छल बात, कम व कम पत्नी सं, बेसी दिनबरि नहि तुकाओल आ वकेंद। ओना दोस-महिम सं ओ एह कहिते जे पारिवारिक काल मे तेना ने बाकि गेलख जे पलखतिह ने होइ छइ। दोस-महिम सोचेत—सरिपहुँ बेवारा गियाइ क क फंसि गेल।

किन्तु तकर बाद ? नवीमा अन्ततः बुझि गेल जे पेच-पेच देखर छोड़ि असगर सं आर किछु पार नहि लगवे, से साइत ओकरा ने नहि छइ।

सीरे-सीरे अलमरक कप-कपकप करिक किछु ओकरा आ करको कर्म-काजी बरि सीनाइत म गेले, जे हम दिन-बारि टाकक किन्तु ने स्पष्ट रीत छ। नवीमा के क के आब ओकरा बेव अलमरि बीच होइक कारण बुझा ने पावत नहि रहले जे नवीमा ओकरा दसपागी मुकेत छइ आ मनहि-मन पृणाओ करे छइ। नवीमाक सुप्पी सं ओ ततेक विरक्त भ जाइत जे कलनो-कलनो ओकर सुनर गालपर थपेर मारेक इच्छा होइतेक। वरु तवीमाक उपहास, झगड़ा केनाइ एहि सुप्पी सं नीक ओ सोचेत।

इफ्तारीक समय भ गेले। खानसम समा मेळ। कइ गोटे बरंडा पर आ बोकी बाइ बनावे ने अलम। नवीमा खिड़की का ठाड़ि नीचा बाट पर देखि रहल छल। भरिस्क मास छ एक मेठ हते ओकरा सम के एह मकान मे बना। खान सम सेहो ओकर मुँह निहारेत अन्यस्तसन भ गेल छल। ताइ पर एकर उदासीनता देखि ओहो सम भाव बेसी रुचि नहि लेत। आ ठीक एहि समय ओकरा सभक ध्यान केन्द्रित रहैक लगक मसविद पर, अतय सं जे कुनू समय अज्ञानक ध्वर सुनाइ पड़ि सकै छले।

कुनू गली सं एगो बूढ़ भीखमंगा येहैत-येहैत आबि हाबि मेळ। हाथक लाठी पर भार देजाक बादो ओ अपन देह के सोझ नहि क पावि रहल छल। ओकर सवांग कपे छले। नवीमाक मकानक सामनेक बाट पार करैत ओ जेना हकमि गेल हो आ ते एगो देवाल मे पीठ अरा ठाढ़ भ गेल।

नवीमाक नाहिटा बचा असलाम सेहो ता खिड़की का आबि गेले। ओकर नजरि सामने भीखमंगा पर पड़ेले। ओ पुछलके— माँ-देखही त, ओह भीखमंगाक हाथ मे की छइ ?

‘बी अलमर देखिदे बेटा, भरिस्क लेखक कुन गइ हते ?’

—तखन कइ कहि ने छइ ?

—अ स्केर जे रोबा रखने हो आ ते मकानक बाट छके हो।

—तो रोबा नहि करे छै ना ?

नवीमा अलमर बेसा दिव देखि को बिहु-वेत छन नवीमाक दुहो हिता देखे।

—तखन अलमरक जे इत्तेकर के कहलियन ? ओ पूवि बाबब रहिन ?

नवीमा किछु सोचि बाबलि—से बात तो अपन अलमरक सं पूछि लिअहुन।

—किन्तु माँ, तो कहि ने रोबा करे छै ?

नवीमा सिनेह सं बेटा के हुलारेत बाबलि—तो नहि करे छै ने—ते।

—हम त बचा छी। दाइ की छइ जे जे रोबा नहि करेइ तकरा ने कि नर्क मे बाय पड़े छइ। अन्हा—नर्क बैहन होइ छइ ना ?

—नर्क ! एह त हमरा लोकनिक समझि अइ—नीचा मे। तीर पृणाक सं नवीमा कहके।

अलमरक सवाइ बाक मर तकेत पुछल के—कतय ?

—नीचा मे—उहइ बतय ओ भीख-मंगा ठाढ़ अइ, अतय लोहार, कुम्हार, तांती, नोनिहार सम रहैइ।

—मुदा दाइ त कइ छथि ज नर्क मे आगि होइ छइ ?

—हं सोना, ठीके।

—आ स्वर्ग केहन होइ छइ ?

—इहइ छइ स्वर्ग—अतय तो, हम आ तोहर दाइ रहै छथुन। बाइ ताम पेच-पेच, साक-सुधरा झकझक करैत पर खभ छइ। भारितेराव नीक-नीकुत खेबाक, नीक-नीक पहिरबाक छेक, नाना तरह खेकसोना सम छइ।

—शहर मे तखन किहक ने सम स्वर्ग मे रहैइ ?

—कारण स्वर्गक लोक अनका स्वर्ग मे नहि आवय दे छइ। ओकरा सम सं काल करा ले छइ आ फेर बक्रिया क नर्क मे ठेलि दे छइ ?

—आ ओ सम आन्हरो भ जाइ छइ ?

—हं सोना, नर्क आन्हर लोक सं भरल छइ।

आ ठीक एही समय अज्ञानक ध्वर सुनाइ पड़ेले। भरिदिनुका उपासक समा-तिक घोषणाक संग प्रथवलि मेळ रंग-बिरंगक आतिशवाजी। खान सम भरकर करव लागल।

ओ बूढ़ अशक भमंसीगा अपन हाथक वस्तु मुँह मे देवाक प्रयास कैलक परजव उत्तेजना सं ओकर हाथ कापय लगलेक आ

हठात मधुर खसि पड़ेले। ठेढ़न पर भर द क ओ मधुर उठेबाक प्रयास करय लागल। ओकर आंगुर-मधुर बरि जाइ-जाइ ता केहरो सं एगो कुकुर आबि लूक्ति लेलके। शिमि आर कइकटा कुकुर जूमि गेले आ कटाउक करय लगले। दुर्बल कंठे कुकुर सम के दबारेक प्रयास कैलक परजव कुकुर समक आवाज भार तेज भ गेले। भूख आ व्यथता त असुअसु ओर बूढ़ माटि पर खसि पड़ल आ बचा बका हिचुकय लागल। स्मैरि दिनि दू गो खान गरदिनि समरा काय देखलक आ सुघो सं हंस्य लगल।

‘माँ !’ माइक पाका मुँह तुकसोले डेरयल असलाम किछकिछा क आवेहन बनओलक। आ एह प्रथम ओकर अलमर मन नर्क शब्दक प्रकृत व्यञ्जना उपलब्धि कैलक।

‘अयतान’ ! खान सम दिव देखि

नवीमा पृणा भरल खरें आले सं बाबलि।

‘माँ !’ भरल कंठे—फेर असलाम कहके।

नवीमा ओझा ओझा मे उठा जाती सं वाटि कैलक आ आबि मिलतेत भाइत कंठे बाबलि—सोना, पप भ क तो सम सं पहिने एहइ काव करिइ बाइ सं आर ककरो नर्क मे बाब नहि करय पड़े।

—मार तो माँ ! तौहूँ खवे किने ?

—हम ! हम की काव कर ? हम त एही जइल मे बन मेळ दूदि म बाबब”

—तो त कनियो दूद नहि छे। दाइ बका नहि। आ तो नहि रखने जे हम एक दम सं असगर भ जाबब।

—नहि सोना ! हम किन्तु ने अपन सोना बेटा के असगर होमय देव। हमहुँ रहन-अरले रहब।

—रखीद जहान मैथिली—अप्रदूत

दू गोठ गीत

महा जागरण गीत/पकटा किसानक लेख

बूड हो किसान भइया फुटलइ किरिमा !
पूरुब सं बदलल जाय दुनियाँ जमनमा !
गान्धीजीक राज बंटय सुकुते जनेरा
पुहुष विमान चढ़ि मन्त्रीक फेरा
दूधे पूते बढ़इ ‘सोम’ मान धान धनमा ! बूड
हाथि सं डेरा देने फौती मलेरिया
भोरे मधारल घर मे पाहुन समरिया
भोट मांगअयला सतराकिया सजनमा ! बूड
रहइ ने बहाना कयने
भूलकेर घडत थयने
अपना करम सं मरिअ भूलकेर बहनमा ! बूड
—सोमदेव

मिथिलाक वसन्त

तीन कात मे, नदिया रे नदिया वसर दिव पहाड़े हो
बिराजे माभे
रामा हमरो मिथिला देश हो बिराजे माभे ॥
तीन लोक मे सुनार मिथिला पावन ओ मनभावत हो
लोभाओन लागे
रामा पले मास फगुनमे हो लोभाओन लागे ॥
तीसी जे फुलेलै रामा सरिसो जे फुलेलै हो
फुलाइए गेले
रामा बन के बनफुलबा फुलाइए गेले ॥
सजल धजल पिरथी लागे नव कनिये हो
अबैया भेले
रामा पहुना राज बसन्तक जनु अबैया भेले ॥
छीटै अतर बसात हुलसि के बेनिया जनु डोलावे हो
अलापे लगलै
रामा कोइली कनियां परखिन गीत अलापे लगलै ॥
—राम लीचन ठाकुर

बाल-मय

वाचस्पति मिश्रक जन्मस्थान मिथिलाक तीर्थस्थान

पहल दर्शन टीकाकार वाचस्पति मिश्र अपन जन्म सं कोन स्थान के विभूति कहलन्हि ई हुनक कोनो ग्रन्थ मे स्पष्ट रूपेण बर्णन नहि अछि। परन्तु वर्तमान अन्धराठादीक पूर्व मे एक उच्च स्थान छेक, ओहिठाम दू गोठ पोखरि छेक, जाहि मे एकक नाम मिश्राइन तथा दोसरक नाम बचही छेक। वृद्ध परम्परा सं ई सुनि रहल जे एहिठाम वाचस्पति मिश्रक आवास तथा विद्यालय छलन्हि। एहिठामक ई परम्परा अखन बरि छेक जे लोक अपन सन्तानक अक्षरारम्भ वाचस्पतिक बरादीक माटि सं करवेत छथि। लोकक ई चारना छन्हि जे एहि डोहक माटि सं अक्षरारम्भ करबोने ओ व्यक्ति विद्वान होइत छथि। वाचस्पति मिश्रक आवास सं उत्तर प्रायः पाँच सड़ बीघा जमीन एहन छेक जे प्राचीन कालक पेशलोकक आवास भूमि सदृश लागत। एहि गामक नाम अन्धराठादी पदवाक वृद्ध मत अछि जे राजातुग आन्दर छलाह हुनक राजधानी रहबाक कारणे एकर नाम अन्धराठादी नहि अन्धराजधानी दू खण्ड मे परिवर्तित भऽ गेल प्रथम अन्धरा द्वितीय चानी सं चानी आ क्रमशः ठाढ़ी भेल, जे सम्प्रति दू टोक रहितहुं एके ग्राम अन्धरा-ठाढ़ी सं सम्बोधित होइछ। राजा तुगक राजधानीक प्रति किछु मतभेद अवश्य छेक। डा० गंगानाथ झा सांख्यतत्त्व कौमुदीक भूमिका मे राजातुगक राजधानी नेपाल

बाल-कविता

सदघोष

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित, लए 'पाञ्चजन्य' उद्घोष करब।
अपन मातृ भाषाक हितक हित, स्व भवत्व ग्रहण क जाय लड़क।
अभिलाषा भाषा सुविकापक, युव जब आन्दोलन मे आबथु।
कछिया काळे बान्हि दृढ़ बल लए, स्व भाषा अधिकार देखावथु।
हम छातो फुल बढब आगां, दय नारा, कारा सं न डरब।
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित, लए 'पाञ्चजन्य' उद्घोष करब।
बनि मातृभूमि केर सबल पूत, निज भाषा केर उद्धान करब।
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित, लए 'पाञ्चजन्य' उद्घोष करब।

—भूतनाथ

मिथिला विभूति

हिनक पद—

'योड़ के जातिह, अविहक महिबिह,

उंच क बनिह भारि।

जं खेत तेयो ने उपजह,

डाक के पढ़िह गारि॥'

एहनो किसानक लेल पथ प्रदर्शनक काम करेछ। ई पद मात्र हिनक कृपि सम्बन्धी ज्ञानहिक नहि, अपितु आपना पर अटूट विश्वासक सेहो प्रमाण थिक।

एहिना—

'कुसि भमरगंगा, चोठोवान,

आबहुं बेसह घर किसान।

मारे बिया, बोक्के घान,

आब कि रोपवह घान किसान।

बनरोपनीक उचित समयक सम्बन्ध मे

प्रमाणिक मानल जाइछ आ प्रायः किसान लोकनि एकर पुनरावृत्ति करैत सुनल जाइ छथि।

'सामोन पलवा, भादव पुरिवा,

आसिन बह इशान।

कार्तिक कंठा सिकियोने डोलय,

कत'क रखवह घान।'

जं पुरवा पुरवेया पावए,

सुखले नदिया नाव बहावए।

हिनक ज्योतिष ज्ञान गणनाक अम्लीय

उदाहरण अह।

महाकवि डाकक पद सम जाइ ठाम

सहज बोचगम्य अह ताइ ठाम किछु पद

सभ दृष्ट कृतक पर्याय मे से हो अवैष्ट,

जेना कि कविर दासक उनट बांधी। एहि

तरहक एक पद अह—बहदा मूते खेत

दहाय, खसे खेत त बड़त पहाय।' कविर

दासक संग आरो समता छलनि हिनका

मे। जेना कि कहल जाइछ—ई पदल-

लिखल नहि छलाह—कविरदासक मसी

कलम छभोनही सन। सत्य जे हो परंच ई

लाल बुझकरक चिट्ठी

श्रीमान् सन्पादक जी. महोदय जी!

बय मैथिली।

बाद समाचार ई जे हमर बेर वेर मना केलाक उपरान्तो अहां अपन आदति सं नाज नहि एलहुं आ हमर दोसरो चिट्ठी के छापिये देलहुं। त कान खोलि क सुनिह लेख जाओ जे आहां के जं येयर-पनक विशेष दावो हो त ताइ सं मिलियो भरि भूत लाल बुझकर के नहि छनि। कहलहुं किने जे 'चोरेक डर भगवा तुक-ओनाह—से तकरे परि' आइ कालिक दोआही नेताक डर लाल बुझकर अरन मुंह मे ताला किन्हुं ने लगा सकें छथि। तखन त खुदो खा क भूख नष्ट करवाक पक्ष में हम कहियो नहि रहौ आ जे हेतु अहां लोकनिक पत्रिका से हो कहीं आयल पानि गेठ पानि बाटे विशाष पानि सन ने हो—ते एक आब अंक लेख किएक देला-विन्दार होइ—उहए सोचि चिट्ठी नहि छापे लेख लिखने रही। हं, तखन ई बात बरि सत्त जे फरमाही रचना हम नहि लिखे छी—माने आर्डर सञ्चार नहि छी।

आहां लिखैत छी जे देश मे मही आकास छुबि रहल-ए, अगहने सं चाउरक दाम चारि टके भ गेल छेक ताइ ठाक सरकार २ लाख टन चाउर पठा बदला मे तेल देबाक जे रुसक संग संघि कैलक-ए तकर विरोध देबाक चाही। हमरा त अपनेक बुद्धि पर हंसी लागे। कहू त भला, कहां राजा भोज आ कहां भोजन तेही। तेलक संग कतौ चाउरक तुलना हो। एही बुद्धिक कारणे ने मैथिल एते पिछड़ल अह। जे जाति सति उठि के सर्वांग शरीर मे तेल ख्याबेह आ तेहन शान करेह, स्नानक बाद पूजा करेह आ भगवानो के तेल दैत छनि, भोजन मे रोज जं तिलकोरक तदभा नहि भेलक त अदोरी-दनौरियो अवैष्ट चाही आ से किनु तेले भूखल नहि जाय अचार दो बर्ला-तीन बर्ला जोगओने रहत आ बल्ले-बल्ले तेल पलटत, राति सुते सं पहिने तेल पहर मे लगेवे करत आ तें पेट मे खड़ ने थिंग मे तेल बला कहबी के चरितार्थ करत—माने तेल सं पलो भरि फराक नहि रहत तकरा लेल तेलक विरोधक बात केहन लजाएत थिक सेहो त सोचि-तहुं ?

त माने पढ़त जे पूर्वकाल मे सभक लेख पढ़वा-लिखवाक सुविधा नहि छलक। परंच कविरदास सं फराक दिनक अविर्भाव कविता सहज अह जनगणक हज्जा आकांक्षा दर्पण आई। महाकवि डाक सरिपहुं लोक कवि छलाह—मक कवि नहि-शृंगारिक नहि... कहन जे महाकाली पंडित छलाह डाक तनिक मृत्युक सम्बन्ध मे कहल जाइछ जे पोखरि मे डूबि अकाले कालक गाल मे चल गेलाह। ओना प्रतिभाक प्रायः अकाले मृत्यु होइत रहलक परंच एहू सम्बन्ध मे महाकवि अनबान छलाह से नहि। ओ स्पष्ट कहै छथि—ई छनि बुझि डाक निहुं दि, नाशक काल विनाश बुद्धि।

आइ समय आनि नेउर जे हमरा लोकनि अपन एहन एहन विभूति के ताकी बीयाबी आ अपन चातोय मर्यादा के बढ़ाबी।

—सुजतबा अछी

सम्पादक जी, तेलक उदर मस्त्र छेक जे जे काज शक्ति सं संभव नहि तकरा सहजहि संभव क सकैछ जं रमैन पढ़ने इहय त बुझलै इहय जे राखण आ बालि सन बीर पुष्प अपटी खेत मे मारल गेलाह आ बिभीषण-सुग्रीव सन पछरगुआ मात्र तेलक बले राख्याधिकारी बनि गेलाह। महाभारत काल मे युधिष्ठिर सन अगाटक लोक चर्मराजक उपाधि पञ्चोलनि आ कर्ण-भीष्म पितामह सन सत्यवादी योद्धा अकाले कालक मुंह मे चल गेलाह। कहवाक आशय मे तारार्यक मतलब ई जे एहन जे महत्वपूर्ण वस्तु मेल तेल—तकर विरोध नहि क उपयोग केनाह सिखू जे प्रविध्य बनत। हेयो महानुभाव हमरा लोकनिक पुरखा मुल नहि छलाह जे बहुत पहिनेहि कहि गेल छथि—तिर तेल, ई कैमहर इंगित करैह—ताइ पर ज्ञानभांड योग द के त सोचू।

सम्पादक जी जं अपने लोकनि हमर सलाह मानौ त हम कहब जे व्यर्थ मैथिली आन्दोलनक नाम पर अग्न सर्वस्व नहि गमा—तेल आन्दोलन आरंभ कर। सफलता सुनिचिते मानि लियह आ मिथिला-मैथिलीक सम्पूर्ण समस्त्यक समाधान तथा सर्वांगिण विकासक एक माथ ई पक्ष जानि लिपह। ओना अपन खचा खा के एहन सलाह देवे के करत—तथापि हम त गारंटीयो देवे जे जं हमर बात फूसि प्रमाणित हो त हमरे नाम पर एक दर्जन एससिसियन पोसि लेब। हेयो बाबू—एकर त साक्षात प्रमाण छथि अपना लोकनिक मुख्य मंत्री डा० श्री जगन्नाथ श्री मिश्र। हं तेल लगेबाक कला अवैष्टे जानल रहक चाही ने त इनुमान बी जकां भरि बीनगी तेले लगवेत रहि जायब आ हाथ बंचत सुजा।

सम्पादक जी, अहां के त बुझलै अह जे श्रीमान लाल बुझकरक लेख बालक एह बेर मैट्रिक परीक्षा देयन परंच एखनहि सं कन्यागत लोकनिक लाइन लगले रहैत छनि हुनका ओतय। एकर कारणो छेक जे ओ दहेज विरोधी छथि आ तें बेश मे टाका गनेबाक प्रश्ने ने उठेन। किन्तु एमहर भाबि के ओ निर्णय लेखनिह जे बेटाक विवाह ओकरे ओतय करओताह जे लाहसंस प्राप्त तेलक डोलर होथि। जं अहूँ के एहि तरहक कथा जानल-बूझल हो त घटकेनी क सकैत छी।

अन्त मे अने के सचार्थ-लिखि दी जे हम एखन तेल पर शोधक रहल छी। शोधक विषय थिक—तेल किएक आ केना। परंच दुखक बात जे तेलक अभाव मे घर मे छांभी ने पड़ेछ आ तें शोध कार्य ठर पड़ल अह। एही अलगा के बाट ताकि रहल छी जे कहिया रुसक साम्राज्यदो तेल भारत मे पदार्पण करत जे हमरो घरक दीप जरत आ शोध कार्य पूण भ सकत। एही दुभारे एखन रचना पठेग सं सेहो अवसर छी किन्तु तेलक अगमन होइते रचना अवैष्टे पठाएब से विश्वास अछि। अर जी? अनेक पत्रोत्तर नहि पेशक प्रबल आकांक्षी

श्रीमान लाल बुझकर
बुझुक ग्रामवासी

सभा-समिति

ड्योद १० जनवरी, ८२। आइ इत्य हा० ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक अध्येता मे विद्यापति पर्व समारोह मनाओल गेल। वर्माजी कहलनि जे लोहनाक पूव ई पहिल विशिष्ट आयोजन थिक। उद्घाटन भाषण करैत हा० कांचीनाथ झा किरण जनौलनि जे मैथिली भाषी क्षेत्र भाषाई उपनिवेशवादक शिकार अछि। ओ संस्कृत आ हिन्दी सं शोषित अछि। बाहरि घर, मन्दिर आ पाठशालाक भाषा एक नहि होयत, ताहरि ई मूभाग पिछड़ल रहैत।

ओ चन्द्रनाथ मिश्र अमर जनौलनि जे मातृभाषाक माध्यम सं शिक्षा नहि देनाक कारणे इतऽ एतेक दिनक बादो शिक्षाक प्रतिशत—साक्षरताक प्रतिशत पचीस सं आगां नहि सुकल अछि।

आचार्य नाजिम रिजवी कहलनि जे अपन अधिकार लेल मुखिया, बी० डी० ओ०, विद्यापक आ सांसद लोकनिक घेराओ करू जाहि सं सरकारी कार्यालय मे मैथिली भाषा मे काज भऽ सकय।

श्री सुभाषचन्द्र यादव जनौलनि जे मिथिलाक लोक मे संघर्ष चेतना बगवना लेल विद्यापति पर्वक उपयोग करवाक चाही। एहि समारोह मे मंच संचालन कऽ रहल छलाह श्री जीवकान्त।

कवि सम्मेलनक संचालन कएलनि श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर। एहि मे भाग लेलनि मणिपद्म, किरण, चन्द्रमानु सिंह अमर, प्रवासो साहित्यालंकार, जीवकान्त, उदयचन्द्र झा विनोद, शोतिबर्द्धन, नाजिम रिजवी, पवन कुमार, विमलेश किंकर प्रो० डा० दयानन्द झा, प्रो० देवकान्त मिश्र, प्रदीप मैथिली पुत्र इत्यादि।

सांस्कृतिक कार्यक्रम मे अपन आकर्षक गीत सभ सुनौलनि शशिकान्त सुभाकान्त, चन्द्रमणि, सुमन माया कान्त, गगन भुवन आ गंगाधर झा। एहि कार्य-क्रमक संचालन क रहल छलाह जीवकान्त आ ज्ञानचन्द।

विद्यालयक छात्रा लोकनि उषा, इन्दु, गिन्नी कार्यक्रमक आरंभ विद्यापतिक गोसाउनिक गीत सं कएलनि।

आचार्य नाजिम रिजवी राधवाचार्य शास्त्री आ दामोदर लाल दासक मृत्यु पर शोक प्रस्ताव अनलनि।

किरण जीक प्रस्तावक अनुमोदन करैत जीवकान्त बिहार सरकार सं माळ कएलनि जे मैट्रिक परीक्षा मे निर्धारित मैथिली गद्य पद्य संग्रह अनुपयुक्त आ छात्र लोकनिक स्तर सं बाहर अछि, तँ अनुभववी शिक्षक लोकनिक नव सप्ताहक मण्डल नव गद्य-पद्य संग्रह सम्पादन करय।

ओला उच्च विद्यालय ड्योदक प्रधानाध्यापक भी बिलट झा स्वागत भाषण कएलनि आ कार्यक्रमक अन्त मे धन्यवाद ज्ञापन कएलनि विद्यालयक वरिष्ठ शिक्षक श्री लोचन झा।

✱ जेना कि वर्माजी कहलनिहँ जे ई आयोजन एहि अंचलक पहिल विशिष्ट

आयोजन निक से जँ सत्य त कइय पड़त जे एकर ओय श्री जीवकान्त के छनि जे हालहि मे खजौली छोड़ि ड्योद मे खेमा खसओलनिहँ। किन्तु एहु बात के अन्वीकार नहि जा सकैत जे हुनका लोकक सहयोग मेटलनिहँ जकरा बल पर आयोजन सफल भ सकलए। एहिदाम ई स्पष्ट आइ जे मैथिल चेतना मुहल नहि अइ अपितु सुसुप्तावस्था मे पड़ल अइ जकरा भक्तमोहि के जगेवा लेल नेताक प्रयोजन छइ अगुआक प्रयोजन छइ बकर नितान्त अभाव रहल-ए।

एहि अवसर पर किरण जी कहल जे मैथिली भाषी क्षेत्र भाषाई उपनिवेशवादक शिकार अइ सतप्रतिशत सत्य अइ। सतप्रतिशत सत्य अइ जे मिथिलांचल संस्कृत हिन्दी द्वारा शोषित होइत आबि रहल-ए आ आब एहि मे निश्चित उर्दूक सहयोग सेहो रहैतक। तँ आइ आर वेदी प्रयोजन छेक जे मन्दिर-मठविद, स्कूल आ घरक भाषा एक मात्र मैथिली हो आ एहि लेल भनहि जे कुनू मुख्य लुकावय पड़य-हमरा लोकनि के तैयार रहक चाही।

जहाँपरि मैट्रिक परीक्षाक निमित्त निर्धारित मैथिली गव-पद्य संग्रहवाला प्रस्तावक प्रन्न अइ प्रायः समस्त मैथिली भाषी एहि सं सहमत होइतक जँ हुनका विषय बोध होतनि। परंच प्रन्न त ई अइ प्रस्ताव पारित केनहि टा सं की समस्याक समाधान भ सकैत? सरकार मैथिलीक हित चाहैत नहि आतँ ओकरा पर एहि प्रस्तावक कुनू प्रभाव पड़वाक संभावना कएल नहि जा सकैत। की आशा करी जे एकर सम्पादक लोकनि जे निश्चित मैथिली भाषी विद्यान छथि हुनका लोकनिक आंखि खुजतनि आ ओसभ एहि काज सं अपना के फराक राखि उपयुक्त लोकक लेल खान खाली करताह? थोड़ेक कालक निमित्त मानिली जे इहो लोकनि से नहि क बिहारक मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र सन मातृधनक सूत्री मे अपन नाम लिखेनाह मे बढपन वृद्धति त की छात्र शिक्षक लोकनिक एहि संदर्भ मे कुनू कर्तव्य नहि?

जहाँपरि हमरा लोकनिक विश्वास अइ जे एकर समाधान छात्र-शिक्षक लोकनिक हाथ मे छनि। ओ लोकनि निश्चित एहि निमित्त प्रयोजन मेने पेष सं पेष आन्दोलन इइताल क सकैत छथि। छात्र आ शिक्षक लोकनिक संगठन सरिपहु सशक्त अइ जे सरकार के नमरा सकैए आ अपन/अपन नेनाक भविष्यक बाट परिष्कार क सकैए, मातृभाषा मातृभूमिक मर्यादा बढा सकैए।

✱ कलकत्ता, २७-१२-८१। स्थानीय निरामय पालि विज्ञानिक मे नवगठित नव जागरण मैथिल संघ'क पहिल सभा मेळ जकर अध्यक्षता कएलनि मैथिलोक्त वयोवृद्ध सेनानी श्री हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु'। एहि अवसर पर मिथिलेन्दु जीक अतिरिक्त सर्वश्री बाबू साहेब चौधरी, रामलोचन ठाकुर योगेन्द्र ठाकुर ब्रह्मनारायण झा, चन्द्र किशोर मिश्र ओहि वक्ता लोकनि संस्थाक प्रति अपन-अपन शुभकामना प्रकट कएलनि

तथा सहयोग सुभाषक आश्वसिन देलनि। मिथिला मैथिलीक सर्वांगिन विकास लेल एकजुट भ कार्य करवाक आवश्यकता पर जोर देल गेल। संस्था दिव-सं संयोजक श्री बेधनाथ मिश्र आगत यतिथि लोकनिक प्रति आभार प्रकट करैत संस्थाक उद्देश पर प्रकाश देलनि तथा अनुभववी मैथिली सेनानी लोकनिक अनिर्देशक आवेदन कएलनि।

तत्काल ओ बेधनाथ मिश्रक संयोजकत्व मे इगो एहएक कमिटीक निर्माण कएल गेलए जाइ मे सर्वश्री राजबली ठाकुर, रामनारायण कुमार, सुरेश झा, चन्द्र कुमार झा, लखन निश सदस्य रहलाह-ए।

✱ मैथिली मे प्रायः संस्था ननेत रहल अइ संस्थाक निर्माण नीके नहि आवश्यको छेक खासके मिथिलाक मैथिलीक वर्तमान स्थिति मे। परंच संस्थाक निर्माण अपना अपा मे कुनू महत्व नहि रखैत महत्व-पूर्ण होइल ओकर काज' इहए कारण छेक जे कतेको संस्था आयल पानि गेल पानि बाटे विद्यालय' पानि बला कहबी के वरितार्थ करैत रहलए। नव जागरण मैथिल संघ' एहि कहबीक विपरीत अपन कार्य सं अपन अस्तित्वक मान मैथिल समुदाय के करा-ओत तथा मैथिली आन्दोलनक आगामी

इतिहास मे अपन स्थान बनाओत से आशा हमरा लोकनि करैत छी। विश्वास अइ जे एकर कार्यकर्ता लोकनि निराश नहि करता। 'देसिल बयनाक शुभकामना।

देसिल बयना

पाठकीय परिवारक सलियाना सदस्य

१. श्री अभय नाथ झा, कलकत्ता
२. श्री उदय कान्त मिश्र, कलकत्ता
३. श्री बेधनाथ मिश्र, कलकत्ता
४. श्री राम नारायण कुमार, कलकत्ता
५. श्री लखन चौधरी, कलकत्ता
६. श्री रामानन्द मिश्र, कलकत्ता
७. श्री ब्रह्मनारायण ठाकुर, कलकत्ता
८. श्री हरे प्रसाद, कलकत्ता
९. श्री विद्यापति झा, बरौनी
१०. श्री दास किरण, राउरकेला
११. श्री नागेन्द्र झा, ..
१२. श्री के० के० मिश्र, ..
१३. श्री बी० झा, ..
१४. श्री सत्यरंजन, ..
१५. कुमारी शोभा झा, दिल्ली

देसिल बयनाक संवाद प्रतिनिधि श्री सूर्यनारायण मंडल- नवको दिल्ली, अनिल सुधा-बिरोल मिथिला

देसिल बयना चन्दाक दर :-

एक प्रति-	पचास पाइ
सलियाना 'वारह प्रति	पांच टाका
पांच सालक (साइठ प्रति)	बीस टाका

विज्ञापनदाता लोकनि सं-

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ ठाढ़। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू

विज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन

अरुणोदय प्रकाशनक पहिल पुस्तकांजलि :-

प्रतिध्वनि

माओ रसे तुल, हो बि मिन्ह, लू लून, नेरुदा, ब्रेख्त, लुम्बा, गुंटर प्रास, महमुद दारमिस, लेइज दिइड, हिरो बोतेव जोस क्रेमिर्न्हा, डेविड डियोप, शेख अयाज, आदि विश्वक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कवि लोकनिक चूनल कविता समक मैथिली रूपान्तर।

दाम-चारि टाका मात्र

संकलन, सम्पादन ओ रूपांतर

राम लोचन ठाकुर

कह लोचन कविराय

तेल इजोतक उत्स थिक तेल शक्ति केर खान
तेलक बल डिबिया जरय तेलहि उड़य विमान
तेलहि उड़य विमान तेलबल मंत्रीक आसन
तँ जनसेवक राज तेल पर कएलक रासन
कह लोचन कविराय रूश सं कएल गेल-ए मेल
बदला मे द चाउर गरीबक लेल अबैए तेल

अरुणोदय प्रकाशन, ३०/५, डा० देवदर रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल ओ महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पावनियर आर्ट पिंठर्ब, ३२-बी, वृन्दावन
बेशाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

स्मृति रेखा

वर्ष-२ अंक-६

मार्च, १९८२

मूल्य-पचास

सम्पादकीय

फगुआ

मैथिली मे हगो बेव प्रचलित कहवी छह—जे बीवह से खेच फागु। कहनाक प्रयोजन नहि जे फगुमा बीवंतताक प्रतीक छि आ बीवंतताक लक्षण होइ आनन्द उमंग उल्लास। ते फगुमा आनन्द-उल्लासक पावनि छि। परञ्च आनन्द उल्लास कहरो इकक नहि।

मनुष्य सामाजिक प्राणी छि। ओ मात्र अपने सुख सं सुखो आ दुख सं दुखो नहि हार नहि भ सकै। अववादक गर फराक छह। अववाद मे बताइ भ सकै, पशु प्रवृत्तिक वा दानवीय प्रवृत्तिक मनुष्यक मेपबारी अनु भ सकै। ते फगुमा सामूहिक उत्साह उमंगक पावनि छि। पारस्परिक सहयोग, सद्भावनाक परिचायक छि। इकर सब सं प्रत्यक्ष प्रमाण मिथिलावलक गाम-घर मे पाओल जा सकै—भाइताम वर्ण, धर्म, सम्प्रदायिक भेद-भाव विसरि कोक—एक संग—आनन्दोत्सव मनवै—रंग-अबीर खेलाइ—माटि केँ डाल क देख।

फगुमा सृष्टि परिपूर्णताक पावनि छि। अभावी मन मे आनन्द उमंगक कहिक कहना केनाई मूल्यता छोड़ि आर किछ नहि भ सकै। पेट मे अन्न आ देह पर वस्त्र नहि रहितो बताइ छलिन हँसेत रहै। ते बताइ एहि निमग्न संगहि प्रत्येक सामाजिक नियमक अववाद छि।

फगुमा सामाजिक पावनि छि। जातीय पावनि छि, राष्ट्रीय पावनि छि। युगो सं हमरा कोकनि इकरा एहि रूप मे मनवैत आबि रहल छी। परञ्च भरिषक कहियो सोचवाक क्षमता नहि कुल जे वास्तव मे वर्तमान संदर्भ मे हमरा मिथिलावासीक छेक एहि जातीय आनन्द उमंगक पावनि कि सरिपहुँ कुन अर्थ शेष रहि गेल अह ? सं सरिपहुँ सोचितहुँ त निश्चयते आइ—मिथिला-मैथिल-मैथिलीक दोसर रूप रहैत।

हमरा अनतवे मैथिल जाति मरि चुकल अह आ मृत-जाति मे एकता, सहयोग सहभाषना केँ ताकव 'बोवटिया पर रतौन्ही तकनाइ' सं बेसी आर किछ नहि भ सकै। ओकरा मे उत्साह उमंग केँ ताकव 'दूधक बाटो मे अनन्त भगवान केँ ताकव' छोड़ि आर किछ नहि। ओना मधुरक नाम महात्मा गाँधी होइते छह आ ते लोक केँ रतौन्ही छुटि चाह छह आ अनन्तो भगवान मेटि चाह छथिन। परञ्च ई—आत्मघाती प्रक्रिया छि। कोक अनका अनहि ठकि लोक—अपना आप केँ ठकनाइ—संभव नहि भ सकै।

आइ मिथिला विश्व मानचित्रपर नहि अह, मैथिली भारतीय संविधान सं बारल अह मैथिल अनहि दर-आडन मे छहकारल अह। कहियोक जियुवन विस्मृत मिथिलाक नाम आइ ओकर अपनो सन्तान ने बने छह। आइ मिथिला मे रौंदी-दाही सुखमरी महामारीक ल्हायो बास छेक। आर्थिक विभ्रमता इकर रौंद केँ तोरी देने छेक आ सरकारी अवहेलना प्रतारना बेमनस्यताक सम वा स्वासन सन नाकहि हिक्केत अपने सन्तानक अभ्युत्थान इकर माथ लाजे मुरा देने छेक। तेहना स्थिति मे आनन्द उत्साह उमंग कतय पावो। ई भिन्न कथा जे अंचिवापर चढ़क आसक शरीर संकोचक कारणे हिलनाइ-डोलनाइ केँ कोक बीवंतताक लक्षण मानि लिअव।

कहल जाइते जे एही तिथि केँ श्रीरामचन्द्र रावण केँ मारि लंका विजय कैलनि आ मैथिलीक संग अयोध्या घुरल। सीता सभक आगमनक उपलक्ष्य मे ई उत्सवक आयोजन भेल छल आ तहिया सं प्रतिवर्ष होइत चलि आबि रहल-ए। सीता-रामक धिरवाक पाछा अपन आत्मीय केँ पैवाक आनन्द त छेकै संगहि हुनक विजय गाथा स्वजातीयक विजयस्य पर विजय, मानवीय चरित्रक दानवीच चरित्रापर विजयक महान गाथा केँ अपना मे समेटने अह। आइयो भारतक कएक क्षेत्र मे रावणक प्रतिभा बराबो छ जाइत आ तकर बादक दिन रंग अवीरक संग आनन्द उत्सव मनाओल जाइत। मिथिला मे पहिल दिन रातिमे 'सम्मत' जराओल जाइत, दोसर दिन फगुआक उत्सव होइत।

जं आजुक संदर्भ मे नीक जंका बिचार करी त स्पष्ट रहैत जे मैथिली एखनो लंकाक अशोक वाटिका मे मरणासन्न छैथि। राम स्वयं हुनका रावणक जाल मे फंसा देने छथिन आ लव-कुशक जन्म भेबे नहि कहल फेर आनन्द-कथिक ?

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
छाहि-जारि सुझाह करव हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

श्री मार्कण्डेय प्रवासी पुरस्कृत

मैथिलीक सुपरिचित कवि आ लेखक श्री मार्कण्डेय प्रवासीक सद्यः प्रकाशित महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' केँ वर्ष १९८१ क सर्वश्रेष्ठ रचना मानिकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कृत कबने अछि। गत २६ फरवरी केँ पणजी (गोवा) मे साहित्य अकादमीक एकटा भव्य समारोह मे कविकर प्रवासी केँ पाँच सहस्र टाका उतरीय तथा सरस्वतीक प्रतिमा अर्पित कयल गेलनि।

बनखीपुर (बिहार) बीलाक गढभारा गाम मे १ मई १९४२ केँ इकरा मध्य-वर्गीय कुपक परिवार मे जन्मक ओ प्रवासी सम्प्रति पटना मे 'आर्यावर्त' दैनिक क सम्पादकीय विभाग मे सेवारत छथि। हिन्दी आ मैथिलीक जनकारिताक क्षेत्र मे दिनक लिखत 'सुदकुलानंद को चिट्ठी' आ 'आमलाक' आभा स्तम्भ रचनात्मक दृष्टिकोण आ व्यंजनापूर्ण भाषाक कारणे इकरा विशिष्ट उपलब्धि मानल जाइत अछि।

बहुचर्चित महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' क अतिरिक्त दिनक तदर्थ काव्य संग्रह 'हृदय' 'अभिमान' उपन्यास तथा विभिन्न पत्र-पत्रिका एवं ग्रंथ सभ मे प्रकाशित प्रायः एक सहस्र रचना मैथिलीक अमूल्य रत्न मानल जाइत। हिन्दी मे सेहो ई 'कविता

नौलती है' तथा 'संलग्न' सन काव्य संग्रह एवं छायाचित्र रचना क माध्यम सं एकटा सम्मानित स्थान प्राप्त कयने छथि। रचनाकारक अभावो भी प्रवासी एकटा नीक समाज सेवक रूप मे हिन्दी आ मैथिलीक एक दर्शन सं अधिक संस्था सं सम्बद्ध छथि।

श्री प्रवासी सन छह-छद्म-रहित, भाविष्णु, प्रभविष्णु, प्रतिभाशाली, विनम्र आ विपरीत, साहित्यकारकेँ पुरस्कृत कऽ साहित्य अकादमी पहिल बेर मैथिली क तरुण पीढ़ीकेँ सम्मानित कयलक अछि। ई एकटा नीक प्रवृत्ति अछि, जकरा हमरा लोकनि स्वागत करैत छी। 'देखि-बचना' परिवार प्रवासी जो केँ पुरस्कृत भेल सं अव्यक्त हर्ष आ गौरवक अनुभव क रहल अछि। एहि वासन्ती परिवेश मे नव वसंत क अभ्युदयक रूप मे परिवार श्री प्रवासी अभिनंदन करइत अछि आ कामना करइत अछि जे ओ अपन विशिष्ट सर्जनशील प्रतिभा सं अहिना मैथिली भाषा आ साहित्य केँ समलंकृत करैत रहथि।

'देखि-बचना'क अगिला अंक मे पुरस्कृत महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' पर भी बुद्धिनाथ मिश्र क समीक्षामक लेख प्रकाशित भऽ रहल अछि।

वसंत केहन होइछ !

घर क देवाल क डड़ल पडखर
सॉक क सॉक आगिक मुँह
नहि देखऽवला चूल्हि
खाली थारी-वासनक छटपट्टी
पेसंद लागल साढ़ी
बनिया - बेताल क तगादा
धीया-पुताक पाकल पात-सन
पीयर हबलब आँखि
हम तँ नहि बूझै छी
फी होइछ फागुन,
फी होइछ वसंत।
जँ अहाँ बुझैत होइ तँ
कने हमरो बता दियऽ
वसंत कोन बाध मे
आबि केँ
अटकै गेल अछि।

—बुद्धिनाथ मिश्र

□ □

ते ई समयक माळ छि जे हम मिथिलावासी एहि पर्वक अवसर पर अपनाबीच एकता-सहयोग-सद्भावनाक बीजारोपण करौ—जातीय मुक्ति मैथिलीक मुक्ति, मिथिलाक मुक्ति अपन ग्रहण करी। आर्थिक विपन्नता, कुशिक्षा-कुपुंकार-बेमनस्यता आ एहि सभक छेक दायी मिथिला-मैथिल विरोधी तथा कथिक गणतांत्रिक सरकार सं बड़वा, लड़ि केँ अपन न्यायोचित अधिकार प्राप्त करवाक प्रतिज्ञा करी। तेखन वास्तविक उत्सव, आनन्द-उमंगक सार्थकता।

लुइ एवं अन्यान्य पाद लोकनि

मैथिलीक प्राचीन पोथी सभ जे आइ-बरि उपलब्ध भ सकल-ए ताई मे 'चर्यापद' वा 'चर्यागीत' सभ सं प्राचीन मानल जाइत। एहि मे कुल पचास टा गीत छल जाइ मे २४, २५ आ ४८ म गीत पन्ना हेरा जेबाक कारणे प्राप्त नहि भ सकल। उपलब्ध संस्कृतसिद्ध गीतक रचयिता चौबिस गोटा पाद लोकनि छल, जे कान्हू आ कान्हू पाद एके व्यक्ति होबि, कृष्णाचार्य पाद ओ कृष्णपाद अभिन्न होबि। जे भिन्न होबि त निश्चित ई संख्या चौबिसक बदला बढि होबत। पाद लोकनिक नाम ओ पद संख्या निम्न प्रकारे भइ :-

नाम	कुल पद
१. लुइ पाद	२
२. सरह पाद	४
३. कुकरी पाद	१
४. चिरव पाद	१
५. गुणवरी पाद	१
६. चोटिल पाद	१
७. भुसु (कु) पाद	८
८. कान्हू पाद	५
९. कान्हू पाद	१
१०. कम्बलाम्बर पाद	१
११. कृष्णाचार्य पाद	३
१२. कृष्ण पाद	२
१३. खोम्बी पाद	१
१४. भान्ति पाद	२
१५. महीबर पाद	१
१६. बीणा पाद	१
१७. कृष्ण बभू पाद	१
१८. शबर पद	२
१९. आर्यदेव पाद	१
२०. टण-टण पाद	१
२१. दोरिक पाद	१
२२. भादे पाद	१
२३. तारक पाद	१
२४. कौकण पाद	१
२५. जयनन्दी पाद	१
२६. आम पाद	१

चर्यापदक रचनाकालक सम्बन्ध मे एखनोबि निश्चयी नहि भ पाबल-ए परन्तु विभिन्न विद्वान लोकनि जे एहिपर ओज-बोझ केलनिहें हुनका लोकनिक अनुसार दसम शताब्दीक लगभग एकर रचना भेल होइत। स्वभावतः रचनाकार लोकनिक काळ सेहो ताई सं निर्धारित होइत। एहि समस्त पाद लोकनिक मे लुइ पाद सभ सं पहिले भेलाह जे शोककता लोकनिक मत छनि।

एहि मे संग्रहित समस्त पद मे बौद्ध धर्म ओ दर्शनक स्पष्ट चित्र भइ। कहवाक प्रयोजन नहि जे सभ पाद लोकनि बौद्ध धर्मावलम्बी छलाह। परञ्च तंत्रक प्रभाव सेहो स्पष्ट परिलक्षित होइत छे तत्कालीन मिथिला मे तंत्रक प्रभाव क संगहि बौद्ध धर्म पर सेहो तंत्रक प्रभाव के रेखांकित करैत।

चर्यागीत पर एखनोबि विवाद अइए जे वास्तव मे एकर उत्तराधिकारी केसिक ? बंगाली लोकनि एकरा अपन भादि ग्रंथ मानैत छथि आ एहिपर बड़ बेसी कार्य भेल। डा० हर प्रसाद शास्त्री आ डा० सुनीति कुमार चटर्जी सन उद्भूत विद्वान लोकनि एहिपर बड़ बेसी भ्रम केने छथि आ एहि ग्रंथ के बंगाली प्रमाणित करवाक आधार तर्क लुटभोने छथि। एकर तुलना मे मैथिल विद्वान लोकनि लज्जालुपद भावे पलुआइल रहबाह। आ निर्विवाद एकोटा स्तरीय प्रामाणिक पोथी आइबि प्रकाशित नहि भ सकल-ए। परञ्च से होइतहु एहि गीत सभक भाषा, वर्ण विन्यासओ शब्द शिल्प विषय वस्तु तथा एकर दीर्घ परम्परा जे पदावली कालपरि अभ्युन्न रहल एकरा मैथिलीक भादि ग्रंथ होइबाक अकाट्य प्रमाण थिक।

एहि पोथीक महत्ता एकर रचनाकार लोकनिक महत्ताक परिचायक थिक / जाइ समय मे संस्कृत भाषाक एक छत्र राज छलेक भनहि ई लोक भाषा कहियो ने रहल हो विद्वानक भाषा छल, राजकीय भाषा छल, ताई युग मे लोक भाषा मे काव्य रचनाक उहि वा चेतना साधारण वात किन्हु ने कहल जा सकैत। तँ एहि चेतनाक अभ्युन्न लुइ पाद मैथिलीक छल प्रातः स्मरणीय छथि, मैथिली साहित्य मे अमर छथि आ नव्य भारतीय भाषाक भादि पुरुष छथि। ई हिनके कृतित्व छनि जे हिनक परवर्ती अन्यान्य पाद लोकनि लोकभाषा मैथिली मे काव्य स्रजनक प्रेरणा पबोलनि तथा आगा चलि के विभिन्न भारतीय भाषाक रचनाकार लोकनि के अपन मातृभाषा मे रचनाक प्रेरणा ओ दिशानिर्देश भेटलनि।

ताई युग मे लोकभाषा मे रचना करब सहज नहि रहैक। रचनाकार के पर्याप्त व्यंग-बाधाक सामना करय पड़नि। हमरा लोकनि जनैत छी जे स्वयं कविपति बिसापति के—जे हिनका लोकनि सं उग-भग चारि-पांच सय वर्ष पश्चात मेलाइए—लोकभाषा मे रचना करवाक कारणे विद्वत मंडली द्वारा मखौल उदायोल जाइन। तेहना स्थिति मे पाद लोकनिक संग जे एहन वात नहि भेल होयत से मानेबला किन्हु नहि। परञ्च एकर बाद एक बादक भाविभावि आ तदुपरान्त अविच्छिन्न मैथिली साहित्यक परम्परा के देखैत हिनका लोकनिक आत्मबलक, लोक चेतना आ वास्तव बुद्धिक परिचय बहबहि प्राप्त होइत।

ओना त ई काज बहुत पहिनहि हेवाक चाहैत छले, परञ्च से जे हेतु नहि भेलैक तँ आइ एकर बड़ बेसी प्रयोजन छइ जे हिनका लोकनिक कृति के प्रकाशित क मैथिली पाठक के सहज उपलब्ध करा-बोल जाइक। कुनू जातिक, ओकर भाषा

संस्कृतिक विकासक छल ई परम आवश्यक छइ जे ओकर जड़ मजबूत होइक आ ताई सं ओकर सम्पर्क अविच्छिन्न होइक। जड़ सं फटल रहने वा बिनु जड़िक कुनू जाति, ओकर भाषा-संस्कृतक दीर्घ जीवन संदिग्ध रहैत छेक—ताई ठाम विकासक वाते की ? मैथिली जाति, ओकर भाषा-संस्कृतक जड़ माटि मे छेक, ओवंत आ सद्यक छेक ताई मे संदेह

नहि परञ्च अनुनातन ओ एहि सं फटल जकां भइ। सम्पर्क कये की बखन कि ओ एहि सं नीक जकां परिचितो नहि भइ। तँ हमरा लोकनि के भार बिलम्ब नहि क थिअ एकरा सं परिचित हेवाक भइ आ एकरा भार सद्यक करवा छेक जागि जेबाक भइ अन्यथा अस्तित्वो पर संकट भावि सकैत—विकास के वाते की ?

—सुजतया अली

आबह हे शोणितक बुमकार

लेव-मूनि कऽ कत्तेकाळ रखतै कयो
ज्वालामुखीक मुँह के ?
सुरुत्र के कत्तेकाळ मरने रहतै
बादलक मुण्ड ?
के मोड़ि सकत गंगाक प्रवाह के ?
सनसनाइत बयार क रोकबाक सामर्थ्य करैक ?
के भुका सकत हिमालयक माथ ?
के देखाओत सूर्य के आङुर ?
आगिक चिनगोला सं
के खेलायत गोदरस ? / आगि !
दह दह करैत चिनगोला !!
उत्तेजनाक जनक !!!
सिताहल खड़ के खड़ा रहलैए
आस्ते-आस्ते।
कए देतै सुझाइ
तोनु लोक, चौदहो भुवन के
पिरथीए सऽ सड़तै—
लाखक लाख उका-पत्ता
भस्मी भन्न क देतै दुनिया के
चीरी थोंत कऽ देतै—
आसमानक चादरि के।
सनसना रहलैए
हँक-हँक लुकराहा
धमनीक जहल सं मुक्त हेवा लय
आफन तोड़ि रहलैए,
शोणितक बुमकार।
जे घड़ी ने कुसियार जकां
दू दालिक फटलैए धमनो,
शोणितक पेमाल बहलैए / —जे घड़ी ने।
कमला-बलान मे जे क्षण ने / निमल जलक बदला
लाल-दुह-दुह शोणितक धार बहलैए।
बजरङ्गीक गदा रावणक पीठ पर
“गदा रे गोई गोई” खेलाइ लय
सन सन करैत छनि। / दुर्गाक भाला महिषासुर सं
घाड़ा-जोरी करब'लय—
तन-तन करैत छनि।
आबह हे शोणितक बुमकार !
निश्चिन्त भऽ कऽ बहऽ तौ !
कालीक कत्ताक कंठ
तरासे सुखा रहल छनि,
खरपर मे एक बुनन रक्त बिना
चट्ट पड़ैत छनि,
जीई पर गर्दा उड़ियाइत छनि,
बोरि दहक तरभारि के
खरपर कं भरि दहक ऊम-डाम कए
जुरा बहून काली के,
भरि छाक टटका लेहूक पोट स
उन्मत्त भ, करतौ काली—
ताण्डव नृत्य।
आबह !
आबह हे शोणितक बुमकार !!
अलदी आबह !!!

—रमेश

फगुआक उपाधि

कवि चूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र मधुप—नयन न निरपिन भेड़।
 प्रो० सुरेन्द्र का 'सुमन'—बुढ़ारी में चिहारी।
 महाकवि यात्री—पैर में घूरघुरा बान्हल अइ।
 कविवर किरण—हम पारसे लेब।
 श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर—हम पंखी एक डाल के।
 डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणि पद्म—आब अगिला साल।
 प्रो० राधा कृष्ण चौधरी—खाधि खूनवाक सुख।
 श्री जीव कान्त—कय बंडल पठाव ?
 " सोमदेव—ककवा पर टैकल लागय।
 " कीर्ति नारायण मिश्र—किदुन तें कहै छइ, तकरे परि।
 " हंपराज—मानसरोवर कहिया जायव ?
 " गंगेश गुंजन—भागलपुर कइलऽ गुलजार।
 " धन चक्र—यक्ष प्रश्न।
 " वपेन्द्र दोषी—असकरे हमही दोषी नहि।
 " महा प्रकाश—भोर भेड़ै हे पिया।
 " सुभाष चन्द्र यादव—लिखि के की होयत ?
 डा० धीरेन्द्र (अनकपुर वासी)—बिचि ककरो न सक।
 श्री महेन्द्र मलंगिया—कमलाकातक रसिया।
 " राममरोच कापड़िअमर—गोनू माक बिछाड़ि।
 " धूमकेतु—नव प्लाटक तैयारी मे।
 " मदीप मैथिली पुत्र—बारह बाजऽ दिथो।
 " उदय चन्द्र का बिनोद—सभ सँ झोट कबिता तीन हाथक।
 " रमानन्द रेणु—एखन भदवा छै।
 " ललित—कापर करब सिंगार।
 डा० गौरी मिश्र—डिबिया लेखै छी।
 श्री मायानन्द मिश्र—माछक मूड़ा।
 श्रीमती लीली रे—आब फुराइत अछि।
 श्रीमती शेफालिका वर्मा—निहुरि फूकू आगि।
 श्रीमती शान्ति सुमन—पितरस्तुप्यन्ताम।
 श्रीमती लषाकिरण खान—नकबेसर कागा ले भागा।
 श्रीमती पद्माशा—हलो! मंत्री जी के यहाँ से बोल रही हू।
 डा० सुभद्र का—किरिब करिअ मन लाइ।
 डा० जयकान्त मिश्र—मैथिली हमरे चारक कदीमा छी।
 डा० सुधाकान्त मिश्र—आब ककरा चून लगाबी ?
 डा० शैलेन्द्र मोहन का—बरिसाइत कहिया छइ ?
 डा० रामदेव का—डन्का काहे कोऽ।
 डा० आनन्द मिश्र—भनडि विद्यापति।
 डा० आनन्द नाथ शर्मा—मुंगेरी गंजक 'सर'।
 डा० सोताराम का श्याम—भुतराकस पंडित।
 डा० जयमन्त मिश्र—हमरा सँ उद्घाटन कराब।
 श्री दमन कान्त का—एखन टोकू जुनि।
 " श्रीकान्त ठाकुर (विद्योल्कार)—आर केओ बांचल छी ?
 " हीरानन्द शास्त्री—एक धक्का आर।
 प्रो० श्री हरिमोहन का—बन्दे तां शारदा मिति खट्टर।
 श्री आरसो प्रसाद सिंह—अहुना कतौ भेलै ?
 " सुधांशु शेखर चौधरी—एकदन्त।
 " भीमनाथ का—हमर अभाग हुनक कोन दोष ?
 " गोकुलनाथ का—चिक्कापार।
 " प्रबासी जी—एक त दाइ गोरे बड़ि-दोसर नहेछी हे।
 " राजमोहन का—हम गुमसुम तक छी।
 " वपेन्द्र नाथ का व्यास—हमरा लेखे धन सन।
 " गोबिन्द का—केसब केसन अस करी।
 " गौरी कान्त चौधरी कान्त—चौपालक आठि।
 " अश्वानन्द सिंह का—हम की सभ दिन बटुके रहब ?
 " प्रभास कुमार चौधरी—कने मुस्ता लियऽ।
 " मंगेश्वर का—भारत-भारती एक्कप्रेष।
 " मोहन भारद्वाज—तनी यहरो देखी, एओ।
 " कुलानन्द मिश्र—ऐ चंडलबा राज मे।
 " रमानन्द रमण—सुकुर जे लखनउ नहि गेलौं।
 " पद्म नारायण का 'बिरंचि'—खरपो सँ समीक्षा गढ़े छी।

डा० इन्द्रकान्त का—विद्यापतिक केशः एकटा सूक्ष्म विवेचन।
 डा० वासुकी नाथ का—सादूपुरक गोसाइ।
 श्री अमिषुष—जनमतक थोक व्यापारी।
 " पूर्णेन्दु चौधरी—तेहन मुहदुबहर नहि छी हम।
 " विभूति आनन्द—छठा रहल घोब तिलक।
 " सियाराम का सरस—शिव मठ पर।
 श्री विहंगम—पांचो आकुर घो मे।
 " रान्मुनाथ मिश्र—जात न पूछी साधु की।
 " रबीन्द्र नाथ ठाकुर—सिलेमा मे काज करब दाइ ?
 " महेन्द्र का—गावि सुनाओल हे।
 " फजलुर रहमान हासमी—हम मिथिले मे रहबे।
 प्रभावती + गोवेश—आब कहू मन केहन लगे ?
 प० देवनाथ का—प्रोसेपेकटस छइ।
 डा० दिनराज शाण्डिल्य—खरातो प्रमाणपत्र बितरण केन्द्र।
 श्री बाबू साहेब चौधरी—डोड रोडिंग।
 आचार्य रिजबी—हम मैथिल, हँ हम मैथिल।
 डा० प्रबोध ना० सिंह—जन्तर-मन्तरक नामो दोकान।
 डा० धीरेन्द्र मलिक—प्लाड सोचय दिअ।
 श्री सुकान्त सोम—राइटर्स बिल्डिंगेर इदुर (मूच)।
 " तुद्धिनाथ मिश्र—बलम कलकत्ता पहुँच गये।
 " राम लोचन ठाकुर—हम की की करब ?
 " अनिल ठाकुर—हम आत्म समर्पण नहि करब ?
 " कुणाल—कइ पै कोई न करे यहाँ प्यार...
 " राजनन्द लाल दास—संतो, करमन की गतिन्यारी।
 " निरखन लाभ—माँट पखौलनि जीरा।
 " जनार्दन का—'देसिल बयना' दांत करय खट्टा।
 " सुशील—पराडी चढ गेल—खेतक चिन्ता।
 " रामाधार मिश्र—जाइत डी गाछी ओगारय।
 " महेश्वर भा—समय आबय दियो।
 " मन्ना नारायण का—मोड़ा खाली अइ।
 " श्रीकान्त मंडल—लडका पाग।
 " शरद चन्द्र मिश्र—गइयो हँ बरदो हँ।
 " भोगेन्द्र का—पबित्र पापी।
 " शिवचन्द्र का—हमहुँ छी।
 " हुकुमदेव नारायण यादव—भगजोगनोक इजोत।
 " राजेन्द्र प्रसाद यादव—हम किसी से कम नहीं।
 " भागवत का 'आजाद'—ताला कहिया खूबत ?
 " बालेश्वर राम—खेत चढ़ने किसान।
 " लक्ष्मी कान्त का—निर्वल के बड राम।
 प० श्री हरिनाथ मिश्र—काशी से ले के भगइ जा के पटकी।
 श्री जगन्नाथ मिश्र—कुहूँ हूँ S S S।
 " राधानन्दन का—जय सन्तोषी मां।
 " कुमुद रंजन का—कतही कहय हमहँ।
 प्रो० नागेन्द्र का—हम ओठंगर नहि फूटब।
 प्रो० रामाकान्त का—बसे सँ बेबस छी।
 श्री कमलनाथ सिंह ठाकुर—डोरिक चूकल।
 " कपूरी ठाकुर—ठनटा अत्तरा।
 " राज कुमार पूर्ब—आगते रहो।
 " दिगम्बर ठाकुर—सभ गुन गोबर भेल।
 " रघुनाथ का—सरा खेलाएल छी ?
 " विद्याकर कवि—डंड-वेसकीक अभ्यास।

नोट : महानुभाव लोकनि सँ आप्रह जे ओ लोकनि अपन उपाधि-पत्र श्रीमान फगुआनन्द जी महाराजक रंग-अधोर, कार्यालय सँ यथा शिष्ट प्राप्त क छथि। आइ साहित्यभार, नेता लोकनि के एहि खेप उपाधि नहि भेटलनि-हुनका लोकनि सँ आप्रह जे नवका बजट के ध्यान मे रखैत हमरा लोकनिक असुविधा केँ बूमथि आ न्यथे प्राण नहि गमा अगिला सालक प्रतीक्षा करथि।

दिल्ली सं सूनारारायण मंडल

नवकी दिल्ली, १४ फरवरी ८२।
अ० भारतीय मिथिला संघ द्वारा इन्डियन मेडिकल एसोसियेशन संभागार मे प्रातः १० बजे सं 'सिमिनार तथा मिथिला विभूति स्मृति समारोह' का आयोजन कइल गेल। समारोहक उद्घाटन करैत उपराष्ट्र-पति श्री मु० हिदायतुल्लाह इन्हन जे भारतक अनेकता मे एकताक जे कोनो जीवित उदाहरण अइ त ओ मिथिला बिक। प्राचीनकाल मे मिथिले मे एहन एकटा राणा मेहारा जे सर्वप्रथम परिश्रमक महिमा के स्वीकृति देलनि आ ते राणा जनक रायपताका मे (मिथिलाक भंडा मे) हरक छाप छल।

उपराष्ट्रपति मिथिलाक गौरवशाली अतीतक चर्चा करैत आगा कहलनि जे वस्तुतः मिथिला अवतार आ विद्वानक भूमि बिक। मिथिले महाकवि विद्यापति के जन्म देलक जिनकर अनमोल बोल आइयो सभठाम गुंजित भ रहल अइ। ओ आशा रखल केलनि जे मिथिलाक लोक अपन गौरवशाली परम्परा के अक्षुण्ण रखैत धर्ममानक विविध समस्याक समाधान हेतु कइए सं कइए मिला के अग्रसर रहत।

उपराष्ट्रपतिक स्वागत करैत केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री श्री बालेश्वर राम मिथिला-चलक विकट आर्थिक समस्या पर प्रकाश देलनि। केन्द्रीय पटौनी मंत्री श्री कैदार याण्डेय मिथिला-विभूति लोकनि के अर्द्ध-बलि देत ख० ललित ना० मिश्र द्वारा मिथिला-चलक विकास लेल, बनाओल योजना तथा काज पर प्रकाश देलनि एवं ओइ अपूर्ण काज के पूरा करैत बात कहलनि।

विचार गोष्ठीक उद्घाटन करैत आर्थिक प्रशासन सुधार आयोगक अध्यक्ष श्री लक्ष्मीकान्त झा भी कहलनि जे एह क्षेत्रक औद्योगिकरणक दिशा मे क्षेत्रक प्रबुद्ध जनता के आगा आवक चाही।

एहि अवसर पर श्री भोगेन्द्र झा, श्री राजेश्वर प्र० यादव, श्री रमानन्द रेणु, श्री चमनदेव कुमार आदि वक्ता लोकनि सेहो अपन मत प्रकाश कइलनि। 'सभ के सभ प्रायः मिथिलाचलक दयनीय याता-यातक व्यवस्था, कृषीक अवस्था एवं उद्योग-धंधा नहि रहबा पर चिन्ता व्यक्त केलनि आ एहि मे सुधारक लेल जोर देलनि। बाह्यिक सं भुक्तिक संगहि विज्ञानीक आपूर्ति तथा सिंचाई लेल कोसी नहरिक संगहि कमला-नागमती बाधक शिप जगता पर प्रकाश देल गेल।

● अखिलभारतीय मिथिला संघ, नवकी दिल्ली, एमहर किछु दिन सं पूर्ण सक्रिय अइ—जे शुभ लक्ष्य कहवाक चाही। मोना हरो निर्विवाद अइ जे एहि तरहक सक्रियता सं शहर छोड़ि गाम मे देखाओल जाय त किछु आशाओ केन जा सकैत। उपराष्ट्रपतिक वक्तव्य उस्ताह-वर्द्धक थिक अवस्था आ हुनका सं बेसी

आशाए की कइल जा सकैत। जहाँवरि भोगेन्द्र बाबूक गण्य अइ, ओ अन्यान्य नेता सं एहि संदर्भ मे बहुत अग्रसर छथि आ ते तत्काल हुनको छोड़ि देल जा सकैत। किन्तु प० लक्ष्मीकान्त झा एगो पुरान हस्ती होइतहुँ आइ पर्यन्त मिथिला-मैथिलीक संदर्भ मे उल्लेखनीय काज त नहि केनलनि, तेहन इच्छा-उत्साह सेहो नहि देखललनि। एमहर जे सरिपहुँ हुनका अपन भूमि-भाषाक ख्याल मेलनि है—देरियो सं सही-नीक बिक—परञ्च हमरा लोकनि सं नीक बका ओ स्वयं जनेत होइताह जे मात्र वक्तव्य सं समस्याक समाधान असंभव। एहि बेर हुनका पूर्ण सक्रिय होमय पड़तनि आ अपन प्रभाव-क्षमता के व्यावहारिक रूप देमय पड़तनि। हमरा लोकनि जनेत छी जे भाषा के संविधान मे स्थान मेलेक तकर पाठा इहने किछु प्रभावशाली व्यक्ति हाथ छल, जनता त किछुओ नहि केने छल। एहि संदर्भ मे मैथिली भाषी त बड़ अग्रसर अछि। श्री झा जी भरिस्क नीक बका जनेत होइताह जे जनता पेब सं पेब आन्दोलन अस्तक लेह परञ्च ओसत त पाछू रहैत—आगू नेता रहैत छैक। ते जनता—मले ओ बुद्धिजीवीए के किछक ने आह्वान केने छथि—तेहन किछु करत बखन कि ओकरा सुयोग्य नेता अग्रसर मेलेक।

एमहर श्री बालेश्वर राम जी सेहो एहि क्षेत्र मे सक्रिय छथि परञ्च तुलक बात जे ओहो मंचेपरि सीमित छथि। श्री राजेश्वर प्रसाद यादव आ श्री हुकुम-देव यादव सेहो कहियो काल भगजोगनी बका भइजोत कय फेर निजुआन भ जाइ छथि। एहि तरहक प्रवृत्ति बातके थिक—नीक नहि। हमरा मन अइ जे श्री भगवत झा आजाद एहि संदर्भ मे कहियो बाजल छलाह जे कि हुनका लोक-निक मुँह मे ताला लागल छनि। पता ने ई केहन ताला थिक—आ कहियापरि लागल रहत? अन्यान्य विषय लेल कहाँ ताला रहैत छनि? दोसर प्रान्तक नेता लोकनि के अपन भूमि-भाषाक विकास लेल मात्र वक्तव्य नहि कार्योक्त स्वाधीनता रहैत छैक—तेहना ठाम दिनके लोकनिक मुँहपर ताला किछक लागि जाइत छनि जे विचारणीय।

जहाँवरि श्री कैदार याण्डेय जीक प्रश्न अइ, एहि सं पूर्वी बखन कि रेल मंत्रालयक भार लेलनि, ललित बाबूक सपना साकार करैत बात बाजल छलाह। परञ्च तुलक लिखय पड़ेत जे एहि संदर्भ मे ओ पूर्ण निष्क्रिय रहलाह आ मिथिला-चलक लोक—जे कि हुनका सं बड़ बेसी आशा करैत छल—पूर्ण निराश भ गेल। आज ओ पटौनी मंत्री मेले छथि—आ कोसी समस्याक निदान, जे चाइथि त

स्वर्गलोक मे मजदूर

'ब्रह्मा' जिनका हम देवता कहैछिथनि, वास्तव मे एकटा मजदूर छलाह, जे विभिन्न उपकरणक सहायता स प्राणी एवं एहि संसारक निर्माण कयलनि। तकरा बाद हुनक सहायक विश्वकर्मा भेटलनि। एहि प्रकारे हम देखैत छी जे मजदूर आइये नहि बरि सत्ययुग मे सेहो छलाह। ओहू युग मे एक कात पूँजीपति विष्णु अपन सहायिणी लक्ष्मी के साथ कुंकर छोट शोषणागक शय्या पर आसन जमोने रहैत छलाह, दोसर तरफ ब्रह्माजी धर्म विश्व-कर्मा जी फाटल-पुरान कपड़ा पहिने अप्पत्त केवल एकटा घोती पहिने सृष्टिक निर्माण करैत रहथि। ब्रह्माजी विभिन्न प्रकारक चीज बनेलनि जाहि मे एकटा सेफ्टीरेबरो लइक जाही स विष्णु जी दाढ़ी के केहे पूरा मोल्लो मुड़वा लेथि किन्तु ओही ठाम ब्रह्मा जी बड़का-बड़का अप्पत्त हाथ तक दाढ़ी केने अपन कार्य करैत रहथि। आइकालि एहि मर्त्यलोक मे मायवं तथा लेनिक कान्तिक फलस्वरूप मजदूर के सेहो रह'परि क किछु सुविधा भेटि रहल छइ, विभिन्न Unions & Trade unions क द्वारा ओकरा सब के किछु सुविधा देल जाइ छइ किन्तु सृष्टिक निर्माता ब्रह्मा जी के कतहु जगह नहि भेटलनि। बखन पूँजीपति विष्णु हुनका कतहु जगह नहि देखलनि त ओ स्वतंत्र क्षितिज मे लटकल रहि गेलाह।

मजदूर के त अहोभाग्य मानक चाही जिनकर इष्टदेव अप्पत्त पूर्वज ब्रह्माजी छथि अप्पत्त ब्रह्माजी सब मजदूर के बड़का भाइ मेलाह। आइ कालिक मजदूर पूँजीपति वर्ग अथवा शोषक वर्गक विरुद्ध हड़ताल करै छइ किन्तु ब्रह्माजी त किछु नहि क सकै छथि। आखिर बेचारे ब्रह्माजी केवल विश्वकर्मा के साथ पूँजीपति विष्णु क कतेक विरोध कय सकैत छथि? कने अपने सब विचार क क देखियउ, जेहि प्रकार स बड़का-बड़का पूँजीपति वर्गक सामंतवादी वर्गक सहायक अप्पत्त चमचा सब विभिन्न विशासन द्वारा अपन मालिकक गुणगान करैत रहैत छइ चाहे ओ कतनो जनताक शोषक होथि, ओकर सभक

निश्चित यथा शिघ्र क सकैत छथि आ से भेले उत्तर हुनक प्रति लोकक हेराएल विश्वास फिर सकैत छैक।

मिथिलाचलक बड़ बेसी समस्या छैक। एगो अवहेलित भूमि थिक ई। एकर नेता लोकनि सभदिन सं एहिठामक लोक केँ ठकेत रहलनि है। किन्तु कुन वस्तुक एगो सीमा होइत छैक। जनताक धैर्य सीमा छैक। ते आबो जे लोकनि, जेना कि बजैत छथि, कार्य करथि त ने मात्र मिथिलाचलक अप्पत्त समस्त देशक कल्याण ताही ने छैक।

× × ×
कलकत्ता, २३-१-८२। आइ स्थानीय मित्र संघक दिव सं विदाबी

प्रतिमा स्थापित करवैत रहैत छइ आर ओहि सेठसभक मिन पैन्टी सब चढावय बला मजदूर के नामो नहि छइ छइ, ओहि प्रकार स स्वर्गलोकक पूँजीपति विष्णु के स्वाधीन एजेंट पंडित जी प्राचीनकाल स लय क अखन तक धूम-धूम क एहि मर्त्यलोक मे विष्णु क गाथा गवैत छथि और कोमती पत्थर स निर्मित मन्दिर मे हुनक मूर्ति स्थापित करवैत रहैत छथि किन्तु एहि पंडित सबके तथा पूँजीपति वर्गक निर्माता मजदूर ब्रह्मा जी के कतो शरण नहि भेटलनि। ई गण मजदूर जनक लेल कतेक अपमानजनक छइ? आइ लेल आइकालि के मजदूर सब के अपन बड़का भाइ ब्रह्माजी तथा विश्वकर्मा जी के यथा-पूर्वक सहायता करक चाही। मजदूर सभ के ब्रह्माजी तथा विश्वकर्मा जी के नेतृत्व मे एक बहुत बड़का सामूहिक जुलूस के साथ स्वर्गलोक मे निश्चितता पूर्वक बेसठ पूँजीपति विष्णु के दरबार मे "स्वर्गलोकक तथा मर्त्यलोकक मजदूर एक होथि के नारा एक स्वर स जुलूस क इमका कर क चाही। भ सकैत मर्त्यलोक स कुर्ी, 'टेबुल, जुता, चण्डल इत्यादि विरोध प्रदर्शित करवाक लेल त जेवाक चाही कारण जे स्वर्गलोक मे ई सब चीज कहाँ स अभोतइ? एहि प्रकार स विरोध प्रदर्शित कयक ब्रह्माजी के अपन अधिकार मांगक चाही बाइ स विषय भ कय विष्णु जी ब्रह्माजी के रहवाक लेल एकटा टूटलो भोपड़ी आर किछु वस्त्र देवा लेल बाध्य होथि—

—सुधा का
दसम वर्ग

फगुआ समाचार

● सुनवा मे आयल-ए जे प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी संसद मे एगो नव विधेयक आनय जा रहल छथि। एहि विधेयकक अनुसार एहि बेर फगुआ मे लोक लेल मे रंग नहि सानि सकैत। मोना केन्द्रीय मंत्रीक संगहि प्रदेशीय मंत्री तथा भविष्य मे मंत्री बनवाक सनवा पासनिहार कांग्रेसी नेता लोकनि एकर परिधि सं बाहर राखल गेल छथि। किन्तु हुनको लोकनिक संग शर्त ई राखल गेल अइ जे ओ लोकनि लेल मे रंग सनबो करथि त तकर उपयोग मात्र प्रधानमंत्रीक सीमित हो।

सदस्य श्री लखन राय भीक सम्मान मे सभा मेले तथा हुनका सभ सदस्य भाव-भीनी विदाह देलनि। एहि अवसर पर संघक अध्यक्ष श्री सूनारारायण राय लोक पदोजति उपलक्ष्य मे मालव प्रदान कइल गेल। श्री राय अपन परीश्रम आ बुद्धिक बल पर एगो साधारण स्टाफ सं पंचेच आफिसरक पदपरि पहुँचि चुकलाह-इ से निश्चित संघक लेल गर्वक विषय थिक तथा सदस्य लोकनिक लेल शिक्षाप्रद। संघ आशा करैत अइ एहिना आनो सदस्य लोकनि आगू बढ़ताह आ अपन संघक संगहि समाजक गौरव बढ़ोताह।

—रामाधर मिश्र
सचिव
मित्र संघ

समिति रचना

वर्ष—२ अंक—७

अप्रैल, १९८२

मूल्य—पचास

सम्पादकीय

भीख नहि अधिकार चाही

संसद मे फेर एक खेप मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे सम्मिलित करवाक प्रश्न आयल। श्री योगेन्द्र झा बतवे सहजता सं ई प्रश्न रखलनि सरकारी पक्ष ततवे सहजता सं एकरा अस्वीकारि देलक आ फेर ततवे सहजता सं योगेन्द्र बाबूक संगहि समस्त मिथिलाचलक संसद लोकनि मुनि लेलनि। लिखा खतम पेडा हजम।

भोगेन्द्र बाबूक एहि तरहक प्रश्न-प्रस्ताव एहि सं पूर्व राखि चुकल छथि। प्रस्ताव आनो सदस्य (इन्दिरा गांधीस छोड़ि) राखि चुकल छथि। किन्तु एहि दिशा मे भोगेन्द्र बाबू आ हुनक दल सभ सं आगू अछि—से भरि निर्विवाद।

भोगेन्द्र बाबूक अतिरिक्त बार जे सदस्य मैथिलीक चर्चा संसद मे कहियोकाल करैत छथि ताहि मे सर्वश्री राजेन्द्र प्रसाद यादव आ शिवचन्द्र झाक नाम लेल जा सकैछ। ओना शपथ ग्रहणक समय मातृभाषा मैथिली मे शपथ लेबाक लेल दृढ़पतिव आ हुकुमदेव नारायण यादवक बात चिसरल नहि जा सकैछ जे अन्ततः संस्कृत मे शपथ लेलनि परञ्च हिन्दी मे नहि। यादव जी एहि लेल सन्तुष्ट छथि। शिवचन्द्र झा अपन वक्तव्य मैथिली मे नहि राखि सकबाक विरोध मे भवन्तः त्यागि कए एगो उदाहरण प्रस्तुत केने छथि। परञ्च दुखक संग लिख्य पढ़ि रहल अछि जे जखन मैथिलीक संवैधानिक मान्यताक प्रश्न उठैत छैक त ई लोकनि एकवद्ध नहि भ पवैत छथि—जेना पंजाब, तामिलनाडु वा बंगालक संसद लोकनि मे देखल जाइछ। जुता-चप्पल आ कुर्सी फेकनाइक कथा संसदक इतिहास मे पुरान अइ परञ्च हिनका लोकनिक न्यायोचित माइ जखन लतिबा देल जाइत छनि तखन ई सभ चिचिभायो ने पवैत छथि से अचरजक बात अवलै थिक। एहि सं कम सं कम एतेवरि त अवलै होइतेक जे किछु कालक लेल संसदक कार्यवाही ठर रहितेक आ प्रेसवलाक ध्यान एहि दिश पड़ैतेक। परञ्च जे हेतु ई लोकनि प्रस्तावता राखि चुा भ जाइत छथि तें हिनका लोकनिक नेत पर संदेह स्वाभाविकै।

जहांवरि सरकारक प्रश्न अछि, हमरा लोकनि कतेको बेर लिखि चुकल छी जे कांतिवी सरकार जन्मजात मिथिला-मैथिली विरोधी अछि, ओ एकर कल्याण नहि देखब चाइछ। ओकर एहि बात मे कनियो दम नहि छैक जे संविधान मे नहि रहनो सभ भाषा के समान विकाशक सुयोग सुविधा देल जेतैक। ई निहाइ फूछि थिक—चालाकी थिक, ठकपनी थिक। हमरा लोकनि जनैत छी जे सरकार ओही भाषाक विकासक हेतु खर्च करैछ जे संविधान मे छैक। संविधान मे नहि रहबाक कारणे मैथिली केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा सं बारल अछि। केंद्र सरकारक पोआ बिहार सरकार जखन उर्दू के दोसर राजभाषा घोषित केने छल त ओ स्पष्ट कहने छल जे मैथिली के राजभाषा एहि लेल नहि बनाओल जा सकैछ जे ओ संविधान मे नहि अछि। ओना हमरा लोकनि जनैत छी जे नेपाली संविधान मे नहि रहितो बंगालक दोसर राजभाषा थिक। हमरा लोकनि जनैत छी जे संविधानक बहजना बना के बलौ पढ़िने विधान सभाक सदस्य श्री नर्मदेश्वर सिंह आबाद के मैथिली मे शपथ ग्रहण करवा सं रोकल गेल छलनि आ हाक मे श्री हुकुमदेव नारायण यादवक संग संसद मे सेहो एहने घटना मेरुब। संविधान मे नहि रहबाक कारणे सं सरकारी कोनो विवृति मैथिली मे नहि छपैत अछि आ एहि राशि सं मैथिली पत्र-पत्रिका के वंचित राखल जाइछ। संविधानक कारणे आकाशवाणी वा दूरदर्शन सं मैथिली प्रोग्रामक प्रसारण नहि कएल जाइछ आ एहि तरहे मिथिलाक प्रतिभा के सुयोग सं तथा सहयोग सं वंचित कएल जाइछ। जं सरिपहुं एहि सं फर्क नहि पड़ितैक, जेना कि बेर-बेर सरकारी पक्ष दलील पेश करैत रहल-ए, त संविधानक एहि अनुच्छेदक प्रयोजन की छलैक? किएक ने एकरा फाड़ि फेकल जाइछ?

थोड़ेकालक लेल जं मानियो ली जे सरकार अपन बचनक पालन कश्त आ संविधान बहिर्भूत भाषाओ के ओ समस्त सुविधा देतेक जे संविधान समस्त भाषा के देल जाइछ त कि ई भीख देना नहि भैक? सरकार के ई जानि केबाक चाहियेक जे मैथिलि जाति

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारी सुझाह करब हम
बिद्रोही मिथिलाक जवान

श्रमएव जयते

अपना देश मे कहियो सत्यक जीत होइत छलैक। ई ओ समय छल जखन भारत सोन-चिड़ियाक रूप मे जानल जाइत छल आ एहिठाम दूबक नदी बहैत छलैक। तहिना हमर नेता लोकनि मे स्तरहीनता अवलै छलनि, काबिलतीक अभाव छलनि, परञ्च ओ लोकनि बहमान नहि छलाह। जं बहमानी कतौ बुझाह्यो पड़ेत छल त से मूल्यहीनताक कारणे नहि अपितु दूरदर्शिताक अभाव। तें हुनका लोकनिक मन मे सत्यक एकगोट आग्रह छल आओर ओ लोकनि सत्यमेव जयतेक नारा लगावैत छलाह। किन्तु आइ सत्य हारि के एक कोन मे अपन मुँह नुकाओने बेसल अछि आ भूठक तिरंगा फहरा रहल छैक। हमरा सभके तत्कालीन नेतागणक मोन मे ई प्रश्न उठलनि जे जखन सत्यक विजय होइते छैक तखन सत्यमेव जयते कहबाक अर्थ की।

'सत्यमेव जयते'क ओनहुना अवमूल्यन भ गेल छैक। जाइ भारत सरकार द्वारा चलाओल गेल टाका पर अधोक स्तंभक नीचा सत्यमेव जयते लिखल रहैछ ओकर अधिकांश भाग (मेहनति के छोड़ि कं) भूठ-चालाकी सं कमाएल जाइछ। चोरी-चलाकी सं कमाएल टाकापर 'सत्यमेव जयते' ओहने मखौल थिक जेना कचहरी मे भाराक अवाह द्वारा गीतापर हाथ राखि कहनाइ—जे वाजव सत्य वाजव।

इन्दिरा गांधी एहि बातक अवलियत के जनताक नाड़ीए जकाँ पकड़ि छेलनि आ ओ एक गोट नव नारा देलनि—अम

एव जयते। अर्थात् अमक जीत हो। हुनका मेहनति जे एहि सं भारतक अमजीवी खुशी सं नचैत-नचैत कहत—देश के नेता इन्दिरा गांधी। आओर इहो जे हुनकर पहिलक पुरिये जकाँ इहो छूट उड़ि जायत।

अमक जीत होइ एहि मे भला ककरा आपत्ति भ सकैत छैक। परंच इन्दिरा गांधी ई नहि कहलनि जे ओ कोन अम थिक बकर विषय मे हुनका दिलचस्पी छनि? ओ इहो नहि कहलनि जे जुमान बेरोजगार लोकक अम मे हुनका दिलचस्पी छनि वा नहि। हुनका कम सं कम एतवो त खुदासा कहक चाइत छलनि जे 'रोजगार दफ्तर' खाता मे नामांकित बेरोजगार सभक अमक जीत होइतेक वा नहि। हाथ-पंथर दुकुल्ला रहितो जे जुमान सभ बलौ सं देशलग रहितो जे जुमान सभ बलौ सं देशलग हाथ-पंथरने अम करवाक अवसरक याचना क रहल ए आ ओकरा सभके से नहि देल जा रहल छैक—ओकरा सभक अम के की होइतेक? भरिसक इन्दिरा गांधी एहि पर सोचबाक अम नहि केननि अन्यथा किछु दोसर परिणाम हुनका सामने होइत।

पहिल परिणाम त ई बहराहैत कि अमक परिभाषा ओ जानि बहराहै। हुनका एकरो अन्दाज लगितनि कि एगो रिशवातवाला आ ठेकाबलाक एक घंटा अमक दाम पांचो टाका नहि होइत छैक जखन कि बिड़लाक एक घंटा अमक दाम पांचो लाख सं बेसी होइत छैक। भारतक एगो मिल् मालिक लाखो-करोड़ो सं खेलाइए जखन कि ओही मिल्क मजदूर 'ओवर

मे आन कोनो वस्तु भले नहि होइक परञ्च आत्माभिमान अवलै छैक। अयाचीक संतान भील कबमपि नहि ग्रहण क सकैछ। जगन्नाथ मिश्र तथा अन्य कांतिवी नेता जकाँ जं ओ चारि कोट मैथिल सन्तान के ध्यान प्रवृत्तिक मानैत हो त ई ओकर भयंकर भूल थिकैक।

मिथिलावासी के अपन अधिकार चाहियेक। जं सरकार ओकरा भारतीय नागरिक मानैत अछि त अन्याये नागरिक जकाँ ओकरो समस्त अधिकार भेटक चाहियेक। आ सं से नहि भेटैत छैक त नागरिकोचित कर्तव्यो करैक लेल ओ बाध्य नहि अछि। जाइ संविधान मे मैथिलीक चर्चा नहि, जाइ मानचित्र पर मिथिलाक नाम नहि तकरा सम्मान देबाक लेल ओ बाध्य नहि अछि आ ओ दिन दूर नहि जे मिथिलाक गाम-गाम मे सार्वजनिक स्थान पर एहि संविधान आ मानचित्रक होलिंका दाह कएल जायत। जाइ भंडा पर ओकर अधिकार नहि छैक तकरा उतारि अपन स्वतंत्र भंडा फहरेबाक लेल ओ सतत तैयार रहत—जं सरकारक इश्वर रचैया रहतेक।

कोनो वस्तुक सीमा होइत छैक। सदन-शक्तियोक सीमा छैक। पैतृस बल सं मिथिलावासी सदैव आयल-ए परञ्च ई वाह नहिआ दूटै जेतैक भारत सरकारक खेमाता नहि छैक जे ओकरा वाहैत। मिथिलाक औद्योगिक-ऐतिहासिक अवस्था के सरकार एक बेर नीक जकाँ मन पादि छिड़ आ समय रहिते समर्थि जाय ताहो मे सरकारक संग राष्ट्रीय कल्याण छैक। संगहि मिथिलाक नेता लोकनि के सेहो सचेत भ जेबाक चाहियनि। ओ हिंदा छनि मैथिल के बार अधिक दिन अम मे नहि राखि सकैत छथि। समय ककरो लेल बेसल नहि रहैछ। कार्तिक भागि दिन तका के नहि पजरेछ।

• जय मैथिली

अमएव जयते...

टाइम'क अम बैलाक बादो अपन स्त्री-बच्चाक आवश्यक आवश्यकताओंके पूर्ति नहि क पवेछ। पता नै इन्दिराजी एहि दुनू अम मे सं कहर विजय चाहैत छथि।

जाइ देश मे अमक आदर होइ छइ ताइ ठाम लोक बेरोजगार नहि होइए। किन्तु महान भारत वर्ष मे इन्जीनियरो हजारोंक संख्या मे बेरोजगार अछि। हरए अछि जे अरब देश मे पाव विकासक बोझना नहि अछि। अगर योजना रहिते त कोनो इन्जीनियर के बेरोजगार हेबाक प्रश्न नै उठैत। आओर अपना देशक इन्जीनियर ठीकैदारीक छेउ चलासेठक सामने पंक्तिवद याचक बनि ठाढ़ नहि होइत।

भारत भारत, पूरा देश मे रोग आओर रोगीक संख्या मे रोजीना वृद्धि भ रहल छेक, किन्तु अपना देशक डाक्टर बेरोजगार अछि। एहि सभक बाबजूदो जे इन्दिरा गांधी अमक विजय चाहैत छथि त एहि मे हुनकर कोन दोष ?

इन्दिरा गांधी एखन जाइ भोलापनक संग अमक विजय चाहलनिहै, ताही भोलापनक संग बीस सूत्री केर विजय सेहो चाहैत छथि। ओही भोलापनक संग ओ पछिला दिन इहो कहलनि जे 'अमीर चाहे आर बेसी अमीर किएक नै भ रहल हो किन्तु गरीब आओर गरीब नहि भ रहल अछि।' भूमि पड़ेछ जेना अपना देशक गरीबक हुनका प्रतिफल सूचना मेटैत होनि। ओना हमर दीर्घ दिन सं ओ एहि बात के दोहरा रहल छथि जे चीज वस्तुक दाम घटि रहल-ए। परञ्च मनाक बात त ई छि जे सरकारी-बेसरकारी आफिस मे प्रत्येक आदमीक महगाइ भत्ता बढ़ि रहल छेक। अगर चीज-वस्तु दाम घटि रहल छेक तखन महगाइ भत्ताक बढ़नाइक गणित त बेयो ज्योतिषीक सकेत छथि।

ओना भ सकैछ जे कोनो दिन भोरे नोझ टुटिते इन्दिराजी के मन मे ई बात भायल होनि जे पहिलका समस्त नारा पुरान भ गेल, तें बीमार देश के एक नव औपचक खगता छेक। हुनका भरिखक इहो भेल होनि जे जाइ संस्थान मे पहिने लोक अम करे सं हिचकिचाइत नहि छल, तते आइ-कालि ताइ खेलाइत देलाइ पड़ि रहल-ए। जेना कि बैंक कर्मचारी, कोयला उद्योगक वरिष्ठ कर्मचारी। हुनका एहनो बुझाएल होनि जे रेल के देरी सं चढनाइ अमक प्रति लजाभावक कारण छि। तें ओ नारा देलनि कि हे राष्ट्रीय-कृत संस्थानक कर्मचारी लोकनि आबो अहां सब के अम करे मे लजेबाक नहि चाही। किएक त अन्ततः बीत अमे के होइत छेक।

अर्थात् आब सत्य नहि विजयी भ सकत। सत्य सं पेस चीज अम छि। हुनकर एहि बात के यदि सब लोक गंभीरता सं ग्रहण करब त नेता झूठ बाबना मे आर बेसी परीअम शुरू करताइ। बेरोजगार नभोजमान जे अमभावि आ कुष्ठाक कारणे गलत दिशा मे डेग उठा चुकल-ए

कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर

कविपति विद्यापति के जे मैथिली भाषा-साहित्यक पिता मानल जाय त कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर के बिनु संकोचक बनकक स्थान पर प्रतिष्ठित कएल जा सकैए। दुर्भाग्यवत्ता जे एहन अमतीम पदक अधिकारी, मिथिला-विभूति-श्वर ज्योतिरीश्वरक परिचय हमरा लोकनि के वद विवम सं मेटल, आ आइयोवरि पूर्ण परिचय नहै प्राप्त भ सकल। एक दिव जे ई 'मिथिला-मैथिली' हेतु दुर्भाग्य

ओ ओह दिशा मे आर बेसी सक्रिय भ जायत। किएक त आब ओकर अमक विजय हेतैक।

एहि सभक संग ई प्रश्न अहाँक मन मे जाठि सकैछ जे आब अमक बीत हेतैक त कि पहिने अमक बीत नहि होइत छेक ? त आइ, हमर एक विनम्र सलाह मानू जे एहि विषय पर आर अपन भाव जुनि समाउ। किएक त हमरा लोकनिक प्रधान मंत्रीके कहियो काल एहन 'नारातुमा' मजाक करबाक आदति रहलनिहै।

ओनहुना अपना ओतय नाराक पुरान परम्परा रहल-ए। सुभाष बोस कहने छलाह—'तो हमरा रक्त दे, हम तोरा आबादो देबौक।' एक निर्दोष तरहक अम ओहु मे छल। लोक रक्त देबाक छेक तेवारी मेक। अन्ततः आबादो मेटलैक। किन्तु रक्त देबा मे ओहूक कसरि रहि गेलैक आ हमरा लोकनि के जे आबादो मेटल से अखी आबादो नहि, कारण ओ लड़ाई सं नहि समझौता सं मेटल छल। एही कारणे बिजु सवाल तहिया नहि हल भ सकल आ हमरा लोकनि के माउन्ट बेटन क बदला नेहक मेटि गेलाह। आओर जे हेतु माउन्ट बेटन अपना संग कुर्सी आ अपन व्यवस्था नहि ल गेलाह आ तकरा उपहार मे भारत के देने गेलाह, तें उहइ व्यवस्था एहिठाम फुलाइत फेरत रहत आ ओहि मे जखन फल मेलैक त ओकरा संभव के रूप मे एहिठामक जनता देखलक। ओहो अपन पांच सूत्री लहएक हमरा लोकनि समस्त भायल छल।

आबादोक जाइ कड़ाइ मे तिलक 'आबादो हमर जन्मदिन अधिकार अछि' कहने छलाह, तकर अर्थ आलोक नेतागण गलत लगओलनि। तें इन्दिरा गांधी हड़ताल आओर उचित मांगक छेउ आवाज उठओनाइ पर पावनी लगा देलनि। लाल बहादुर कहरनि—'जय जवान जय किसान।' 'जय जवान' पर लिखनाक छूट नहि कारण प्रतिरक्षाक मामिला छेक, परञ्च 'जय किसान'क बारे मे त हते कहिए सकैत छी जे ओकर स्थिति कसरो सं तुकल्ल नहि छेक। अल उपजा क भरि देशक पेट भरनिहार किसान अपने भूले मरि रहल-ए। एहना हावत मे जे इन्दिरा गांधी अमक विजय चाहैत छथि त एहि मे हुनकर कोनो दोष नहि।

—अनिल ठाकुर

रयक विषय थिइत दोसर दिव मैथिलि नातिक निमित्त ओर लयाएवद एवं पतनो-न्मुखी प्रवृत्तिक परिचायक। एहिठाम ई कहनाइ अनर्गल नहि हएत जे प्रतिबल मैथिली मे दर्जो 'विज्ञान' पी०एच०डी०, डि० डिग्री प्राप्त करैत छथि परञ्च किनको ध्यान एहि बा एहने कतेको विभूति—जनिक परिचय एखनो अछात अइ दिस नहि गेलनि। अथवा एना कही जे विद्वता नहि मात्र उपाधिक भूखक, मिथिला-मैथिलीक नहि मात्र आन स्वार्थ पूर्ति लेक आकुल तथाकथित विद्वान लोकनि एहि मे अपन अमूर्त समय बेरबाद केनाइ उचित नहि भूमि—विद्यापति, जनिका पर नद बेसी काल मेलै—अनहि ओ सभ फालतू किएक नहि हो—तिनका पर शोध केनाइ अथवा कुभेते छथि, कारण विभिन्न पोथी सं दस-बीस लाइन नकल क लेने सहजहि पेस पोसा तेवार भ जाइत छनि आ उपाधि छेल ताइ सं बेसी चाहे की करी !

'धूर्त समागम', पंचसायक तथा रंग-शेखरक रचयिता कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर संस्कृत साहित्य मे पूर्ण प्रतिष्ठित आ परिचित रहितहु मैथिली जगत मे अपरिचित छलाह। १९४० मे जखन म० म० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा नेपाल राज लाइब्रेरी सं प्राप्त हिनक मैथिलीक आदि गद्य ग्रंथ वर्ण रत्नाकरक प्रकाशन भाषाचार्य सुनीति बाबूक प्रयासे हुनकहि सम्पादन मे एडिटरिक सोसाइटी सं मेल—तकर बादे अपन विभूति के हमरा लोकनि चीन्हि सकलौं।

'धूर्त समागम'क अनुसार हिनक समय तेरहम शताब्दी छल तथा ई रामेश्वरक पीत्र ओ श्रीरेश्वरक पुत्र छलाह। स्व० ईशानाथ बाबूक अनुसार ई बाबू पाली (पाली मोहन) गामक छलाह। संभवतः ईशानाथ बाबूक एहि मान्यताक आधार सेहो उक्त पोथीए हो जाइ मे श्रीमत्पण्डित जन्मभूमिना... क चर्च कवि शेखर स्वयं केने छथि। ओना नगेन्द्र नाथ गुप्त महाशयक अनुसार ज्योतिरीश्वर ठाकुर कविपति विद्यापतिक पितामहक पितियौत छलाह। वास्तविकता जे हो, परञ्च ईपरि सत्य जे एहि संदर्भ मे अपेक्षित अनुसन्धानक त कथे की—वर्ण रत्नाकरक हगो नीक संस्करणो आइपरि मैथिली मे प्रकाशित नहि भ सकल।

कविशेखराचार्यक विद्वता कुनू एक दिशा मे सीमित नहि छल। दर्शन, साहित्य, संगीत मे हिनक समान अधिकार छलनि तथा कतेको भाषाक प्रकांड पंडित छलाह। पंचसायक मे ई अपना सम्भव मे कहैत छथि—

अस्ति प्रत्यहमर्थिताप्रहरणः
लक्ष्मणक दीक्षा गुरुः
श्रीकण्ठाचर्यनतस्वरो भुवि
चतुःपण्डेः कलाना निधिः।
संगीतागमवत्प्रमेय रचना

चातुर्य चूडामणिः (स्व०)

स्वातः श्रीकविशेखराचितपदः

ओ ज्योतिरीश्वर कविः ॥

एहिपोथीक शेष ओ निम्न श्लोक सं हेने छथि—

बाबूचन्द्र कला किरिट दुरये
शेखरमहा तिष्ठति
बाबू दसवि माववत्स सकला
सानन्दमादिश्रुति।
बाबू कामकला विवर्त चटुका
लोभोतले सर्वदा
तावत् श्री कविशेखरस्य कृतिना
तावत्पदे दीप्यताम् ॥
धूर्त समागम मे ओ लिखैत छथि—
तस्योदण्ड-सुभ्रताप दहन
श्वाला निरस्ताप्यदे
राज्ञः सर्वगुणानुसृष्ट पदवी
विद्योतनाचार्यकः।
यो श्रीरेश्वर वंश मौलितिलको
दातावदाताशयम्,
तस्य श्री कविशेखरस्य कविता
सच्चिन्मात्रमन्ते ॥

तदनेन सकल संगीत विशेष विद्योतनाभिनव भरतेन पुरमन्त्र-पदारविन्द इन्द्र-वन्दाकरपल्लवेन-निखिल भाषोपभाषाशुभं-भाषुक सरस्वती कण्ठाभरणेन अनवरतबोम-रसास्वादकायककण्ठ कन्दलीनरी-वृत्तमान-मीमांसा महोत्सवेन रामेश्वरस्य धौवण तत्र भवतः पवित्र कीर्ते श्रीरेश्वरस्यामर्जेन महा-शासन अंगीकृत आमतपण्डित (श्रीमत्पण्डित-
Nepal N.S.) जन्मभूमिना कविशेखरा-चार्य ज्योतिरीश्वरेण निजकुलस्य विरचितं धूर्त समागम नाम नाटकम्; प्रवर्तकमभि-नेतृमात्रिणोऽस्मि।

एवंप्रकारे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक व्यक्तित्व आकृतिक परिचय हमरा लोकनि के हुनके लेखन द्वारा प्राप्त होइछ। वर्णरत्नाकर मैथिलीक आदि गद्य-ग्रन्थ हेबाक गौरव जाइ पोथी के प्राप्त छेक से थिक वर्णरत्नाकर—कविशेखरक एकमात्र मैथिली कृति जे आइपरि हमरा लोकनि के प्राप्त भ सकलए। ओना बहुतो विद्वान हिनक 'धूर्त समागम' के सेहो मैथिलीक मानि एकरा मैथिलीक प्रथम नाटिका कहैत छथि, परञ्च एहि पर मतभेद नहि भ सकलए।

वर्णरत्नाकर मात्र मैथिलिक अदि गद्य-ग्रन्थ नहि, अपितु समस्त नव्य भारतीय भाषाक आदि गद्य ग्रन्थ छि कारण आइपरि कुनू भाषा मे एहि सं पहिलक वा एकर सम सामयिक गद्य-ग्रन्थ नहि प्राप्त भ सकलए।

म० म० हरप्रसाद शास्त्री तथा सुनीति बाबू एकरा 'वर्ण रत्नाकर' कहने छथि आ एही सं एकर महत्ता ओ विषय वस्तुक परिचय प्राप्त होइछ। हिनका लोकनिक मतानुसार एहि पोथीक 'उद्देश-भावी कवि ओ कालक लोकनिक निमित्त एकटा पञ्च-प्रदर्शक ग्रन्थ बनाएव छलनि, यथा, यदि (शेषाप पृष्ठ पांच पर)

नारी, विधवा काटर आ हमर समाज

अज्ञात-अनटोटल

“आ, विवाहक दुइ-तीन बरस बाद कादम्ब विधवा भ’ गेलीह। कादम्ब अर्थात् कादम्ब विधवा छथि आ जखन एहि अष्टा-दशवर्षीया विधवा के देखैत छी त’ मोन होइत अछि जे आगि नेसि दी वेद आ पुराण मे आ मनुस्मृति मे आ एहि देशमे जत’ कादम्ब सन स्त्रीक शरीरके वैभवक आगिमे भस्म क’ देल जाइत अछि। ओहि दिन कादम्ब भेंट करय आइल छीह त’ कन्हौलीवालीक नवजात शिशु के केहन सिनेहसँ कोरामे कुम्बय लगलि छथिन, कतेक दुबार करैत रहलि छलीह। ओहिमे केहन मातृत्व छनि—ओहि निहुरीने दोकान लग ठाढ़ युवक सभक पिआबल दृष्टि अंग-अंगकें नुकीले, नहुए-नहुए डेग करैत कादम्ब बलनकीक दरवाजाक अंदमे सन्निहा जाइत छथि—जीवनक अन्धार आकाश मे भविष्यक जाइत जल-शून्य उज्जर मेघ सन कादम्ब।

“जेना बिन रंगल, बिन माटि चढ़ा-ओल भगवतीक-मूर्तिक खदक सौचा—” रोगक मारल, सुखायल देह, कोटरगत, चंचल-चंचल ओलि, ज्योतिहीन, मन्द-मज्जित दृष्टि, मेरु, परम मेरु नूभा आ तेओ ह्जार टा चेकरी लागल आ तेओ ह्जार ठाम फाटल नूभासँ जीवनक दरिद्रता, देहक दरिद्रता, अस्तित्वक दरिद्रता, प्रदर्शित होइत।

“आह निर्मला दीदी मेनका छथि, काहि कादम्ब हेतीह, परसू कपूर दाह हेतीह; कतेक कपूर दाह हेतीह आ कोनो कम्ब छथि नहि हेताह जे मेनका-सन्तानक रक्षा करथि। सभ विश्वासिन हेताह, मेनकाक शरीर सँ वास्तविक कामसूत्रक अन्वयसँ करयवना, सभ दुष्यन्ते हेताह, मेनका पुत्रीक देह-रास-लीला करयवना—”

राज कमल चौबरीक एक कथा “सहस्र मेनका” सँ लेल ई तीन अवतरण थिक। एहि कथाक तीन ठामसँ उठाओल गेल तीन टा अवतरण मे एकटा बात छेक, एक गोठ पीड़ा छेक। ई पीड़ा ह्जार-लाख बरसक पीड़ा थिक। एहि पीड़ाक कोनो मानवीय समाधान नहि अछि। सभ पीड़ाक हल छेक, मुदा एहि पीड़ाक कोनो हल तकबाक कोनो प्रयास आइयो नहि भऽ रहल अछि।

मिथिला आर पछड़ल-पछुमायल अछि। दरिद्रता छेक। अशिक्षा छेक। कुटीरि छेक। धर्म आ धार्मिक कर्मकाण्डसँ उत्पन्न अन्धारमे नौआइत जनना छेक। दरिद्रक शोषण होइत छेक।

दरिद्रमे दरिद्र छथि मैथिल नारी। शिक्षा नहि जन नहि। बापक जन मे व्यावहारिक हक नहि। अपन रोजगार करवाक हरि नहि। नोकरी आ दोकानदारी करवाक कोनो सामाजिक परम्परा नहि।

मैथिल नारीक जतेक शोषण आ दमन भऽ रहल अछि। तकर बोझा संसारक कोनो भागमे, कोनो कालमे नहि मेटल।

संयुक्त राष्ट्रसंघक मानवाधिकार समिति जेहेन-जेहेन शोषण दिख-विख-जनमतक ब्यान आकृष्ट करैत अछि, ताहिसें भयावह आ अमानवीय ई शोषण थिक। मुदा संयुक्त राष्ट्रसंघो एम्हर ब्यान नहि देत, तकर कारण छेक जे मनु महाराजक शिकंजा मे कसि कऽ गलाइल मैथिल नारी धर्मक अग्निकुण्ड मे जीविते जराओल जाइत अछि। धर्मक लक्ष्मण-रेखामे राजनीति, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र घोंसिअवना मे डेराइत अछि।

लोक कहैत अछि जे अहाँ लोकनि समाजक नेता छी। अहाँ लोकनिक कलममे नद शक्ति अछि। समाज केँ सुधार। व्यवस्था-प्रस्थापर हमरा कर। विधवा-विवाह छेक समाज केँ प्रेरित कर।

हम कहैत छिएक जखन कुमारि कन्याक विवाहमे वरपक्ष ह्जार-लाख मखैत छेक, तँ विधवाक विवाहमे वरपक्ष कतेक मखैत ?

कुमारि कन्याक रूप-गुण-शिक्षाक कोनो मूल्य जखन एहि समाज मे नहि छेक, तँ विधवाक मूल्य केँ वृद्ध ? तँ विधवा-विवाहक सामूहिक-सामाजिक प्रयासो कय-कापर कोनो लाभ होबवाक संभावना नहि अछि। कोनो नव रीति चलायन हमरा दुस्तरे सम्भव नहि लगैत अछि।

लोक कहैत अछि जे व्यवस्था-प्रथा आकाश लागि गेल। कन्या सभ अजगि मेल आ रहल अछि। एहि व्यवस्थाक कोनो आ कतहु अन्त छेक की नहि ?

हमरा बुझने एखन आ एहि स्थिति मे ई प्रथा एखन बढ़त आ एकर अन्त एखन सम्भव नहि अछि।

काटर-प्रथा चाहि रूप मे एखन प्रचलित अछि, ओकर इतिहास नव छेक। पहिने, आह सँ तीस-चाहीस बरस पूर्व जातिक मूल्य चुकाओल जाइत छेक। ओ एकदिशाह वरमूल्ये नहि छेक, कन्योक मूल्य छेक। आ ने ओ वरमूल्य छेक आ ने कन्यामूल्य छेक, ओ जातिक मूल्य छेक। एहि मे नगदीक कारगर भेयो सकैत छेक आ नहियो भऽ सकैत छेक। तँ एक प्रकारे ई जातिगत श्रेष्ठताक मूल्यांकन आ स्वीकार छेक। ई कटु आ भयावह नहि छेक। ई समाजक अभिशाप नहि छेक।

शिक्षाक प्रचार-प्रसार, युरोपीय शिक्षाक व्यापक होववा सँ हम आजुक व्यवस्था-प्रथा केँ जोड़ैत छी।

जापरि वर काटर-इंजीनियर नहि होइत छलाह, नोकरीक कोनो योग्यता-क्षमता हुनका मे नहि रहैत छलनि, तहिया वरि लोक जाति सँ कुल सँ श्रेष्ठ बूझल जाइत छल। आजुक लोक जन सँ, जन कमयवाक क्षमता सँ, पद सँ पंच बूझल जाइत अछि।

बहिया घरि लोक आइ बर्को युरोपीय कुशिक्षा सँ पीड़ित नहि छल, तहिया घरि

जेना कि पता चकलए, मिथिलांचलक संगहि सम्पूर्ण लिच्छवि-प्रदेश (बिहार) मे प्राथमिक कक्षाक छात्र लोकनिक बीच पोथीक लेल हाहाकार मचल अह। मार्च माघ बीति गेलेक परञ्च पोथीक कतौ पचा नहि छेक। बिहार मे एहि तरहक पोथी बिहार टेक्स्ट बुक कर्पोरेशन छपेह आ ओकरे द्वारा एकर वितरणो कएल जाइह। ई संस्था बिहार सरकारक निजी संस्था थिक। ओना एहि संस्थाक लेल ई कुनू नव पटना नहि। प्रायः प्रति बरस एहिना होइत छेक। विशेषता एहि खेप ई छेक जे मैथिलीक संगहि आनो भाषाक पोथी उपलब्ध नहि छेक जखन कि आन-बेर आन-आन भाषाक पोथी त समय पर मेडि जाइत छेक परञ्च मैथिली-पोथी अगस्त-सितम्बर सँ पहिने नहि पठाओल जाइत छल। भ सकैल मैथिलीक शुभ-चिन्तक मुख्यमंत्री पर फेर ने कही मैथिली विरोधक आरोप लागनि आ तँ ‘लोप सहित कपुनाय नमः।

ओना बिहार मे छात्र लोकनिक लेल ई एकमात्र समस्या नहि छेक, एहन कतेको समस्या छेक। उक्त संस्थानक पोथी सभ खुबरा पोथीक दोकान सँ बियार्थी सभ कीनेह। मुदा ई पोथी ओकरा तखनहि दोकानदार देत छेक जखन कि ओ ओइ विषय नोटक पोथी कीने लेल तैयार हो। नोटक पोथी त एहने रहैल जे ओकर

व्यवस्था-प्रथा एतेक भयावह नहि मेळ छेक। जेना-जेना हमरा लोकनिक युवक नोकरी वला शिक्षा पवैत जयताह, नीक धन बटोरऽ वला पद आ नोकरी पवैत जयताह, हुनक दाम बढ़ल जयति। आजुक प्राश्नास्य शिक्षा आ शिक्षाक बल नोकरी तकबाक ई दोह व्यवस्था केँ बदो-लक अछि, मुदा रहल अछि आ आगुओ बढ़ाओत। लोक शिक्षाक प्रति साक्षात्-सावधान मेळ अछि। लोक नोकरी मे पाह कमायवाला पदक प्रति साक्षात् मेळ अछि। तँ लोक व्यवस्था आ वर-मूल्यक प्रति दिनानुदिन बेस आसक्त मेळ आ रहल अछि। तँ हम देखैत छी जे व्यवस्था प्रथा पटबाक स्थान पर बढ़ैत अछि।

लोक कहैत अछि जे शिक्षा बढ़ैत, जागरण बढ़ैत, लोक व्यवस्थाक क्रूरता, अमानवीयता आ अनुपादेयता केँ वृद्धत आ काटर-प्रथा समाप्त भऽ जायत। हम एकर उनटा देखैत छी, शिक्षा बढ़बाक सट सट काटर-प्रथा बढ़ैत अछि, बटैत नहि अछि।

हम आजुक प्रचलित शिक्षा-प्रणाली केँ, युरोपीय शिक्षा प्रणाली केँ कुशिक्षा कहल अछि, से हम जानि कऽ कहल अछि। आजुक शिक्षा नोकरी करऽ वला लोक जनमा रहल अछि, विवेकशील मनुष्यक निर्माण नहि कऽ रहल अछि। प्रचलित शिक्षा सँ लोक जन-लोड्य मेळ

एको पांती शुद्ध नहि रहैत छेक आने टेक्स्टक संग कुनू सम्पर्क। दाम टेक्स्टबुक सँ ठामहि दोबर-तेवर रहैत छेक। परञ्च से नहि कीने जे हेतु दोकानदार टेक्स्ट बुक देतैक नहि तँ बाध्य भ लोक केँ ओहो कीनहिटा पड़ैत छेक। असल मे टेक्स्ट बुक कमिटीक संग खुबरा बिक्रीता सभक खाति-गांठि रहैत छेक आ रहैत छेक नोट लिखनिहार छपनिहारक। आ एहि संगठित पद्धत्यक शिकार बनेत अह छात्रक अभि-भावक सभ। सरकार सभ जनैत अह—परञ्च ओकरा छेले छल स।

मैथिली माध्यम सँ पढ़निहार तथा मैथिली पढ़निहार छात्रक लेल त ओकरो समस्या ई छेक जे जखन कि ओही वर्गक आन भाषाक पोथीक दाम दूसीन टाका रहैत छेक ताह ठाम मैथिली पोथीक दाम ठामहि दोबर रहैत छेक आ से ओवेश राखल जाइत छेक ताकि लोक मैथिली नहि पढ़ि हिन्दी वा अन्य भाषा पढ़य।

टेक्स्ट बुक कमिटी आ बिहार सर-कारक ई सम्मिलित पद्धत्य बल्लो सँ चलि रहल अह आ पता ने कहियापरि चलेत रहत। अन्तरजक बात त ई जे तेओ छात्र अभिभावक लोकनिक कान ठाढ़ नहि होइत छनि जे एहि तुंगित पद्धत्यक विरोध करता। शिक्षाक समुदायक एक पेव (शेषक पृष्ठ पात्र पर)

अछि। वेतनेक पाह नहि, बाहरी पाहकोक लोभ नोकरी पेशा वला सभ मे हरि-हरि भरल छेक, ई लोभ येह शिक्षा उत्पन्न कयलक अछि। काटरक लोभ आ नोकरी द्वारा वेच-अवेच दंग सँ अजित कयल जाय वला धनक लोभ केँ हम फासक-फासक नहि बुझैत छी।

जापरि ई शिक्षा विलासी, लोभो, समाज-चेतना सँ विहीन लोकक निर्माण करैत रहैत, तापरि ई शिक्षा कुशिक्षा रहबै करत। कुशिक्षा ओ थिक जे व्यक्ति केँ वैयक्तिक लाभ-हानिक चिन्ता सँ उपर उठा कऽ ओकरा सामाजिक हानि-नाभक चिन्ता सँ उदार, बलिदानी आ श्रेष्ठ बनावय।

मिथिला मे जागर-पाठीक मूल्य छेक, बड़द-महोवक मोल होइत छेक, कुमारि कन्याक कोनो मोल नहि छे। भऽ कुमारि कन्याक मोल नहि छेक, ततऽ विधवा स्त्री आ साधारण स्त्रीक की मोल होयतेक ?

मिथिलाक स्त्री जखन मनुष्य नहि छथि। कन्यादान शब्दो सूचित करैत अछि जे नारी दान मे देवाक वस्तु थिक। जनानी लोक नहि थिक। जनानी धान, चाउर, गाछ आ दूकही-एकटकही बर्को दान देना योग्य वस्तु बस्तु थिक। धन-वस्तु वेनु बर्को एक गोठ वस्तु, एक गोठ “कमोटी थिक।

● जीवकान्त

लालबुभकरक चिट्ठी

श्रीमान् सभादक जी महोदय
जय मैथिली ।

आगा हासुरति ई जे अपनेक पत्रिकाक फगुआ अंक मे अपना लेल कुन उपाधि घोषित नहि देखि क्वीटलभरि कह लाल बुभकर के मेळनि । परञ्च करवे की करितहि, जहन कपादे जरल छनि त अहाँक दोषे की ? सभादक जी जं सत्त पुछी त कम सं कम एहि सन्दर्भ मे लाल बुभकर यात प्रतिशत मैथिल छथि । तें जं कुन प्राप्यो वृद्ध नहि मेटेत छनि त अपन भाष्य के दोष दय संतुष्ट भ जाइत छथि । ओना ई गप्प त अहाँ के बुझले हएत जे जखन लोक के काज पड़ेत छेक त इलेको सं तेकक जोगार कए लाल बुभकर लग दोहरे किन्तु जहाँ कि काज भ गेले त फेर केसी तेरी रंगा । तें ने आइबरि केहनो काज उदेम कती होइक, लालबुभकर के लोक नोतो हकार देनाक खगता नहि बुझे । आ एक छथि लाल बुभकर, जे बिनु हकारहि समठाम उपस्थित । से कहै छी सभादक जी, भनहि मन बड़ि गेल, गत फरवरी मे पुर्णिया मे बाबा विद्यापतिक बर्षा बडे धूम-धाम सं मनाओल गेल छल । भरि जखार मे बरवरना नोत छल । बारल छलह त लालबुभकर । मुदा लाल बुभकरो त तेने, भनकी पबिते उपस्थित । ओना गाम सं जेवा मे कने निलम्ब भ गेलनि आ तें ओ दोसर दिन पहुँचि सकल । परञ्च जेना कि कहौ छेक—बाइब नेवाल कपार संगहि, सेह परि हुनको संग भेलनि । जाइते देखेत छथि जे मंत्रपर मैथिल कुलदूषण—मुख मंत्री डा० भी जगन्नाथ मिश्र गरबि रहल छथि । से कहैत छी देखिते देरी त लाल बुभकर के तुरबाक छहदि टिकासन चढ़ि गेलनि । परञ्च करता की ? छलाहो त बिनु नोते ।

सभादक जी, अहाँ एक पत्र मे लिखने रही जे वादव्यक्त कारणे हमरण शक्ति कमजोर पड़ि गेलह । एहि निमित्त हम नियमित शीर्षासन करेक सलाह देने रही । जं अपने से करैत हैव त निश्चित हमरण शक्ति बढ़ल होइत आ तें अवसरे हमरण होइत जे पटनाक चेतनाहीन समितिक मंच सं जगन्नाथ बाबू बाबल छलाह जे ओ मैथिलीक हेतु किछुओटा नहि करताह । परञ्च एहिठाम ओ फेर स्पष्ट भाषा मे कहलनि जे मैथिलीक संवैधानिक मान्यता दिहवा लेल बिहार सरकार बचन-बदल अह । ओ आरो कहलनि जे प्रधान मंत्री आ एह मंत्री ने कि आश्वासन देने छथिन जे संविधान संशोधनक समय एहि पर गम्भीरता पूर्वक विचार कएल जायत ।

सभादक जी अहाँ के भनहि जनाव जगन्नाथ बाबूक बोली परिवर्तनपर अचरज लागय परञ्च जानथि दिनकर दिनानाथ

जे लाल बुभकर के कतियो जगन्नाथ लागल होइन । अवल मे लाल बुभकर के नीक जकाँ बुझल छनि जे भारतीय नेता लोकनि के बात बदले मे ओतबो समय नहि दगेत छनि जते बसबसा सिनेमा कलायिका के कपड़ा बदले मे । तें जं मुख्यमंत्री महोदय कयनी मे परिवर्तन भेबे केहन त, एहि मे अचरजक गुंजाइश कतय छेक ? आब राप्प रहल प्रधान मंत्री आ एह मंत्रीक आश्वासनक । जं अपने भूलबार उदेत हएव त नीक जकाँ बुझल हएत जे किछुए दिन पहिने साम्यवादी दलक नेता श्री भोगेन्द्र भा जीक प्रवक्तृ जवाब मे एह मंत्री साफ कहने रहथिन जे मैथिली के संविधान मे स्थान नहि देल जेतैक । कहला ई जे संविधानक संशोधन बड़ भूमिका होइ छ । ओना अहाँ के बुझल हएत जे अपना नेगरो सरकार—उदेत-बैसेत एहि मे संशोधन करैत रहल-ह । आ भाषा किरक छोट-छोट राशयोक निर्माण करिते रहल-ह ।

जहाँपरि प्रधान मंत्रीक बात अह त तिनका त हमरा सं नीक जकाँ अहाँ चिन्त होइवनि, कारण १९७० मे जे प्रतिनिधि मंडल हुनका सं भेट केने छल ताह मे अपनो रहने करी । हं फक एते-बरि अवसरे अह जे तखन प्रतिनिधि दलक संग अद्वेय ललित नामु ललाह आ प्रधान मंत्री 'सहानुभूति पूर्वक' विचार करबाक आश्वासन देने छलथिन । एहि लेख ललित नामुक अनुक्रमे रूपत धूचकारी जगन्नाथ नामुक एकान्ती मे ओ 'गम्भीरता पूर्वक' विचार करबाक बात बलबीह-ह ।

त से कहै छी सभादक जी, स्थिति त अहाँ सं आब नुकाएल नहिने रहल हएत । परञ्च लाल बुभकर के दुख एहि बातक भेलनि जे जनाव जगन्नाथ बाबूक उपरोक्त घोषणा पर ओहिना सपदी गढ़-गढ़ा उठल जेना मुकराती मे सूप गढ़गढ़ाइह आ बिहरे-तिहरे सं खाडी ओकरे आवाज सुनाइ पड़ेत छेक । मुदा अहाँ के हसो बुझल जे ओह सं दक्षिण नहिजेटा पढ़ाइत छेक । ने त कहू भला, पुर्णिया जे कि मिथिलाक एक महत्वपूर्ण स्थान अह, मैथिलक गढ़ अह ताह ठामक कालेब मे मैथिली-प्रतिष्ठाक पढ़ाह एखन धरि नहि छेक । हमरा त सरिपो बुझल जे छल ई बात । आ एह लेल मैथिली भाषी के माळ करय पड़लनिह । आरो हंसीक बात त ई भेल जे खाँ साहेब पुर्णिया मे विद्यापतिक मंदिरक निर्माण लेल एक लाख टाका देनाक आश्वासन देलनिह । अहाँ के बुझले हएत जे विद्यापतिक डीहपर बिसफी मे संस्मरति सं नदिया कानब आरम्भ क देख । सभादक जी बलिहारी कही मैथिलक विवेक के जे मात्र एहन मातृवातो सम के आर्माजिते नहि करैत, तकर पूजा-चर्चाओ करैत आ ओकर वक्तव्य पर

कविता

मीताक नाम

लिखबा ले बैसै छी

गंगा अवतरण-कथा

लिखने चलि जाइत छी

कोशी-प्रांगणक व्यथा

स्वाभाविक

छन्द-भंभ

अभिशापित कौशिकीक

आर्तनाद कोलाहल

भैरवीक नृत्यक क्षंग

क्रन्दन चिरकालिक थिक

संभव शमशान मे

किन्तु नहि स्तोत्र-पाठ

घंटा ध्वनि

शंखनाद

रक्तहीन, मांसहीन

कंकालक देश

हमर मातृभूमि *मिथिला* ३

'विख्याता भुवनत्रयम्'

मिथिला ई-

विसरल कि जाइत अछि

मानै छी सीत

सत्य सचिपहुँ आरोप तोहर

ब्रौति गेल हमर, असय

लिखि नहि सकै छी आव

व्यर्थ करै छी प्रलाप

संकुचित विचार बोध राहने चलि जाइत अछि

किन्तु

हम वाध्य छी

जरबय त चाहै छी

आशक आलोक नव

निराशाक बिड़रो

मिथिओने चलि जाइत अछि

लिखबा ले बैसै छी

कथा आजादी के

व्यथा बेरबादी के

लिखबा के मिथिलीमे चलि जाइत अछि ।

—राम लोचन ठाकुर

बपदीयो पीटेछ । अवल मे मिथिला मे एक बड़ प्रचलित कहौ नहि छेक—बर्काडक प्रत्याशा बला—से भरिस्क मैथिलगण ताही प्रत्याशा मे छथि । आ फल जे की हएत से त अहाँ सन बुझल लोक सं नुकाएल नहिने हेवाक चाही ।

हं त कहैत जे छलहुँ, ओहीठाम सं फिरलाक पश्चात लाल बुभकर आत्म-रहानि ब्याधि सं ग्रस्त भय ओलावन घेने छथि आ ते अहाँक आदेशानुसार रचना पठेवा मे अवसर्थ छथि । भरोश राखू जे स्वस्थ मेला पर रचना अवसरे पठओताह ।

ओना अपने के रचनाक अभाव नहि हो ताह निमित्त ओ अपन श्रिय-चरु 'विश्व-वंपक' की के सेहो अतुरोत्र पत्र सरकारी डाक सं पठा सुकल छथि आशा करैत छथि जे शिघ्रे हुनक सहयोग अहाँ के प्राप्त होइत । एखन एतने ।

अपनेक पत्रोत्तर नहि पठेबाक प्रवृत्त आकांक्षी

श्रीमान् लाल बुभकर
बुभक्त मातृवासी

★

अज्ञुत अनटोटल...

हिस्सा जे हेतु एहि मध्यम ने सम्मिलित भइ—ते ओ सभ किछु करत से आधाए बेनाइ मय्य—

× × × × × ×

●● पवित्र बंगाल सरकार एमहर नाट बामक बहना बनाके 'ठाना-रिक्शा' बन करे छैक उनाहुत भइ। ओना लोक जनैर जे बदाबाजार सन ग्यस्त हलाका के दूक आ टेम्पू बाम केने रहैत छैक ने कि रिक्शा। परञ्च गरीबक हिमायती देवाक दानी केनिहार मावसवादी सरकार दूक-टेम्पू पर कुन कारवाइ करवा मे पूर्ण असमर्थ भइ, जखन कि भरिदिनक बी-तोड़ परिभ्रमक बाद ५-१० टाका उपार्जन केनिहार भ्रमिकक मुँहक आहार ओ छीनि रहल।

सरकार कहब जे एहि ठाम लाइसेंस प्राप्त रिक्शा सँ बेसी चितु लाइसेंसक रिक्शा छैक आ मात्र तकरे पर रोक लगब चाहैछ। किन्तु सँ सनात मात्र लाइसेंसक रहितेक त लाइसेंस देनाइ सरकारक छैक पेश नात नहि छैक। जे ओकर मासिक सहयोग नहि करैत छैक त रिक्शा चालक नामे किछु पाइयो छ के लाइसेंस देल जा सकैत छैक। एहि सँ सरकारो के किछु आमदमी होइतेक आ गरीबक आहारो नहि छिनेतेक। मुदा नात से रहैक ए तखन ने। जेना कि पता लागल, सरकार लाइसेंस प्राप्त रिक्शाओ के आठ बजे सकाळ सँ आठ बजे राति धरि मुख्य पथपर चलनाइपर प्रतीबन्ध लगावाक सोचि रहल। स्पष्ट छैक जे आठ बजे रातिक बाद सँ आठ बजे सकाळ धरि रिक्शाक चलनाइ-नहि चलनाइ एक बराबर चीक—कारण जे एही समय मे सवारी भेटबे कते करैक।

एहि सँ जे मात्र रिक्शेवाक क्षति होइतेक से बात नहि। साधारण लोक, जेकरा ने त अपन गाड़ी छैक आ ने टेक्सी पर बदावाक छैक जेनी मे पाइ, तकरा छैक त एह सुलभ साधन छैक। गरीबक घोषा-पुता के स्कुल पठेवाक छैक एहि सँ सस्त आ विश्वस्त दोसर साधन की भेटैक ?

एखन जहाँ तहाँ पुलिस सभ रिक्शा जमा करे मे बेध सक्रिय देखल जाइछ। जे पहिने चौअञ्जी-भठञ्जी ओसुलेत छल एखन रिक्शा के पुलिस भेन पर लादि ज्ञाना मे जमा क रहल-ए। सुनल जाइछ जे सभ के तोड़ि धो जरा देल जायत। बाट-बाट खाली पड़ल छैक आ रिक्शावाइक सभ हताश भेल भइ। ओकरा सभक ने कुनू संगठन छैक आ ने कुनू नेता—ओकरा छैल सोचनिहार।

जेना कि पता लागल-ए आ लोकसभ बस-ट्राम मे नजेण, जे हेतु रिक्शा खिच-निहार प्रायः सभ के सभ अवगाती थिक ते ओकरा देखवाक छैक ई सरकारी चाकि थिके। ज ई बात सत्य हो त एहि क्षेत्रीय दृष्टिकोणक जते निन्दा कएल जाए थोड़ होइत। एहि विषय पर मानवीय दृष्टिकोण सँ सोचल जेवाक चाही। जँ सरिपहुँ

रिक्शा अवरोधक तत्व थिक त सरकार ओकरा हटा दौक, परञ्च ताई सँ पहिने कगभग दस हजार लोकक रोजी-रोटीक व्यवस्था त ओकरा करक चाहिऐक।

× × × × × ×

खजोडी सँ रामचन्द्र वियोगी लिखैत छथि—दक्षिण आकाशवाणी केन्द्र बिहार राज्यक सभ सँ घटिया केन्द्र अछि। एकर अनेक प्रसारण खनता छैक ताई सँ बेसी गुटबाजी, भाइ-भतीजावाद, जातिवाद आ आपाजपानी एतय ज्ञात अछि। ओतने नहि कार्य-क्रमक स्तर आओर बेसी घटिया रहैत छैक। कतेको वाक्तावर, कथाकार आ अन्य रचनाकारक रचना एहन रगेल जेना हुनका पढ़नाइ-लिखनाइ सँ कोनो मतलब नहि होइत। मुदा केन्द्र मे जे हेतु हुनक सम्बन्धी छनि ते हुनका रोकब असंभव।

आकाशवाणी दक्षिण केन्द्र मे गुटबाजी आ जातिवादक बोझा अछि। असली रचनाकार त पावनि-तिहार अपन रचना द पवैत छथि, परञ्च जे रचनाकार नहि छथि तिनका बेर-बेर सुनल जा सकैत अछि। कार्य-क्रमक संयोजक एकटा विशेष वर्ग के कार्यक्रम दय बन आ यश देवाक निश्चयसक क छैने छथि। एक दोसर के लाभ पहुँचैवाक व्यवसाय खुन थोड़ पकड़ने अछि।

प्रतिष्ठित रचनाकारक मामिला मे आकाशवाणी प्रायः ई करैत अछि जे स्वतः रचनाकार के हुनक पता सँ अनुबन्ध पठा देछ। मुदा एहिठाम ठीक त कर उनटा होइछ। रचनाकार द्वारा प्रेषित रचनाओ मुदा देख जाइछ अपन हेरा जेवाक बहना कएल जाइछ। अनुबन्ध पत्र त हुनके पठाओल जाइछ जे संयोजक स्वजातिक छथिन, सम्पत्तिक छथिन, पीयाबे छथिन वा कमिशन देत छथिन।

एहि केन्द्र सँ जे कार्यक्रम प्रसारित होइछ ताई मे एकरूपता नहि रहैछ। मिथिला भाषा मैथिली थिक आ ते एहि केन्द्रक मुख्य भाषा मैथिली देवाक चाही। परञ्च मैथिली के मुश्किल सँ घंटा भरि समय देल जाइछ आ जे कार्यक्रम प्रसारित होइछ से जातिवाद, भाइ-भतीजावाद मे फँसल रहैत अछि।

एहि केन्द्रक कर्मचारी लोकनि आवे-वला निदेशक के अपना जाळ मे फँसा लेत छथि जकरा ओ तोड़ि नहि पवेछ आ ते कोनो समाधान-सुधार नहि क पवेछ। ओ कर्मचारी सभक हाथक खेलओना मात्र बनि के रहि जाइछ।

उचित त छैक जे केन्द्रीय सूचना ओ प्रसारण मन्त्रालय एहि दिश ध्यान दित आ एहि घोटालाक जाँच करवैत। जातिवाद, गुटवाद के तोड़ि सांस्कृतिक अछाचार के रोकब परम आवश्यक तैखन सही रचनाकार के अवसर भेटैक, लोक के नीक रचना सँ परिचय होइतेक आ एहि केन्द्रक सार्थकता सिद्ध होइत। की सरकार एकरा आवश्यक नहि बुझेछ ? की ओकरा एते पळसति छैक जे एहि दिश ध्यान देत।

✶

कवि शेखराचार्य...

नायकक वर्णन करवाक हो त कोन-कोन विषयक उल्लेख करब उचित, यदि नायिकाक वर्णन करवाक हो त की सभ निरूपण करब आवश्यक।

वर्ण-रत्नाकर सात कल्लो मे विभाजित अछि। यथा—(१) नगर वर्णन (२) नायिका वर्णन (३) आस्थान वर्णन (४) श्रुत वर्णन (५) प्रयाण वर्णन (६) भट्टादि वर्णन (७) समान वर्णन। एह सात कल्लो-लक प्रधान वर्णनक संगहि कतेको अप्रधान वर्णन अछि। एवम् प्रकारे ई वर्णनक हेतु सरिपहुँ रत्नाकरे थिक।

वर्ण-रत्नाकर पढ़ल सन्ता दू गोठ बात स्पष्ट परिलखित होइए। पहिल त ई जे एकर भाषा शिष्ट तथा विषय वस्तु एहि बातक अकांक्ष्य प्रमाण थिक जे मैथिली भाषा साहित्यक शुभारंभ एहि सँ कम सँ कम ५ दस वर्ष पहिनिह भेट होइत।

दोसर ई जे कवि शेखरक अन्यायो मैथिली रचना अवलोकित होइत जे आश्चर्य समुचित प्रयासक अभाव मे प्राप्त नहि भ सकल। कहवाक प्रयोजन नहि जे एहो रोचक प्रकाशनक डेढ हमरा लोकनि बंगाली विद्वानक भाषाही छी—जेना कि 'चर्या-पद' आ 'विद्यापति पदावली'क निमित्त। एहो अचरक विषय थिक जे जकर पूर्वज भारतीय दर्शन साहित्य-संस्कृतिक आकाश मे सूर्य-चन्द्रादि नखन सन आलोकित हो, से मैथिल जाति भाइ भगवोगनी सँ गेळ-गुजल हो। ओना हमर विश्वास अछि जे सूर्यक सन्तान भगवोगनी नहि भ सकैछ ओहो जखन नखन होइछ। खगता छैक ओकर अंगन थिक के बिहवाक, अपन आरमाभिमान के भगवाक आ से मैने निश्चित मिथिला-मैथिलीक पताका फेर विश्वाकाश मे फहराएत।

—सुजतवा अली

मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय

मिथिला राजभवन, संकटमोचन बाम, दरभंगा, द्वारा आयोजित निम्न परीक्षा यथा :—मध्यमा विशारद अभियन्तणा विशारद आयुर्वेद विशारद तंत्र विशारद एह विज्ञान, विज्ञान विशारद कला विशारद कृषि विशारद पशुविज्ञान विशारद प्राक विज्ञान विशारद शिक्षा विशारद विधि विशारद पत्रकारिता विशारद पुस्तकालय विज्ञान विशारद कौटिल्य विशारद-विकलांग शिक्षा विशारद आराध विज्ञान विशारद (मात्र आरक्षी सेवाधी) वाणिज्य विशारद चिकित्सा विशारद शास्त्री शास्त्री प्रतिष्ठा शिक्षा शास्त्री अभियन्तणा शास्त्री विधि शास्त्री शास्त्री वाणिज्य शास्त्री प्रतिष्ठा मुद्रण प्रकाशन सम्पादन कला शास्त्री समाज शास्त्री विज्ञान शास्त्री कौटिल्य शास्त्री अरराध विज्ञान शास्त्री (मात्र आरक्षी सेवाधी हेतु) विज्ञान शास्त्री प्रतिष्ठा पुस्तकालय विज्ञान शास्त्री कर्मकाण्ड शास्त्री विकलांग शिक्षा शास्त्री वेद शास्त्री कीर्ति शास्त्री तन्त्र शास्त्री एह विज्ञान शास्त्री कृषि शास्त्री आयुर्वेद शास्त्री योग विज्ञान शास्त्री प्राणी विज्ञान शास्त्री कर्म शास्त्री कला शास्त्री आचार्य शिक्षाचार्य विज्ञानाचार्य अभियन्तणाचार्य प्रशासनाचार्य महालेखाचार्य साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य दर्शनाचार्य ग्रंथालय कौटिल्याचार्य श्रुतिपाचार्य विकलांग शिक्षाचार्य वेदाचार्य तंत्राचार्य प्राणाचार्य आयुर्वेदाचार्य योगाचार्य वीराचार्य धर्माचार्य आगमाचार्य निगमाचार्य संगीताचार्य विज्ञानिधि विद्याभारत आयुर्वेद रत्न प्राणरत्न विद्या भारतर विचाररत्न वाणिज्य रत्न पत्रकार रत्न समाज रत्न देशरत्न मिथिला रत्न मैथिली रत्न विधि रत्न शिक्षारत्न वेदरत्न विद्या वारिधि विद्यावाचस्पति महामहोपाध्याय तांत्रिक चिकित्सा रत्न मौखिक चिकित्सा रत्न यांत्रिक चिकित्सा रत्न चिकित्सा विज्ञान रत्न प्राणी विज्ञान रत्न प्राकृतिक चिकित्सा रत्न यूनानी चिकित्सा रत्न वनोपिक चिकित्सा विज्ञान रत्न पशु चिकित्सा रत्न योगिक चिकित्सा विज्ञान रत्न परीक्षा मे सम्मिलित देवाक हेतु २५॥—अनुमति शुल्क क संग आवेदन पत्र परीक्षा संचालक क नाम सँ प्रस्तुत कएल जाय।

डा० दिनराज शाण्डिल
कुलपति

डा० हरिनारायण ठाकुर
कुल सचिव

सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैथिली विश्व विद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय संकटमोचनबाम दरभंगा सँ जे शैक्षणिक संस्था सम्बन्धन परीक्षा केन्द्र स्थापना अथवा मान्यता चाहैत छथि ओ काया चारि सौ टाका निरीक्षण शुल्क संग अपन विवरणी अविवरण प्रस्तुत करबि।

डा० भोमप्रकाश शाण्डिल कुलमित्र

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड, संकटमोचनबाम, दरभंगा द्वारा भार० एम० पी० १० पी०, भार० एम० एम० तथा भार० एम० ए० क प्रमाण पत्र अनुभव एवं मौखिक परीक्षाक आधार पर प्राप्ति करवाक छैक ३५/- टाका मे नियमावली एवं प्रश्न प्राप्त कएल जा सकैछ।

डा० जयनारायण शर्मा सचिव

(विज्ञापन)

देसिल बयना

पाठकीय परिचारक (सलियना) सदस्य

१६. श्री कन्हैयालाल भा.	कलकत्ता	२७. " श्याम नारायण भा.	बर्णपुर
१७. " मोहित मिश्र	"	२८. " कृष्ण बिहारी भा.	लिखाय
१८. " राजचन्द्र भा.	"	२९. " तारा नन्द भा.	नरुमार
१९. " विष्णुकान्त भा.	"	३०. " दुर्गानन्द राय	"
२०. " देव कुमार भा.	"	३१. " शुभकान्त भा.	इबडा
२१. " कृष्ण कान्त चौधरी	"	३२. " गीतानन्द चौधरी उपानगर, कल०	"
२२. " गोपी कृष्ण भा.	"	३३. " हेम भा.	"
२३. " शिवनाथ राय	"	३४. " रामाश्रय सहनी	नबकी दिल्ली
२४. " आदित्य नाथ भा.	"	३५. श्रीमती अंबनी भा.	"
२५. " रामानाथ राय	"	३६. श्री देव भा.	हिन्द मोटर
६. " वंशीधर भा.	"	३७. श्यामा भगवती 'पुस्तकालय, मछेता,	दक्षिण

विशेष-सूचना

मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ताक एक आवश्यक वेसार आगामी १८ अप्रैल १९८२ के बेरिया ४-३० सं उपानगर स्कूल में होएत। मोर्चाक प्रत्येक सदस्य तथा सदस्यो लोकनि सं एहि वेसार में उपस्थित होवाक अनुरोध कएल जाइए।

एहि वेसार में आमद-खर्चक हिसाब सेहो प्रस्तुत कएल जाइत तें प्रत्येक सदस्य सं निवेदन जे हुनका पास जे रसीद वही व्यवहृत/अव्यवहृत होनि तथा चन्दाक पाइ होनि से ३१ मार्च १९८२ धरि संयोजक लग (देसिल बयना कार्यालय में) भबबा श्री जनार्दन भा., उपानगर लग जमा के देबि। एहि संदर्भ में प्रत्येक सदस्य के १५ मार्च १९८२ क पोस्ट कार्ड सेहो लिखल जा चुकल छनि। कुनू कारणवश जिनका पत्र नहि सेटल होनि से ११ अप्रैल १९८२ धरि रसीद वही तथा चन्दाक पाइ जमा क सकैत छनि।

कुनू कारण वश जे कितको उक्त तिथिधरि रसीद वही वा पाइ जमा करवा मे असुविधा होनि आओर। अथवा वेसार में उपस्थित होएबा मे असुविधा होनि तें ओ तकर पूर्व सूचना 'देसिल बयना' कार्यालय में लिखित रूप में पठावनि से अनुरोध। वेसार में विचारणीय विषय रहत—

१. आमद-खर्चक हिसाब
२. अगिला कार्य-क्रम निर्धारण तथा
३. अन्य

बिनीत :
रामलोचन ठाकुर
संयोजक

'देसिल बयना' चन्दाक दर :—

१ प्रति	५०) पइसा
१ बर्षक	५) टाका
५ बर्षक	२०) टाका

पाइ पठेवाक पता —

श्री जनार्दन भा.,
१७/६, उपा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सं :—

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाउ। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचार एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू
विज्ञापन व्यवस्थापक
अरुणोदय प्रकाशन,

बाल गीत

झिझिर कोना

झिझिर क'ना झिझिर क'ना कोन क'ना जाउ
मिथिला के आडन मे समतारि खेलाउ -
उत्तर हिमालय आ दक्षिण मे गंगा छइ
कोशी आ गंडक मे हैलू नहाउ।

उत्तर आ दक्षिण के भेद बिसराउ
मिथिला के सन्तति छी मैथिल कहाउ
कन्हा स कान्ह जोड़ि जाति-पाति आड़ि तोड़ि
मिथिला के माटि उठा माथ सं लगाउ॥

माय, मातृभूमि, मातृभाषा महान
कसनो ने होमय एकर अपमान
मायक जे बोल जुनि बाजै मे लाज करी
अपनो बाजू आ अनको सिखाउ॥

राखू नमस्कार कोठी के कान्ह
चीन्हल ने जाएत के अप्पन वा आन
मेंट जखन होइ वा जाइए लागै छी
'जय मैथिली' केर आदति लगाउ॥

— रामलोचन ठाकुर

• ई गीत एहि सं पहिनहु एकठाम प्रकाशित भेल छल। 'देसिल बयना'क पाठक लेल पुनः प्रकाशित कएल जाइछ।

'देसिल बयना'क पाठक लेल विशेष उपहार

राम लोचन ठाकुरक तीन गीत बहुचर्चित पोथी—

१. इतिहासहंता (कविता संग्रह)
 २. चेतल कथा (हास्य-व्यंग्य रचना)
 ३. प्रतिष्ठा (विदेशी कविताक मैथिली रूपान्तर)
- बारह टाकाक पोथी मात्र आठ टाका मे।
सलियाना सदस्यक हेतु मात्र सात टाका मे।
बी० पी० खर्च अतिरिक्त।

इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करथि—

अरुणोदय प्रकाशन

३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,
कलकत्ता-७०००३३

कह लोचन कविराय

सरकारी फरमान थिक श्रमिक मजूरक नाम
ई उत्पादन वर्ष थिक सुनू खोलि सम कान
सुनू खोलि सम कान न बिसरू एसमा नासा
मूह जाबि करू काज, न हो अधिकार-तमासा
कह लोचन कविराय श्रमिक काजक सरकारी
लामक मालिक मात्र घोषणा थिक अधिकारी

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेख श्री महेश्वर भा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, बुन्दावद
बेहाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन भा

स्मृति रचना

वर्ष—२ अङ्क—८

मई, १९८२

मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

मैथिली आन्दोलन आ माटि-पानिक प्रश्न

मैथिली आन्दोलन आ माटि-पानिक प्रश्न के बारे में हमें बहुत कुछ सोचना पड़ेगा। जहाँ नूल समस्या समाधानार्थ एहि आन्दोलनक श्रीगणेश भेल छल, से एखनहुँ ओहिना पड़ल अई। चारि कोटि मिथिलावासी मैथिलक संग स्वाधीनता प्राप्ति पैंतीस बर्ष परवातो भारत सरकार दोसर सार्क नागरिक सन व्यवहार कए रहल अई। ओकर भाषा-संस्कृति मात्र अबाधेलेटा नहि छैक, अपितु ओकर विनासक लेल नाना तरहें पड़यंत्र रचल जाइत रहल अई, आइत-कानून बनाओल जाइत रहल अई। ओकर आर्थिक विकासक कथा त कात रहल अई, उनटे एहि पैंतीस बर्ष मे कमे-कमे ओकर रीढ़ तोड़ि अंग बना देल गेल अई। आइ मिथिला देशक स्थिति कुन साम्राज्यवादी-पूँजीवादी देशक उपनिवेशों सँ अबाध छैक। कइबाक प्रयोजन नहि जे एहि स्थिति सँ उपरवाक एक मात्र पथ छैक संघर्ष, जनसंघर्ष, रक्त-क्षयी संघर्ष।

आब प्रश्न उठैल जे ई संघर्ष करत के ? सोभ उत्तर छैक—मिथिलाक जनता। कुन जाति क्षेत्रक अपन पराक विशेषता होइत छैक, पराक समस्या होइत छैक आ तकर सभ सँ नीक आ सटीक जानकारी ओही जाति क्षेत्रक लोक होइत अई। तहिना समस्याक समाधान सँ क्षेत्रक विकास सँ लाभान्वित ओही ठामक लोक होइत अई। बहरिया शोषक-शासक केँ त एही मे लाभ छैक जे ओ क्षेत्र विशेष पिछड़ल रहै, ओही ठामक लोक पिछड़ल रहै आ एकरा लोकनिक शोषण अबाध रूपेँ चलेत रहैक। आ एही ठाम जन्म लेल संघर्ष—शोषक आ शोषितक बीच संघर्ष, मुक्ति संघर्ष। मैथिली आन्दोलन उएह मुक्ति संघर्ष छि। मिथिला-मैथिल-मैथिलीक नीचाक अनिवार्य शर्त छि।

आब के प्रश्न उठैल जे एहन अनिवार्य शर्त होइतहुँ एहि दीर्घ अवधि मे मैथिली आन्दोलन कइबा के के कइय चरमताओ केँ किछक ने प्राप्त क सकल ? बिद्वान लोकनिक कहल छैक जे एकर प्रश्न करण छि जे प्रवास मे एकर जन्म भेलैक आ ओते परबो कइल। मिथिलाक माटि-पानि सँ ई नहि जुड़ि सकल। एहि बात केँ हमरो लोकनि नहि नहि छी, पूर्ण विश्वासक संग मानैत छी। हमरा लोकनि मानैत छी जे अपन देवकोट, परबन-पुरकन केँ छोड़ि परदेश केओ सेहो नहि, खगते जाइत आ इएह खगता ओकर शक्ति-सामर्थ्य केँ सीमित क देत छैक। तँ आइधरि जे मैथिली आन्दोलन सफल नहि भेल त सेहो स्वामाधिके छि। तहिना स्वामाधिके छि मैथिली आन्दोलन केँ प्रवास मे जन्म लेनाइ—कारण प्रवास मे लोकक चेतना विकसित होइत छैक, अपन माटि-पानिक प्रति ममत्व बढ़ैत छैक। इतिहास साक्षी अई जे कतेको आन्दोलनक जन्म एहिना प्रवास मे भेलैक आ परवात ओ क्षेत्र मे पहुँचल अई। कतेको एहन आन्दोलन भ चुकल अई जकर पूर्णता-सफलता धरि संचालन प्रवासे सँ होइत रहल छैक आ लड़ाई क्षेत्र मे लड़ल गेल अई।

इहँ सभ सोचि केँ 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' गत बर्ष २२, २४ आ २५ मई केँ दहिमंगाक नगर प्रबन मे तीन दिना सम्मेलनक आयोजन केने छल। एहि आयोजनक इच्छाक उद्देश्य छैक मैथिली आन्दोलन केँ माटि-पानि सँ जोड़नाइ, मिथिलाक माटि आ मैथिली आन्दोलनक नए संज्ञा।

एहि सम्मेलन मे मिथिलाक विभिन्न मैथिली लेखी संस्थाक प्रतिनिधि, शिक्षक, तज्ज्ञ, लेखक, कवि, साहित्यकार लोकनि उपस्थित छल। सभक विचारधारा मोर्चाक प्रश्न कार्यालय दहिमंगा मे बनएबाक घोषणा कइल गेल अई अई लक्ष्यक दृष्टि से कमिटीक गठन भेल। बर्ष दिनक प्रोग्राम लेल गेल। कइना ने संकोच नहि जे कमिटी मे विभिन्न अंचल आ बयसक प्रतिनिधि सभ छलाह बनिबा छल। मिथिली आन्दोलनक क्षेत्र मे पर्याप्त नाम-यश छनि। परञ्च खेदक संग लिख पड़ि रहल अई जे सभ अम आ अर्थ व्यर्थ मे चल गेल। प्रोग्रामक कथा त कात जाओ, कमिटीक एकोटा बेसरो नहि भेलैक। आ एहि तरहेँ मैथिली आन्दोलन केँ माटि-पानि सँ जोड़बाक अपन पहिल प्रयास मे मैथिली मुक्ति मोर्चा पूर्णतः असफल रहल।

मैथिली मुक्ति मोर्चाक पहिल काज ६ दिसम्बर १९८० केँ पटनाक प्रदर्शन छलैक जाइ मे पटनाक निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ एकर सहयोगी छलैक। ६

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
छाहि जारि सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

मिथिलाक विभूति—४

कवि विद्यापति

आइ सँ लगभग साढ़े छठो सय बर्ष पूर्व मधुबनी जिलाक विस्फी ग्राम मे विद्यापति ठाकुरक जन्म भेल छलनि। हिनक पिताक नाम गणपति ठाकुर आ पितामहक नाम जयदेव ठाकुर रहनि। हिनका नेना मे दुलार सँ खेलल कइल जाइत, बकर कतेको ठाम चर्च अई।

विद्यापति नेने सँ संस्कारी छलाह आ कनिजे अवस्था मे पूर्ण पाण्डित्य के प्राप्त केलनि। काव्य रचनाक प्रवृत्ति सेहो हिनका नेनहि सँ छल जे बयसक संगहि बढ़ैत आ सशक्त होइत गेल। हिनक प्रतिभा बहुमुखी छल—जकर प्रत्यक्ष प्रमाण हिनक उपलब्ध पोथी सभ अई। हिनक रचित पोथी जे आइधरि उपलब्ध भ सकल अई निम्न अई:

- (१) कीर्तिछता
- (२) भू परिक्रमा
- (३) कीर्ति पताका
- (४) पुरुष परीक्षा
- (५) शैव सर्वस्वसार
- (६) गंगा वाक्यावली
- (७) विभागसार
- (८) दान वाक्यावली
- (९) दुर्गाभक्ति तरंगिणी
- (१०) व्यालि भक्ति तरंगिणी
- (११) विद्यापति पदावली

मिथिला संस्कृत पंडितक गढ़ रहल अई आ विद्यापति से हो संस्कृतक विद्वान छलाह।

एवं परम्परागुण से संस्कृत मे लिखनाइ आरम्भ केलनि। परञ्च जेना कि कवि केँ युगद्रष्टा ओ स्रष्टा कहल गेल अई—विद्यापति एकर प्रमाण छलाह। संस्कृत सँ अवहेल आ अवहेल सँ मैथिली मे रचना कए ओ कवि शोखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक परम्परा केँ आगे बढ़ौलनि। असल मे मैथिलीक रचना हुनक लोकप्रियता ओ लोक परिचितिक आधार भेल। हुनक कोमलकान्त पदावली की शिक्षित की अशिक्षित दूर अंगी मे समान रूपेँ प्रवेश कएलक आ आद्रित भेल। जनभाषा केँ साहित्यिक भाषाक मर्यादा दिओनाइ आ साहित्य केँ पंडित वर्ग सँ जनसामान्य धरि ल गेनाइ हुनकेसँ प्रतिभा सँ संभव भेल जकर उदाहरण भारतीय वाङ्मय मे अम्लीम अई।

विद्यापति जाइ युग मे भेल छलाह ताइ युग मे देशपर दुर्दिनक मेघ मइराइत छल। मुसलमानी आक्रमण सँ छोट-पेघ कतेको राज-रजवाड़ा ध्वस्त भ चुकल छल आ तँ मिथिलादेशक रक्षार्थ—एकर गौरव-शाली साहित्य-संस्कृतिक रक्षार्थ ओ लेखनी धयने छलाह। वाहरी शत्रु सँ लड़ैक लेल तरुआरिक प्रयोजन छलैक—वीरताक प्रयोजन छलैक आ तँ कीर्तिछता ओ कीर्ति पताकाक सिरजन ओ कयलनि। विभागसार द्वारा सम्पत्तिक उचित भाग कए आपसी सहयोगक आधार सशक्त केनाइ हुनक

दिसम्बरक प्रदर्शन पूर्ण सफल रहलैक तथा प्रमाणित क देलक जे मिथिलावासी सेहो अपन अधिकार लेल संघर्ष क सकैत रहल सकेल। हमरा जनैत एहि मे दू मत नहि भ सकैत। अपन दोसर काज मे असफल होइतहुँ मोर्चा बेसि नहि रहल। तेसर डेग भेलैक 'देसिल बयना'क प्रकाशन। मैथिली आन्दोलनक निमित्त आन्दोलन पत्रक खगता केँ जहिना अस्वीकार नहि जा सकैत तहिना देसिल बयनाक भूमिकाओं केँ पूर्वाग्रह मुक्त व्यक्ति अस्वीकार नहि जे क सकैत छथि। देसिल बयना के ई आठम अंक छि परञ्च जाइ रूपेँ एकर स्वागत मिथिलांचल सँ प्रवासधरि भेल छैक आ जेना सहयोग भेटि रहल छैक खास केँ दिल्ली राउडकेला आदि प्रवासक मैथिल वन्दु लोकनि सँ तकरा देखैत एकर दीर्घजीवनक प्रति निश्चित हमरो लोकनि विश्वस्त छी आ आशा करैत छी जे निकट भविष्य मे एकरा पाक्षिक बनेबा मे सफल भ सकब।

एतना होइतहुँ ई मानवा मे आपत्ति नहि जे पत्रिकाए सभ किछु नहि छि आ एही सँ मोर्चाक दायित्वक निर्वाह भ जेतैक। पत्रिका आन्दोलनक वातावरण तैयार क सकैत, आन्दोलन केँ गति प्रदान क सकैत परञ्च मैथिलीक मुक्ति लेल जाइ लेल 'मोर्चा' क जन्म भेल छैक—चाही सार्विक आन्दोलन जे मिथिलाक माटि-पानि पर होएत। दहिमंगाक अवसरता सँ हमरा लोकनि के एते शिक्षा अवस्ते भेटल जे मंचीय नेता सँ, विद्यापति पर्व मात्र के आन्दोलन बुझनिहार नेता सँ वास्तविक आन्दोलन संभव नहि। एहि लेल जगज्ज पहिलेक गामक लोक केँ, छात्र-युवा वर्ग केँ आ ताइ लेल सीधा-समर बादि गामे-गाम घूम पड़ैत स्कूल छात्र मे जोआय पड़ैतैक। मैथिली मुक्ति मोर्चाक अगिला प्रोग्राम उएह होइत जकर क्लृप्त विवरण शिघ्र प्रकाशित होएत।

अन्त मे लिखि देनाइ आवश्यक जे दहिमंगाक आयोजनक समय सँ मोर्चाक बहुता सहयोगी उदासीन बा फराक भ गेल छथि। हुनका लोकनि सँ पुनः पुनः निवेदन जे 'तेरह पाक' बला बहनी चरितार्थ नहि करथि ओ। जँ सरिपहुँ मैथिली-मिथिलाक मुक्ति चाहैत छथि त पहिनिह जकाँ संग मील काज करथि। हुनका लोकनिक स्वागत लेल सतत हमरा लोकनिक बाहि पसारल अई। संगहि नवीनो संस्था। व्यक्ति विशेष जे मोर्चाक संग काज करवाक इच्छुक होथि त हुनको स्वागत छनि। मोर्चाक नारा छैक पूर्ण स्वाधीनता अथवा मृत्यु।

—जय मैथिली

उद्देश छल कारण आपसी मतभेद शत्रु प्रवेशपथ उन्मुक्त क सकत छल। धर्म वर्तमानो काल धरि एहन तत्व मानल जाइए जकरा नाम पर जातीय-एकता ओ संगठन सहजतर होइत छैक आ बाहरी आक्रमण सं देश के रक्षा लेल ई संगठन आवश्यक छलैक—तै हेतु ई हुनका भक्ति रसक गीत लिखय पड़लनि।

कविपति विद्यापति महान समाजवादी, ओ दार्शनिक छलाह; महान राजनीतिज्ञ साधु-विमर्शक युगद्रष्टा आ स्रष्टा आ तै महान कवि छलाह। ओना बेर पढ़ने ओ तब आरियो पकड़ने छथि सन्धि वार्तालय छोदीक दरवार तक पहुँचल छथि—परञ्च सभ होइतहु ओ मूलतः कवि छलाह आ लेखनीय हुनक हथियार छल। एकर जाइ ठाम जेहन प्रयोग अपेक्षित बुझलनि—तहिना प्रयोग केलनि। मैथिलीएक नहि समस्त आधुनिक भारतीय भाषाक पहिल कवि छलाह। हुनक पश्चात् ओ हुनके सं प्रभावित भय विभिन्न भाषाक कवि लोकनि अपन-अपन भाषा मे काव्य रचना आरम्भ कएलनि। ब्रजभाषा मे सूर, अवधी मे तुलसीदास आ राजस्थानी मे मीरासन प्रतिभाक पथ निर्देशक संरिपहुँ विद्यापति मेलाह।

कविपति विद्यापति केँ वीर कवि, भक्त कवि, शृंगारिक कवि आदि आख्या देल जाइछ आ सरिपहुँ अपन रचनाक आधार पर से ओ छलाहो किन्तु ओ मात्र वीरकवि वा भक्तकवि वा शृंगारिक कवि नहि अपितु एके संग सभ छलाह जे विद्यापति सन प्रतिभा सं संभव छल। परञ्च सभ रहितहुँ मूलतः ओ महान प्रगतिशील कवि छलाह जेक कवि छलाह जे मात्र लोकभाषा मे रचनाएटा नहि बेलनि अपितु लोकक बात लिखलनि। सर्वसाधारणक ब्यथा—कथा, ओकर इच्छा-आकांक्षा केँ ओ अपन रचनाक आधार बनओलनि। एकदिस सामाजिक दुखदैन्यक सजीव चित्रण कए जं लोकक ध्यान एहि दिस आकृष्ट कएलनि त संगहि दोसर दिस एहि सं मुक्तिक निमित्त दिशा संकेत सेहो कएलनि। 'केहन केहूँ भोला गरिबक दिन, एकटा जे लोटा छलनि बेटा छलनि तीन' एवं 'नित उठि गौरा शिव सं मनावथि, करु ने कटा दस खेत' मे जं पहिल गरीबीक चित्रण अइ त दोसर भ्रमक महत्ताक परिचालक। एहिना 'पिया मोर बालक हम तरणी' मे सामाजिक कुरीति अन मेल बिबाह पर तिलगर ब्यंग्य कएल गेलए। अपन एहीसभ विशेषताक कारणे कविपतिक गीत सभ ओतेक लोकप्रिय भेल जे एतेक दिन बीतलक पश्चातो अपन लोकप्रियता केँ मात्र अक्षुण्ण नहि रखने अइ, अपितु ताइ मे पूर्ण वृद्धि करवा मे पूर्णरूपेण सफल रहलए। सात-सात सष्ट बरस धरि लोककंठ मे अविच्छन्न प्रवाहित होइवला काव्य विश्वसाहित्य मे भरिसक एकर अतिरिक्त आन नहि भेटि सकैछ। ओतबे नहि अपन मूल रूपहि मे मिथिलाक सीमा अतिक्रमण करैत वंगाल, असम, उड़ीसा, नेपाल धरि एकर पूर्ण प्रचार-प्रसार भेलैक आ सभ ठामक लोक एकरा अपन मानलनि। ई कविपतिक लेखनीक जादू छल जे पदावलीक

परम्परा सम्पूर्ण पूर्वी उत्तरी भारत मे चलि पड़ल जकर अन्तीम कड़ीक रूप मे रवीन्द्र नाथ ठाकुर विरचित भानुसिंदरे पदावली थिक। ई हिन के मधुर गीतक प्रभाव छल जे मैथिली सं अनभिज्ञ होइतहुँ परवर्त कवि लोकनि मैथिली मे काव्य रचनाक प्रवास बेलनि आ मूलरूप सं भिन्न होएवाक कारणे से ब्रजवलीक नामे पदावली साहित्यक विशेष भाषाक रूप मे परिचित पओलक।

कविपति विद्यापतिक गीतक नायक कृष्ण आ उगना अलौकिक नहि लौकिक छथि—लोकप्रतिनिधि छथि। राधाकृष्णक प्रेमलीलाक आधार मानवीय थिक जाइ मे सत्य शिव आ सुन्दरक सन्निवेश अइ। विद्यापति निर्विवाद सौन्दर्यापाशक छलाह कारण सुन्दरताए सत्य थिक आ सत्ये शिव थिक। तहिना विद्यापतिक उगना साधारण चाकर थिक, सेवक थिक आ सेवा धर्म मानवक सबसँ पब धर्म थिक—इश्वरीय थिक—तै उगना केँ विद्यापति महादेव बना देत छथि। एकरा उदारतावादी वा वास्तवतावादी भनहि जे कुनू दृष्टिकोणक नामे अविहित कएल जाय परञ्च ई थिक कविपतिक दृष्टि हुनक अपन मौलिक दृष्टि। ओना धार्मिक दृष्टिकोण रखनिहार समा-लोचकगण उगना केँ देवाधिदेव महादेव मानैछ जे विद्यापतिक भक्तिभाव सं प्रभावित भइ हुनक सान्निध्य लेल चाकर बनि आएल छल। जं एहूँ दृष्टि देखल जाए त भारतीय साधक श्रेणी मे विद्यापतिक स्थान सबसँ उपर अइ। रामकृष्ण परमहंस केँ कालीक दर्शन मात्र मेल छलनि त ओ अवतारी मानल जाइत छथि, ताइठाम महादेव जनिक चाकर होथि तनिकर कये की? ओ सरिपहुँ अतुलनीय छथि। किंवदन्ती अइ जे देहावसान काल मे स्वयं गंगा चारि कोस अगुआ केँ अपन प्रिय संतान के कोरा मे उठा लेलनि। विश्वसाहित्य मे विद्यापतिक जोरौ—से जे कुनू क्षेत्र मे भरिसके प्राप्त होइत।

कविपतिक रचना एकदिस सं हुनका सर्वसाधारण सं राजदरबारधरि आदर सम्मान देलकनि त दोसर दिस पंडित वर्ग द्वारा उपालंभ - उवहास सेहो। नव कविशेखर अभिनव जयदेव, कविकोकिल कविपति आदि उपाधि सं जे हिनका विभूषित कएल जाइछ ताइ मे सत्यतः कविपतिष्टा एहन अइ जे हिनक प्रतिभाक सही मूल्यांकनक आधार पर देले गेल अछि हिनक परवर्ती कवि गोपीनंद दास द्वारा। कविकोकिल त हिनक उपहास मात्र लेल तत्कालीन पंडित द्वारा कहल जाइन आ तहिना अभिनव जयदेव हिनक प्रतिभा केँ छोट क अंकवाक षडयंत्र थिक। ई निर्विवाद जे गीत गोविन्दक रचनाकार जयदेवक परम्परा केँ आगू बढ़बैत एवं सही आ सशक्त धरातल देत ई राधाकृष्णक गीत लिखलनि परञ्च ई ओतबे धरि सीमित नहि रहलाह। पहिनहि कहि चुकल छी जे हिनक प्रतिभा बहुमुखी छल आ ई निसन्देह जयदेव सं बहुत आगू बढ़ि चुकल छथि। राजदरबार मे रहितहुँ ई दरबारी नहि बनि एकलाह सदा लोक कवि रहलाह। ई दरवार सं प्रभावित नहि भेलाह अपितु दरवार हिनका सं प्रभावित नहि भेल।

किछुदिन पूर्व मैथिली साहित्य मे एहन चर्चा उठल छल जे साहित्य महिसक पीठ पर नहि जा सकैछ। परंच विद्यापतिक साहित्य महीसक पीठ पर खेत-खरिदान मे, गोसा-उनिक सीरा तग, घर आहूँन मे सर्वत्र-लमान रूपेँ व्याप्त देखल जा सकैछ। जन-भाषा मे जनगणक बात लिखवाक कारणे पंडित वर्गक उपहासक उत्तर स्वरूप कविपति कहेने छलाह—

बाल चन्द बिजवाइ भाषा
दुहु नहि छगइ दुपजन हासा
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई णिचवइ नाशर मन मोहक
देसिल बयना सब जन मिछा
तइसन जाम्पओ भवइछा

ई पंक्तिये कविपतिक आत्मबल आत्माभिमानक परिचायक थिक।

आइ कविपति विद्यापति मैथिली अपरनाम छथि, मैथिल संस्कृतिक अंग छथि। मिथिला मे कुनू शुभ व दिनक गीतक बिनु नहि होइछ। एहन मिथिला वाली स्त्री-पुरुष नहि ताइ बनिना हिनक गीतक दुःकंठस्थ नहि होइ।

कविपतिक देहावसान लगभग १५ मे मेल जाइ सम्बन्ध मे हिनक विख्यात अइ—

विद्यापतिक देह अवसान, व भवल श्रयोदशी जान।

मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मिथिला राजभवन, संकटमोचन धाम, दरभंगा द्वारा आयोजित निम्न पं—मध्यमा विशारद अभियन्त्रा विशारद आयुर्वेद विशारद तन्त्र विशारद विशान विशारद कला विशारद कृषि विशारद पशुविज्ञान विशारद पाक वि विशारद शिक्षा विशारद विधि विशारद पत्रकारिता विशारद पुस्तकालय विशान चिः कौटिल्य विशारद-विकलांग शिक्षा विशारद अपराध विशान विशारद (मात्र आ सेवार्थी) राज्य विशारद चिकित्सा विशारद शास्त्री प्रतिष्ठा शिक्षा शास्त्री अभियन् शास्त्री विधि शास्त्री वाणिज्य शास्त्री प्रतिष्ठा मुद्रण प्रकाशन सम्पादन कला शा मात्र शास्त्री विशान शास्त्री कौटिल्य शास्त्री अपराध विशान शास्त्री (मात्र आ सेवार्थी हेतु) विशान शास्त्री प्रतिष्ठा पुस्तकालय विज्ञान शास्त्री कर्मकण्ड शास्त्री ि लोका शिक्षा शास्त्री वेद शास्त्री क्रीडा शास्त्री तन्त्र शास्त्री गृह विशान शास्त्री शास्त्री आयुर्वेद शास्त्री योग विशान शास्त्री प्राणी विशान शास्त्री कर्मकण्ड शास्त्री शास्त्री आचार्य शिक्षाचार्य विधानाचार्य अभियन्त्राचार्य प्रशासनाचार्य महालेखा साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य दर्शनाचार्य ग्रंथाचार्य कौटिल्याचार्य व्योतिषाचार्य विक शिक्षाचार्य वेदाचार्य तन्त्राचार्य प्राणाचार्य आयुर्वेदाचार्य योगाचार्य वीराचार्य धर्मा आगमाचार्य निगमाचार्य संगीताचार्य विद्यानिधि विद्यासगर आयुर्वेद रत्न प्राणरत्न वि भास्कर विद्यारत्न वाणिज्य रत्न पत्रकार रत्न समाज रत्न देशरत्न मिथिला रत्न मैथिली विधि रत्न शिक्षारत्न वेदरत्न विद्या वारिधि विद्यावाचस्पति महामहोपाध्याय तांत्रिक चिा सा रत्न मात्रिक चिकित्सा रत्न यांत्रिक चिकित्सा रत्न चिकित्सा विशान रत्न प्राणी विश रत्न प्राकृतिक चिकित्सा रत्न यूनानी चिकित्सा रत्न वनौषिक चिकित्सा विशान रत्न चिकित्सा रत्न यौगिक चिकित्सा विशान रत्न परीक्षा मे सम्मिलित हेवाक हेतु २५५५ अमुमति शुल्क क संग आवेदन पत्र परीक्षा संवाष्क क नाम सं प्रस्तुत कएल जाय।

डा० दिनराज शाण्डिलय
कुलपति

डा० हरिनारायण ठा
कुल सचिव

सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैथिली विश्व विद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय संकटमोचनधाम दरभंगा सं शैक्षणिक संस्था सम्बन्धन परीक्षा केन्द्र स्थापना अथवा मान्यता चाहैत छथि ओ कृप चारि सौ टाका नरीक्षण शुल्क संग अपन विवरणी अविलम्ब प्रस्तुत करथि।

डा० ओमप्रकाश शाण्डिलय, कुलमित्र

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड, संकटमोचनधाम, दरभंगा द्वारा आर० एम० पी ए० पी०, आर० एम० एम० तथा आर० एम० ए० क प्रमाण पत्र अनुभव एवं मौखि परीक्षाक आधार पर प्राप्ति कएवाक लेल ३५५५-टाका मे नियमावली एवं प्रपत्र प्रा कएल जा सकैछ।

डा० जयनारायण शास्त्री, सचिव

(विज्ञापन)

दू गोठ कविता

(गत अक्टूबर में कलकत्ता में मैथिलीक एक पत्रिका टूटि रहल छल आ दोसर पत्रिकाक जन्म देवाक नेआर आ ओरिआओन भऽ रहल छल । अक्टूबरक चारिम सप्ताह में एही मनःस्थिति में लिखल दू गोठ कविता)

(१)

हमरा लोकनि भाखाकें
भाखा नहि रहऽ दऽ कऽ मगडौआ खुरचनि बनौने छी
एहि खुरचनि केँ अहाँ पूबसं धिचैत छी
हम ओकरा पच्छिमसं धिचैत छी
पचीस बरखसं एहि खुरचनि पर बहस करैत
हमरा लोकनि अपन-अपन जोड़ बहार कयने
इकमि रहल छी
ओकरा लोक मन्दिरमे स्थापित करैत अछि
तकरा हमरा लोकनि बच्चोंक नोक पर टङ्कने
फिरैत छी
एहि देशक बुझनुक लोक
छुट्टीक धारी में चलैत अछि
ई छुट्टीक धारी अनुशासित तं एहने अछि
जे दिन-राति चिन्नीक बोरा तकैत अछि
प्रत्येक छुट्टीक धारी
चिन्नीये दिख बनैत अछि

(२)

हमरा लोकनि भाखा केँ कहियो नाओ बना दैत छी
एहि नाओकेँ खेबबा छेल सभ कयो तैयार होइत छी
नाओ जाबत गाड़ी पर रहैत अछि,
हमरा लोकनि बसात में कहुआरि घुमबैत छी
नाओकेँ अखन पानि में घऽ दिशौक
तं बेसी काल खुब तमाशा होइत अछि
लोक कहुआरि केँ पानि में
चलबबाक बदला में
ओकरा दहोदिस चलबैत अछि
नाओ ने आगाँ जाइछ, ने पाछाँ
ओ ठामहि ठाम
चकभावर देबऽ लगैत अछि
पारक कछेर पर ठाढ़ कतेको लोक
बेर-बेर एक्के तमाशा देखैत अछि
ई नाओ कहियो कोनो मोहनिमे नहि
सुखखल बालु पर हूबल अछि
प्रत्येक बेर छुट्टी सभ
चिन्नीक बोरा में मुइल अछि

—जीवकान्त

मृत्यु अभिमन्युक

(जीवकान्तक निमित्त—हुनक दुनू कविताक संदर्भ में)

शत्रु निर्मित
सात-सात टा चक्रव्यूह तोड़ि
अपराजेय अभिमन्यु
अखन आपस अमेछ
त
आलिगन छेल आकुल
इबार-इबार खजनक हाथ
ओकरा आबद क छैत छैक
आ तैखन
पहैत छैक ओकरा पीठ पर
सवधानक
एक नहि अनेका छूरा—
ओ आर्तनाद त नहि करैछ
छनडि केँ तकैतटा अछि
आ लखि पढ़ैछ—
ओना
महाभारतक ओ कथा
सुन्दरे नहि
आकर्षको अबसे छैक
जे
सातम द्वार भेदनकला सं अनिभिन्न
शत्रु सं घेरल
अखगर अभिमन्यु
मृत्यु केँ प्राप्त भेल छल
आ खरिपहुं
अभिमन्युक मृत्यु
एहीठाम होइत छैक ।

—राम लोचन ठाकुर

मिथिलांचलक विकास

मिथिलांचलक प्रायः पञ्चहत्तर फी सदी आवादी केँ नीक जेका भोजनो प्राप्त नहि होइत छन्हि । प्रति वर्गमील आवादीक लेखा-जोखा सं शात होइत अछि जे संसारक कोनो भाग सं आवादीक दबाव ऐहि क्षेत्र में बेसी अछि । कारण यह भ सकैत अछि जे मिथिलांचलक सामाजिक वातावरण बदलि रहल अछि । अनुशासन लुप्त भ गेल अछि । भाई-चाराक स्थान पर मालोन्मत्ता आओर धोला-घरीक बाजार गर्म अछि । आध्यात्मिक शानक लोप भए रहल अछि । श्रुत सेहो रंज बुझना जाइत छथि । आम, खान, भस्वा आदि कतहु मेल आ कतहु नहि होइत अछि । वेद सं सोधल कार्यक्रम तथा मुण्डन उपनायन, विवाह, श्राध, दश-कर्म आब एक परिपाटील रूप में मनावल जा रहल अछि । समालोक लोक केँ एक दोसर केँ शंकाक दृष्टि सं देखैत छथि विश्वास नामक चीज समाप्त भए रहल अछि । पाहुन केँ रात्रि विश्राम हेतु आग्रह करब लोक छोड़ि रहल छथि । एहि प्रकार समाजक जे एक शृंखला छल दुटि रहल अछि । मुदा ई सभ कियेक, कोन लाभक प्रयोजन सं ? एकेटा उत्तर अछि जे आध्यात्मिकताक तिलांचलि दए भौतिक वादी

विचार धारा में सकल समाज बहि रहल अछि । टाका कोनो सुख-सुविधा प्राप्त करवाक साधन भएसकेछ मुदा साध्य कखनो नहि छल, नहि होएत । सर्वत्र टाका कमय-बाक होइ लागल अछि । जीवन स्तर, रहन सहन, शिक्षा-दीक्षा, खान-पान, आमोद-प्रमोद, हास्य-विनोद, संगीत-नृत्य, कला-कौशल, साहित्य, आध्यात्म आदि कछुगुगी रूप धारण कए लेने अछि । विवेक, त्याग, स्नेह, सहिष्णुता, अनुशासन, परोपकार, संत संगम, शुद्ध भोजन-आदि केँ पैघ सं पैघ व्यक्ति देखा देखी में अपन संस्कृति केँ नष्ट क रहल छथि । किछु लोक अपन पत्नी आ पारिवारिक सदस्य सं भेजेजी किम्बा शुद्ध हिन्दी में बजैत छथि । मैथिली बजबा सं घबराइत छथि ।

शीर्षक पुरान अछि मुदा अवसर आवि सुकल अछि जे मिथिलांचलक विकास कार्य गतिशील बनावल जाए । एहि लेल परमावश्यक अछि जे ग्राम, प्रखंड, भवर, प्रमंडल आओर राज्य स्तर पर विचार गोष्ठीक आयोजन हो आ गोष्ठी द्वारा पारित प्रस्ताव केँ सरकारक समक्ष राखल जाय । गोष्ठी द्वारा एक रूपक प्रस्ताव पारित करब आवश्यक अछि ।

मैथिली पोथी/पत्र कीचू आ पढ़ू
नेपाल सं प्रकाशित मैथिली दू मासिक

अचं ना

संपादक :—राम भरोस कापड़ि भ्रमर
सरस्वती सदन, जनकपुरधाम, नेपाल

ग्वालिअर सं प्रकाशित मैथिली + हिन्दी दू मासिक मासिक

मिथिला दोष

सम्पादक : बन्धन बिहारी

१४६, ललितपुर कोठोनी ग्वालिअर-४७४००६

हमरा समक सबस पेव समस्या अछि मैथिलीक स्थान अष्टम अनुसूची में सुरक्षित करायब, अराजपत्रित कर्मचारीक नियुक्ति परीक्षा में मैथिली के ऐच्छिक विषयक रूप में राखब, राजकाज मैथिली भाषा में सेहो तकर प्रयत्न करब, प्राथमिक शिक्षा के लोक-प्रिय बनयबाब लेल पोथीक प्रकाशन आ वितरणक सुविधा प्राप्त करब, मिथिला पेट्रिस, हस्तकला, कारीगरी आदिक विकासक लेल योजना बनायब आओर कार्यान्वित करब, जनमानस के अपन अधिकारक ज्ञान करबाक लेल प्रचार-प्रसार करब आदि सम्मिलित अछि। प्रश्न उठैत अछि जे ई सब कार्य होएत कोना? डेढ़ सँ षष्ठ सँ पीढ़ित एवं उपेक्षित मिथिलाक उद्धार करबाक साधन की भए सकैछ ?

प्रश्न गंभीर अछि। सबस पहिने आवश्यकता अछि जे चेतना समिति के आर्थिक रूपे स्वावलम्बी बनावल जाए। जाए। सरकारी अनुदान पर जीनिहार संस्थाक अपेक्षा जे संस्था अपन साधन पर निर्भर करैत अछि वो अधिक विकासशील रहल अछि तकर साक्षी इतिहास अछि। मिथिला-चलक दुर्भाग्य अछि जे औद्योगिक विकास, लघु उद्योग विकास एखन प्रारम्भ होयब बाकी अछि। कोनो वर्ष बाढ़ि सँ सर्व साधारण अक्रान्त होइत छथि—तँ कहियो सुझावक भीषण स्थितिक सामान करए पड़ैत छैन्ह। वस्तुक दाम नित्य-प्रति बढ़ि रहल अछि। खेतक उपजा बारी मुख्यतः भगवानक अक्षुब्धता पर निर्भर करैत अछि। आर्थिक विपन्नताक भयङ्करता सँ मिथिला-चलक जरि-मरि रहल अछि मुदा देखनिहार के। लोकक प्रतिनिधि जखन पटना निवास करय शुरू करैत छथि तँ गामक लोक के विसरि जाइत छथि। लाल-पीयर रोशनी सँ जगमगायल शहर, रंग-धिरंगा वस्त्र-सुन्दर-सुन्दर भवन, सिनेमा आदि सहसा ककरो आकृष्ट कए छैत अछि। पटनाक मायागरी में सब मायावी भ जाइत छथि।

त ई सब देखि कि हाथ-पर-हाथ जए, सांस रोकि समाजक मालिक अस्तित्वक विनाश देखैत रहबाक चाही किन्वा स्कुल भए मिथिलाचलक प्राचीन गौरव, परम्परा, साहित्य, हस्त-कला, पंडित्य, सामाजिक स्थिति, संस्कृतिक रक्षा करबाक संकल्प लए पुनः समाज के समुन्नत करबाक प्रयास करी ? ई दु गंभीर समस्या अछि। समाधानक लेल चेतना समिति अपनेक स्नेह आ सहयोगक आकांक्षी अछि। जाति, धर्म आ अवस्थाक संकलणता सँ पृथक सौहार्द आ सौमनस्यक भावना सँ एक बड़ भए समस्त मैथिली भाषीक समुन्नयन आ मिथिलाचलक सर्वांगीण विकास में सहयोगी बनी तकर आमंत्रण दैत अछि।

निवेदन अछि जे 'चेतना' शब्द के चरितार्थ कयल जाय।

—श्री राजेंद्र भा
सचिव, चेतना समिति, पटना
(भाषा शिक्षाओ विचार लेखक
निजी छनि तँ ओकरा यथावत राखल गेल
अछि—सं०)

लाल बुभुकरक नाम

(मारफत देसिल बयना)

श्रीमान लाल बुभुकर जी—महाराज,
अब मैथिली आदाब अछि।

शक्त कुशल। बाद समाचार ई जे एक तऽ अहाँ चिट्ठी लिखैत छी विवाह आ ऊपर सँ ओकरा पत्र पत्रिका में प्रकाशित करवा कऽ नीक लोक के देखार करैत छी से ओ वावू ई आदति छोड़ू। अहाँ त कलकत्ता वाली बनल छी आ भोगऽ पड़ैत छनि मिथिलावासी के। कहाँदत अहाँ पत्रिका में बिहारक थकीरेआला जनाब जंग-बाथ मिश्रजीक अदखोइ-बदखोइ लिखि देने रहियेक से बेचारे चीफ साहेब के ओल जकाँ कक्का कऽ लगलनि आ तकर प्रति-क्रिया स्वरूप ओ घरे-घर भुक्कुकी लऽ क मैथिली पढ़निहार, बजनिहार आ लिख-निहार के गंगालाभ करवाक लेल तकने फिरैत छथि। अहाँ पूछब से कोना आ प्रमाण मांगब तँ लालबुभुकरजी, हम अहाँ के सम्पूर्ण वृत्तान्त संक्षेप में सुना दैत छी। अहाँ त छीह लालबुभुकर, एकर सरलार्थ, भावार्थ ओ विशेषार्थ लगाबैब।

घटना छोटछीन रहैक मुदा भयावह। मेलक ई जे दिल्लीक संसद में जखन बजट अधिवेशन प्रारंभ भेलक तँ मजग में कीड़ा सभ सुगुगुगुगु लागल—नाना तरहक विचार तरंगक उतार-चढ़ाव प्रारंभ भऽ गेल आ लागल जे हो ने हो-एहि खेप मैथिली के संवैधानिक मान्यता भेटि कऽ रहैत कारण मिथिलाक संपूर्ण आ मैथिली-भाषी (सरकारी लोक) क आराध्य श्री जगन्नाथ बाबू अपना मुँह सँ केकटाँ बाजल रहथि जे मैथिली के संवैधानिक मान्यता देबाक लेल बिहार सरकार, केन्द्रसरकार के एकटा जोर-दार—असरदार चिट्ठी लिखलक अछि तँ भावाधिष्यक कारणे अपना के नहि संभारि सकलहुँ आर बिदा भेलहुँ मिथिलाचल में अपन स्वेच्छा आइडियाक प्रचार-प्रसार करऽ। ओना मोन में एकमोट पेव स्वार्थ सेहो रहए जे यात्राक अवधि में भोजनादि निःशुल्क प्राप्त हएत, लोकसम्पर्क हएत; अपन आइडिया के भविष्यवाणीक रूप दए प्रचार करब आर जे माताजीक कृपा सँ मैथिली के संवैधानिक मान्यता भेटि गेलक तँ अगिला एलेक्शन धरि देखल जयतक मने लांगटर्म प्रोग्राम रहए मुदा ओ वावू कि कहू—नाम हमर विश्ववंचक ठगी करबाक अधिकार हमरा मुदा मुझ गेलहुँ हम स्वयं-आ सेहो मुफ्ते मुदा संतोष एतवे अछि जे जान वॉचि गेल। संयोग एहन भेलक जे एकटा गाम में हमरा सँ एक जिज्ञासु व्यक्ति टकड़ा गेलाह। परिचय-पातक पश्चात जखन हम हुनका अपन भविष्यवाणी सुना हुनकर विचार पूछलनि तँ ओ तीनहाथ छड़पि उठलाह आ चिचिया-चिचिया कऽ नारा लगावऽ लगलाह—“अपूर्व आइडिया” ओरि-जनल आइडिया “विश्ववंचक जिन्दावाद” देखिते, देखिते संपूर्ण गाम ओहि जिज्ञासुक दरबजा पर जमा भऽ गेलक आ नारा पर नारा पड़ए लगलक। जिज्ञासुजन हमर पीठ थपथपा कऽ वजलाह—“भाइ एहि गाम में

पुरुष सभ मैथिली नहि बजैत अछि तँ की... मैथिलीक एकोगोट पत्रिका एहि गाम में नहि अवेत छैक तँ की... कोसक पोथी छोड़ि कोनो घर में मैथिलीक आन पोथी नहि भेटि सकैत तँ की... अहाँक आइडिया मुदा अपूर्व अछि... एहि खेर मैथिलीक सरकारी मान्यता भेटिकऽ रहैतक... बुभुजे मान्यता भेटि गेलक... आब किछु करियौक खर्च-बर्च मैथिलीक नाम पर दियौक किछु टाका... भऽ जाइक एकगोट छोट-छीन पार्टी।” से लालबुभुकरजी चक्कर में पड़ि गेलहुँ। घड़ी ओहिगाम में बन्दकी लागि गेल। कोनो धरानी राति कटलहुँ आ अन्ह-रोखे सिताहल नदिया जकाँ पड़लहुँ मुदा बाहरे करम। कहथी छेकने जे ‘जयबह नेपाल-कपाड़ संगे जयतह’... तकरे पड़ि मेल। ओहि गामक सिमानो ने टपने रही कि घड़ा गेलहुँ। एकगोट सज्जन पुरुष हमर वाट छेकि उलहन देवऽ लगलाह—“आहि-रेवा, ई कि ओ? एना किएक भागल जा रहल छी? चाह पीबि लिअ तखन जायब चाह पीबि ओ सज्जन जखन व्यवस्थित भेलह तँ रतुका पार्टीक रेफरेंस दैत हमरा अपन बचनानृत सँ तृप्त करऽ लगलाह—“ओ, अहाँ ई कोन केरा में पड़ल छी? मौका भेटल अछि तऽ ओकर लाभ उठाउ ई कि मैथिली-मैथिली पेपिया रहल छी? जयप्रकाश बाबूक आन्दोलनमें जनज तँ तोड़बनहि हैब अहाँ। आब जे हमर विचार मानी तऽ टीक सेहो कटवा लिअ आ प्रारंभ कऽ दिअ अछि के-पे-ते ‘हं हम एम० एल० ए० तँ नहि मुदा जे अहाँ सन भाषा प्रेमी के हम एम. एल. सी. नहि बनबौलहुँ तँ हमरा नामे कुकुर पोस्तिब। आइधरि हमर एकटा आग्रह नहि टाड़लनि अछि मिसरजी... ओ हमर साक्षाते...”

हम ओहि सज्जनक मुँह निहारऽ लगलहुँ। चाहक प्वालीके टेबुल पर राखि हम वजवाक साहस छुटौलहुँ—“प्रियवर। हमर अभिप्राय से नहि छल। हम एम. एल. ए. एम. पी. वाला बात तँ ओहिना बाजि देने रही। असल में हमर कहवाक तात्पर्य छल जे एहि बेर मैथिली के संविधानक अष्टम अनुसूची में स्थान भेटि जयबाक चाही मुदा भऽ सकैछ जे विचरि में कोनो विघ्न उप-स्थित भऽ जाय तँ हमरा सबके साक्षात् रह-वाक चाही... हमर बात के बिचरि में लोकिकऽ, ओ समाज राजनीतिज्ञ जकाँ भाषण देवऽ लगलाह—“ओ वावू, हम सभ किएक साक्षात् हएब? मैथिली-कथली सँ हमरा सबके कोन लाभ? साक्षात् होयताह मैथिली एकेदमीवालासभ... चेतना समिति वाला सभ... साक्षात् होयताह साहित्य अका-दमीक प्रतिनिधि... सरकारी विज्ञापन प्रका-शित करऽ वाला साहित्यकार लोकनि जिनका सभक लेल सरकार ‘कौरा’ क-व्यवस्था करैत छनि... अनेरे हएर सभ किएक माधु-कवार पीढ़... हमरा सबके किछु कावेक हएत तँ

उर्दूक हेतु करब आ कि ई मौगी समक भाषाक लेल? देखूगऽ हमर बेटा भातिजके कटाफट उर्दू लिखैत-पढ़ैत अछि। ओ वावू, चाहक केँचा दिओक आर अपन रास्ता धरु एहेन ने हो कि छौड़ा सभके पता लागि जाइब आर अहाँ मुफ्त में...।” हम अकचका कऽ पूछलनि—“से कि ओ?” अहाँ के नहि पता अछि??? सरकारी आदमी सभ मैथिलीक ओकालत कएनिहार सभ के पकड़ि-पकड़ि कऽ पटना लऽ जा रहल छैक... गंगापुलक उद्घाटन अवसर पर ओकरा सभके गंगालाभ करवाक प्रोग्राम छैक। हम अवाक रहि गेलहुँ।

ओ सज्जन पुरुष भभाकऽ हंसलाह आ हमरा सांत्वना दैत पुनः ‘वजलाह—“गंगा-लाभ सँ हमर तात्पर्य गंगालाभ सँ छल। कहाँदत आब मैथिलीक किछु पत्रिका सभ सेहो मिसरजी के देखार करय पर लागल छनि तँ ओ वड़ गरम भऽ गेलाह अछि... छुड़ा साइजका चरबाक प्रवृत्ति छनि तँ हाइकारी सुनला पर भड़कि उठैत छथि। हुनका शंका भेलनि जे गंगापुलक उद्घाटनक अवसर पर अपन घरेक लोक सभ ने इन्दि-राजीक समक्ष होहला करए, तँ मिथिला-चलक प्रत्येक कोन सँ एहन संवेदास्पद व्यक्ति सभके सरकारी आशपर पकड़ि-कऽ पटना पार्सल करबाक अभियान चलल छैक... अहाँ चुपे-चाप निकलि जाउ... कोनो डर नहि... हं, जहक केँचा दऽ देवैक।” बाजि ओ लोटा पकड़ि पोखड़ि दिस बिदा भऽ गेलाह। हमरा अपन सभटा आइडिया निर-र्थक बुझाय लागल—अधुना पथस्ता कऽ उठलहुँ जे आब अपन गामक वाट धरी मुदा होनी के के टारि सकैछ? जावत हम भोड़ी भयऽ लऽ उठी-उठी, पाँच-सात गोठ नव-युवक ओहि दोकान पर अवलोक आ अवि-तहि दौरा मजिस्ट्रेट जकाँ जवाब तलब करय लागल। हमं लाख प्रयास कयलहुँ मुदा नहि मानलक “राय्य द्रोही... सी. एम. द्रोही... पी. एम. द्रोही आदि विशेषण सँ भूषित कऽ, माल-जाल जकाँ हाँकि कऽ हूति देलक सरकारी टुक में आर अपन कमीशन प्राप्त कऽ ओ सभ नाचि-नाचि कऽ फिल्मी गीतक कीर्तन कए लागल—

‘मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है,
मेरे अंगने में...’ से लालबुभुकरजी, अपन फजीहतक वर्णन की कल... जे संगो-पांग वर्णन करब तँ एकगोट छोट-छीन उप-न्यासे तैयार भऽ जायत। संक्षेप में इहए बुभुजे हमरे सन केकटा दिवास्वप्नदृष्टा मैथिल सभ मिथिलाक कोण-कोण सँ वस्ता-ओलोल रहथि... सभक मुँह सँ मिसरजी जिन्दावाद... माताजी जिन्दावादक नारा लगवाउलोलक आर फेर पुनः हमसभ कोन धरानी महामागाधी सेलुक उद्घाटन उत्सव में सम्मिलित भेलहुँ... सी. एम.क संग राज-नीतिज्ञ आर भाषा समस्या पर कोन तर्क-वितर्क भेल आ हम सभ गंगालाभ करैत-करैत कोना के वाँचि गेलहुँ—ओहि विषय अल्ला सँ एक गोठ विशेष रपट बना कऽ ‘देसिलबयना’क सम्पादक के पठा रहल छिअनि मुदा सम्प्रति एक गोठ मर्मक बात लिख रहल छी—लालबुभुकरजी, मिथिला-चल में ओतेक चक्कर कटलहुँ—मिथिला

शे ११-५५ १०५५

अजगुत-अनटोटल

महाराष्ट्रक भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्रीमान अंतुले साहेबक बाद सभसं विवादस्पद मुख्य मंत्री छथि बिहारक स्वयंभू जनसेवक डा० श्री जगन्नाथ मिश्र। ओना त दिनका में बड़-बड़ गुण अछि—को बड़ छोट कहत अपराधू—परञ्च सभसं पैघ गुण—जेना कि पत्रकार लोकनि कहैत छथि—छनि, फूसि बजबा मे प्रवीणता। मिथिला मे एगो बड़ प्रचलित फकड़ा छैक—लादय, पादय ओ ओंघाय, सत्य न वाजय जौं मरि जाय। लोकक कहव छैक जे जे उपरोक्त तीनू श्रेणीक लोक भनहि सत्य बाजियो जाय किन्तु आजुक राजनेता आ खास केँ कांग्रेस (इ) क नेता किछहुँ सत्य नहि बाजि सकैत छथि। आ जे एकाध गोटे भूल सं एक-आध सत्य बाजियो लेथि तयो स्वनामधन्य डा० साहेब त सत्य नहिनेटा बाजि सकैत छथि। जेना कि सुनवा मे अबैल, मुख्य मंत्रीक शपथ लेबा सं पहिने डा० साहेब दू गोटे महत्वपूर्ण शपथ से हो लेने छलाह। पहिल त मिथिला, मैथिल-मैथिलीक विनाशक आ दोसर सत्य नहि बजवाक। पहिल शपथक निर्वाह ई नीक जकाँ करैत आयल छथि—से त सभकेँ शते छनि परञ्च दोसरोक निर्वाह मे ई पाछू नहि छथि तकर टटके उदाहरण भिक—मधुवनी मे अपन दलक भवनक उद्घाटनक समय दिनका द्वारा देल गेल भाषण। एहिठाम ई कहलनि जे हिनक सरकार मैथिलीक संवैधानिक मान्यता लेल 'कृत संकल्प' अछि तथा मैथिली अकादमी केँ एहि बरस चारि लाख सरकारी अनुदान भेटलक-ए। पहिलक संदर्भ मे जेना कि ई अपने वजैत छथि एगो व्यक्तिगत चिन्हा प्रधान मंत्री केँ लिखने छथिन—“जहाँ धरि दोसराक बात अछि मिथिला मिहिरक सम्पादकीय सं स्पष्ट पता चलैत छै जे मात्र पचहत्तर हजार टाकाक अनुदान अकादमी केँ देल गेलक-ए। ओना ई दिगर बात मेल जे जगन्नाथ मिश्र चारि कोटि लोकक भाषाक उत्थानक नाम पर बनल अकादमी केँ (ओना काजक लेल ई अकादमी हिनकेँ स्वजनक पोषण करैत) जे अनुदान देत आवि रहल छथि ताह अनुपात मे भोजपुरी अकादमी, एको प्रतिशत लोकक भाषा नहि रहैत हिन्दी अकादमी आ हुनकेँ अनुसार 'दश प्रतिशत लोकक भाषा' उर्दू अकादमी केँ कतेक अनुदान देत छथिन से नहि बजैत छथि। से जे हो, किन्तु हमरा लोकनिक सुभाव जे 'नोबेल पुरस्कार कमिटी' मानय त ओकरा फूसि बजनिहारक लेल सेहो पुरस्कारक घोषणा करक चाहियेक आ एकर पहिल पुरस्कार डा० श्री बिहारक मुख्य मंत्री जी जगन्नाथ मिश्र साहेब केँ देबाक चाहियेक।

नवकी-दिल्ली, १३ मई १९८१ केन्द्रीय सरकार-एक खेप फेर परिछा देलक जे संविधानक आठम अनुच्छेद मे आर. वेबी भाषा केँ शामिल नहि कएल जायत। ओना परितोषक लेल, ओ कहलकए जे राज्य सरकार सभ-अपन-अपन राज्यक ओहु भाषा सब केँ, जे संविधान सं बाहिल अइ

विकासक लेल सुविधा सुयोग देक - से उचित।

प्रश्न उठल छलैक मैथिली, नेपाली, डोगरी आ मनिपुरी भाषाक संवैधानिक मान्यताक। नेपालीक लेल ५० बंगालक सरकार विधान सभा सं एहि संदर्भ मे प्रस्ताव पास कए केन्द्र सं बहुत पहिने अनुरोध जना चुकल अइ तथा नेपाली भाषा अंचल मे सरकारी समस्त काजक माध्यम भाषाक रूप मे एकरा मान्यता ओ व्यावहारिक रूप द चुकल अइ। मनिपुरीक लेल सेहो ओकर सरकार केने छैक। पाछू अइ डोगरी आ सब सं पाछू मैथिली। मैथिली मात्र बिहार सरकार द्वारा, अबहेलिसेटा नहि अइ, अपितु घुणित षडयंत्रक शिकार भेल अइ। ओना जनता केँ आवो अवसे बुझक चाहियेक जे जगन्नाथ मिश्रक डपोर शंखी भाषण मे कते सत्यता छैक आ हुनक नोर सरियहुँ धरिपाली नोर सं बेसी नहि।

आजुक युग मे राजकीय मान्यता



सारदा देवी

पुत्री : स्व० प० गणेश भा
कोकन

पत्नी : स्व० सुरति ठाकुर
बाबूपाली

मैथिलीक युवा साहित्यकार एवं मैथिली मुक्ति मोर्चा कलकत्ताक संयोजक श्री राम लोचन ठाकुरक पुजनीया मां श्रीमती सारदा देवीक आकस्मिक देहावसान लगभग साठ बरसक अवस्था मे अपन गाम बाबूपाली मे विगत २ अप्रील १९८२ केँ भय गेलनि। ई कुछ बरस सं गैस्टिक व्याधि ग्रस्त छलीह। ई लिखिया-पढ़िया, गीत-नाद मे पूर्ण पटु व्यवहार कुशल ओ धर्मपरायण महिला छलीह। स्व० सारदा देवी अपना पाछाँ एक मात्र पुत्र, पुत्रवधु, तीन पौत्र ओ दू पौत्री केँ छोड़ि गेल छथि।

'देसिल वयना' चन्दाक दर :-

१ प्रति	५०, पइसा
१ बरसक	५) टाका
५ बरसक	२०) टाका

पाइ पठेबाक पता :-

श्री जनार्दन मा,
१७६।६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सं :-

'देसिल वयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाउ। कम खर्च मे सुन्दर दंग सं अधिक प्रचार एक मात्र साधन।

सम्पर्क कल
विज्ञापन व्यवस्थापक
अरुणोदय प्रकाशन,

देसिल वयना

पाठकीय परिवारक (सलियाना) सदस्य

३८. श्री रामचन्द्र भा, उषानगर, कलकत्ता	
३९. ,, प्रबोध भा ,, ,,	
४०. ,, कमल नारायण कर्ण ,, ,,	
४१. ,, सूर्यकान्त मिश्र, उषा फैन, ,,	
४२. ,, सत्यनारायण भा ,, ,,	
४३. ,, कान्ति बिहारी मिश्र ,, ,,	
४४. ,, सुरेन्द्र नाथ भा, रंगकल, ,,	
४५. ,, खुशीलाल भा, बड़ाबाजार, ,,	
४६. ,, राम नारायण मिश्र, उषा फैन, ,,	
४७. ,, अर्जुन लाल करण, कलकत्ता	
४८. ,, ललन मिश्र, नदारी, दड़िभंगा	
४९. ,, विश्वम्बर मिश्र, ,, ,,	
५०. ,, कुमारी श्योति भा, कलकत्ता	
५१. ,, वासुनाथ भा, डानरकेस	

मिथिलावासीक विकास

मेटल, मैथिल मेटलह मुदा मैथिलीक दर्शन कतहु नहि मेल ॥ मैथिलीक जिज्ञासा पर सर्वत्र एकेटा उत्तर मेटल—'मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है ???'

पत्र सुरसाक मुँह जकाँ अनेरे बढल जा रहल अछि तँ आव पत्र केँ समाप्त करैत अपने सं करबद्ध प्रार्थना कऽ रहल छी—जे लालबुभुक्षरजी, अहाँ केँ जे मोन हो से लिखू—जं चाही तँ एडवान्स मे अपन मृत्यु गीत पर्यन्त लिख सकैत छी मुदा भाइने—जगन्नाथबाबूक विरोध मे किछु नहि लिखी ओ मैथिल धिकाइ, हुनकर मातृभाषा मैथिली छनि मने ओ खाटी 'अपन लोक छथि तँ अपन लोक केँ देखार' करव उचित नहि। शेष कुशल।

अहीक
—विश्व वंचित

मिथिलावासिक माड

१. मिथिला राज्यक निर्माण हो।
२. मैथिली केँ अर्न्त विध्व संविधानक आठम अनुच्छेद मे स्थान हो।
३. समस्त सरकारी। अर्ध सरकारी प्रति-योगितामूलक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
४. मिथिला मे निम्नतम सं उच्चतम स्तर धरि शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो।
५. मिथिलाक प्रथम राजभाषा मैथिली हो।
६. मिथिला मे सरकारी कल-कारखानाक स्थापना ओ विकास हो।
७. मिथिलाक कृषिक अवस्था मे सुधार हो आ एहि निमित्त रौंदी-दाही सं मुक्तिक व्यवस्था हो तथा यातायातक सुव्यवस्था हो।

—रामाधार मिश्र—
बास्ते—मैथिली मुक्तियोर्चा,
कलकत्ता